यीशु मसीह का सुसमाचार
(रोमियों अध्याय 5–8)

विषय-सूची

प्रस्तावना

धर्मी ठहराया जाना विश्वास द्वारा प्राप्त होता है (रोमियों 5:1)

धर्मी ठहराए जाने के परिणाम (1): परमेश्वर के साथ शांति का आनंद लेना (5:1)

धर्मी ठहराए जाने के परिणाम (2): विश्वास द्वारा उस अनुग्रह तक पहुँच प्राप्त करना जिसमें हम स्थिर हैं (5:2)

धर्मी ठहराए जाने के परिणाम (3): परमेश्वर की महिमा की आशा में आनंदित होना (5:2)

धर्मी ठहराए जाने के परिणाम (4): क्लेशों में आनंदित होना (5:3–4)

धर्मी ठहराए जाने के परिणाम (5): आशा का आश्वासन रखना (5:3–4)

धर्मी ठहराए जाने के परिणाम (6): क्लेश, धीरज और चरित्र के माध्यम से एक परिपूर्ण आशा प्राप्त करना (5:3–4)

धर्मी ठहराए जाने के परिणाम (7): ऐसी आशा प्राप्त करना जो हमें लज्जित नहीं करती (5:5)

धर्मी ठहराए जाने के परिणाम (8): पवित्र आत्मा के द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदयों में उंडेला जाना (5:5–6)

धर्मी ठहराए जाने के परिणाम (9): परमेश्वर का हमारे प्रति अपने प्रेम को प्रदर्शित करना (5:8)

धर्मी ठहराए जाने के परिणाम (10): परमेश्वर के क्रोध से बचाए जाना (5:9)

धर्मी ठहराए जाने के परिणाम (11): भविष्य के उद्धार को प्राप्त करना (5:10)

धर्मी ठहराए जाने के परिणाम (12): परमेश्वर में आनंदित होना (5:11)

"एक मनुष्य के द्वारा" (5:12–21)

व्यवस्था से पहले भी संसार में पाप विद्यमान था (5:12–21)

"वरदान अपराध के समान नहीं है" (5:12–21)

"जैसे एक अपराध के द्वारा बहुत से लोग दोषी ठहराए गए" (5:12–21)

व्यवस्था इसलिए आई ताकि अपराध बढ़ जाए (5:12–21)

हम जो पाप के लिए मर चुके हैं (6:1-14)

हम जो मसीह के साथ मर गए (6:1-14)

हम जो मसीह के साथ जिलाए गए (6:1-14)

होने का परिणाम मसीह के साथ पुनर्जीवित (6:1-14)

"परमेश्वर का धन्यवाद हो" (6:15-18)

"इन बातों का अंत मृत्यु है" (6:19-21)

"इसका अंत अनंत जीवन है" (6:19-21)

परमेश्वर का वरदान (6:23)

वे जो व्यवस्था के लिए मर गए (7:1-4)

वे जो व्यवस्था से मुक्त हुए (7:5-6)

"क्या व्यवस्था पाप है?" (7:7-9)

"जीवन के लिए दिया गया आदेश" (1) (7:8-13)

"जीवन के लिए दिया गया आदेश" (2) (7:8-13)

आध्यात्मिक नियम (7:14-20)

"मेरे भीतर बसा हुआ पाप" (7:17-20)

परमेश्वर के नियम के रूप में नियम (1) (7:21-23)

परमेश्वर के नियम के रूप में नियम (2) (7:24-25)

त्रिएक परमेश्वर का उद्धार (1) (8:1-4)

त्रिएक परमेश्वर का उद्धार (2) (8:1-4)

त्रिएक परमेश्वर का उद्धार (3) (8:1-4)

त्रिएक परमेश्वर का उद्धार (4) (8:1-4)

आत्मा का मन (8:5-8)

शरीर का मन (8:5-8)

हमारे भीतर वास करने वाला पवित्र आत्मा (8:9-11)

हम जो ऋणी हैं (8:12-13)

पवित्र आत्मा द्वारा चलाए जाने वाले लोग (1) (8:14-17)

पवित्र आत्मा द्वारा चलाए जाने वाले लोग (2) (8:14-17)

पवित्र आत्मा द्वारा चलाए जाने वाले लोग (3) (8:14-17)

"यदि संतान हैं, तो वारिस भी हैं" (8:14-17)

वर्तमान का दुख और भविष्य की महिमा (8:18)

"सृष्टि की आतुर प्रतीक्षा" (8:19-22)

हमारी आशा (8:23-25)

पवित्र आत्मा की सहायता (8:26-27)

उद्धार का आश्वासन (8:28-29)

परमेश्वर का उद्धार (1) (8:29-30)

परमेश्वर का उद्धार (2) (8:29-30)

परमेश्वर का उद्धार (3) (8:29-30)

परमेश्वर का उद्धार (4) (8:29-30)

परमेश्वर का मुक्ति (5) (8:29-30)

परमेश्वर की मुक्ति (6) (8:29-30)

"यदि परमेश्वर हमारे पक्ष में है" (1) (8:31-34)

"यदि परमेश्वर हमारे पक्ष में है" (2) (8:31-34)

"यदि परमेश्वर हमारे पक्ष में है" (3) (8:31-34)

"यदि परमेश्वर हमारे पक्ष में है" (4) (8:31-34)

"यदि परमेश्वर हमारे पक्ष में है" (5) (8:31-34)

"यदि परमेश्वर हमारे पक्ष में है" (6) (8:31-34)

"यदि परमेश्वर हमारे पक्ष में है" (7) (8:31-34)

"यदि परमेश्वर हमारे पक्ष में है" (8) (8:31-34)

"यदि परमेश्वर हमारे पक्ष में है" (9) (8:35-39)

"यदि परमेश्वर हमारे पक्ष में है" (10) (8:35-39)

"यदि परमेश्वर हमारे पक्ष में है" (11) (8:35-39)

निष्कर्ष

परिशिष्ट

"मसीह यीशु में छुटकारा" (रोम 3:23-24)

अब्राहम का विश्वास, हमारा विश्वास (रोम 4:17-25)

सियुंगरी प्रेस्बिटेरियन चर्च: एक मिशनरी चर्च (रोम 1:14-17)

प्रस्तावना

सुसमाचार क्या है? असल में, यीशु मसीह का सुसमाचार क्या है? मुझे वह बात आज भी अच्छी तरह याद है। अपने प्यारे पिता के साथ भोजन और संगति करने के बाद—जो हमारे 'विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च' के 'पास्टर एमेरिटस' (सेवानिवृत्त पास्टर) भी हैं—मैं उन्हें उनकी कार से घर छोड़ने गया। ठीक जब वे मेरी कार से उतरने वाले थे, तो उन्होंने मुझसे पूछा, “सचमुच, सुसमाचार क्या है?” उस पल, मैं कुछ हैरान रह गया। मेरी हैरानी का कारण यह एहसास था कि, अपना पूरा जीवन सुसमाचार को सुनने और उसका प्रचार करने में बिताने के बावजूद, मेरे पिता के मन में उसे और भी गहराई से समझने की एक गहरी और सच्ची इच्छा अब भी मौजूद थी। मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि, COVID-19 महामारी से जुड़ी परिस्थितियों को देखते हुए—जिसने उन्हें मिशन के क्षेत्र में जाने से रोक दिया था—हमारे पादरी एमेरिटस (सेवानिवृत्त पादरी) हमारी साप्ताहिक बुधवार की प्रार्थना सभाओं के दौरान पूरी निष्ठा के साथ परमेश्वर के वचन का प्रचार कर रहे हैं, और विशेष रूप से यीशु मसीह के सुसमाचार पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। मैं इस बात के लिए भी हृदय से आभारी हूँ कि, रोमियों अध्याय 5 से 8 तक उन्होंने जो संदेश पहले ही दिए हैं, उनसे प्रेरणा लेकर मैं—भले ही कुछ कमियों के साथ—अपने व्यक्तिगत नोट्स और विचारों को एक ही पुस्तक के रूप में संकलित कर पाया। मैंने इस पुस्तक का शीर्षक *यीशु मसीह का सुसमाचार (रोमियों 5–8)* रखा है। [वर्तमान में, पादरी एमेरिटस चार सुसमाचारों (मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना) पर आधारित एक शृंखला के माध्यम से यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार कर रहे हैं; जब उपदेशों की यह शृंखला पूरी हो जाएगी, तो हमारा इरादा *यीशु मसीह का सुसमाचार (चार सुसमाचार)* शीर्षक से एक दूसरी पुस्तक प्रकाशित करने का है।] मेरी यह हार्दिक प्रार्थना है कि प्रभु, अपनी ईश्वरीय इच्छा के अनुसार, इस पुस्तक का उपयोग यह सुनिश्चित करने के लिए करें कि यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार और भी अधिक व्यापक रूप से हो।

इस प्रार्थना के साथ कि यीशु मसीह का सुसमाचार और भी अधिक व्यापक रूप से फैले,

साझा किया: पादरी जेम्स किम द्वारा
(फरवरी 2022, विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च स्थित पादरी के अध्ययन कक्ष से)

धर्मी ठहराया जाना विश्वास के द्वारा प्राप्त होता है।

"इसलिए, जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें" (रोमियों 5:1)। बाइबल कहती है कि हम विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए गए हैं (रोमियों 5:1)। इसका अर्थ है कि हमने धर्मी ठहराया जाना प्राप्त कर लिया है। धर्मी ठहराया जाना केवल विश्वास के द्वारा ही प्राप्त होता है। हम किसी अन्य चीज़ के द्वारा धर्मी नहीं ठहराए जा सकते। उदाहरण के लिए, हम अच्छे कामों, सदाचारी कार्यों, प्रेम, या व्यवस्था का पालन करने के द्वारा धर्मी नहीं ठहराए जा सकते। धर्मी ठहराया जाना कोई मानवीय योग्यता नहीं है। धर्मी ठहराया जाना पूरी तरह से परमेश्वर का वह कार्य है जिसके द्वारा वह हमें धर्मी घोषित करता है। विश्वास परमेश्वर के अनुग्रह का एक उपहार है। विश्वास एक ऐसा उपहार है जो परमेश्वर हमें मुफ़्त में देता है। परमेश्वर हमें केवल विश्वास के द्वारा ही धर्मी क्यों ठहराता है? इसका कारण यह है कि हम घमंड न करें। इफिसियों 2:8–9 पर दृष्टि डालें: "क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है; और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है। और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमंड करे।" चूँकि विश्वास परमेश्वर की कृपा का एक उपहार है और यह हमारे अपने कामों से उत्पन्न नहीं होता, इसलिए हमारे पास घमंड करने का कोई आधार नहीं है। रोमियों 3:26–30 पर नज़र डालें: "ताकि इस वर्तमान समय में वह अपनी धार्मिकता को प्रकट करे, जिससे वह स्वयं धर्मी ठहरे और जो यीशु पर विश्वास करता है, उसे भी धर्मी ठहराए। फिर घमंड का क्या स्थान रहा? उसका कोई स्थान नहीं। किस नियम के द्वारा? कामों के नियम द्वारा? नहीं, बल्कि विश्वास के नियम द्वारा। इसलिए हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि मनुष्य व्यवस्था के कामों के बिना, केवल विश्वास के द्वारा ही धर्मी ठहराया जाता है। या क्या परमेश्वर केवल यहूदियों का ही परमेश्वर है? क्या वह अन्यजातियों का भी परमेश्वर नहीं है? हाँ, अन्यजातियों का भी, क्योंकि परमेश्वर एक ही है, जो खतना वालों को विश्वास के द्वारा और बिना खतना वालों को भी विश्वास के द्वारा ही धर्मी ठहराएगा।" यहूदी और अन्यजाति—दोनों ही समान रूप से, केवल विश्वास के द्वारा ही धर्मी ठहराए जाते हैं। इसके अलावा, जो धर्मी ठहराता है, वह केवल परमेश्वर ही है। तो क्या इस बात का—कि हम केवल विश्वास के द्वारा ही धर्मी ठहराए जाते हैं—यह अर्थ है कि व्यवस्था अनावश्यक है? नहीं।

व्यवस्था वास्तव में आवश्यक है। इसके विपरीत, हम व्यवस्था को बनाए रखते हैं। यद्यपि व्यवस्था हमारे उद्धार का साधन नहीं है, फिर भी वह हमारे लिए प्रासंगिक बनी रहती है—अर्थात् उन लोगों के लिए, जो परमेश्वर की कृपा द्वारा यीशु पर विश्वास करके बचाए गए हैं। दूसरे शब्दों में, केवल विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने के बाद, हमें व्यवस्था का पालन करके उसे बनाए रखना चाहिए (पद 31)।

हमें केवल विश्वास के द्वारा ही धर्मी ठहराया जाता है। चूंकि हमें उद्धार—जो परमेश्वर के अनुग्रह का एक उपहार है—केवल विश्वास के माध्यम से प्राप्त हुआ है, इसलिए हमें परमेश्वर का धन्यवाद, स्तुति और आराधना करनी चाहिए। हमें अपने आप पर (या अपने कार्यों पर) घमंड नहीं करना चाहिए। हमें विश्वासपूर्वक व्यवस्था (उदाहरण के लिए, दस आज्ञाएं) से प्रेम करना चाहिए और उसका पालन करना चाहिए। हमें यीशु की "दोहरी आज्ञा" (परमेश्वर से प्रेम करना और अपने पड़ोसी से प्रेम करना) का पालन करना चाहिए; वास्तव में, ऐसा आज्ञापालन हमारे नए जन्म का प्रमाण है।

रोमियों 5:1 में, हमें "इसलिए" (therefore) नामक संयोजक शब्द मिलता है। यह संयोजक शब्द उस सामग्री को जोड़ने का काम करता है जिसे प्रेरित पौलुस ने रोमियों 5:1 से पहले संबोधित किया था, उस सामग्री के साथ जिसकी चर्चा वह उस पद से शुरू करना चाहता है। परिणामस्वरूप, इस बारे में विभिन्न तर्क (या सिद्धांत) मौजूद हैं कि पिछले पाठ में—5:1 से पहले—यह "इसलिए" ठीक किस बिंदु की ओर संकेत करता है। उदाहरण के लिए, कुछ लोग यह सिद्धांत देते हैं कि यह 4:15 से जुड़ा है; अन्य तर्क देते हैं कि इसमें अध्याय 4 की संपूर्ण सामग्री शामिल है; जबकि कुछ अन्य सुझाव देते हैं कि यह 3:21 से, या उससे भी पीछे जाकर 1:18 से जुड़ा है। यह अनिश्चित बना हुआ है कि इनमें से कौन सा तर्क सही है। यदि ऐसा है, तो यह "इसलिए" (5:1) बाद के पाठ में कितनी दूर तक फैला हुआ है? यह सीधे रोमियों 5:11 तक जुड़ा हुआ है। इसके अलावा, रोमियों 5:1 में "हम" शब्द का प्रयोग हुआ है—यह एक सर्वनाम है जो यहाँ प्रेरित पौलुस और रोम की कलीसिया के सदस्यों को संदर्भित करता है। व्यावहारिक अनुप्रयोग के संदर्भ में, यह "हम" आपको और मुझे—उन सभी लोगों को संदर्भित करता है जो यीशु पर अपना विश्वास रखते हैं। पवित्रशास्त्र यह घोषणा करता है कि हमें विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया गया है (पद 1)। यहाँ, "धर्मी ठहराए जाने" वाक्यांश का अर्थ यह है कि, पापी होने के बावजूद, हमें परमेश्वर द्वारा धर्मी घोषित किया गया है—अर्थात् वह हमें वैसा ही मानता है और उसी के अनुसार हमारे साथ

व्यवहार करता है। परमेश्वर, जो पापियों को धर्मी ठहराता है, वह बिना किसी आधार के ऐसा नहीं करता। क्योंकि परमेश्वर न्यायी और पवित्र है, इसलिए वह बिना किसी उचित आधार के किसी पापी को धर्मी घोषित नहीं कर सकता—और वास्तव में करता भी नहीं है। तो फिर, परमेश्वर किस आधार पर पापियों को धर्मी ठहराता है? यह "विश्वास" के आधार पर नहीं है। दूसरे शब्दों में, ऐसा नहीं है कि परमेश्वर किसी पापी को केवल इसलिए धर्मी ठहराता है क्योंकि वह देखता है कि उस व्यक्ति के पास विश्वास है। विश्वास केवल उस विधि, साधन या माध्यम के रूप में कार्य करता है, जिसके द्वारा हम वह प्राप्त करते हैं जो परमेश्वर देता है। परमेश्वर पापियों को केवल "हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा" (पद 1) ही धर्मी ठहराता है—अर्थात्, इसलिए क्योंकि यीशु मसीह स्वयं ही इसकी नींव हैं। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर पापियों को यीशु मसीह द्वारा किए गए कार्य के आधार पर धर्मी ठहराता है। वह पापियों को यीशु मसीह की प्रायश्चितकारी मृत्यु और पुनरुत्थान के आधार पर धर्मी ठहराता है।

दोस्तों, रोमियों 5:1 में जिस "विश्वास" की बात की गई है, वह असल में क्या है? जिस "विश्वास" के बारे में प्रेरित पौलुस यहाँ रोम की कलीसिया के विश्वासियों से बात कर रहे हैं, वह ठीक उसी विश्वास की ओर इशारा करता है—यानी अब्राहम के विश्वास की ओर—जिसका ज़िक्र रोमियों अध्याय 4 में किया गया है। कृपया रोमियों 4:3 खोलें: "क्योंकि पवित्रशास्त्र क्या कहता है? 'अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, और यह उसके लिए धार्मिकता गिना गया'" [(समकालीन अंग्रेज़ी संस्करण: "पवित्रशास्त्र में लिखा है, 'अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, और इस विश्वास के कारण, परमेश्वर ने उसे धर्मी माना'।")] यहाँ, "पवित्रशास्त्र कहता है" वाक्यांश अब्राहम के उस वृत्तांत की ओर इशारा करता है जो उत्पत्ति अध्याय 15 में मिलता है। कृपया उत्पत्ति 15:5–6 देखें: "वह उसे बाहर ले गया और कहा, 'आकाश की ओर देख और तारों को गिन—अगर तू सचमुच उन्हें गिन सकता है।' फिर उसने उससे कहा, 'तेरा वंश भी ऐसा ही होगा।' अब्राम ने यहोवा पर विश्वास किया, और उसने इसे उसके लिए धार्मिकता गिना" [(समकालीन अंग्रेज़ी संस्करण: "वह उसे बाहर ले गया और कहा, 'आकाश की ओर देख और तारों को गिन; तेरे वंशज उन तारों जितने ही असंख्य होंगे।' अब्राम ने यहोवा पर विश्वास किया, और इस विश्वास के कारण, यहोवा ने उसे धर्मी माना।")] जब अब्राहम का विश्वास पल भर के लिए डगमगा गया था—जिसके चलते उसने परमेश्वर से कहा, "चूँकि मेरी कोई संतान नहीं है, इसलिए मैं दमिश्क के इस व्यक्ति, एलीएज़र को अपना वारिस बनाऊँगा" (पद 2)—तब परमेश्वर अब्राहम को बाहर ले गए और घोषणा की (वादा किया), "आकाश की ओर देख और तारों को गिन... तेरा वंश भी ऐसा ही होगा" (पद 5)। परमेश्वर ने अब्राहम से यह नहीं कहा कि वह इस वादे को "एलीएज़र" (पद 2) के ज़रिए पूरा करेंगे; बल्कि, उन्होंने यह घोषणा की कि

वह इस वादे को "उस व्यक्ति के ज़रिए पूरा करेंगे जो तेरे अपने शरीर से निकलेगा" (पद 4)। यह वादा पाने पर, अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया (रोमियों 4:3)। उसे भरोसा था कि परमेश्वर सचमुच ठीक वैसा ही करेंगे जैसा उन्होंने कहा था। परिणामस्वरूप, परमेश्वर ने अब्राहम को धर्मी गिना (पद 3)। हालाँकि, अगर हम रोमियों 4:16 और उसके बाद के पदों को देखें, तो हमें अब्राहम की ओर से विश्वास का एक और कार्य देखने को मिलता है। अब्राहम को परमेश्वर ने तब बुलाया था जब वह पचहत्तर वर्ष का था; यह विवरण उत्पत्ति 12 में मिलता है। उत्पत्ति 15:5–6 में लिखे शब्द उस वादे को दर्शाते हैं जो परमेश्वर ने अब्राहम से तब किया था जब वह लगभग पचासी वर्ष का था—कनान देश में पूरी तरह बसने के लगभग दस वर्ष बाद। रोमियों 4:16 और उसके बाद के पदों में वर्णित घटनाएँ तब घटीं जब अब्राहम निन्यानवे वर्ष का था और सारा नवासी वर्ष की। चूँकि उत्पत्ति 12 में अब्राहम को पचहत्तर वर्ष का दिखाया गया है, और रोमियों 4:16 में उसे निन्यानवे वर्ष का, इसलिए इन दोनों बिंदुओं के बीच लगभग चौबीस वर्षों का समय बीत चुका था। इसके अलावा, चूँकि उत्पत्ति 15 में अब्राहम पचासी वर्ष का था, इसलिए उस समय और रोमियों 4:16 में वर्णित घटनाओं के बीच लगभग चौदह वर्ष बीत चुके थे। फिर भी, इन सब बातों के बावजूद, अब्राहम की कोई संतान नहीं थी; परमेश्वर ने उसे अभी तक कोई संतान नहीं दी थी। जब अब्राहम ने, निन्यानवे वर्ष की आयु में (जैसा कि रोमियों 4:16 आदि में वर्णित है), स्वयं को देखा, तो उसने पाया कि वह निःसंतान है—और, इसके अलावा, वह ऐसी आयु तक पहुँच चुका था जहाँ संतान उत्पन्न करना शारीरिक रूप से असंभव था। सारा के साथ भी यही स्थिति थी। रोमियों 4:19 पर दृष्टि डालें: “अपने विश्वास में बिना कमज़ोर हुए, उसने इस तथ्य का सामना किया कि उसका शरीर लगभग मृत-तुल्य था—क्योंकि वह लगभग सौ वर्ष का था—और यह भी कि सारा का गर्भ भी मृत था...” [(समकालीन कोरियाई बाइबल) “हालाँकि अब्राहम जानता था कि, लगभग सौ वर्ष का होने के कारण, उसका शरीर एक शव से भिन्न नहीं था, और उसकी पत्नी सारा संतान धारण करने के लिए बहुत अधिक वृद्ध हो चुकी थी...”]। चूँकि अब्राहम 99 वर्ष का था और उसकी पत्नी सारा 89 वर्ष की, इसलिए अब्राहम ने यह महसूस किया कि—जहाँ तक संतान उत्पन्न करने का प्रश्न था—वह और सारा, दोनों ही वास्तव में मृत-तुल्य थे। फिर भी, अब्राहम ने परमेश्वर के वचनों पर विश्वास किया—विशेष रूप से इस कथन पर: “तेरा वंश ऐसा ही होगा” (पद 18; उत्पत्ति 15:5 का हवाला देते हुए), और विशेष रूप से इस वादे पर: “जो तेरे अपने शरीर से उत्पन्न होगा, वही तेरा वारिस होगा” (उत्पत्ति 15:4)—और वह इस विश्वास पर दृढ़ रहा (रोमियों 4:18)। अगर हम रोमियों 4:16 और उसके बाद की आयतों को देखें, तो "वादा" (आयतें 16, 20, 21) और "वचन" [आयत 17 ("जैसा लिखा है"), आयत 18] शब्द बार-बार आते हैं। इससे पता चलता है कि अब्राहम ने अपना विश्वास परमेश्वर के वादों पर—यानी परमेश्वर के अपने ही वचनों पर

रखा था। दूसरे शब्दों में, अब्राहम का विश्वास परमेश्वर की वाचा पर आधारित था। जो वचन परमेश्वर ने अब्राहम से कहे थे—वे वादे—मानवीय नज़रिए से, ऐसी बातें थीं जिनकी "कोई आशा नहीं थी" (आयत 18)। सच तो यह है कि जब हम पूरे पवित्रशास्त्र में परमेश्वर द्वारा हमसे किए गए वादों की जाँच करते हैं, तो हम पाते हैं कि उनमें से ज़्यादातर ऐसी बातें हैं जिनकी हम अपनी तरफ से कभी आशा भी नहीं कर सकते थे। ये ऐसे मामले हैं जो मानवीय समझ से पूरी तरह परे हैं—ऐसी बातें जिन्हें हम अपने साधनों से कभी समझ या जान नहीं सकते थे। अब्राहम परमेश्वर के इस वादे (आयत 18) पर कैसे विश्वास कर सकता था—या उसे समझ भी कैसे सकता था—कि वह बहुत से राष्ट्रों का पिता बनेगा, जबकि 99 साल की उम्र तक वह बेऔलाद ही रहा था? क्या वह सचमुच इसे समझ सकता था? क्या वह सचमुच इसे स्वीकार कर सकता था? फिर भी, परमेश्वर ने अब्राहम से वादा किया कि वह उसे सभी राष्ट्रों का पिता बनाएगा। और इसलिए, अब्राहम ने तब भी आशा रखी जब आशा का कोई आधार नहीं था। बाइबल में रोमियों 4:17 को देखिए: "जैसा लिखा है: 'मैंने तुझे बहुत से राष्ट्रों का पिता बनाया है।' वह परमेश्वर की दृष्टि में हमारा पिता है, जिस पर उसने विश्वास किया—वह परमेश्वर जो मरे हुओं को जीवन देता है और उन चीज़ों को अस्तित्व में लाता है जो अस्तित्व में नहीं हैं।" वह परमेश्वर जिसने अब्राहम को बहुत से राष्ट्रों के पिता के रूप में स्थापित किया, वही परमेश्वर है जो मरे हुओं को जीवन देता है और उन चीज़ों को अस्तित्व में लाता है जो अस्तित्व में नहीं हैं। यहाँ, अब्राहम का विश्वास ऐसा था कि, यह जानते हुए भी कि उसका अपना शरीर लगभग मृत-समान था—क्योंकि वह लगभग सौ साल का था—और साराह का गर्भ भी मृत था (आयत 19), फिर भी उसने विश्वास किया कि परमेश्वर ही वह है जो मरे हुओं को जीवन देता है (आयत 17)। अब्राहम का विश्वास ऐसा था जिसने यह माना कि परमेश्वर ही वह है जो उन चीज़ों को अस्तित्व में लाता है जो अस्तित्व में नहीं हैं (आयत 17)। यह एक ऐसा विश्वास था जिसने उस परमेश्वर पर भरोसा किया, जिसने उसे बहुत-सी जातियों का पिता बनाने का वादा किया था—भले ही उस समय तक उसकी कोई संतान नहीं थी (पद 18)। उसने सृष्टिकर्ता परमेश्वर पर विश्वास किया—वह जो 'कुछ नहीं' से 'कुछ' बना देता है। रोमियों 4:19–20 पर ध्यान दें: “जब वह लगभग सौ वर्ष का था, तब भी उसका विश्वास कमज़ोर नहीं पड़ा; उसने अपने शरीर पर ध्यान दिया, जो अब लगभग मृत-सा हो चुका था, और सारा के गर्भ की मृत-सी अवस्था पर भी। फिर भी, परमेश्वर के वादे के विषय में अविश्वास के कारण वह डगमगाया नहीं, बल्कि अपने विश्वास में और अधिक दृढ़ हुआ और परमेश्वर की महिमा की।” अब्राहम का विश्वास ऐसा था जो कमज़ोर नहीं पड़ा, बल्कि और भी मज़बूत हुआ, और इस प्रकार उसने परमेश्वर की महिमा की (पद 20)। रोमियों 4:21 पर ध्यान दें: “उसे पूरा विश्वास था कि परमेश्वर में वह सामर्थ्य है कि वह अपने किए हुए वादे को पूरा कर सके।” अब्राहम को पूरा यकीन था कि परमेश्वर सर्वशक्तिमान परमेश्वर है, जो अपने किए हुए वादों को निश्चित रूप से पूरा करता है। बाइबल में रोमियों 4:22

पर ध्यान दें: “इसलिए, यह उसके लिए धार्मिकता के रूप में गिना गया” [(मॉडर्न पीपल्स बाइबल) “अतः, इस विश्वास के कारण, परमेश्वर ने उसे धर्मी ठहराया”]।

हमें भी, अब्राहम की ही तरह, परमेश्वर पर और उसके वादे के वचन पर उसी विश्वास के साथ भरोसा करना चाहिए। रोमियों 4:23–25 पर ध्यान दें: “ये शब्द कि ‘इसे उसके लिए धार्मिकता के रूप में गिना गया,’ केवल उसके लिए ही नहीं लिखे गए थे, बल्कि हमारे लिए भी लिखे गए थे—हमारे लिए, जिनके लिए इसे गिना जाएगा—हमारे लिए, जो उस पर विश्वास करते हैं जिसने हमारे प्रभु यीशु को मरे हुओं में से जिलाया। उसे हमारे पापों के कारण मृत्यु के हवाले कर दिया गया, और हमारे धर्मी ठहराए जाने के लिए उसे फिर से जीवित किया गया।” बाइबल में अब्राहम के विश्वास का वृत्तांत विशेष रूप से हमारे ही भले के लिए दर्ज किया गया है। हमारा विश्वास ऐसा विश्वास है जो उस परमेश्वर पर भरोसा करता है, जिसने हमारे प्रभु यीशु को मरे हुओं में से जिलाया (पद 24)। हमारा विश्वास ऐसा विश्वास है जो इस तथ्य पर भरोसा करता है कि यीशु को उन पापों के कारण मृत्यु के हवाले कर दिया गया था जो हमने किए थे (पद 25)। हम विश्वास करते हैं कि हम सब पापी हैं। हम विश्वास करते हैं कि हमारे सभी पापों—आदि पाप, पिछले पाप, वर्तमान पाप, और भविष्य के पापों—के कारण, परमेश्वर ने अपने एकमात्र पुत्र, यीशु को क्रूस पर चढ़ा दिया। यीशु के अपना लहू बहाने और क्रूस पर मरने के द्वारा, हमारे पाप की समस्या पूरी तरह से हल हो गई है। “लहू” जीवन का प्रतीक है। क्योंकि यीशु का जीवन क्रूस पर बलिदान कर दिया गया था, इसलिए पाप की पूरी समस्या यीशु मसीह के लहू (जीवन) के द्वारा पहले ही हल हो चुकी है—यह एक ऐसी सामर्थ्य है जो हमारे सभी पापों का पूरी तरह से प्रायश्चित करने के लिए पर्याप्त है, चाहे वे कितने भी बड़े या भारी क्यों न हों। फिर भी, हम अभी भी पाप की समस्या से मिलने वाली स्वतंत्रता का पूरी तरह से आनंद नहीं ले पाते हैं। कई बार ऐसा होता है जब हम अपनी पापमयता के संबंध में सहज महसूस नहीं करते। इसका कारण यह हो सकता है कि हम अभी तक पाप से अपनी पूर्ण स्वतंत्रता के बारे में पूरी तरह से आश्वस्त नहीं हैं। हमारा विश्वास ऐसा विश्वास है जो इस तथ्य पर भरोसा करता है कि यीशु को हमारे धर्मी ठहराए जाने के लिए फिर से जीवित किया गया था (पद 25)। यीशु का पुनरुत्थान ठीक इसी उद्देश्य के लिए हुआ था कि वह हमें धर्मी ठहराए (तुलना करें 5:1)। इसलिए, हम जो यीशु के पुनरुत्थान पर विश्वास करते हैं, यह मानते हैं कि जिस उद्देश्य के लिए वह तीन दिन बाद कब्र से फिर से जीवित हुआ, वह हमें धर्मी ठहराना ही था। क्या हम सचमुच इस पर विश्वास करते हैं?

जैसे ही हम लगभग दो सप्ताह पहले रविवार की आराधना के दौरान प्राप्त संदेश पर एक बार फिर से मनन करते हैं, तो यह विचार मन में उठता है: “क्या हम सचमुच अपने विश्वास को बनाए रख पाएँगे?” कोरिया पर जापानी औपनिवेशिक शासन के दौरान, लोगों को शिंटो मंदिरों में झुककर पूजा करने का आदेश दिया गया था। बहुत से लोगों ने आज्ञा का पालन किया और मंदिरों के सामने सिर झुकाया। हालाँकि, कुछ ऐसे भी लोग थे जिन्होंने झुकने से इनकार कर दिया और परिणामस्वरूप, शहादत पाई। फिर भी, ऐसे लोगों की संख्या बहुत कम थी। मुझे एक उपदेश याद आता है जिसमें यह सवाल उठाया गया था: यह देखते हुए कि हमारी पूरी मंडली में केवल लगभग अस्सी लोग हैं, यदि—या बल्कि, जब—भविष्य में क्लेश और उत्पीड़न अनिवार्य रूप से आएंगे, तो क्या हममें से दस लोग भी यीशु में अपने विश्वास पर दृढ़ रह पाएंगे? शांत होकर सोचने पर, कोई भी यह सोचता है कि क्या वे दस लोग भी ऐसा कर पाएंगे... और जब मैं अपने भीतर झाँकता हूँ, तो मैं खुद से पूछता हूँ कि क्या मैं, व्यक्तिगत रूप से, सचमुच शहादत देने में सक्षम होऊँगा। क्या हम सचमुच विश्वास करते हैं? क्या हमारे पास सचमुच अब्राहम जैसा विश्वास है? हमारे विश्वास का स्वरूप वास्तव में क्या है? क्या हमारे विश्वास की शक्ति सचमुच अभी हमारे जीवन में प्रकट हो रही है? यीशु मसीह ने अपना लहू बहाया और क्रूस पर अपनी जान दे दी, जिससे हमारे सभी पापों की समस्या का समाधान हो गया; उनके द्वारा, हम परमेश्वर की संतान और मसीह यीशु के साथ सह-वारिस बन गए हैं—क्या हम सचमुच इन तथ्यों पर विश्वास करते हैं और उन्हें स्वीकार करते हैं? क्या हम, अब्राहम की तरह, सचमुच तब भी विश्वास और आशा रखते हैं जब आशा का कोई मानवीय आधार न हो? क्या हम सचमुच विश्वास करते हैं कि परमेश्वर ही वह है जो मरे हुओं को जीवन देता है और उन चीज़ों को अस्तित्व में लाता है जो अस्तित्व में नहीं हैं? अब्राहम की तरह—जिसका विश्वास तब भी नहीं डिगा जब उसने स्वीकार किया कि बुढ़ापे के कारण उसका अपना शरीर लगभग मृत हो चुका था, और उसकी पत्नी भी संतान उत्पन्न करने की उम्र पार कर चुकी थी—क्या हम भी अभी ऐसा जीवन जी रहे हैं जो परमेश्वर की महिमा करता है? क्या हमें पूरा यकीन है कि परमेश्वर ठीक वही पूरा करने में सक्षम है जिसका उसने वादा किया है? कृपया 2 कुरिन्थियों 13:5 देखें: “अपने आप को परखो कि तुम विश्वास में हो या नहीं। अपनी जाँच करो। क्या तुम अपने आप को नहीं जानते कि यीशु मसीह तुम में है?—जब तक कि तुम सचमुच अयोग्य न हो।” क्लेश आने से पहले हमें अपनी जाँच करनी चाहिए और अपनी स्थिति की पुष्टि करनी चाहिए। हमें अपने विश्वास की बारीकी से जाँच करनी चाहिए ताकि यह देख सकें कि क्या हमारे पास उस तरह का दृढ़ विश्वास है जो क्लेश का स्वागत

करता है—एक ऐसा विश्वास जो उत्पीड़न का सामना करने पर भी अडिग रहता है। इस प्रकार, हमें अपनी स्थिति की पुष्टि करनी चाहिए। मेरी यह प्रार्थना है कि इस प्रकार स्वयं को पूरी तरह तैयार करके, हम क्लेश और उत्पीड़न के बीच भी अपने विश्वास को बनाए रखें, विश्वास की इस दौड़ को पूरा करें, और जब हम प्रभु के सम्मुख खड़े हों, तो विजय का मुकुट प्राप्त करें।

धार्मिक ठहराए जाने के परिणाम (1): परमेश्वर के साथ शांति का आनंद लेना

"इसलिए, जब हम विश्वास से धार्मिक ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें" (रोमियों 5:1)।

बाइबल के रोमियों 5:1 में कहा गया है, "...परमेश्वर के साथ मेल रखें।" धार्मिक ठहराए जाने का पहला परिणाम परमेश्वर के साथ शांति का आनंद लेना है (पद 1)। हमारा परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हुआ है (पद 1) (पद 10) (भूतकाल)। जब हम "अभी भी शक्तिहीन" थे (पद 6), जब हम "अभी भी पापी" थे (पद 8), और जब हम "परमेश्वर के शत्रु" थे (पद 10), तब मसीह हमारे लिए मर गए (पद 8); और क्योंकि हम उनके लहू के द्वारा धार्मिक ठहरे हैं (पद 9), इसलिए हमारा परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप हो गया है (पद 10) [धार्मिक ठहराए जाने की विधि/माध्यम/मार्ग: विश्वास ("इसलिए, जब हम विश्वास से धार्मिक ठहरे...") (5:1)]। परमेश्वर ने मसीह के द्वारा हमारा अपने साथ मेल-मिलाप कराया (2 कुरिन्थियों 5:18)। इसलिए, हमें अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ शांति का आनंद लेना चाहिए (रोमियों 5:1) (वर्तमान काल)। यह तथ्य कि हम—जो कभी परमेश्वर के शत्रु थे (पद 10)—अब परमेश्वर की संतान बन गए हैं (8:16) और अब हम उन्हें "अब्बा, पिता" कहकर पुकारने में सक्षम हैं (पद 15), यह सब केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा संभव हुआ है (रोमियों 5:1), जो परमेश्वर और हमारे बीच एकमात्र मध्यस्थ हैं (1 तीमुथियुस 2:5)। चूंकि हमारा परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा पहले ही हो चुका है (भूतकाल), इसलिए अब हमें परमेश्वर के साथ शांति का आनंद लेना चाहिए (वर्तमान काल)।

यहाँ, परमेश्वर के साथ “शांति का आनंद लेने” वाक्यांश का अर्थ उस शांति में “प्रसन्न होना” भी है [तुलना करें: (रोमियों 5:2) “जिसके द्वारा विश्वास के कारण उस अनुग्रह तक हमारी पहुंच भी हुई, जिसमें हम स्थिर हैं; और परमेश्वर की महिमा की आशा पर घमण्ड करें”; (5:11) “और केवल यही नहीं, वरन् हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर पर घमण्ड भी करते हैं, जिसके द्वारा अब हमारा मेल हुआ है”]। तो फिर, हम परमेश्वर के साथ शांति का आनंद कैसे ले सकते हैं? हमें उस मन की शांति का आनंद लेना चाहिए जो परमेश्वर स्वर्ग से प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, क्योंकि पौलुस और सीलास ने परमेश्वर द्वारा दी गई मन की शांति का आनंद लिया, इसलिए वे जेल की कोठरी की गहराइयों में बंद होने पर भी उससे प्रार्थना करने और उसकी स्तुति गाने में समर्थ हुए (प्रेरितों के काम 16:24–25)। जब हम भी उस मन की शांति का आनंद लेते हैं जो परमेश्वर स्वर्ग से प्रदान करता है, तो हम इस प्रकार उसकी स्तुति कर सकते हैं: "मैं कहीं भी क्यों न होऊँ, मेरा हृदय सदैव शांत रहता है; प्रभु यीशु द्वारा दी गई शांति मुझमें सदा भरपूर रहती है" (New Hymnal 408, "Wherever I May Be," पद 1); "जब आकाश में बादल घिर आते हैं और महा-तुरही बज उठती है—जब प्रभु संसार का न्याय करने के लिए लौटता है—तो मेरी आत्मा को कोई भय नहीं होगा। मेरी आत्मा के साथ सब कुशल है; सब कुशल है, मेरी आत्मा के साथ सब कुशल है" (New Hymnal 413, "It Is Well with My Soul," पद 4 और कोरस)। उस मन की शांति का आनंद लेने के लिए जो परमेश्वर स्वर्ग से प्रदान करता है, हमें यीशु की "दोहरी आज्ञा" का पालन करना चाहिए। कृपया मत्ती 22:37–40 देखें: "यीशु ने उससे कहा, 'तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से, और अपनी सारी आत्मा से, और अपनी सारी बुद्धि से प्रेम रखना।' यह सबसे बड़ी और पहली आज्ञा है। और दूसरी आज्ञा भी इसी के समान है: 'तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना।' इन्हीं दो आज्ञाओं पर सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की बातें आधारित हैं।" जब हम यीशु की इस दोहरी आज्ञा का पालन करते हैं, तो परमेश्वर का प्रेम वास्तव में हमारे भीतर पूर्ण हो जाता है (1 यूहन्ना 2:5)। जैसे-जैसे परमेश्वर का प्रेम इस प्रकार हमारे भीतर पूर्ण होता जाता है और हम ज्योति में बने रहते हैं, वैसे-वैसे हमारे भीतर कोई ठोकर का कारण नहीं रहता—ऐसी कोई भी बात नहीं रहती जो हमें ठोकर खिला सके (पद 10)। परिणामस्वरूप, हम उस हृदय की शांति का आनंद लेने लगते हैं जो परमेश्वर स्वर्ग से प्रदान करता है। इसके अलावा, मन की इस स्वर्गीय शांति का आनंद लेने के लिए, हमें अपनी नज़रें मसीह यीशु पर टिकाए रखनी चाहिए—जो परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान हैं (मरकुस

16:19; इब्रानियों 8:1; 10:12) और हमारे लिए मध्यस्थता करते हैं (रोमियों 8:34)—और साथ ही "यीशु पर, जो हमारे विश्वास के स्रोत हैं और उसे पूर्णता तक पहुँचाने वाले हैं" (इब्रानियों 12:2)।

धर्मी ठहराए जाने का परिणाम परमेश्वर के साथ शांति का आनंद लेना है। चूँकि हम सभी विश्वास के द्वारा—केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से—धर्मी ठहराए गए हैं, इसलिए हमें परमेश्वर के साथ इस शांति का आनंद लेना चाहिए और उसमें प्रसन्न होना चाहिए (रोमियों 5:1)। मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप और मैं ऐसे लोग बनें जो इस बात को केवल बौद्धिक रूप से ही न जानते हों, बल्कि जो अपने दैनिक जीवन की वास्तविकता में परमेश्वर के साथ इस शांति का सचमुच स्वाद लें और उसका अनुभव करें।

धार्मिक ठहराए जाने के परिणाम (2): उस अनुग्रह तक पहुँच प्राप्त करना जिसमें हम विश्वास द्वारा स्थिर हैं

“उसी के द्वारा विश्वास से उस अनुग्रह तक हमारी पहुँच भी हुई, जिसमें हम स्थिर हैं; और परमेश्वर की महिमा की आशा पर हम घमण्ड करें” (रोमियों 5:2)।

धार्मिक ठहराए जाने का आधार केवल “हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा” है (रोम 5:1)। धार्मिक ठहराए जाने का माध्यम “विश्वास द्वारा” है (पद 1)। धार्मिक ठहराए जाने का पहला परिणाम यह है कि जिस व्यक्ति को धर्मी घोषित किया गया है (धार्मिक ठहराया गया है), वह परमेश्वर के साथ शांति का आनंद लेता है (पद 1)। उदाहरण के लिए, विश्वास में एक बहन पर विचार करें जो एक मसीही परिवार में पली-बढ़ी। जैसे-जैसे वह बड़ी हुई, उसे परमेश्वर की स्तुति और आराधना करने की आदत हो गई। हालाँकि, एक समय ऐसा आया जब उसे अपने ही पापों का गहरा एहसास हुआ; अपराध-बोध से अभिभूत होकर, उसे परमेश्वर के पास जाने से डर लगने लगा और ऐसा करने के प्रति उसके मन में अरुचि पैदा हो गई। वह कलीसिया (चर्च) जाती रही, लेकिन केवल एक कर्तव्य समझकर। उसके पास न तो कोई आनंद था, और न ही उसके हृदय में कोई शांति थी। फिर, उसे धार्मिक ठहराए जाने के सिद्धांत की समझ प्राप्त हुई। यह महसूस करते हुए कि उसके सभी पापों—आदि पाप, साथ ही उसके अतीत, वर्तमान और भविष्य के अपराधों—को क्षमा कर दिया गया है, उसने पाप से मुक्ति का अनुभव किया, और साथ ही आनंद, शांति, प्रेम और सेवा करने की इच्छा भी पाई। अब, वह अपने पड़ोसियों के लिए प्रार्थना करती है। ऐसे बहुत से लोग हैं जो बीमार हैं; जब वह सोचती है कि यदि वे बिना उद्धार पाए इस संसार से चले जाते हैं, तो उन्हें अनंत नरक का सामना करना पड़ेगा, तो उसका

हृदय करुणा से भर जाता है। परिणामस्वरूप, उसने उनके लिए प्रार्थना करने को अपनी दिनचर्या बना लिया है। वह उन लोगों के लिए भी पूरी लगन से और प्रतिदिन—उसी करुणा भरे हृदय के साथ—प्रार्थना करती है जो शारीरिक रूप से स्वस्थ हैं, यह जानते हुए कि यदि वे यीशु पर विश्वास नहीं करते, तो उन्हें भी नरक का सामना करना पड़ेगा। इसके अलावा, क्योंकि वह स्वयं शारीरिक बीमारियों से पीड़ित है जिसके कारण उसकी सक्रिय रहने की क्षमता सीमित हो जाती है, इसलिए वह अपना समय प्रार्थना में समर्पित करती है। धार्मिक ठहराए जाने के ये परिणाम (या फल) कितने अनमोल हैं!

कृपया आज के हमारे मूल पाठ, रोमियों 5:2 पर दृष्टि डालें: "उसी के द्वारा विश्वास से उस अनुग्रह तक हमारी पहुँच भी हुई, जिसमें हम स्थिर हैं; और परमेश्वर की महिमा की आशा पर हम घमण्ड करें।" यहाँ, हम धार्मिक ठहराए जाने के दूसरे परिणाम को देख सकते हैं। इसका अर्थ यह है कि जिन लोगों को धर्मी ठहराया गया है—यानी, जिन्हें नेक घोषित किया गया है—उन्होंने, उसके द्वारा, विश्वास के माध्यम से उस अनुग्रह तक पहुँच प्राप्त कर ली है जिसमें हम अब खड़े हैं (पद 2)। यहाँ, वाक्यांश "भी उसके द्वारा" (पद 2) में, सर्वनाम "उसके" का संदर्भ "हमारे प्रभु यीशु मसीह" से है, जैसा कि रोमियों 5:1 में बताया गया है। इसके अलावा, वाक्यांश "हम... विश्वास द्वारा" (पद 2) में, सर्वनाम "हम" का संदर्भ विश्वासियों से है—विशेष रूप से, प्रेरित पौलुस और रोमन कलीसिया के संतों से। व्यापक अर्थ में, यह कहा जा सकता है कि इसका संदर्भ उन सभी लोगों से है जो यीशु पर अपना विश्वास रखते हैं। वाक्यांश "विश्वास द्वारा" (पद 2) में "विश्वास" शब्द के संबंध में, यह ध्यान दिया जाता है कि यह शब्द कुछ बाइबिल की हस्तलिपियों में अनुपस्थित है; हालाँकि, यह दूसरों में दिखाई देता है। बाइबिल का कोरियाई अनुवाद उन हस्तलिपियों पर आधारित है जिनमें "विश्वास" शब्द शामिल है।

रोमियों 5:2 की जाँच करते समय, पाठ कहता है, "...[हमने] इस अनुग्रह तक पहुँच प्राप्त कर ली है..." यहाँ, शब्द "अनुग्रह" एक ऐसे उपहार को संदर्भित करता है जो उन लोगों को बिना शर्त और बिना किसी कीमत के प्रदान किया जाता है जो इसके अयोग्य हैं—उदाहरण के लिए, पापी, जिनके पास ऐसे आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए कोई अंतर्निहित योग्यता नहीं है। पाठ विशेष रूप से इस वाक्यांश का उपयोग करता है, "...पहुँच प्राप्त कर ली है।" जबकि हम आमतौर पर अनुग्रह "प्राप्त करने" की बात करते हैं, रोमियों 5:2 इसे अनुग्रह में "प्रवेश करने" के रूप में वर्णित करता है। "अनुग्रह में प्रवेश करने" की अवधारणा—न कि केवल

इसे एक स्थिर वस्तु के रूप में प्राप्त करना—अनुग्रह के एक विशिष्ट स्थान या क्षेत्र को संदर्भित करती है। तो फिर, अनुग्रह का यह स्थान या क्षेत्र कहाँ है? हम पुराने नियम की मंदिर प्रणाली—विशेष रूप से, राजा सुलैमान द्वारा निर्मित मंदिर—की जाँच करके कुछ अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं। मंदिर का पर्दा अपनी इच्छा से खोलने और बंद करने के लिए डिज़ाइन नहीं किया गया था; बल्कि, इसने एक स्थायी विभाजन के रूप में कार्य किया जो पवित्र स्थान को परम पवित्र स्थान से अलग करता था। परम पवित्र स्थान के भीतर वाचा का संदूक (जिसमें व्यवस्था की दो पत्थर की पटियाँ, हारून की कली वाली लाठी, और मन्ना रखा था) स्थित था। प्रायश्चित के आसन—जो संदूक का ढक्कन था—पर प्रायश्चित का लहू छिड़का जाता था। इसी परम पवित्र स्थान के भीतर परमेश्वर की उपस्थिति निवास करती थी; परमेश्वर की महिमा उस पर उतर आती थी, जिससे 'परम पवित्र स्थान' (Most Holy Place) एक दिव्य प्रकाश से भर जाता था। यह वह स्थान है जहाँ अनुग्रह प्रदान किया जाता है। किसी को भी इसमें प्रवेश करने की अनुमति नहीं थी। इसमें प्रवेश करने का अर्थ था निश्चित मृत्यु। हालाँकि, वर्ष में एक बार, महायाजक प्रायश्चित का बलिदान चढ़ाने के लिए इसमें प्रवेश करता था। धर्मी ठहराए जाने का फल ठीक यही है—'परम पवित्र स्थान' में प्रवेश करने का विशेषाधिकार। "विश्वास के द्वारा हम इस अनुग्रह तक पहुँच पाए हैं" (पद 2)—इस वाक्यांश का ठीक यही अर्थ है। यह कैसे संभव हुआ? यह "उसके द्वारा" (पद 2)—अर्थात् "हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा" (पद 1)—संभव हुआ। यीशु मसीह के द्वारा—वह मध्यस्थ जिसने हमारे पापों का बोझ उठाया, क्रूस पर अपने प्राण दिए, और कब्र से जी उठा—हमें 'परम पवित्र स्थान' में प्रवेश करने की अनुमति मिली है। यीशु मसीह के मार्गदर्शन में, हम इस अनुग्रह में प्रवेश करने में समर्थ होते हैं। यदि हम अपनी शक्ति से 'परमप्रधान परमेश्वर' के समीप जाते, तो निश्चित रूप से हमें मृत्यु का सामना करना पड़ता। फिर भी, यीशु मसीह के मार्गदर्शन में प्रवेश करके, हम परमेश्वर की साक्षात उपस्थिति के अत्यंत निकट पहुँच पाते हैं। धर्मी ठहराए जाने का यही वह महान आशीष है जो हमें प्राप्त हुआ है।

बाइबल, रोमियों 5:2 में, "खड़े होने" (standing) की बात करती है। अनुग्रह के उस स्थान पर खड़े होने का अर्थ निम्नलिखित है: क्योंकि हमें धर्मी ठहराया गया है—विश्वास के द्वारा (जो धर्मी ठहराए जाने का साधन है) और हमारे प्रभु यीशु मसीह की योग्यता के आधार पर (जो धर्मी ठहराए जाने का आधार है)—इसलिए,

परमेश्वर की संतान के रूप में, अब हम 'परम पवित्र स्थान' में—जो अनुग्रह का स्थान और क्षेत्र है—प्रवेश करने और परमेश्वर की उपस्थिति में निरंतर खड़े रहने में समर्थ हैं।

यीशु मसीह एक प्रायश्चित बलिदान के रूप में आए; उन्होंने हमारे सभी पापों का बोझ उठाया, क्रूस पर अपना लहू—अपना जीवन ही—बहा दिया, और मर गए; इस प्रकार उन्होंने हमारी जगह उस अनंत दंड को सहा जिसके हम सही हकदार थे। यह यीशु मसीह के उस महान कार्य के कारण ही है जो उन्होंने क्रूस पर पूरा किया, कि हमें धर्मी ठहराया गया है। परिणामस्वरूप, यीशु मसीह के द्वारा, हम परमेश्वर की उपस्थिति में जाने, उनके सामने जीवन जीने और उनका संरक्षण प्राप्त करने में समर्थ हुए हैं। यह "विश्वास के द्वारा" ही है कि हमने इस अनुग्रह में प्रवेश किया है, और यह "विश्वास के द्वारा" ही है कि हमने यह विशेषाधिकार प्राप्त किया है। बाइबल के इन शब्दों पर विचार करें जो इब्रानियों 4:15–16 में लिखे हैं: “क्योंकि हमारा महायाजक ऐसा नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके; वरन् वह सब बातों में हमारी नाईं परखा तो गया, तौभी निष्पाप रहा। इसलिये आओ, हम हियाव बांधकर अनुग्रह के सिंहासन के निकट आएं, कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह मिले जो संकट के समय हमारी सहायता करे।” हम ही वे लोग हैं जिन्हें यह असाधारण विशेषाधिकार प्रदान किया गया है—परमेश्वर के निकट साहस के साथ जाने का विशेषाधिकार। हम परमेश्वर के निकट इतने आत्मविश्वास के साथ क्यों जाते हैं? ऐसा इसलिए है ताकि हम उनकी दया प्राप्त कर सकें और वह अनुग्रह पा सकें जो हमारी ज़रूरत के समय हमारी सहायता करता है (इब्रानियों 4:16)। जैसे-जैसे हम इस जीवन की यात्रा तय करते हैं, हमारा सामना हर तरह की परिस्थितियों से होता है—कभी अनुकूल, तो कभी कठिन; इसलिए, उस अनुग्रह को पाने के लिए जो ठीक उसी समय हमारी सहायता करता है जब हमें उसकी सबसे अधिक आवश्यकता होती है, हमें साहसपूर्वक परमेश्वर के अनुग्रह के सिंहासन के निकट जाना चाहिए और अपनी प्रार्थनाएँ उनके सामने रखनी चाहिए। वह स्थान वास्तव में, अनुग्रह का ही आसन है। चाहे हमें किसी भी प्रकार के परीक्षणों या क्लेशों का सामना क्यों न करना पड़े, हमें परमेश्वर के निकट जाना चाहिए, अपनी विनतियाँ उनके सामने रखनी चाहिए, और इस प्रकार उनकी ईश्वरीय सहायता प्राप्त करनी चाहिए।

जब यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया, तो एक चमत्कारी घटना घटी। ऐसा ही एक चमत्कार बाइबल में, मत्ती 27:50–51 में दर्ज है: "और यीशु ने फिर बड़े शब्द से चिल्लाकर प्राण त्याग दिए। और देखो, मन्दिर का पर्दा ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया..." यद्यपि एक समय ऐसा था जब हम पवित्रस्थान के पर्दे के कारण 'परम पवित्र स्थान' (Most Holy Place) में प्रवेश करने में असमर्थ थे, परंतु अब यीशु मसीह की मृत्यु ने हमारे लिए वहाँ प्रवेश करना संभव बना दिया है। कृपया इब्रानियों 10:19–20 देखें: "इसलिए, भाइयों, क्योंकि हमें यीशु के लहू के द्वारा 'परम पवित्र स्थान' में प्रवेश करने का भरोसा है, उस नए और जीवित मार्ग से जो हमारे लिए परदे के द्वारा खोला गया है—अर्थात्, उसका शरीर।" "उसका शरीर" का तात्पर्य यीशु मसीह के भौतिक शरीर से है।

इसलिए, जब हम इस संसार में परदेसी के रूप में जीवन बिताते हैं, तो चाहे हमें कैसी भी परिस्थितियों का सामना क्यों न करना पड़े, हमें यीशु मसीह के द्वारा—उस परमेश्वर के पास—जो हमारी सहायता करने में पूरी तरह सक्षम है, निडर होकर जाना चाहिए, और अपने निवेदन साहसपूर्वक उसके सामने रखने चाहिए। क्योंकि हम यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के पास गए हैं, इसलिए वह यीशु मसीह की ओर देखेगा और हमारी प्रार्थनाओं को स्वीकार करेगा। इसलिए, आइए हम सब यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के निकट जाएं—जो अनुग्रह का मूल स्रोत है—और साहस के साथ उससे प्रार्थना करें।

धार्मिक ठहराए जाने के परिणाम (3): परमेश्वर की महिमा की आशा में आनंदित होना

“उसी के द्वारा विश्वास से उस अनुग्रह तक हमारी पहुंच भी हुई, जिसमें हम स्थिर हैं; और परमेश्वर की महिमा की आशा पर हम घमण्ड करें” (रोमियों 5:2)।

रोमियों 5:2 में, बाइबल कहती है, “हम परमेश्वर की महिमा की आशा पर घमण्ड करें।” धार्मिक ठहराए जाने का तीसरा परिणाम यह है कि हम परमेश्वर की महिमा की आशा में आनंदित होते हैं (पद 2)। तो फिर, इस संदर्भ में “परमेश्वर की महिमा” का क्या अर्थ है?

सबसे पहले, आइए हम परमेश्वर की उस महिमा पर विचार करें जो *पहले ही* प्रकट हो चुकी है।

रोमियों 5:1–2 परमेश्वर की महिमा के तीन पहलुओं की बात करता है। यद्यपि हम अपने पाप के कारण परमेश्वर की महिमा से वंचित हो गए थे (3:23), फिर भी अब हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा विश्वास से धार्मिक ठहराए गए हैं (5:1–2)। हम, जो कभी परमेश्वर के शत्रु थे, अब उसके पुत्र, यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा उसके साथ मेल-मिलाप कर चुके हैं (पद 10), और अब हम परमेश्वर के साथ शांति का आनंद लेते हैं (पद 1)। “अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा” (पद 1, 2), हमने परमेश्वर के अनुग्रह के सिंहासन तक पहुंच प्राप्त कर ली है और अब उसमें दृढ़ता से खड़े हैं (पद 2)। हम परमेश्वर की महिमा की आशा में आनंदित (या घमण्ड) होते हैं (पद 2)। महिमा के ये तीन पहलू जो पहले ही प्रकट हो चुके हैं, अभी 100% पूर्ण नहीं हैं।

वास्तव में, यदि परमेश्वर अभी अपनी 100% पूर्ण महिमा को पूरी तरह से प्रकट कर दे, तो हम उसे पूरी तरह से समझ नहीं पाएंगे।

इसके बाद, आइए हम परमेश्वर की उस महिमा पर विचार करें जो अभी (*अभी तक नहीं*) प्रकट होनी बाकी है।

संक्षेप में कहें तो, परमेश्वर की वह महिमा जो अभी प्रकट होनी बाकी है, वह यीशु का दूसरा आगमन है। परमेश्वर की जो महिमा भविष्य में प्रकट होगी, वह एक ऐसी महिमा है जो 100% पूर्ण और अनंत है; उस समय, हम परमेश्वर को आमने-सामने देखेंगे (1 कुरिन्थियों 13:12)। परमेश्वर की यह महिमा हमारी भी महिमा है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर पिता की महिमा ही हमारी, यानी उसकी संतानों की महिमा है। बाइबल के रोमियों 5:1–2 में परमेश्वर की महिमा के जिन तीन पहलुओं का ज़िक्र है, वे परमेश्वर की उस महिमा के मुकाबले फीके पड़ जाते हैं जो अभी प्रकट होनी बाकी है। कहने का मतलब यह है कि परमेश्वर की जिस महिमा का आनंद हम अभी अपने प्रभु यीशु मसीह के ज़रिए उठा रहे हैं, उसकी तुलना उस महिमा से ठीक से नहीं की जा सकती जिसका आनंद हम तब उठाएँगे जब भविष्य में हमारे प्रभु यीशु लौटकर आएँगे (5:1–2; cf. 8:18)। परमेश्वर की उस महिमा के बारे में जो अभी प्रकट होनी बाकी है: जब यीशु प्रकट होंगे, तो हम भी उन्हीं जैसे बन जाएँगे और उन्हें वैसे ही देखेंगे जैसे वे असल में हैं (1 यूहन्ना 3:2); वे हमारे इस दीन-हीन शरीर को बदलकर अपने महिमामय शरीर जैसा बना देंगे (फिलिप्पियों 3:21)। हमारा विश्वास है कि परमेश्वर अपने साथ उन लोगों को भी लाएँगे जो यीशु पर विश्वास करते हुए मर चुके हैं। प्रभु के दूसरे आगमन तक, हम जो अभी जीवित हैं, उन लोगों से आगे नहीं जाएँगे जो पहले ही मर चुके हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि जब प्रभु स्वर्ग से एक ज़ोरदार हुक्म के साथ, महादूत की आवाज़ के साथ, और परमेश्वर की तुरही की आवाज़ के साथ उतरेंगे, तो जो लोग मसीह में मरे थे, वे सबसे पहले जी उठेंगे। उसके बाद, हम जो अभी जीवित हैं, उन्हें उनके साथ बादलों में ऊपर उठा लिया जाएगा ताकि हम हवा में प्रभु से मिल सकें, और इस तरह हम हमेशा के लिए प्रभु के साथ रहेंगे (1 थिस्सलोनिकियों 4:14–17)।

यह आशा—परमेश्वर की महिमा के बारे में हमारी यह उम्मीद—एक ऐसी आशा है जो 100% पक्की है (रोमियों 5:2)। इसका कारण यह है कि यह परमेश्वर की ओर से एक वादा है। जिस परमेश्वर ने यीशु के पहले आगमन का वादा किया था और उसे पूरा भी किया था, उसी ने यीशु के दूसरे आगमन का भी वादा किया है,

और वह निश्चित रूप से इसे भी पूरा करेगा। हम इस बात पर विश्वास इसलिए कर सकते हैं कि यीशु के दूसरे आगमन के समय, उनकी महिमा ही हमारी महिमा भी होगी, क्योंकि परमेश्वर ने पहले ही इसका वादा कर दिया है। कृपया बाइबल में रोमियों 8:30 (समकालीन कोरियाई संस्करण) देखें: "परमेश्वर ने उन लोगों को बुलाया जिन्हें उसने पहले से ही चुन लिया था; जिन्हें उसने बुलाया, उन्हें उसने धर्मी ठहराया; और जिन्हें उसने धर्मी ठहराया, उन्हें उसने महिमा भी दी।" यहाँ, क्रिया-पद "...महिमा भी दी" भूतकाल में है। अब, इफिसियों 2:5–6 पर नज़र डालें: "हमें मसीह के साथ जीवित किया ... और हमें उनके साथ उठाया, और हमें मसीह यीशु में स्वर्गीय स्थानों में उनके साथ बिठाया" [(समकालीन कोरियाई संस्करण) "उन्होंने हमें मसीह के साथ फिर से जीवित किया—हम जो अपने पापों के कारण आत्मिक रूप से मृत थे। परमेश्वर ने न केवल हमें मसीह के साथ जीवित किया, बल्कि हमें स्वर्गीय लोक में उनके साथ बैठने का सौभाग्य भी प्रदान किया"]। यहाँ, क्रियाएँ "...हमें साथ जीवित किया," "हमें साथ उठाया," और "हमें स्वर्गीय स्थानों में साथ बिठाया"—ये सभी भूतकाल में हैं। हम पहले ही यीशु के साथ पुनर्जीवित हो चुके हैं, उनके साथ ऊपर उठाए जा चुके हैं, और स्वर्गीय स्थानों में उनके साथ बिठाए जा चुके हैं। रोमियों 8:30 में, क्रिया "महिमान्वित किया," और इफिसियों 2:5–6 में, क्रियाएँ "...हमें साथ जीवित किया," "हमें साथ उठाया," और "हमें स्वर्गीय स्थानों में साथ बिठाया"—ये सभी भूतकाल में हैं। यहाँ भूतकाल का उपयोग करने का कारण यह दर्शाना है कि ये घटनाएँ पूरी तरह से, 100% निश्चित रूप से पूरी होंगी। इसलिए, क्योंकि हम यह आशा रखते हैं, हम 100% निश्चितता के साथ परमेश्वर की महिमा की प्रतीक्षा करते हैं और विश्वास में आनंद मनाते हैं (रोमियों 5:2)। यह आनंद उद्धार का आनंद है; यह सच्चा आनंद है, और यह शाश्वत आनंद है। जब हम इस आशा के भीतर ऐसे आनंद को धारण करते हैं, तो हम परमेश्वर की महिमा पर गर्व किए बिना नहीं रह सकते (पद 2)। परमेश्वर की महिमा ही मेरी महिमा है!

धार्मिक ठहराए जाने के परिणाम (4): कष्टों में आनंद

“न केवल यह, बल्कि हम अपने कष्टों में भी आनंद मनाते हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि कष्ट से धीरज उत्पन्न होता है; धीरज से चरित्र; और चरित्र से आशा” (रोमियों 5:3–4)।

यहाँ, इस वाक्यांश में—"न केवल यह, बल्कि हम अपने कष्टों में भी आनंद मनाते हैं" (पद 3)—"न केवल यह" अभिव्यक्ति उस बात की ओर संकेत करती है जो रोमियों 5:2 के उत्तरार्ध में कही गई थी: "...और हम परमेश्वर की महिमा की आशा में आनंद मनाते हैं।" दूसरे शब्दों में, इसका तात्पर्य यह है कि हमारा आनंद केवल परमेश्वर की महिमा की आशा में आनंद मनाने तक ही सीमित नहीं है। यहाँ, "परमेश्वर की महिमा"—वह महिमा जिसकी हम आशा करते हैं—और कोई नहीं, बल्कि स्वयं यीशु मसीह हैं, जो महिमा के साथ लौटेंगे। यदि हम बाइबल में यूहन्ना 19:30 को देखें, तो उसमें कहा गया है, "यह पूरा हुआ।" यह कथन उन शब्दों में से छठा शब्द है जो यीशु ने क्रूस से कहे थे। वह क्या था जिसे उन्होंने पूरा किया? वह ठीक-ठीक हमारा उद्धार (Redemption) था। यहाँ, "उद्धार" (Redemption) उस कार्य को संदर्भित करता है जिसके द्वारा यीशु मसीह ने अपना लहू बहाया—अपना जीवन ही बलिदान कर दिया (क्रूस पर अपनी मृत्यु)—ताकि हमारे समस्त पापों का मूल्य चुकाया जा सके, और इस प्रकार हमें पाप, शैतान और विनाश से छुड़ाया और बचाया जा सके। इस उद्धार (Redemption) को मुक्ति की प्रक्रिया का आरंभ कहा जा सकता है। प्रकाशितवाक्य 21:6 में, बाइबल यह भी घोषणा करती है, "यह हो गया!" इस वाक्यांश में ठीक उसी शब्द का प्रयोग किया गया है जिसका प्रयोग यीशु ने क्रूस पर तब किया था जब उन्होंने कहा था, "यह पूरा हुआ"; यद्यपि कोरियाई बाइबल में इसका अनुवाद "यह हो गया" के रूप में किया गया है, तथापि, कड़ाई से कहा

जाए तो, इसका अनुवाद "यह पूरा हुआ" के रूप में ही किया जाना चाहिए। वह क्या था जिसे उन्होंने पूरा किया? वह ठीक-ठीक हमारा मोक्ष (Salvation) था। "मोक्ष" (Salvation) एक व्यापक शब्द है जो संपूर्ण प्रक्रिया को अपने में समेटे हुए है—जिसकी शुरुआत उद्धार (Redemption) से होती है और जिसका समापन मोक्ष की पूर्णता में होता है। रोमियों 5:2 में, परमेश्वर की महिमा उस बात को संदर्भित करती है जिसे हमारे प्रभु यीशु मसीह (पद 1) ने पूर्ण रूप से संपन्न किया है (प्रकाशितवाक्य 21:6)। यह "संपन्न कार्य" न केवल उद्धार (Redemption) (यूहन्ना 19:30) को, बल्कि मोक्ष (Salvation) की पूर्णता (प्रकाशितवाक्य 21:6) को भी दर्शाता है। हमें परमेश्वर की इस महिमा की केवल आशा ही नहीं करनी चाहिए; बल्कि हमें इस आशा पर अडिग विश्वास रखना चाहिए (रोमियों 5:2)। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम क्लेशों के बीच भी आनंदित हो पाते हैं (पद 3)।

जिस महिमा की हम प्रतीक्षा कर रहे हैं, वह परमेश्वर की महिमा है—जो प्रभु के दूसरे आगमन पर, परमेश्वर की संतान के रूप में हमारी अपनी महिमा बन जाती है। परमेश्वर की उन संतानों के लिए, जो पहले ही इस संसार से विदा हो चुकी हैं, यह महिमा प्रभु के आगमन के साथ ही प्राप्त होती है; क्योंकि यद्यपि मृत्यु के समय उनके भौतिक शरीर पृथ्वी में गल गए, तथापि उनकी आत्माएँ पहले ही स्वर्गीय राज्य में पहुँच चुकी हैं (1 थिस्सलोनिकियों 4:14)। उस क्षण, हमारे नाशवान शरीर तुरंत और अचानक रूपांतरित हो जाएँगे, और अविनाशी तथा अमर शरीर धारण कर लेंगे (1 कुरिन्थियों 15:50–53), और यीशु के महिमामय शरीर के समान बन जाएँगे (फिलिप्पियों 3:21)। परमेश्वर की उन संतानों के लिए, जो उस समय जीवित रहेंगी, इस महिमा का अर्थ है तुरंत और अचानक रूपांतरित हो जाना (1 कुरिन्थियों 15:50) और यीशु के महिमामय शरीर के समान शरीर धारण कर लेना (फिलिप्पियों 3:21); तब वे बादलों में उठा लिए जाएँगे—परमेश्वर की उन मृत संतानों के साथ, जिनका पुनरुत्थान पहले ही हो चुका होगा (1 थिस्सलोनिकियों 4:16) और जो तुरंत रूपांतरित हो चुकी होंगी (1 कुरिन्थियों 15:50)—ताकि हवा में प्रभु से मिल सकें (1 थिस्सलोनिकियों 4:17)। उस समय, चाहे वे परमेश्वर की संतानें हों जो पहले ही मर चुकी हैं, या वे जो तब तक जीवित रहेंगी, सभी रूपांतरित होकर यीशु के समान महिमामय शरीर धारण कर लेंगी (फिलिप्पियों 3:21), स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करेंगी, और प्रभु के साथ अनंतकाल तक निवास करेंगी (1 थिस्सलोनिकियों 4:17)। क्योंकि इस बात की आशा 100% निश्चित आशा है—एक ऐसी आशा जो कभी व्यर्थ सिद्ध नहीं होगी—इसलिए हम परमेश्वर की महिमा की आशा में आनंदित होते हैं (रोमियों 5:2)।

रोमियों 5:3 में, बाइबल कहती है: “हम अपने दुखों में भी आनंदित होते हैं।” यहाँ, शब्द "कष्ट" [या "मुसीबतें"] उन कठिनाइयों को नहीं दर्शाता जिनका अनुभव अविश्वासी लोग करते हैं, बल्कि उन मुसीबतों को दर्शाता है जिन्हें विश्वासी (संत) लोग सहते हैं—वे लोग जो यीशु पर अपना विश्वास रखते हैं; विशेष रूप से, वे कठिनाइयाँ जिनका सामना हम अपने विश्वास को बनाए रखने के दौरान करते हैं। प्रेरितों के काम 14:22 पर विचार करें: "...यह कहते हुए कि बहुत सी मुसीबतों के द्वारा ही हमें परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना है।" इसका यह अर्थ नहीं है कि स्वर्ग में प्रवेश पाने के लिए किसी को कष्ट सहना ही पड़ेगा। बल्कि, इसका अर्थ यह है कि, मसीही होने के नाते, हम प्रभु की खातिर कष्ट सहते हैं। हमारे लिए, कष्टों के बीच भी आनंद होता है। इसका कारण एक प्रतिफल (इनाम) का वादा है। मत्ती 5:11–12 को देखें: "धन्य हो तुम, जब लोग मेरे कारण तुम्हारी निंदा करें, तुम पर अत्याचार करें, और झूठे आरोप लगाकर तुम्हारे विरुद्ध हर प्रकार की बुराई कहें। आनंदित होओ और मगन होओ, क्योंकि स्वर्ग में तुम्हारा प्रतिफल बहुत बड़ा है।" जब हम प्रभु की खातिर कष्ट सहते हैं, तो हमारी आशा और भी अधिक दृढ़ हो जाती है। हमारा विश्वास—यह दृढ़ निश्चय कि हम परमेश्वर की महिमा में सहभागी होंगे—और भी अधिक पक्का हो जाता है। चूंकि जो कष्ट हम अभी सह रहे हैं, वे उस महिमा की तुलना में बिल्कुल ही नगण्य हैं जो एक दिन हम पर प्रकट होगी, इसलिए हम कठिनाइयों से गुज़रते हुए भी आनंदित हो पाते हैं (रोमियों 8:18)। इसलिए, मसीह की खातिर कष्ट सहने को एक सौभाग्य मानते हुए (फिलिप्पियों 1:29), हम आशा में आनंदित होते हैं (रोमियों 12:12)।

प्रेरित पौलुस ने अपने सुसमाचार प्रचार और मिशनरी कार्य के कारण बहुत सी मुसीबतों और कष्टों को सहा। 2 कुरिन्थियों 11:23–27 पर नज़र डालें: “...मैंने बहुत ज़्यादा मेहनत की है, मैं कई बार जेल में रहा हूँ, मुझे अनगिनत बार कोड़े मारे गए हैं, और मैंने कई बार मौत का सामना किया है। पाँच बार यहूदियों से मुझे चालीस कोड़ों में से एक कम कोड़ा मिला। तीन बार मुझे लाठियों से पीटा गया, एक बार मुझ पर पत्थर फेंके गए, तीन बार मेरा जहाज़ टूट गया, और मैंने एक रात और एक दिन खुले समुद्र में बिताया। मैं लगातार सफ़र में रहा हूँ। मुझे नदियों से खतरा रहा है, डाकुओं से खतरा रहा है, अपने साथी यहूदियों से खतरा रहा है, गैर-यहूदियों से खतरा रहा है; शहर में खतरा रहा है, गाँव में खतरा रहा है, समुद्र में खतरा रहा है; और झूठे विश्वासियों से खतरा रहा है। मैंने बहुत मेहनत और मशक्कत की है और कई बार बिना सोए रहा हूँ; मैंने भूख और प्यास का अनुभव किया है और कई बार बिना भोजन के रहा हूँ; मुझे ठंड लगी है और मैं नंगा रहा हूँ।”

प्रेरितों के काम 20:22–23 पर नज़र डालें: "और अब, पवित्र आत्मा की प्रेरणा से, मैं यरूशलेम जा रहा हूँ, यह जाने बिना कि वहाँ मेरे साथ क्या होगा। मैं बस इतना जानता हूँ कि हर शहर में पवित्र आत्मा मुझे चेतावनी देता है कि जेल और कठिनाइयाँ मेरा इंतज़ार कर रही हैं।" फिर भी, प्रेरित पौलुस ने घोषणा की, "मैं न केवल बंधे जाने के लिए, बल्कि प्रभु यीशु के नाम के लिए यरूशलेम में मरने के लिए भी तैयार हूँ" (21:13)। इसका कारण यह था कि उनके लिए, प्रभु से मिले अपने मिशन को पूरा करना—यानी परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार की गवाही देने का काम—उनकी अपनी जान से भी ज़्यादा कीमती था। प्रेरितों के काम 20:24 पर नज़र डालें: "फिर भी, मैं अपनी जान को अपने लिए कुछ भी नहीं समझता, बशर्ते मैं अपनी दौड़ पूरी कर सकूँ और उस काम को पूरा कर सकूँ जो प्रभु यीशु ने मुझे सौंपा है—यानी परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार की गवाही देने का काम।" हम प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने के काम में क्लेश और दुख से इसलिए पीछे नहीं हटते, क्योंकि स्वर्ग में हमारा इंतज़ार एक इनाम कर रहा है। कृपया प्रकाशितवाक्य 22:12 पर नज़र डालें: "देखो, मैं जल्द आ रहा हूँ, और मेरा इनाम मेरे साथ है, ताकि मैं हर किसी को उसके काम के अनुसार दे सकूँ।" यह इनाम हमेशा के लिए चमकेगा—आकाश के प्रकाश की तरह, तारों की तरह, और सूरज की तरह। कृपया दानिय्येल 12:3 देखें: "जो बुद्धिमान हैं, वे आकाश के प्रकाश की नाईं चमकेंगे; और जो बहुतों को धर्मी बनाते हैं, वे सदा सर्वदा तारों की नाईं चमकेंगे।" कृपया मत्ती 13:43 देखें: "तब धर्मी लोग अपने पिता के राज्य में सूर्य की नाईं चमकेंगे।"

मैं स्वयं से एक प्रश्न पूछता हूँ: 'क्या मैं अपने विश्वास को बनाए रखने के लिए क्लेश और दुख सह रहा हूँ?' यह एक बहुत ही प्रासंगिक प्रश्न है, यह देखते हुए कि उत्तर कोरिया और "देश C" के विश्वासी वास्तव में अपने विश्वास को बनाए रखने के लिए क्लेश और दुख सह रहे हैं। हालाँकि, हम अक्सर उस आनंद का अनुभव करने से चूक जाते हैं जो क्लेश के *बीच* भी पाया जा सकता है—केवल इसलिए क्योंकि हम वर्तमान में किसी भी क्लेश का सामना नहीं कर रहे हैं। क्योंकि हम आराम से रहने—और *और भी अधिक* आरामदायक जीवन जीने—पर इतना अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं, कि हम अपने आध्यात्मिक जीवन को बिना उस आनंद का स्वाद चखे ही बिता देते हैं जो क्लेश और दुख के साथ आता है (और यह बात हमारे कलीसियाई जीवन पर भी लागू होती है, जो अब बहुत अधिक आरामदायक हो गया है)। जैसे-जैसे वे विपत्तियाँ

और क्लेश निकट आ रहे हैं जो पूरी पृथ्वी पर छा जाने वाले हैं, क्या हम विश्वास के द्वारा उन पर विजय प्राप्त कर पाएँगे? हमें सुसमाचार प्रचार और मिशनरी कार्यों के लिए क्लेश और दुख को स्वीकार करने के लिए तत्पर रहना चाहिए। और ऐसे क्लेशों के बीच भी, हमें सच्चे आनंद का स्वाद लेना और उसका अनुभव करना चाहिए। मेरी यह प्रार्थना है कि, इन क्लेशों और दुखों से सफलतापूर्वक गुज़रने के बाद, जब हम अंततः प्रभु के सामने खड़े हों, तो हमें उनकी ओर से सराहना प्राप्त हो।

धार्मिक ठहराए जाने के परिणाम (5): आशा का भरोसा रखना

“इतना ही नहीं, बल्कि हम अपने दुखों में भी आनन्द मनाते हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि दुख से धीरज उत्पन्न होता है; धीरज से चरित्र; और चरित्र से आशा” (रोमियों 5:3–4)।

भले ही हम मसीहियों को अपने विश्वास के कारण क्लेशों का सामना करना पड़े—और, बेशक, तब भी जब हमें ऐसा न करना पड़े—हमें परमेश्वर की महिमा की आशा में आनन्द मनाना चाहिए। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक (Rev 3:7–13) में वर्णित फिलाडेल्फिया के कलीसिया की तरह, हमारा कलीसिया भी क्लेशों की अग्नि-परीक्षा के बीच मौजूद है (पद 9–10); फिर भी, भले ही हमारे पास बहुत कम सामर्थ्य हो, हमें प्रभु के वचन का पालन करना चाहिए और कभी भी उसके नाम का इन्कार नहीं करना चाहिए (पद 8)। क्लेशों के समय में हमें अपने विश्वास को बनाए रखना चाहिए। ऐसा करने के लिए, हमें परमेश्वर के अनुग्रह, पवित्र आत्मा की सहायता, और प्रभु के सम्भालने वाले हाथ की आवश्यकता होती है। तो फिर, हम क्लेशों के बीच आनन्द कैसे मना सकते हैं? हम आनन्द कैसे पा सकते हैं, जब शैतान—यह जानते हुए कि उसका समय बहुत कम है—लगातार और हर संभव तरीके से, हमें धोखा देने और यहाँ तक कि चुने हुए लोगों को भी ठोकर खिलाने का प्रयास करता है? शैतान हमें धोखा देने की कोशिश इसलिए करता है, क्योंकि अब हम शैतान की संतान नहीं रहे, बल्कि परमेश्वर के छुड़ाए हुए संतान बन गए हैं। फिलिप्पियों 1:28 पर विचार करें: “जो लोग तुम्हारा विरोध करते हैं, उनसे किसी भी तरह से मत डरो। यह उनके लिए इस बात का संकेत है कि वे नष्ट हो जाएँगे, लेकिन तुम्हारे लिए इस बात का संकेत है कि तुम बचाए जाओगे—और वह भी परमेश्वर

के द्वारा।" यह तथ्य कि हम—परमेश्वर के छुड़ाए हुए संतान होने के नाते—शैतान के छलावों के अधीन होते हैं, हमारे विरोधियों के लिए विनाश का संकेत है; फिर भी हमारे लिए, यह हमारे उद्धार का संकेत है। इसलिए, भले ही हमें अपने विरोधियों के हाथों सताव और क्लेश सहने पड़ें, हम फिर भी आनन्द मना सकते हैं, क्योंकि हम पहचानते हैं कि यही परीक्षाएँ हमारे उद्धार की गवाही देती हैं (रोमियों 5:3)। प्रेरित पौलुस ने क्लेशों के बीच भी आनन्द मनाया। प्रेरितों के काम 14:22 पर विचार करें: "उसने चेलों के हृदयों को दृढ़ किया, और उन्हें विश्वास में बने रहने के लिए प्रोत्साहित किया, यह कहते हुए कि परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए हमें अनेक क्लेशों से होकर गुज़रना होगा।" क्योंकि स्वर्ग का रास्ता एक संकरा मार्ग है—एक काँटों भरा रास्ता, क्रूस का रास्ता—इसलिए यह क्लेश, सताहट, संकट और दुख-तकलीफ़ों से भरा होता है। जब हम ऐसी मुश्किलों का सामना करते हैं, तो हमें अपनी नज़रें यीशु पर टिकाए रखनी चाहिए, जो हमसे पहले ही उस रास्ते पर चल चुके हैं। विश्वास की आँखों से, हमें यीशु की ओर देखना चाहिए—जिन्होंने क्रूस के रास्ते पर चलकर दिखाया—और, उनके दुखों पर मनन करते हुए, हमें परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए और आनंदित होना चाहिए। हमें धन्यवाद इसलिए देना चाहिए, क्योंकि यीशु के दुखों में सहभागी होना, अपने आप में परमेश्वर की ओर से एक कृपा है (फिलिप्पियों 1:29)। हमें आनंदित इसलिए होना चाहिए, क्योंकि स्वर्ग में हमारा इंतज़ार एक प्रतिफल कर रहा है (मत्ती 5:11–12)। जब हम इस विश्वास को पूरी निश्चितता के साथ मज़बूती से थामे रहते हैं, तो हम मुश्किलों के बीच भी आनंदित हो पाते हैं और, अंततः, विजयी होकर निकलते हैं। पौलुस ने ऐसी मुश्किलों को इसलिए सहा, ताकि वह यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार कर सके और अपने मिशनरी कार्य को पूरा कर सके (तुलना करें: 2 कुरिन्थियों 11:23–27)। पवित्र आत्मा ने पौलुस पर यह प्रकट किया कि हर शहर में "जंजीरें और क्लेश" उसका इंतज़ार कर रहे हैं (प्रेरितों के काम 20:23; 21:11)। फिर भी, इस बात से पूरी तरह अवगत होते हुए—और यह भली-भांति जानते हुए कि उसे कारावास और दुख-तकलीफ़ों का सामना करना पड़ेगा—पौलुस ज़रा भी नहीं हिचकिचाया; इसके विपरीत, अपने मिशन की गहरी भावना से प्रेरित होकर और प्रभु की पुकार का आज्ञापालन करते हुए, उसने सुसमाचार के प्रचार के लिए खुद को पूरे मन से समर्पित कर दिया, यहाँ तक कि वह शहादत (मार्टरडम) का सामना करने के लिए भी तैयार था (प्रेरितों के काम 20:24)। और इन तमाम मुश्किलों के दौरान, वह आनंदित होता रहा—वह अत्यंत आनंदित हुआ। यहाँ तक कि जेल में रहते हुए भी, यह देखकर कि मसीह के सुसमाचार का प्रचार

हो रहा है, उसने यह घोषणा की: "मैं आनंदित होऊँगा, और मैं निरंतर आनंदित होता रहूँगा" (फिलिप्पियों 1:18)। यह केवल पौलुस की ही बात नहीं थी; अन्य प्रेरित भी अपनी मुश्किलों के बीच आनंदित हुए। कृपया बाइबल में प्रेरितों के काम 5:41 देखें: "प्रेरित लोग महासभा (Sanhedrin) से यह कहते हुए चले गए कि वे आनंदित हैं, क्योंकि उन्हें उस 'नाम' (यीशु के नाम) की खातिर अपमान सहने के योग्य समझा गया था।" यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करते समय प्रेरित आनंदित कैसे हो पाए? इसका कारण यह था कि वे यह समझते थे कि सुसमाचार का प्रचार करना, परमेश्वर के लिए असीम महिमा का विषय है। जो लोग कभी परमेश्वर के शत्रु थे (रोम 5:10)—या, पौलुस के मामले में, "पापियों में सबसे बुरा" (1 तीमु 1:15)—वे यीशु मसीह के क्रूस के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप कर पाए; उन्हें मेल-मिलाप की सेवा और मेल-मिलाप का संदेश सौंपा गया (2 कुरि 5:18–19), जिससे वे मसीह की ओर से सुसमाचार सुनाने में समर्थ हुए। यह सचमुच कितना आनंदमय और सुखद सौभाग्य है!

यह पहचानते हुए कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का सुसमाचार सुनाना असीम महिमा का विषय है, हमें यीशु मसीह का सुसमाचार केवल परमेश्वर के अनुग्रह से ही सुनाना चाहिए। यद्यपि हम यीशु मसीह का सुसमाचार सुनाने की बात करते हैं, फिर भी हम पादरी लोग अक्सर उपदेश देने के बाद भी शर्म और अपर्याप्तता का अनुभव करते हैं। फिर भी, जब हम उन विश्वासियों को देखते हैं जिन्होंने उपदेश सुना है—जो परमेश्वर के वचन को समझते हैं, उसे विश्वास से ग्रहण करते हैं, और उसका पालन करते हैं—और उनमें परिवर्तन आता है, तो हम यह घोषित किए बिना नहीं रह सकते कि यह परमेश्वर का अनुग्रह है, क्योंकि स्वयं परमेश्वर ही कार्य कर रहे हैं। परमेश्वर का यह कार्य वैसा ही है जैसा थिस्सलोनीके की कलीसिया के विश्वासियों के बीच हुआ था: घोर क्लेश के बीच भी, उन्होंने पवित्र आत्मा द्वारा दिए गए आनंद के साथ वचन को ग्रहण किया, और इस प्रकार वे पौलुस, उसके सहकर्मियों और स्वयं प्रभु के अनुकरणकर्ता बन गए—और, इसके अलावा, वे सभी विश्वासियों के लिए उदाहरण बन गए (1 थिस्स 1:6–7)। इसके अतिरिक्त, थिस्सलोनीके की कलीसिया के विश्वासी स्वर्ग से परमेश्वर के पुत्र के लौटने की बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे थे, जिसे उसने मरे हुओं में से जिलाया था (पद 10)। थिस्सलोनीके की कलीसिया के विश्वासियों की तरह, हमें भी परमेश्वर के वचन को पवित्र आत्मा के आनंद के साथ ग्रहण करना चाहिए और प्रभु के अनुकरणकर्ता बनने का प्रयास करना चाहिए। इसके अलावा, हमें भी यीशु के दूसरे आगमन की प्रतीक्षा करनी चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने

की थी। जब हम यीशु मसीह का सुसमाचार सुनाते हैं, तो जब भी—परमेश्वर के अनुग्रह से—कोई एक भी आत्मा यीशु मसीह पर विश्वास करती है और उद्धार पाती है, तो परमेश्वर का आनंद और स्वर्ग का आनंद हमारा अपना आनंद बन जाना चाहिए। हमें अपनी दृष्टि सुसमाचार सुनाने के आनंद और उसके साथ मिलने वाले प्रतिफलों पर स्थिर रखनी चाहिए। अपने हृदयों में इस आनंद को लिए हुए और अपनी दृष्टि इन प्रतिफलों पर स्थिर रखते हुए, हमें आगे बढ़ना चाहिए और यीशु मसीह का सुसमाचार सुनाना चाहिए। दुख और मुसीबतों के बीच भी, हमें पूरी निष्ठा के साथ यीशु के दूसरे आगमन की तैयारी करनी चाहिए; ईश्वर की महिमा की ओर देखते हुए, हमें आशा के उस दृढ़ और अटूट भरोसे को थामे रखना चाहिए। हमें सदैव सतर्क और संयमित रहना चाहिए, तथा अपना पूरा ध्यान प्रार्थना और ईश्वर के वचन पर केंद्रित रखना चाहिए। आज ईश्वर ने हमें जो वचन दिया है, उसे ध्यान में रखते हुए, मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम मुसीबतों के दौर में भी विजयी होकर उभरें।

धार्मिक ठहराए जाने के परिणाम (6): एक परिपूर्ण आशा की प्राप्ति कष्ट, धीरज और चरित्र के माध्यम से

“न केवल इतना ही, बल्कि हम अपने कष्टों में भी आनंद मनाते हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि कष्ट से धीरज उत्पन्न होता है; धीरज से चरित्र; और चरित्र से आशा” (रोमियों 5:3–4)।

बाइबल, रोमियों 5:3 में कहती है: “कष्ट से धीरज उत्पन्न होता है।” कष्टों के बीच हमारे आनंदित होने का ठीक यही कारण है कि “कष्ट से धीरज उत्पन्न होता है” (रोम 5:3)। पवित्र शास्त्र “धीरज” के विषय में विस्तार से बात करता है। उदाहरण के लिए, लूका 18:1–9 में, यीशु ने प्रार्थना में आवश्यक धीरज के बारे में बात की। यीशु ने स्वयं प्रार्थना में ऐसे धीरज का एक उत्तम उदाहरण प्रस्तुत किया। गेथसेमानी के बाग में यीशु की प्रार्थना पर विचार करें। यीशु ने तीन बार प्रार्थना की। वह अंत तक प्रार्थना में डटे रहे, और उत्तर की प्रतीक्षा करते रहे (मत्ती 26:36–42)। क्रूस से यीशु का छठा वचन—उनके सात अंतिम वचनों में से एक—यह था, “पूरा हुआ” (यूहन्ना 19:30)। यह कथन दर्शाता है कि यीशु क्रूस पर अपने कष्टों के बीच अंत तक डटे रहे, और इस प्रकार उन्होंने सभी बातों को पूर्णता तक पहुँचाया। इसके अतिरिक्त, रोमियों 5:4 कहता है: “धीरज से चरित्र उत्पन्न होता है।” कष्ट से धीरज उत्पन्न होता है (पद 3), और धीरज से चरित्र उत्पन्न होता है (पद 4)। यहाँ, “चरित्र” उस प्रक्रिया को संदर्भित करता है जिसके द्वारा परमेश्वर हमें “कष्ट की भट्टी” में तपाकर शुद्ध करता है (यशायाह 48:10)। दूसरे शब्दों में, प्रभु हमें कष्टों की भट्टी में तपाकर शुद्ध करता है, और हमारे भीतर की सभी अशुद्धियों को दूर करता

है, ताकि हम शुद्ध सोने के समान निकलकर आ सकें (अय्यूब 23:10)। परमेश्वर कष्टों की भट्टी—अर्थात् विपत्तियों—का उपयोग हमें धीरज रखने में समर्थ बनाने के लिए करता है, और उस धीरज के माध्यम से वह हमारे भीतर आत्मिक परिपक्वता लाता है। इसके अलावा, रोमियों 5:4 कहता है, "और चरित्र [परिपक्वता] से आशा उत्पन्न होती है।" परमेश्वर की महिमा की आशा करना (पद 2) एक ऐसी बात है जिसकी अभिलाषा नए विश्वासी भी करते हैं। तथापि, एक परिपक्व मसीही के पास एक ऐसी आशा होती है जो पूर्ण होती है—एक ऐसी आशा जो यह पहचानती है कि कष्ट से धीरज उत्पन्न होता है, धीरज से चरित्र उत्पन्न होता है, और चरित्र से आशा उत्पन्न होती है (पद 3–4)। पवित्र आत्मा हमें सिखाती है कि क्लेश से धीरज उत्पन्न होता है, धीरज से चरित्र बनता है, और चरित्र से आशा उत्पन्न होती है; इसके अलावा, वह हमारे भीतर इस सत्य के प्रति एक गहरी दृढ़ता भी भर देती है। इसी कारण से हम क्लेश के बीच भी आनंदित हो सकते हैं (पद 3)।

निस्संदेह, महा-क्लेश आने वाला है! जब वह समय आएगा, तब तक पवित्र आत्मा ने रोमियों 5:1–4 के वचनों को हमारे हृदयों की पट्टियों पर गहराई से अंकित कर दिया होगा, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि हम सभी एक अटूट विश्वास में दृढ़ता से खड़े रहें। चूंकि परमेश्वर का यह वचन उन लोगों के भीतर सक्रिय रूप से कार्य करता है जो विश्वास करते हैं (1 थिस्सलोनिकियों 2:13), इसलिए हमारी आत्माओं को अवश्य ही बल मिलना चाहिए। अतः, महा-क्लेश के बीच भी, हमें अपने विश्वास की रक्षा करनी चाहिए, हमें सौंपे गए कार्य को अंत तक दृढ़ता से पूरा करना चाहिए, क्लेश से विजयी होकर निकलना चाहिए, और अंततः प्रभु के सम्मुख खड़े होना चाहिए।

धार्मिक ठहराए जाने के परिणाम (7): हमें ऐसी आशा देना जो हमें लज्जित नहीं करती

“और आशा से लज्जा नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा के द्वारा जो हमें दिया गया है, परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदयों में उंडेला गया है” (रोमियों 5:5)।

बाइबल कहती है कि आशा हमें लज्जित नहीं करती (रोमियों 5:5)। तो फिर, यह “आशा” क्या है? यह उन आशाओं को संदर्भित करती है जिनका वर्णन पद 2 से 4 में किया गया है—एक ऐसी आशा जो “परमेश्वर की महिमा की आशा में आनन्दित होने” (पद 2) से शुरू होती है और एक ऐसी प्रक्रिया से आगे बढ़ती है जहाँ “कष्ट से धीरज; धीरज से खरा चरित्र; और खरे चरित्र से आशा उत्पन्न होती है” (पद 3)। परमेश्वर की महिमा की आशा करना ऐसी बात है जिसे नए विश्वासी भी कर सकते हैं। हालाँकि, वह आशा जो कष्ट से धीरज, धीरज से खरा चरित्र, और खरे चरित्र से आशा उत्पन्न होने की प्रक्रिया से उभरती है—यह आशाओं की आशा है, आशा की परम पराकाष्ठा है, और यह वह आशा है जिसे परिपक्व मसीही अपने हृदय में संजोकर रखते हैं। बाइबल घोषणा करती है कि यह विशिष्ट आशा हमें लज्जित नहीं करती (पद 5)। इस आशा के हमें लज्जित न करने का कारण यह है कि यह एक ऐसी आशा है जो अनिवार्य रूप से पूरी होगी। कोई भी ऐसी आशा जो धूमिल हो जाती है और जिसके कारण हम हिम्मत हार बैठते हैं, वह अंततः हमें लज्जित ही करती है। भले ही इस संसार की सारी आशाएँ पूरी हो जाएँ, फिर भी ऐसी सांसारिक आशाएँ अंततः हमें लज्जित ही करती हैं। हालाँकि, रोमियों 5:2–4 में वर्णित आशा हमें लज्जित नहीं करती, क्योंकि यह एक महिमामय आशा है। यह एक ऐसी आशा है जिस पर हम गर्व कर सकते हैं। इस आशा के पूरा होने की गारंटी होने का कारण यह है कि परमेश्वर—वही जो निश्चित रूप से

इसे पूरा करेगा—ने इसकी गारंटी प्रदान की है। वह गारंटी पवित्र आत्मा है, जिसे परमेश्वर ने हमारे हृदयों में वास करने के लिए हमें दिया है (2 कुरिन्थियों 1:22)। तो, परमेश्वर ने हमें यह गारंटी ठीक किस प्रकार प्रदान की? अपने प्रेम के द्वारा (रोमियों 5:5)। क्योंकि परमेश्वर हमसे प्रेम करता है, इसलिए हम विश्वास के द्वारा धार्मिक ठहराए गए हैं (पद 1)। परमेश्वर का प्रेम हमें परमेश्वर की महिमा की आशा करने में समर्थ बनाता है (पद 2)। बाइबल, रोमियों 5:5 में हमें बताती है कि परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदयों में पवित्र आत्मा के द्वारा उंडेला गया है, जिसे उसने हमें दिया है। परमेश्वर ने हमें पवित्र आत्मा दिया है। प्रेरितों के काम 2:17 को देखें: "परमेश्वर कहता है, 'अंतिम दिनों में मैं अपनी आत्मा सब लोगों पर उंडेलूंगा...।'" हमें पवित्र आत्मा किसने दिया? परमेश्वर पिता ने हमें पवित्र आत्मा दिया। उसने हमें पवित्र आत्मा कहाँ दिया? उसने पवित्र आत्मा हमारे हृदयों में दिया। पवित्र आत्मा ने परमेश्वर के प्रेम के साथ एक जुड़ाव—एक रिश्ता—स्थापित किया। उसने परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदयों में उंडेल दिया।

परमेश्वर प्रेम है (1 यूहन्ना 4:16, 18)। क्योंकि परमेश्वर प्रेम है, इसलिए वह न केवल अपने कार्यों के द्वारा प्रेम प्रदर्शित करता है, बल्कि उसने अपने प्रेम को हमारे हृदयों में उमड़ते हुए माप में भी उंडेल दिया है। वह ईश्वरीय प्रेम क्रूस पर यीशु की मृत्यु के द्वारा प्रकट हुआ (पद 8)। परमेश्वर ने अपने स्वयं के पुत्र को भी न छोड़ा, बल्कि हम सब के लिए उसे दे दिया (8:32)। परमेश्वर ने अपना असीम प्रेम हम पर—अपने चुने हुए लोगों पर—उंडेल दिया है। हम परमेश्वर के अद्भुत प्रेम के प्राप्तकर्ता हैं। इसलिए, इस आशा का पूरा होना बिल्कुल, 100% निश्चित है। परिणामस्वरूप, यह आशा हमें कभी भी लज्जित नहीं करेगी। हमें अपना जीवन इस निश्चित आशा को दृढ़ता से थामे हुए जीना चाहिए। विशेष रूप से—खासकर उस महान क्लेश के दौरान जो अभी आना बाकी है—हमें इस आशा और परमेश्वर के प्रेम को दृढ़ता से थामे रहना चाहिए; हमें विश्वास करना चाहिए, परीक्षाओं को सहना चाहिए, उन पर विजय प्राप्त करनी चाहिए, और विजयी होकर निकलना चाहिए।

धर्मी ठहराए जाने के परिणाम (8): पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे हृदयों में उंडेला गया परमेश्वर का प्रेम

“और आशा से लज्जा नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा के द्वारा, जो हमें दिया गया है, परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदयों में उंडेला गया है। (इसलिए) आप देखिए, ठीक सही समय पर, जब हम अभी भी शक्तिहीन थे, मसीह अधर्मियों के लिए मर गया” (रोमियों 5:5–6)।

रोमियों 5:6 की जाँच करते समय, जहाँ कोरियाई बाइबल अनुवाद इस वाक्यांश से शुरू होता है, “जब हम अभी भी शक्तिहीन थे...” वहीं मूल यूनानी पाठ में “इसलिए” (therefore) संयोजक शब्द शामिल है, जिससे यह वाक्यांश इस प्रकार बनता है, “इसलिए, जब हम अभी भी शक्तिहीन थे...” यहाँ, “इसलिए” शब्द प्रेरित पौलुस द्वारा पिछले पद (पद 5) में दिए गए कथन को जोड़ने—या उसका अनुसरण करने—का काम करता है: “...क्योंकि परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदयों में उंडेला गया है।” दूसरे शब्दों में, पद 6 से शुरू करते हुए, पौलुस परमेश्वर के इस प्रेम की प्रकृति को समझाना जारी रखता है, जो कि पद 5 में बताए अनुसार, हमारे हृदयों में उंडेला गया है। इसके अलावा, रोमियों 5:6 कहता है, “जब हम अभी भी शक्तिहीन थे।” यह अत्यधिक कमजोरी के समय—पूर्ण दुर्बलता की ऐसी स्थिति—को संदर्भित करता है जिसमें हम छोटी से छोटी चीजें करने में भी असमर्थ थे। वह बीता हुआ युग *उस समय से पहले* का था जब हमें विश्वास द्वारा धर्मी ठहराया गया था (पद 1); *उस समय से पहले* जब हम परमेश्वर के साथ शांति का आनंद ले सकते थे (पद 1); *उस समय से पहले* जब हमने विश्वास द्वारा इस अनुग्रह तक पहुँच प्राप्त की थी (पद 2); *उस समय से पहले* जब हम परमेश्वर की महिमा में आनंदित हो सकते थे—या उसकी आशा कर सकते थे (पद 2); *उस समय से पहले* जब हम कष्टों

के बीच भी आनंदित हो सकते थे (पद 3); और, अंत में, *उस समय से पहले* जब हमारे पास पवित्र आत्मा था या परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदयों में उंडेला गया था (पद 5)। रोमियों 5:6 में, वाक्यांश "ठीक सही समय पर" उस नियुक्त, उचित क्षण को संदर्भित करता है। इसका अर्थ यह है कि वह विशिष्ट समय—जिसे परमेश्वर ने जगत की नींव डालने से भी पहले हमारे उद्धार के लिए ठहराया था—अंततः आ गया था। उस नियुक्त समय पर, पवित्रशास्त्र कहता है, "मसीह अधर्मियों के लिए मर गया" (पद 6)। यही ठीक-ठीक परमेश्वर का प्रेम है (पद 5)। गलातियों 4:4 पर दृष्टि डालें: "परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ।" यीशु मसीह, जो परमेश्वर का एकलौता पुत्र है, एक स्त्री की संतान के रूप में तब आया जब समय की पूर्णता आ चुकी थी। परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र, यीशु को, एक स्त्री से जन्म लेने का विधान किया। मत्ती 1:16 पर दृष्टि डालें: "और याकूब से यूसुफ उत्पन्न हुआ, जो मरियम का पति था; और मरियम से यीशु उत्पन्न हुआ, जो मसीह कहलाता है।"

रोमियों 5:6 में, पवित्रशास्त्र "अधर्मी लोगों" (ungodly) की चर्चा करता है। यह उन लोगों को संदर्भित करता है जो अपने अधर्म के द्वारा सत्य को दबाते हैं (1:18)। अधर्मी वे लोग हैं जो सत्य के विरुद्ध विद्रोह करते हैं और उसके साथ विश्वासघात करते हैं। इसके अतिरिक्त, रोमियों 5:6 में "के लिए" (for) शब्द का प्रयोग हुआ है (जिसका अर्थ है *की ओर से*); यहाँ, "के लिए" के इस प्रयोग और "के स्थान पर" अथवा "के बदले में" (2 कुरिन्थियों 5:14, 15, 21) के अर्थ के बीच एक स्पष्ट अंतर है। 2 कुरिन्थियों 5:14, 15 और 21 पर दृष्टि डालें: "क्योंकि मसीह का प्रेम हमें विवश करता है; इसलिए कि हम यह विचार करते हैं, कि जब एक सब के लिए मरा, तो सब मर गए; और वह सब के लिए इस कारण मरा, कि जो जीवित हैं, वे आगे को अपने लिए न जिएँ, परन्तु उसके लिए जिएँ जो उनके लिए मरा और फिर जी उठा... क्योंकि उसने उसको, जो पाप से अनभिज्ञ था, हमारे लिए पाप ठहराया; ताकि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ।" "के लिए" (*की ओर से*) शब्द का निहितार्थ यह है कि हम, उदाहरणार्थ, अपने बच्चों की खातिर मरने को तत्पर हो सकते हैं। हम शायद अनेक लोगों की खातिर *मरने* में समर्थ हों, परन्तु हम *उनके स्थान पर* नहीं मर सकते। "उनके स्थान पर" मरने का अर्थ कुछ ऐसा है जिसे हम, पापी होने के नाते, दूसरों के लिए करने में असमर्थ हैं। केवल यीशु ही, जो पाप रहित

है, किसी के बदले में मरने की सामर्थ्य रखता है। क्योंकि वह पूर्णतः परमेश्वर और पूर्णतः मनुष्य दोनों है, इसलिए केवल यीशु ही हमारे स्थान पर मर सका—एक ऐसा कार्य जिसे हम कभी भी सम्पन्न नहीं कर सकते थे। यीशु हम में से प्रत्येक के बदले में क्रूस पर मरा। इसका कारण यह है कि यीशु हममें से हर एक से व्यक्तिगत रूप से प्रेम करते हैं। इसीलिए परमेश्वर ने हमें चुना, हमें धर्मी ठहराया, और हम पर अपनी अन्य सभी आशीषें बरसाईं। किसी *के लिए* मरना उस व्यक्ति के लिए अनंत जीवन की गारंटी नहीं देता; हालाँकि, किसी *के स्थान पर* मरना यह सुनिश्चित करता है कि वह व्यक्ति अनंत काल तक जीवित रहेगा। इसी कारण से, बाइबल विश्वासियों की मृत्यु को "सो जाना" बताती है। डीकन स्टीफन की मृत्यु के संबंध में, बाइबल कहती है, "और यह कहकर, वह सो गया" (प्रेरितों के काम 7:60)। पवित्र शास्त्र यह भी घोषणा करता है, "पर अब मसीह मरे हुओं में से जी उठा है, और जो सो गए हैं, उनमें वह पहला फल ठहरा" (1 कुरिन्थियों 15:20)। 1 थिस्सलोनिकियों 4:13–15 में, प्रेरित पौलुस "उन लोगों" का ज़िक्र कम से कम तीन बार करते हैं "जो सो गए हैं": "हे भाइयों, हम नहीं चाहते कि तुम उन लोगों के विषय में जो सो गए हैं, अनजान रहो; ऐसा न हो कि तुम उन दूसरों की तरह शोक करो, जिन्हें कोई आशा नहीं है। क्योंकि जब हम विश्वास करते हैं कि यीशु मरा और फिर जी उठा, तो वैसे ही परमेश्वर यीशु के द्वारा उन्हें भी जो सो गए हैं, अपने साथ ले आएगा। क्योंकि हम प्रभु के वचन के अनुसार तुमसे यह कहते हैं कि हम जो जीवित हैं और प्रभु के आने तक बचे रहेंगे, उन लोगों से आगे नहीं बढ़ेंगे जो सो गए हैं।" जब हम परमेश्वर के असीम प्रेम पर विचार करते हैं—कि जब हम अभी भी कमज़ोर थे, तब मसीह सही समय पर अधर्मियों के लिए मर गया (रोम 5:6)—तो हमें कृतज्ञता और गहरी भावनाओं से भर जाना चाहिए। परमेश्वर का यह महान प्रेम मृत्यु जितना ही शक्तिशाली है—नहीं, बल्कि मृत्यु से भी अधिक शक्तिशाली है (श्रेष्ठगीत 8:6–7)। चूँकि परमेश्वर ने पवित्र आत्मा के द्वारा यह प्रेम हममें उंडेल दिया है, इसलिए हमें उसी प्रेम का उपयोग करके यीशु की दोहरी आज्ञा का पालन करना चाहिए। मत्ती 22:37–39 पर ध्यान दें: "यीशु ने उससे कहा, 'तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से, और अपनी सारी आत्मा से, और अपनी सारी बुद्धि से प्रेम रखना।' यह पहली और मुख्य आज्ञा है। और दूसरी इसके समान ही है: 'तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना।'" परमेश्वर के प्रेम से सशक्त होकर, हमें परमेश्वर से अपने सारे मन, आत्मा और बुद्धि से प्रेम करना चाहिए, और अपने पड़ोसियों से अपने समान प्रेम करना चाहिए। अब हम कमज़ोर लोग नहीं रहे; हम शक्तिशाली हैं। हम विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए गए हैं (रोम 5:1)। हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा, हम परमेश्वर के साथ शांति का आनंद लेते हैं (पद 1)। हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा, हमने विश्वास के द्वारा उस अनुग्रह तक पहुँच प्राप्त की है जिसमें अब हम

स्थिर हैं (पद 2)। हम परमेश्वर की महिमा की आशा में आनंद करते हैं (पद 2)। हम अपनी पीड़ाओं में भी आनंद करते हैं (पद 3)। हमें दिए गए पवित्र आत्मा के द्वारा, परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदयों में उंडेला गया है (पद 5)।

धार्मिक ठहराए जाने के परिणाम (9): परमेश्वर हमारे प्रति अपना प्रेम प्रकट करता है

“परमेश्वर हमारे प्रति अपने प्रेम को इस प्रकार प्रकट करता है कि जब हम अभी भी पापी ही थे, तब मसीह हमारे लिए मर गया” (रोमियों 5:8)।

रोमियों 5:6 कहता है, “जब हम अभी भी पापी ही थे।” यहाँ, यह “समय” अतीत को संदर्भित करता है—विशेष रूप से, उस समय को जब हमने यीशु पर विश्वास नहीं किया था, और जब हम विश्वास द्वारा धार्मिक नहीं ठहराए गए थे (पद 1)। अब, वर्तमान में, यीशु पर विश्वास करने वालों के रूप में, हम उसके लहू द्वारा धार्मिक ठहराए गए हैं (पद 9)। इसके अलावा, बाइबल “पापी” शब्द का उपयोग करती है; लेकिन, वास्तव में, “पाप” क्या है? बाइबल “पाप” का वर्णन चार तरीकों से करती है:

पहला, पाप अधर्म है। दूसरे शब्दों में, पाप व्यवस्था का उल्लंघन है।

1 यूहन्ना 3:4 पर विचार करें: “जो कोई पाप करता है, वह अधर्म भी करता है; और पाप अधर्म ही है।” उदाहरण के लिए, आदम—पहला मनुष्य—ने पाप किया। उसने व्यवस्था को तोड़ा। परमेश्वर की व्यवस्था थी: “तू भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल न खाना” (उत्पत्ति 2:17)। हालाँकि, आदम और उसकी पत्नी, हव्वा ने इस ईश्वरीय आज्ञा का उल्लंघन किया और भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खा लिया। यह मानवता का सबसे पहला पाप (आदि पाप) माना जाता है।

दूसरा, पाप यह जानना है कि क्या करना अच्छा है, फिर भी उसे करने में असफल रहना।

याकूब 4:17 पर विचार करें: “इसलिए, जो कोई भलाई करना जानता है और नहीं करता, उसके लिए वह पाप है।” आइए हम उन व्यक्तियों की जाँच करें जिन्होंने भलाई करने में असफल रहने का पाप किया—यह जानते हुए भी कि ऐसा कैसे किया जाए—जैसा कि मत्ती के सुसमाचार के अध्याय 25 में पाई जाने वाली तीन दृष्टांतों में वर्णित है:

(1) दस कुँवारियों का दृष्टांत (मत्ती 25:1-13):

इस दृष्टांत में, वे लोग जिन्होंने भलाई करने में असफल रहकर पाप किया—यह जानते हुए भी कि ऐसा कैसे किया जाए—वे पाँच मूर्ख कुँवारियाँ हैं। इन पाँच मूर्ख कुँवारियों द्वारा किया गया पाप यह था कि, यद्यपि उनके पास दीपक थे, फिर भी उनके पास कोई तेल नहीं था (या उन्होंने कोई तेल तैयार नहीं किया था) (पद 3)। नतीजतन, जब पाँच मूर्ख कुँवारियाँ तेल खरीदने गई हुई थीं, तभी दूल्हा आ गया; पाँच समझदार कुँवारियाँ—जिन्होंने अपने दीये और तेल, दोनों तैयार रखे थे (पद 8-9)—शादी की दावत में अंदर चली गईं, और दरवाज़ा बंद हो गया (पद 10)। उसके बाद, मूर्ख कुँवारियाँ वापस आईं और चिल्लाकर बोलीं, “हे प्रभु, हे प्रभु, हमारे लिए दरवाज़ा खोल दो!” लेकिन दूल्हे ने जवाब दिया, “मैं तुमसे सच कहता हूँ, मैं तुम्हें नहीं जानता” (...मतलब, “मैं तुमसे प्रेम नहीं करता”) (पद 11-12)। इस दृष्टांत में प्रभु का आदेश है, “इसलिए, जागते रहो” (पद 13)। यदि हम इस समय इस आदेश की अवहेलना कर रहे हैं, तो हम पाप कर रहे हैं।

(2) प्रतिभाओं (Talents) का दृष्टांत (मत्ती 25:14-30):

इस दृष्टांत में, वह व्यक्ति जिसने अच्छा काम न करके पाप किया—भले ही उसे पता था कि यह कैसे करना है—वह वह व्यक्ति है जिसे केवल एक प्रतिभा (talent) मिली थी (पद 18)। इस एक प्रतिभा वाले व्यक्ति द्वारा किया गया पाप यह था कि वह गया और ज़मीन में एक गड्ढा खोदा, और अपने मालिक का पैसा (वह एक प्रतिभा) वहीं छिपा दिया (पद 18)। और ज़्यादा स्पष्ट रूप से कहें तो, उसने जो पाप किया—उस व्यक्ति के विपरीत जिसे पाँच

प्रतिभाएँ मिली थीं (पद 16, 20–21) या जिसे दो प्रतिभाएँ मिली थीं (पद 17, 22–23), जिन्होंने खुद को “अच्छा और विश्वासयोग्य” साबित किया था—वह यह था कि वह छोटी-छोटी बातों में विश्वासयोग्य नहीं रह पाया (पद 21, 23)। संक्षेप में, वह एक “दुष्ट और आलसी नौकर” था (पद 26)। अपने आलस के कारण, उसने वह काम न करने का पाप किया जो उसे करना चाहिए था। वह अपने मालिक से मिली उस एक प्रतिभा का उपयोग करके उससे एक और प्रतिभा का लाभ कमाने में असफल रहा। इस दृष्टांत में, प्रभु का आदेश है कि हम “अच्छे और विश्वासयोग्य नौकर” बनें, और हमें सौंपी गई छोटी-छोटी बातों में—वे प्रतिभाएँ जो उसने हमारी देखभाल के लिए हमें सौंपी हैं—विश्वासयोग्य बने रहें, ताकि हम फल ला सकें (पद 21, 23)। (3) भेड़ों और बकरियों का दृष्टांत (मत्ती 25:31–46):

इस दृष्टांत में, जिन लोगों ने पाप किया—विशेष रूप से, यह जानते हुए भी कि क्या अच्छा है, उसे करने में असफल रहे—वे "बकरियाँ" हैं (पद 32, 33)। यहाँ, "बकरियाँ" उन लोगों का प्रतिनिधित्व करती हैं जो "श्रापित" हैं (पद 41)। इन "श्रापित लोगों" ("बकरियों") द्वारा किया गया पाप यह था कि वे वह करने में असफल रहे जो करना उनका कर्तव्य था। वे मनुष्य के पुत्र (पद 31) को भोजन देने में असफल रहे जब वह भूखा था; उसे पानी देने में असफल रहे जब वह प्यासा था; उसका स्वागत करने में असफल रहे जब वह एक अजनबी था; उसे कपड़े पहनाने में असफल रहे जब वह नंगा था; और उसकी देखभाल करने में असफल रहे जब वह बीमार था या जेल में था (पद 42–43)। इस दृष्टांत में, प्रभु की आज्ञा बस इतनी है: वह करो जो करना तुम्हारा कर्तव्य है। जिस कर्तव्य को पूरा किया जाना चाहिए, वह यह है: जब मनुष्य का पुत्र (पद 31) भूखा था, तो तुमने उसे खाने के लिए कुछ दिया; जब वह प्यासा था, तो तुमने उसे पीने के लिए कुछ दिया; जब वह एक अजनबी था, तो तुमने उसका स्वागत किया; जब वह नंगा था, तो तुमने उसे कपड़े पहनाए; जब वह बीमार था, तो तुमने उसकी देखभाल की; और जब वह जेल में था, तो तुम उससे मिलने गए (पद 35–36)। ये "धर्मी" लोग (पद 37) "मेरे पिता द्वारा धन्य किए गए लोग" (पद 34) हैं, और प्रभु ने उनसे कहा कि वे "उस राज्य के वारिस बनें जो उनके लिए तैयार किया गया है" (पद 34)।

इन तीनों दृष्टांतों में जो एक समान बात है, वह है "करने" और "न करने" के बीच का अंतर। दूसरे शब्दों में, लोगों को दो समूहों में बाँटा गया है: वे जो जानते थे कि अच्छा कैसे किया जाए और वास्तव में उन्होंने वैसा किया; और

वे जो जानते थे कि अच्छा कैसे किया जाए, लेकिन वैसा करने में असफल रहे। हमें उन लोगों में शामिल होना चाहिए जो, यह जानते हुए कि क्या अच्छा है, उसे सक्रिय रूप से अपने जीवन में उतारते हैं। हमें लगन से, विश्वासयोग्यता से और पूरे उत्साह के साथ प्रभु का कार्य करना चाहिए।

तीसरी बात, पाप, विश्वास के आधार पर कार्य करने में असफल रहना है। कृपया बाइबल में रोमियों 14:23 देखें: "परन्तु जो कोई सन्देह करता हुआ खाता है, वह दोषी ठहरता है, क्योंकि उसका खाना विश्वास से नहीं है; और जो कुछ विश्वास से नहीं है, वह पाप है।" यहाँ तक कि अच्छे काम भी विश्वास के साथ किए जाने चाहिए; यदि वे विश्वास में नहीं किए जाते, तो वे पाप कहलाते हैं। इसलिए, हमें अच्छे काम—प्रभु का काम—विश्वास के साथ करने चाहिए। कृपया बाइबल में मत्ती 7:21–23 देखें: "जो कोई मुझसे कहता है, 'हे प्रभु, हे प्रभु,' वह सब स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो स्वर्ग में रहने वाले मेरे पिता की इच्छा पर चलता है। उस दिन बहुत से लोग मुझसे कहेंगे, 'हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हमने तेरे नाम से भविष्यद्वाणी नहीं की? और तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला? और तेरे नाम से बहुत से आश्चर्यकर्म नहीं किए?' तब मैं उनसे खुलकर कह दूँगा, 'मैं तुम्हें कभी नहीं जानता था; हे कुकर्म करने वालों, मेरे पास से चले जाओ!'" केवल अपने होठों से, बिना विश्वास के "हे प्रभु, हे प्रभु" (या "आमीन," "हल्लेलूयाह") कहना पाप है। यह संभव है कि कोई बिना विश्वास के प्रभु के नाम से भविष्यद्वाणी करे, बिना विश्वास के प्रभु के नाम से दुष्टात्माओं को निकाले, और यहाँ तक कि बिना विश्वास के प्रभु के नाम से कई बड़े-बड़े काम भी करे। तथापि, विश्वास के बिना किए गए ये सभी काम पाप हैं। यीशु उनसे कहते हैं, "मैं तुम्हें कभी नहीं जानता था; हे कुकर्म करने वालों, मेरे पास से चले जाओ!" (पद 23)। क्या ऐसा कुछ है जिसे सर्वशक्तिमान प्रभु नहीं जानते? यहाँ प्रभु का संदेश यह है, "मैं तुमसे प्रेम नहीं करता।"

चौथा, पाप वह है जब कोई काम विश्वास के साथ किया जाता है, फिर भी वह अपेक्षित पूर्ण माप तक नहीं पहुँच पाता।

पाप आज्ञाकारिता की कमी है। कोरियन अमेरिकन प्रेस्बिटेरियन चर्च की *लघु प्रश्नोत्तरी* (Shorter Catechism) का प्रश्न 14 इस प्रकार है: "पाप क्या है?" इसका उत्तर यह है: "पाप परमेश्वर की व्यवस्था के अनुरूप न होना, या उसका उल्लंघन करना है" (1 यूहन्ना 3:4; याकूब 4:17; रोमियों 3:23; याकूब 2:10)। बाइबल में याकूब 2:10 को देखिए: “क्योंकि जो कोई पूरी व्यवस्था का पालन करता है, परन्तु किसी एक बात

में चूक जाता है, वह पूरी व्यवस्था को तोड़ने का दोषी ठहरता है" [(समकालीन कोरियाई बाइबल) "जो कोई पूरी व्यवस्था का पालन करता है, परन्तु उसके किसी एक भाग का उल्लंघन करता है, वह पूरी व्यवस्था को तोड़ने का दोषी बन जाता है"]।

ऐसा कोई एक भी व्यक्ति नहीं है जो इन चार पापों का दोषी न हो: (1) कानून तोड़ना, (2) यह जानते हुए भी कि अच्छा कैसे करना है, उसे न करना, (3) विश्वास के साथ काम करने में असफल रहना, और (4) आज्ञाकारिता की कमी होना। बाइबल में रोमियों 3:23 को देखें: "क्योंकि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रह गए हैं।" "एक मनुष्य"—आदम, जो मानवता का प्रतिनिधि था—के द्वारा पाप दुनिया में तब आया, जब उसने पाप किया (5:12)। हालाँकि स्वर्गदूतों के लोक में पतित स्वर्गदूत मौजूद थे, फिर भी मानवीय लोक में पाप तब तक मौजूद नहीं था, जब तक कि आदम के अपराध के द्वारा वह इस दुनिया में प्रवेश नहीं कर गया। इसके अलावा, आदम के मूल पाप के परिणामस्वरूप, सभी लोगों ने पाप किया है (पद 12)। हर किसी ने कानून तोड़ा है; हर कोई यह जानते हुए भी कि अच्छा कैसे करना है, उसे करने में असफल रहा है; हर कोई विश्वास के साथ काम करने में असफल रहा है; और हर किसी में आज्ञाकारिता की कमी रही है। इस पाप के द्वारा, मृत्यु दुनिया में प्रवेश कर गई। मृत्यु सभी लोगों तक फैल गई (पद 12)। परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करके, आदम को आत्मा की मृत्यु—यानी आध्यात्मिक मृत्यु—का सामना करना पड़ा, जिसमें परमेश्वर के साथ उसका मेल-जोल टूट गया (उत्पत्ति 3:9–24)। बाद में, 930 वर्ष की आयु में, उसे शारीरिक मृत्यु का सामना करना पड़ा (5:5)। जब आदम की मृत्यु हुई, तो उसका शरीर और आत्मा अलग हो गए; उसका शरीर वापस मिट्टी में मिल गया, जबकि उसकी आत्मा अनंत लोक (अनंत नरक) में चली गई। यीशु के दूसरे आगमन के समय, उसका सड़ता हुआ शरीर और उसकी आत्मा—जो नरक में निवास करती है—फिर से एक हो जाएँगे, और वह नरक में अनंत दंड भोगेगा। चूँकि आदम के मूल पाप के द्वारा सभी लोगों ने पाप किया है (रोमियों 5:12), इसलिए हम भी पापी बन गए हैं (पद 8) और परमेश्वर के शत्रु भी बन गए हैं (पद 9)। इसलिए, हम भी—ठीक पहले आदम की तरह—मूल रूप से यीशु के दूसरे आगमन के समय आत्मा की मृत्यु (आध्यात्मिक मृत्यु) का सामना करने के लिए ही निर्धारित थे, और अनिवार्य रूप से एक अनंत नरक में अनंत दंड भोगने वाले थे। लेकिन, यीशु मसीह—"वह एक व्यक्ति, यीशु मसीह" (पद 15) या "आखिरी आदम" (1 कुरिन्थियों 15:45)—हमारे लिए तब मर गए जब हम अभी भी पापी थे (रोमियों 5:8)। यीशु मसीह ने हमारे सभी पापों का बोझ उठाया—आदि पाप, साथ ही अतीत, वर्तमान और भविष्य के पाप—और उस अनंत दंड का पूरा भार अपने ऊपर ले लिया जिसके हम

हकदार थे। इस प्रकार, परमेश्वर ने हमारे प्रति अपना प्रेम दिखाया (पद 8)। परमेश्वर—जो पवित्र और धर्मी है, जो पाप से नफ़रत करता है और उसे नष्ट कर देता है—ने यीशु मसीह के क्रूस पर दिए गए बलिदान के द्वारा, हम पापियों के प्रति अपने प्रेम को स्पष्ट रूप से प्रकट किया—हम पापी जो अन्यथा अनंत दंड भोगने और अनंत मृत्यु का सामना करने के लिए अभिशप्त थे। इसलिए, जब हम विश्वास के साथ अपने प्रभु यीशु मसीह की ओर देखते हैं, जो क्रूस पर मर गए, तो हमें परमेश्वर के प्रेम की महानता को समझना चाहिए और उन्हें अपना धन्यवाद, स्तुति और आराधना अर्पित करनी चाहिए। यहाँ *न्यू हिमनल* (New Hymnal) संख्या 150 है, "On a Hill Far Away" (The Old Rugged Cross): (पद 1) "एक दूर की पहाड़ी पर एक पुराना, खुरदुरा क्रूस खड़ा था, जो दुख और शर्म का प्रतीक था; और मुझे वह पुराना क्रूस प्रिय है, जहाँ खोए हुए पापियों की दुनिया के लिए सबसे प्यारे और सबसे अच्छे व्यक्ति का बलिदान हुआ। (पद 2) ओह, वह पुराना, खुरदुरा क्रूस, जिसे दुनिया ने इतना तिरस्कृत किया, मेरे लिए एक अद्भुत आकर्षण रखता है; क्योंकि परमेश्वर का प्यारा मेम्ना अपनी स्वर्गीय महिमा को छोड़कर, उसे अंधेरे कलवरी तक ले जाने के लिए नीचे आया। (पद 3) उस पुराने, खुरदुरे क्रूस में, जो उस दिव्य रक्त से रंगा हुआ है, मुझे एक अद्भुत सुंदरता दिखाई देती है; क्योंकि उसी पुराने क्रूस पर यीशु ने दुख सहा और अपनी जान दी, ताकि वह मुझे क्षमा कर सके और पवित्र बना सके। (पद 4) उस पुराने, खुरदुरे क्रूस के प्रति मैं सदा वफ़ादार रहूँगा, उसकी शर्म और अपमान को मैं खुशी-खुशी सहूँगा; फिर किसी दिन वह मुझे मेरे दूर स्थित घर बुलाएगा, जहाँ मैं हमेशा के लिए उसकी महिमा में सहभागी बनूँगा।" (दोहराव) "इसलिए मैं उस पुराने, खुरदुरे क्रूस को सँजोकर रखूँगा, जब तक कि अंत में मैं अपनी सारी उपलब्धियों को उसके चरणों में न रख दूँ; मैं उस पुराने, खुरदुरे क्रूस से लिपटा रहूँगा, और किसी दिन उसके बदले एक मुकुट प्राप्त करूँगा।" यहाँ *New Hymnal* का गीत संख्या 293 है, “जब प्रभु का प्रेम चमकता है”: (पद 1) “जब प्रभु का प्रेम चमकता है, तो आनंद आता है; चिंताएँ और परेशानियाँ दूर हो जाती हैं, और खुशी आ जाती है। यह हमें प्रार्थना की ओर प्रेरित करता है, सारे अंधेरों को मिटा देता है; जब प्रभु का प्रेम चमकता है, तो आनंद आता है। (पद 2) जब प्रभु का प्रेम चमकता है, तो यह संसार बदल जाता है—सुंदर और जीवंत हो जाता है। पूर्ण शांति में, मेरी आत्मा एक शानदार नए जीवन को फिर से पा लेती है—वह महान प्रेम। (पद 3) जब प्रभु का प्रेम चमकता है, तो इस संसार के अंधेरे और दुख के भारी बोझ सब गायब हो जाते हैं; यह हमारे चलने के मार्ग को उज्ज्वल रूप से प्रकाशित करता है और हमारे लिए आशीषें लाता है—वह महान प्रेम। (पद 4) जब प्रभु का प्रेम चमकता है, तो उसकी चमक हमें शानदार वैभव में घेर लेती है। चाहे संसार पर विजय पाना हो या स्वर्ग के राज्य में रहना हो, प्रभु का प्रेम चमकता है—वह महान प्रेम।” (दोहराव) “जब वह महान प्रेम मेरे हृदय के भीतर पूरी तरह चमकता है, तो

मैं अपनी स्तुति अर्पित करता हूँ; वह महान प्रेम मेरे हृदय को शांति और आनंद से भर देता है—वह महान प्रेम।” इस वर्तमान संकट के बीच, जब परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदयों में चमकता है—जिससे सारी चिंता, परेशानी, अंधेरा, दुख और भय दूर हो जाते हैं—तो हम उस शांति और आनंद से लबालब भर जाएँ जो यह संसार नहीं दे सकता, और हम ऐसे प्रकाश-स्तंभ बन जाएँ जो परमेश्वर के उस महान प्रेम को दर्शाते हैं।

धर्मी ठहराए जाने के परिणाम (10): परमेश्वर के क्रोध से छुटकारा

“तो फिर, अब जब हम उसके लहू के द्वारा धर्मी ठहराए गए हैं, तो उसके द्वारा हम क्रोध से अवश्य बचाए जाएँगे” (रोमियों 5:9)।

यहाँ रोमियों 5:9 और रोमियों 5:1 (“इसलिए, जब हम विश्वास से धर्मी ठहराए गए, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें”): के बीच समानताएँ और अंतर दिए गए हैं: (1) समानताएँ: दोनों पदों में एक ही कर्ता, “हम” (पद 1, 9) का प्रयोग किया गया है। यहाँ, “हम” अतीत के “हम” को संदर्भित करता है—वे लोग जो हम यीशु पर विश्वास करने *से पहले* थे—विशेष रूप से, “जब हम अभी भी असहाय थे” (पद 6), “जब हम अभी भी पापी थे” (पद 8), और “जब हम शत्रु थे” (पद 10)। यह अतीत का “हम” एक ऐसी स्थिति को संदर्भित करता है जिसमें परमेश्वर के साथ हमारा मेल-जोल टूट गया था—आध्यात्मिक मृत्यु की एक स्थिति—जिसने हमारे पास अनन्त दण्ड का सामना करने और नरक की आग की खाई में डाले जाने के अलावा कोई विकल्प नहीं छोड़ा था। दोनों पद एक ही घोषणा भी साझा करते हैं: “धर्मी ठहराए गए” (पद 1, 9)। (2) अंतर: जहाँ रोमियों 5:1 कहता है कि हम “विश्वास से” धर्मी ठहराए गए, वहीं रोमियों 5:9 कहता है कि हम “उसके [यीशु के] लहू से” धर्मी ठहराए गए। यहाँ, “उसका लहू” विशेष रूप से यीशु के लहू को संदर्भित करता है—फसह के मेम्ने का लहू। यह परमेश्वर के उस मेम्ने का लहू है जो जगत के पाप को उठा ले जाता है (यूहन्ना 1:29)। परमेश्वर के इस मेम्ने का लहू ही फसह के मेम्ने का लहू है (2 इतिहास 35:1, 6)—

ठीक वही लहू जिसका संकेत निर्गमन के समय, दसवीं विपत्ति के समय दिया गया था, जब मूसा ने इस्राएल के सभी पुरनियों को निर्देश दिया था: “जाओ और अपने-अपने परिवारों के लिए मेम्ने चुन लो, और फसह के मेम्ने को बलि करो” (निर्गमन 12:21)। यह यीशु के लहू की ओर संकेत करता है—सच्चा फसह का मेम्ना और परमेश्वर का वह मेम्ना जो जगत के पापों को उठा ले जाता है। यीशु का लहू, जो फसह का मेम्ना है, हमारे पापों के लिए प्रायश्चित का बलिदान है (1 यूहन्ना 2:2)। दूसरे शब्दों में, हमारे लिए (और हमारी जगह पर)—फसह के मेमने के रूप में—सलीब पर अपनी जान देकर, यीशु ने हमें परमेश्वर के साथ मिला दिया (रोमियों 5:8; पद 10)।

यीशु का लहू सामर्थ्य का लहू है। यीशु के अनमोल लहू में अद्‌भुत शक्ति है। यीशु के अनमोल लहू की शक्ति हमारे सभी पापों को पूरी तरह से धो डालने में सक्षम है। यह वह लहू है जो उन पापियों को धर्मी ठहराता है जो कभी परमेश्वर के शत्रु थे। यीशु का लहू परमेश्वर के पूरे क्रोध को पूरी तरह से शांत करता है; यह वह लहू है जो हमारे सभी पापों को क्षमा करता है और हमें धर्मी बनाता है। इसके अलावा, यीशु का लहू हमारे जीवन में एक शक्तिशाली शक्ति के रूप में काम करता रहता है—एक ऐसी शक्ति जो हमारे अस्तित्व और हमारे रोज़मर्रा के जीवन को नियंत्रित और निर्देशित करती है। यहाँ, "लहू" शब्द जीवन का प्रतीक है। इस प्रकार, यीशु के लहू के द्वारा—यानी, यीशु के जीवन के द्वारा—हमें न केवल धर्मी ठहराया गया है (रोमियों 5:9), बल्कि हमें एक ही व्यक्ति, यीशु मसीह के द्वारा जीवन भी प्राप्त हुआ है (पद 17)। [यह "जीवन" एक ऐसा उपहार है जो परमेश्वर हमें मुफ़्त में देता है—विशेष रूप से, "हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनंत जीवन" (रोमियों 6:23)।] अब हम ऐसे आध्यात्मिक रूप से मृत लोग नहीं रहे जिनका परमेश्वर के साथ मेल-जोल टूट गया हो; बल्कि, अब (पद 9), हमारा परमेश्वर के साथ मेल हो गया है (पद 1; *मॉडर्न पीपल्स बाइबिल*; तुलना करें: पद 10–11)। अब (पद 9), उस पवित्र आत्मा के द्वारा जिसे परमेश्वर ने हमें दिया है, उसने अपना प्रेम हमारे हृदयों में उंडेल दिया है (पद 5; *मॉडर्न पीपल्स बाइबिल*)। इसलिए, अब—पवित्र आत्मा के सामर्थ्य के द्वारा, जो हमारे हृदयों में भेजा गया यीशु का आत्मा है—हम परमेश्वर को "अब्बा, पिता" कहकर पुकारने में सक्षम हैं (गलातियों 4:6; *न्यू कोरियन रिवाइज्ड वर्जन*; तुलना करें: रोमियों 8:15)।

यीशु मसीह का लहू, सीधे शब्दों में कहें तो, यीशु मसीह का ही लहू है; यह यीशु मसीह के जीवन का ही प्रतीक है। यीशु मसीह का लहू फसह के मेमने का लहू है—एक ऐसा लहू जो सामर्थ्य से भरा हुआ है, और उन पापियों को धर्मी ठहराने में सक्षम है जो कभी परमेश्वर के शत्रु थे। इब्रानियों 9:14 पर विचार करें: "तो फिर, मसीह का लहू—जिसने सनातन आत्मा के द्वारा अपने आप को परमेश्वर के सामने निष्कलंक बलिदान के रूप में चढ़ाया—तुम्हारे विवेक को उन कामों से कितना अधिक शुद्ध करेगा जो मृत्यु की ओर ले जाते हैं, ताकि तुम जीवित परमेश्वर की सेवा कर सको?" [(मॉडर्न पीपल्स बाइबल) "तो फिर, मसीह का लहू—जिसने सनातन पवित्र आत्मा के द्वारा अपने आप को परमेश्वर के सामने एक निष्कलंक बलिदान के रूप में चढ़ाया—तुम्हारे विवेक को उन कामों से कितना अधिक शुद्ध करेगा जो मृत्यु की ओर ले जाते हैं, और तुम्हें जीवित परमेश्वर की सेवा करने के योग्य बनाएगा?"] यह पवित्र आत्मा ही था जिसने कुंवारी मरियम को यीशु को गर्भ में धारण करने के योग्य बनाया (मत्ती 1:18, 20); वह इस पृथ्वी पर यीशु के तैंतीस वर्षों के दौरान लगातार उनके साथ रहा, और वह तब भी उपस्थित था जब यीशु ने अपना लहू बहाया और क्रूस पर अपने प्राण त्यागे। हम यीशु मसीह के इस लहू के अधिकार, सामर्थ्य, शक्ति और उद्धार के कार्य को पूरी तरह से कैसे समझ सकते हैं? इस लहू के द्वारा, उसने हमारे सभी पापों का प्रायश्चित किया है, और इस प्रकार हमें पाप के बंधन से मुक्त—आज़ाद—किया है। इस लहू के द्वारा, वे पापी जो अन्यथा अनंत दंड भोगने के लिए निर्धारित थे, धर्मी ठहराए गए हैं (रोमियों 5:1, 9)। इस लहू के द्वारा, हमें परमेश्वर के साथ शांति प्राप्त हुई है (पद 1)। इस लहू के द्वारा, हमने विश्वास के माध्यम से उस अनुग्रह तक पहुँच प्राप्त की है जिसमें हम अब स्थिर हैं (पद 2)। इस लहू की सामर्थ्य अब भी हमारे जीवन में कार्य करती रहती है, और हमें पवित्र परमेश्वर के सिंहासन के निकट जाने के योग्य बनाती है। इस लहू के द्वारा, हम परमेश्वर की महिमा की आशा में आनंदित होते हैं (पद 2)। इस लहू के द्वारा, हम अपनी पीड़ाओं में भी आनंदित होते हैं (पद 3)। उदाहरण के लिए, अय्यूब—जैसा कि अय्यूब की पुस्तक में चित्रित है—आपदा और क्लेश के बीच निराश नहीं हुआ; बल्कि, वह आराधना में भूमि पर गिर पड़ा और परमेश्वर की स्तुति की (अय्यूब 1:20–21)। इस लहू के द्वारा, धीरज चरित्र उत्पन्न करता है, और चरित्र आशा उत्पन्न करता है (रोमियों 5:4)।

रोमियों 5:9 में, बाइबल कहती है: “हम उसके द्वारा परमेश्वर के क्रोध से बचाए जाएँगे।” यहाँ, “परमेश्वर का क्रोध” का अर्थ है परमेश्वर का गुस्सा। पुराने नियम में परमेश्वर के क्रोध के बारे में बीस से ज़्यादा खास अंश हैं; जब सभी संदर्भों को गिना जाता है, तो यह विचार लगभग 580 बार आता है। नए नियम में, “क्रोध” शब्द रोमियों की किताब में दो अलग-अलग संदर्भों में आता है: (1) पहला एक “लगातार क्रोध” को दर्शाता है—एक ऐसा क्रोध जिसे परमेश्वर ने अतीत में पहले ही बरसा दिया है, वर्तमान में बरसा रहा है, और भविष्य में भी बरसाता रहेगा। कृपया रोमियों 1:18 देखें: “क्योंकि परमेश्वर का क्रोध स्वर्ग से मनुष्यों के सारे अधर्म और अधार्मिकता के विरुद्ध प्रकट होता है, जो अपनी अधार्मिकता से सत्य को दबाते हैं।” (2) दूसरा एक “अंतिम क्रोध” को दर्शाता है—वह क्रोध जिसे परमेश्वर पिता अंतिम न्याय के समय बरसाएगा। कृपया रोमियों 2:5 देखें: “परन्तु तू अपनी कठोर और बिना पछतावे वाली आत्मा के कारण अपने लिए क्रोध के दिन, और परमेश्वर के सच्चे न्याय के प्रकट होने के दिन के लिए क्रोध जमा कर रहा है।” रोमियों 5:9 में जिस “क्रोध” का ज़िक्र है, वह रोमियों 1:18 में बताए गए क्रोध को नहीं, बल्कि रोमियों 2:5 में बताए गए “अंतिम क्रोध” को दर्शाता है। रोमियों 2:5 में वाक्यांश—“क्रोध का दिन, और परमेश्वर के सच्चे न्याय के प्रकट होने का दिन”—अंतिम न्याय के दिन को दर्शाता है; खास तौर पर, यह अंतिम न्याय “महान श्वेत सिंहासन न्याय” को दर्शाता है। कृपया प्रकाशितवाक्य 20:12 देखें: “और मैंने मरे हुओं को, छोटे और बड़े, सिंहासन के सामने खड़े देखा, और किताबें खोली गईं। एक और किताब खोली गई, जो जीवन की किताब है। मरे हुओं का न्याय उनके कामों के अनुसार किया गया, जैसा कि किताबों में लिखा था।” न्यायाधीश कौन है? अंतिम न्याय का न्यायाधीश परमेश्वर पिता के अलावा कोई और नहीं है। किसका न्याय किया जा रहा है? “मरे हुए” (पद 12)—यानी, पूरी मानवजाति, पहले इंसान, आदम से शुरू होकर—वे लोग हैं जिनका न्याय किया जाता है। न्याय कैसे किया जाता है? प्रभु किताबों में दर्ज रिकॉर्ड के आधार पर न्याय करता है। इन किताबों में से, हममें से हर एक के लिए एक खास किताब है। ठीक एक आत्मकथा की तरह, उस किताब में हमारे सभी पापों का रिकॉर्ड होगा—अतीत, वर्तमान और भविष्य के पापों का—हमारे जन्म के पल से लेकर हमारी मृत्यु के पल तक का। इसलिए, जिस दिन तक हमारी मृत्यु नहीं हो जाती, हमारे पास भजन 274, “मेरे कर्म पाप के सिवा कुछ नहीं हैं,” गाने के अलावा कोई और चारा नहीं है। इसका कारण यह है कि हमने जो कुछ भी किया है, जो कुछ हम अभी कर रहे हैं, और जो कुछ हम अपनी आखिरी सांस तक कर सकते हैं—वह सब

पाप के सिवा कुछ नहीं है। नतीजतन, हम सभी पापी थे और परमेश्वर के अंतिम क्रोध का सामना करने के लिए अभिशप्त थे; हालाँकि, क्योंकि यीशु ने अपना कीमती लहू बहाया और सलीब पर अपनी जान दे दी, इसलिए हम उनके लहू के द्वारा धर्मी ठहराए गए हैं, और वह निश्चित रूप से हमें उस अंतिम क्रोध से बचाएँगे (रोमियों 5:9)। पहले—क्योंकि हमारे नाम उन किताबों में दर्ज थे (प्रकाशितवाक्य 20:12), जिसका अर्थ है कि हम उन लोगों में से थे जिनके नाम *जीवन की किताब* में नहीं लिखे थे—इसलिए हम अनिवार्य रूप से हमेशा के लिए आग की झील में डाले जाने के लिए अभिशप्त थे (पद 15)। हालाँकि, केवल सलीब पर बहाए गए यीशु मसीह के कीमती लहू के कारण—और क्योंकि हमारे नाम उस *दूसरी* किताब, यानी जीवन की किताब (पद 12) में दर्ज हैं—विशेष रूप से, मेम्ने की जीवन की किताब (प्रकाशितवाक्य 21:27) में—हम पवित्र नगर, नए यरूशलेम में प्रवेश करेंगे, जो परमेश्वर की ओर से स्वर्ग से नीचे उतरता है (पद 10); ठीक उसी नगर में जहाँ परमेश्वर की महिमा निवास करती है (पद 11) (पद 26, 27)।

यदि हम बाइबल में रोमियों 5:9 को देखें, तो यह “उद्धार” की बात करता है। यहाँ, “उद्धार” शब्द (रोमियों 5:9) रोमियों की किताब में पाँच बार संज्ञा के रूप में और आठ बार क्रिया के रूप में आता है। संज्ञा के रूप में इसके उपयोग का एक उदाहरण रोमियों 1:16 में मिलता है: “क्योंकि मैं सुसमाचार से लज्जित नहीं हूँ, क्योंकि यह हर उस व्यक्ति के लिए परमेश्वर की सामर्थ्य है जो विश्वास करता है—पहले यहूदी के लिए, और फिर यूनानी के लिए।” क्रिया के रूप में इसके आठ बार आने के संबंध में, इसका उपयोग एक बार भूतकाल में और सात बार भविष्यकाल में किया गया है। "मुक्ति" का भूतकाल रूप—जिसका अर्थ है कि किसी ने *पहले ही* मुक्ति पा ली है—रोमियों की किताब में केवल एक बार आता है। कृपया रोमियों 8:24 देखें: "क्योंकि आशा में ही हमारा उद्धार हुआ। परन्तु जिस आशा को देखा जाता है, वह आशा नहीं; क्योंकि जो कोई देखता है, वह उसकी आशा क्यों करेगा?" यीशु मसीह के लहू के द्वारा, हम आशा में पहले ही बचाए जा चुके हैं। "मुक्ति" का भविष्यकाल रूप—जिसका अर्थ है कि किसी को भविष्य में मुक्ति *मिलेगी*—रोमियों में सात बार आता है। कृपया रोमियों 5:10 देखें: "क्योंकि जब हम बैरी ही थे, तो उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा परमेश्वर के साथ मेल हुआ; तो मेल हो जाने पर उसके जीवन के द्वारा हमारा उद्धार क्यों न होगा?" यहाँ, "मुक्ति" उस भविष्य की मुक्ति को

संदर्भित करती है जो हमें अभी मिलनी बाकी है—विशेष रूप से, मसीह के लहू की शक्ति के द्वारा मुक्ति की पूर्णता की प्राप्ति (पद 9), जिससे हम परमेश्वर के अंतिम न्याय के दौरान उसके अंतिम क्रोध से बच जाएँगे।

बाइबल में जिस उद्धार की बात की गई है, उसमें अतीत, वर्तमान और भविष्य—तीनों शामिल हैं।

(1) अतीत का उद्धार:

इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर की कृपा से, जब हम एक बार यीशु मसीह—जो परमेश्वर के पुत्र हैं—पर अपना विश्वास रखते हैं, तो हमें उद्धार पहले ही मिल चुका होता है। कृपया 1 यूहन्ना 5:12–13 देखें: "जिसके पास पुत्र है, उसके पास जीवन है; जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं है, उसके पास जीवन नहीं है। मैं ये बातें तुमको लिखता हूँ, जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, ताकि तुम जान सको कि तुम्हारे पास अनन्त जीवन है।" इस अंश के आधार पर, बाइबल स्पष्ट रूप से कहती है कि जो कोई भी यीशु—परमेश्वर के पुत्र—पर विश्वास करता है, उसने अनन्त जीवन (उद्धार) पहले ही प्राप्त कर लिया है। अतीत का उद्धार यह दर्शाता है कि हमें पहले ही धर्मी ठहराया जा चुका है (धर्मीकरण) (रोमियों 5:9)।

(2) वर्तमान का उद्धार:

बाइबल हमें निर्देश देती है: "अपने उद्धार के लिए काम करते रहो" (फिलिप्पियों 2:12)। उद्धार कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे लोग अपने दम पर हासिल करते हैं, बल्कि यह कुछ ऐसा है जिसे परमेश्वर ही पूरा करता है। कृपया योना 2:9 देखें: "...उद्धार यहोवा का है" [(समकालीन अंग्रेज़ी संस्करण) "उद्धार यहोवा की ओर से आता है"]। कृपया प्रकाशितवाक्य 7:10 देखें: "और उन्होंने ऊँचे स्वर में पुकारकर कहा: 'उद्धार हमारे परमेश्वर का है, जो सिंहासन पर विराजमान है, और मेम्ने का है।'" इन अंशों के आधार पर, हम स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं कि उद्धार कुछ ऐसा है जिसे परमेश्वर पूरा करता है (या प्रदान करता है); यह किसी भी तरह से ऐसी चीज़ नहीं है जिसे हम—पापी मनुष्यों के रूप में—अपने प्रयासों या अच्छे कामों के द्वारा अपने दम पर हासिल कर सकें।

फिर भी, प्रेरित पौलुस ने फिलिप्पी की कलीसिया के विश्वासियों को "अपने उद्धार के लिए काम करने" का निर्देश क्यों दिया? (फिलिप्पियों 2:12) इस कथन का अर्थ समझने के लिए, हमें सबसे पहले इस बात की अधिक स्पष्ट समझ प्राप्त करनी होगी कि "उद्धार" का वास्तव में क्या तात्पर्य है। पुराने नियम में, "उद्धार" शब्द इब्रानी शब्द *Yeshua* से लिया गया है, जिसका अर्थ है पाप और खतरनाक परिस्थितियों से बचाया जाना या मुक्त किया जाना। नए नियम में, "उद्धार" यूनानी शब्द *soteria* के समतुल्य है; इस शब्द का इस्तेमाल पाप की सज़ा, पाप के राज और पाप भरी ज़िंदगी से छुटकारा पाने के लिए किया जाता है—जिससे हम स्वर्ग के हमेशा रहने वाले राज के नागरिक बनकर जी सकें (स्रोत: इंटरनेट)। रोमियों 5:6, 8 और 10 में मिली आयतों के आधार पर, तो फिर, उद्धार क्या है? रोमियों 5:6 पर गौर करें: "क्योंकि जब हम अभी भी बेबस [कमज़ोर] थे, ठीक सही समय पर मसीह अधर्मियों के लिए मर गए।" इस आयत की रोशनी में देखें, तो उद्धार का मतलब है कि परमेश्वर—जब हम पूरी तरह बेबस और अधर्मी थे, तब भी हम तक पहुँचे—और मसीह की मौत के ज़रिए दखल देकर हमें हमारी कमज़ोरी से बचाया और हमें परमेश्वर जैसे लोग बना दिया। अब, रोमियों 5:8 पर ध्यान दें: "लेकिन परमेश्वर हमारे प्रति अपना प्यार इस तरह दिखाते हैं कि जब हम अभी भी पापी थे, तब मसीह हमारे लिए मर गए।" इस हिस्से की रोशनी में, उद्धार वह काम है जिसके ज़रिए परमेश्वर—हम पापियों के लिए अपने प्यार की वजह से—अपने इकलौते बेटे, यीशु मसीह को हमारी जगह सलीब पर मरने दिया, और इस तरह हमें धर्मी ठहराया (आयत 9)। इसका मतलब है कि उद्धार—जो "उद्धार" के लिए इस्तेमाल होने वाले यूनानी शब्द के असली मतलब के मुताबिक है—का मतलब सिर्फ़ यह नहीं है कि परमेश्वर ने हमें पाप से जुड़ी सज़ा, ताकत और पाप भरी जीवनशैली से बचाया है, बल्कि इसमें यह सच्चाई भी शामिल है कि उन्होंने हमें धर्मी ठहराया है। कृपया रोमियों 5:10 देखें: "क्योंकि अगर, जब हम परमेश्वर के दुश्मन थे, तब भी उनके बेटे की मौत के ज़रिए हमारा उनसे मेल हो गया, तो अब जब हमारा मेल हो चुका है, तो उनके जीवन के ज़रिए हम और भी ज़्यादा कैसे बचाए जाएँगे!" इस हिस्से की रोशनी में, उद्धार का मतलब है कि परमेश्वर—अपने इकलौते बेटे, यीशु की मौत के ज़रिए—हमारा खुद से मेल कराया, भले ही पहले हम उनके दुश्मन थे, और हमें अपने ही बच्चों के तौर पर अपना लिया। "वर्तमान-काल के उद्धार" का विचार—खास तौर पर यह निर्देश, "अपने उद्धार के लिए काम करो" (फिलिप्पियों 2:12)—का मतलब यह निकाला जा सकता है, "हमेशा की ज़िंदगी पाने के लिए कोशिश

करो।" मेरा यह विचार इसलिए है, क्योंकि जब हम बाइबल के उन अंशों की जाँच करते हैं जो भविष्य काल में उद्धार की बात करते हैं, तो पवित्र शास्त्र उद्धार को एक भविष्य की घटना के रूप में वर्णित करते हैं—वह घटना जिसमें यीशु इस पृथ्वी पर लौटते हैं (दूसरा आगमन) ताकि हमें स्वर्ग के अनंत राज्य में ले जा सकें, जहाँ हम हमेशा के लिए निवास करेंगे। साथ ही—1 यूहन्ना 5:12–13 में पाए जाने वाले शब्दों के आधार पर—बाइबल यह भी पुष्टि करती है कि हमने यीशु में अपने विश्वास के माध्यम से उद्धार *पहले ही* प्राप्त कर लिया है; अर्थात्, हम जो यीशु में विश्वास करते हैं, उनके पास पहले से ही अनंत जीवन है। इसलिए, चाहे हम उद्धार को भूतकाल के संदर्भ में देखें या भविष्य काल के संदर्भ में, मेरा मानना है कि यदि हम "उद्धार" को "अनंत जीवन" का पर्याय समझें, तो हम फिलिप्पियों 2:12 में पौलुस के निर्देश—"अपने उद्धार के लिए काम करो"—की व्याख्या एक सुसंगत और तर्कसंगत तरीके से कर सकते हैं। दूसरे शब्दों में, "अपने उद्धार के लिए काम करो" इस आज्ञा की व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है: "अनंत जीवन प्राप्त करने के लिए प्रयास करो।" इसे अपने जीवन पर लागू करते हुए, "अपने उद्धार के लिए काम करो" इस निर्देश को इस प्रकार भी कहा जा सकता है: "उन लोगों के अनुरूप जीवन जियो जिनके पास अनंत जीवन है।" संक्षेप में, यह एक ऐसा आह्वान है जो कहता है: "भाइयों और बहनों, स्वर्ग के राज्य के सच्चे नागरिकों के रूप में जीवन जियो।"

(3) भविष्य का उद्धार:

पवित्र शास्त्र यह भी घोषित करते हैं कि हमें भविष्य में उद्धार प्राप्त होना अभी बाकी है। कृपया प्रेरितों के काम 16:31 पर विचार करें: "उन्होंने उत्तर दिया, 'प्रभु यीशु पर विश्वास करो, और तुम्हारा उद्धार होगा—तुम्हारा और तुम्हारे परिवार का।'" कृपया रोमियों 10:9 पर दृष्टि डालें: "यदि तुम अपने मुँह से यह स्वीकार करो कि यीशु प्रभु है, और अपने हृदय में विश्वास करो कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिला उठाया, तो तुम्हारा उद्धार होगा।" जब हम इन दोनों वचनों की जाँच करते हैं, तो हम देखते हैं कि वे यह नहीं कहते कि प्रभु यीशु पर विश्वास करने पर किसी व्यक्ति ने उद्धार *पहले ही* प्राप्त कर लिया है; बल्कि, वे भविष्य काल में बात करते हैं, जो यह संकेत देता है कि किसी व्यक्ति को भविष्य में किसी समय उद्धार *प्राप्त होगा*। इस संदर्भ में, यह "भविष्य का उद्धार" उस समय को संदर्भित करता है जब यीशु इस पृथ्वी पर लौटते हैं (दूसरा आगमन) ताकि हमें महिमा प्रदान कर सकें (रोमियों 8:30) और हमें स्वर्ग के अनंत राज्य में ले जा सकें, जहाँ हम हमेशा के लिए निवास करेंगे। भविष्य

का उद्धार उस मुक्ति की बात करता है जो हमें आने वाले दिनों में अभी मिलनी बाकी है (रोमियों 5:9)। संक्षेप में, भविष्य का उद्धार, उद्धार के *पूरा होने* को दर्शाता है।

रोमियों 5:9 में जिस भविष्य के उद्धार की बात की गई है—भले ही वह अतीत के उद्धार पर आधारित हो—वह उद्धार का और भी अधिक निश्चित रूप है। इसलिए, रोमियों 8:30 में, प्रेरित पौलुस कहते हैं: "और जिन्हें उसने पहले से ठहराया, उन्हें बुलाया भी; और जिन्हें बुलाया, उन्हें धर्मी भी ठहराया; और जिन्हें धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी।" यहाँ, "जिन्हें उसने पहले से ठहराया" उन लोगों को संदर्भित करता है जिन्हें परमेश्वर ने, अपने प्रेम में, संसार की नींव रखे जाने से पहले ही चुन लिया था (इफिसियों 1:4)। "उन्हें बुलाया भी" का अर्थ है कि परमेश्वर ने उन लोगों को—जिन्हें उसने प्रेम किया और चुना—यीशु मसीह पर विश्वास करने में समर्थ बनाया। "जिन्हें बुलाया, उन्हें धर्मी भी ठहराया" का अर्थ है कि परमेश्वर ने—यीशु मसीह के लहू (जीवन) के द्वारा—उन लोगों को, जिन्हें उसने प्रेम किया और चुना, यीशु मसीह पर उनके विश्वास के आधार पर धर्मी घोषित किया। अंत में, "उन्हें महिमा भी दी" वाक्यांश, अंतिम न्याय और परमेश्वर के अंतिम क्रोध से भविष्य में मिलने वाली मुक्ति को संदर्भित करता है; इस भविष्य की घटना को भूतकाल में—मानो यह *पहले ही* घटित हो चुकी हो—व्यक्त करने का कारण इस पूर्ण निश्चितता पर ज़ोर देना है कि हमें वास्तव में यह उद्धार (हमारी मुक्ति की पूर्णता) प्राप्त होगा। इफिसियों 2:5–6 पर दृष्टि डालें: "जब हम अपने अपराधों के कारण मरे हुए थे, तब उसने हमें मसीह के साथ जीवित किया (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है), और हमें उसके साथ उठाया, और मसीह यीशु में स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया।" हमने परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा उद्धार पहले ही प्राप्त कर लिया है। उसने हमें—जो अपने अपराधों के कारण मरे हुए थे—मसीह के साथ जीवित किया। यह हमारे नए जन्म और पुनरुत्थान को संदर्भित करता है। वाक्यांश "और हमें उसके साथ उठाया" स्वर्गारोहण को संदर्भित करता है। इसलिए, अब हम मसीह यीशु में स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठे हुए हैं। इसका अर्थ है कि हम परमेश्वर के अंतिम क्रोध से मुक्त हो चुके हैं। इसका तात्पर्य है कि उद्धार की पूर्णता को प्राप्त करना—और स्वर्ग में हमारा प्रवेश—पूर्ण रूप से निश्चित है।

हम यीशु मसीह के लहू (जीवन) के द्वारा धर्मी ठहराए गए हैं (रोम 5:9)। अपने सभी पापों की क्षमा पाकर और धर्मी ठहराए जाकर, हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप कर चुके हैं (पद 10) और अब शांति का आनंद लेते हैं (पद 1)। इसके अलावा, हमें परमेश्वर के पवित्र 'महापवित्र स्थान' तक पहुँच मिल गई है, जिससे हम परमेश्वर की उपस्थिति में—उसके अनुग्रह के सिंहासन के सामने—निकट आ सकते हैं (पद 2)। साथ ही, हम परमेश्वर की महिमा की आशा में आनंदित होते हैं (पद 2), और हम अपनी पीड़ाओं में भी आनंदित होते हैं (पद 3)। इसका कारण यह है कि हम जानते हैं कि पीड़ा से धीरज उत्पन्न होता है; धीरज से चरित्र; और चरित्र से आशा (पद 3–4)। सनातन पवित्र आत्मा के द्वारा और यीशु मसीह के बहुमूल्य लहू की सामर्थ्य से, हम जीवित परमेश्वर की सेवा करने के योग्य बनाए गए हैं (इब्र 9:14)। इसलिए, हम कृतज्ञता के साथ प्रभु की सेवा करने आए हैं—चुपचाप और बिना किसी पहचान की चाह के (New Hymnal 323, "Called to Serve," पद 3)। जैसे-जैसे हम सेवा करते हैं, हमें यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने और अपने पड़ोसियों से प्रेम करने का प्रयास करना चाहिए। भले ही हम स्वयं को विपरीत परिस्थितियों, कठिनाइयों और क्लेशों के बीच पाएँ—जैसे कि मृत्यु की छाया की तराई से होकर चलना (भज 23:4)—हमें विजय का जीवन जीना चाहिए, जो यीशु मसीह के बहुमूल्य लहू और परमेश्वर की उद्धारकारी सामर्थ्य से सशक्त हो।

हमें परमेश्वर का धन्यवाद देना चाहिए क्योंकि, यीशु मसीह के द्वारा, हम अंतिम न्याय के क्रोध से भी बचाए जाएँगे। क्रूस पर यीशु की मृत्यु के द्वारा पहले ही उद्धार पा चुके होने के नाते—और भविष्य के उद्धार की प्रतीक्षा करने वालों के रूप में—हमें ऐसा जीवन जीना चाहिए जो वर्तमान में हमारे उद्धार को सक्रिय रूप से सिद्ध करता हो। दूसरे शब्दों में, उन लोगों के रूप में जिन्हें पहले ही अनंत जीवन मिल चुका है—और स्वर्ग के उन नागरिकों के रूप में जो एक दिन वहाँ निवास करेंगे, और अनंत जीवन का पूर्ण आनंद लेंगे—हमें इस पृथ्वी पर रहते हुए स्वर्ग के नागरिकों के अनुरूप जीवन जीना चाहिए। स्वर्ग के नागरिक के रूप में जीने का अर्थ है यीशु की दो महान आज्ञाओं का पालन करते हुए जीवन जीना। कृपया मत्ती 22:37–39 देखें: “यीशु ने उत्तर दिया: ‘अपने प्रभु परमेश्वर से अपने पूरे मन, अपनी पूरी आत्मा और अपनी पूरी बुद्धि से प्रेम करो।’ यह पहली और सबसे बड़ी आज्ञा है। और दूसरी आज्ञा भी इसी के समान है: ‘अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो।’” (1) यह *अतीत का प्रेम* है: जब हम यीशु में विश्वास के द्वारा बचाए गए, तो परमेश्वर ने न केवल हमें पवित्र आत्मा दिया, बल्कि पवित्र

आत्मा के द्वारा, उसने अपना प्रेम हमारे हृदयों में पहले ही उंडेल दिया था (रोम 5:5)। (2) यह *भविष्य का प्रेम* है: जब हम यीशु के दूसरे आगमन के समय अपना अंतिम उद्धार प्राप्त करेंगे—जब हम स्वर्ग में प्रवेश करेंगे—तो पवित्र आत्मा हमें यीशु की दोहरी आज्ञा (जो स्वर्ग का ही नियम है) का पूरी तरह पालन करने में समर्थ बनाएगा, जिससे हमें परमेश्वर और अपने पड़ोसियों से पूर्ण प्रेम करने की शक्ति मिलेगी। (3) यह *वर्तमान का प्रेम* है: चूंकि वह पवित्र आत्मा हमारे भीतर वास करता है—जो अभी भी प्रेम का फल उत्पन्न कर रहा है (गल 5:22) और हमें यीशु की दोहरी आज्ञा का पालन करने में समर्थ बना रहा है—इसलिए हमें आत्मा के अनुसार जीना और प्रेम करना चाहिए (पद 16)। दूसरे शब्दों में, हमें स्वयं को पवित्र आत्मा के द्वारा अगुवाई करने देना चाहिए (पद 18); हमें आत्मा के द्वारा जीना और आत्मा के अनुसार चलना चाहिए (पद 25)। जब हम ऐसा करेंगे, तो हमारे हृदय स्वर्ग में बदल जाएंगे, हमारे घर स्वर्गीय बन जाएंगे, और हमारा कलीसिया एक ऐसा समुदाय बन जाएगा जो स्वर्ग के ही स्वभाव को मूर्त रूप देगा।

हमें यीशु पर गर्व करना चाहिए और यीशु के सुसमाचार की घोषणा करनी चाहिए। इस समय—जब पूरा विश्व कोरोनावायरस के कारण संकट में है—हमें सभी राष्ट्रों को अपने हृदय में समेट लेना चाहिए, उनकी ओर से परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए, और विश्व के उन सभी लोगों के साथ सुसमाचार साझा करना चाहिए जो इस संकट का सामना कर रहे हैं। कृपया मत्ती 24:14 देखें: "और राज्य का यह सुसमाचार पूरे विश्व में सभी राष्ट्रों के लिए एक गवाही के रूप में प्रचारित किया जाएगा, और तब अंत आ जाएगा।" बाइबल में प्रेरितों के काम 1:8 देखें: "परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा, तो तुम सामर्थ्य पाओगे; और तुम यरूशलेम में, और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।"

धर्मी ठहराए जाने के परिणाम (11): भविष्य के उद्धार को प्राप्त करना

“क्योंकि जब हम शत्रु ही थे, तो परमेश्वर के पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ; तो अब जब हमारा मेल हो गया, तो उसके जीवन के द्वारा हम उद्धार क्यों न पाएंगे?” (रोमियों 5:10)।

बाइबल हमें बताती है कि एक समय ऐसा था जब हम परमेश्वर के शत्रु थे (रोमियों 5:10)। हम परमेश्वर के शत्रु कैसे बन गए? यदि हम पुराने नियम की पुस्तक 'उत्पत्ति' (Genesis) को देखें, तो हम पाते हैं कि जब परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी को बनाया—और साथ ही पहले मनुष्य, आदम को भी रचा—तो उसने आदम को अदन की वाटिका में किसी भी पेड़ का फल खाने की अनुमति दी, लेकिन उसे यह आज्ञा दी, “तू भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल कभी न खाना।” परमेश्वर ने यह घोषणा की कि जिस दिन आदम उस फल को खाएगा, वह “निश्चित रूप से मर जाएगा” (उत्पत्ति 2:16–17)। हालाँकि, आदम उस धूर्त सर्प (शैतान) के प्रलोभन में आ गया, उसने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया, और भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खा लिया। इसके परिणामस्वरूप, आदम और उसके सभी वंशज परमेश्वर के शत्रु बन गए। इसके अलावा, आदम और उसके सभी वंशजों पर परमेश्वर का क्रोध भड़का, और उनका भाग्य यह तय हो गया कि उन्हें अनंत अग्नि-कुंड में अनिवार्य विनाश का सामना करना पड़ेगा। इस प्रकार, अतीत में, हम वे लोग थे जो परमेश्वर के शत्रु के रूप में खड़े थे, और हम ऐसे लोग थे जिनमें प्रेम का अभाव था। फिर भी, क्योंकि परमेश्वर—जो स्वयं प्रेम है [“...परमेश्वर प्रेम है” (1 यूहन्ना 4:8)]—ने उस पवित्र आत्मा के द्वारा, जो उसने हमें दिया है, अपने प्रेम को हमारे हृदयों में उंडेल

दिया है (रोमियों 5:5), इसलिए हम जो अब यीशु पर विश्वास करते हैं, परमेश्वर के प्रेम के अधिकारी बन गए हैं। परमेश्वर ने इसे संभव कैसे बनाया? 1 यूहन्ना 4:9 को देखिए: "परमेश्वर का प्रेम हमारे बीच इस रीति से प्रकट हुआ कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा, ताकि हम उसके द्वारा जीवन पाएं।" परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में—जन्म या अवतार के रूप में—इसलिए भेजा ताकि वह हमें जीवन दे सके (अर्थात् हमारा उद्धार कर सके)। यह एकलौता पुत्र, जिसे जगत में भेजा गया था, अपने स्वभाव में वास्तव में परमेश्वर ही था; फिर भी, उन्होंने परमेश्वर के साथ समानता को ऐसी चीज़ नहीं माना जिसे ज़बरदस्ती हासिल किया जाए, बल्कि इसके बजाय उन्होंने खुद को शून्य बना लिया और एक सेवक का रूप धारण कर लिया, और इंसानी रूप में आए (फिलिप्पियों 2:6-7)। यीशु—जो एक ही समय में निष्पाप परमेश्वर और इंसान दोनों हैं—इस दुनिया में खास तौर पर हमें जीवन देने (हमें बचाने) के लिए पैदा हुए (अवतार लिया) (1 यूहन्ना 4:9)।

रोमियों 5:10 में, बाइबल कहती है: "उनके पुत्र की मृत्यु के द्वारा।" क्या कोई ऐसा है जिसे परमेश्वर पिता "अपने पुत्र"—परमेश्वर के इकलौते पुत्र, यीशु मसीह—से ज़्यादा प्यार करते हैं? फिर भी, परमेश्वर पिता ने अपने खुद के पुत्र को नहीं बख्शा, बल्कि हम सबके लिए उन्हें सौंप दिया (रोमियों 8:32)। दूसरे शब्दों में, हमारी खातिर—हम जो परमेश्वर के दुश्मन थे—परमेश्वर पिता ने अपने प्यारे, इकलौते पुत्र, यीशु मसीह को क्रूस पर चढ़ा दिया। 1 यूहन्ना 4:10 को देखिए: "प्रेम इसमें है: यह नहीं कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया, बल्कि यह कि उन्होंने हमसे प्रेम किया और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए अपने पुत्र को बलिदान के रूप में भेजा।" जब हम परमेश्वर के दुश्मन थे, तब भी उन्होंने हमसे प्रेम किया और हमारे पापों को क्षमा करने के लिए अपने इकलौते पुत्र, यीशु मसीह को प्रायश्चित के बलिदान के रूप में भेजा। इस प्रकार, यीशु मसीह को हमारी खातिर क्रूस पर सौंप दिया गया (रोमियों 8:32)। हालाँकि वे इकलौते पुत्र हैं—जो स्वभाव से मर नहीं सकते—फिर भी यीशु मसीह ने हमारी जगह मरने के लिए, परमेश्वर के साथ समानता को ऐसी चीज़ नहीं माना जिसे ज़बरदस्ती हासिल किया जाए; इसके बजाय, उन्होंने खुद को शून्य बना लिया और एक सेवक का रूप धारण कर लिया, और इंसानी रूप में आए (फिलिप्पियों 2:6-7)। इसके अलावा, इकलौते पुत्र, यीशु मसीह, इंसानी रूप में प्रकट हुए, खुद को दीन बनाया, और आज्ञाकारी बन गए—यहाँ तक कि क्रूस पर मृत्यु तक भी (पद 8)। चूँकि हम सब परमेश्वर के दुश्मन थे, इसलिए हम सब क्रूस पर उनके क्रोध के तहत अनंत दंड के हकदार थे; फिर भी, इकलौते पुत्र, यीशु मसीह,

हमारी जगह क्रूस पर मर गए—हम जो परमेश्वर के दुश्मन थे। इस प्रकार, उन्होंने क्रूस के द्वारा शत्रुता को खत्म कर दिया और हमें परमेश्वर के साथ मिला दिया (इफिसियों 2:16)। परमेश्वर को यह भाया कि वह अपने पुत्र, यीशु मसीह के क्रूस के लहू के द्वारा शांति स्थापित करे, और उसके द्वारा, सब चीज़ों को अपने साथ मिला ले (कुलुस्सियों 1:20)।

हम परमेश्वर के साथ मिला लिए गए हैं (रोमियों 5:10)। परमेश्वर ने हमें—जो उसके शत्रु थे—अपने साथ मिला लिया, और उसने ऐसा हमेशा के लिए एक ही बार में कर दिया। उसने इसे कैसे पूरा किया? उसने यीशु मसीह के शरीर को हमेशा के लिए एक ही बार बलिदान के रूप में चढ़ाकर इसे संभव बनाया (इब्रानियों 10:10)। दूसरे शब्दों में, जब हम अभी भी परमेश्वर के शत्रु थे, तब भी हम उसके पुत्र, यीशु मसीह की क्रूस पर हुई एक बार की मृत्यु के द्वारा उसके साथ मिला लिए गए (5:10; 6:10)। 1 यूहन्ना 2:2 पर विचार करें: "वही हमारे पापों का प्रायश्चित है, और केवल हमारे ही नहीं, वरन् सारे जगत के पापों का भी" (तुलना करें रोमियों 3:25)। यहाँ, "प्रायश्चित" शब्द का अर्थ "संतुष्टि" है; यह इस तथ्य को दर्शाता है कि यीशु ने, बलिदान के मेम्ने (फसह के मेम्ने) के रूप में चढ़ाए जाकर और क्रूस पर मरकर, परमेश्वर की पवित्र माँगों को पूरी तरह से संतुष्ट किया—ऐसी माँगें जिनके अनुसार पाप का दंड मिलना आवश्यक था (मैकआर्थर)। प्रेरित यूहन्ना ने यह बात न केवल 1 यूहन्ना 2:2 में कही, बल्कि 1 यूहन्ना 4:10 में भी दोहराई: "प्रेम इसमें नहीं कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया, वरन् इसमें है कि उसने हमसे प्रेम किया और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए अपने पुत्र को भेजा।" वह यह घोषणा कर रहा है कि परमेश्वर ने अपने पुत्र, यीशु को, हमारे पापों का प्रायश्चित करने के लिए इस संसार में भेजा। इसका कारण केवल यह है कि परमेश्वर हमसे प्रेम करता है। 2 कुरिन्थियों 5:19 पर दृष्टि डालें: "अर्थात् परमेश्वर ने मसीह में होकर जगत को अपने साथ मिला लिया, और उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया..." कुलुस्सियों 1:22 पर दृष्टि डालें: "कि उसने अपने शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा, तुम्हें पवित्र, और निर्दोष, और अपने सामने बेदाग बनाकर उपस्थित किया है।" यह मेल-मिलाप एक ऐसा अनंत बंधन है जिसे कभी तोड़ा नहीं जा सकता।

परमेश्वर अब हमें शत्रु नहीं मानता; बल्कि, अपने पुत्र, यीशु मसीह की क्रूस पर हुई बलिदान की मृत्यु के द्वारा, उसने हमें अपने साथ मिला लिया है और हमें अपने ही बच्चों के रूप में अपना लिया है। इसलिए, अब हमें परमेश्वर के निकट आने, उन्हें "अब्बा, पिता" कहकर पुकारने, और उनके साथ संगति तथा मेल-जोल का आनंद

लेने का सौभाग्य प्राप्त है। अब हम परमेश्वर के शत्रु नहीं रहे, बल्कि—यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा—हम ऐसे लोग बन गए हैं जिनका उनके साथ मेल हो गया है। प्रभु ने हम पर—उन लोगों पर जिनका परमेश्वर के साथ मेल हो गया है—मेल-मिलाप की सेवा का दायित्व सौंपा है (2 कुरिन्थियों 5:18)। इसके अतिरिक्त, प्रभु ने हमें मेल-मिलाप का संदेश भी सौंपा है (पद 19)। इसलिए, मसीह के राजदूतों के रूप में कार्य करते हुए, हमें पूरी लगन से यह आग्रह करना चाहिए: "परमेश्वर के साथ मेल कर लो" (पद 20)।

बाइबल के रोमियों 5:10 में लिखा है: "तो फिर, अब जब हमारा मेल-मिलाप हो चुका है, तो हम उसके जीवन के द्वारा और भी अधिक बचाए जाएँगे।" यहाँ "वह" यीशु मसीह को दर्शाता है—वह जिसने इस धरती पर आकर, क्रूस पर अपनी जान देकर, हमारा परमेश्वर से मेल-मिलाप करवाया। इसके अलावा, "तो फिर... उसके जीवन के द्वारा" (रोमियों 5:10) वाक्यांश में, "उसका जीवन" यीशु मसीह के पुनरुत्थान को दर्शाता है। पवित्र शास्त्रों के अनुसार, यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मरे, उन्हें दफनाया गया, और—फिर से पवित्र शास्त्रों के अनुसार—तीसरे दिन वह फिर से जीवित हो उठे (1 कुरिन्थियों 15:3–4)। अपने पुनरुत्थान के बाद, यीशु मसीह ने चालीस दिनों तक अपने पुनर्जीवित होने की गवाही दी; फिर वह स्वर्ग चले गए और अब परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान हैं। जिस यीशु से प्रेरित पौलुस की मुलाकात दमिश्क के रास्ते में हुई थी, वह केवल पुनर्जीवित यीशु ही नहीं थे, बल्कि वह प्रभु थे जो पुनर्जीवित होकर, स्वर्ग जाकर, परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान हो चुके थे (प्रेरितों के काम 9)। यही प्रभु निश्चित रूप से इस दुनिया में वापस आएँगे (दूसरा आगमन)। उस समय, हमें अपना उद्धार प्राप्त होगा (रोमियों 5:10)। यहाँ, यह "उद्धार" इस बात का संकेत है कि जब यीशु मसीह वापस आएँगे, तो वे संत जो पहले ही मर चुके हैं, अविनाशी, महिमामय, शक्तिशाली और आत्मिक शरीरों के साथ पुनर्जीवित होंगे (1 कुरिन्थियों 15:42–44); इसी तरह, वे संत जो उस समय तक जीवित होंगे, वे भी अविनाशी, महिमामय, शक्तिशाली और आत्मिक शरीरों में बदल जाएँगे (पद 51), और इस प्रकार वे पुनर्जीवित यीशु के समान ही एक महिमामय शरीर धारण कर लेंगे (फिलिप्पियों 3:20–21)। इसके बाद, हम जो उस समय तक जीवित और शेष रहेंगे, उन्हें उनके साथ बादलों में ऊपर उठा लिया जाएगा ताकि हम हवा में प्रभु से मिल सकें; और इस प्रकार हम हमेशा प्रभु के साथ रहेंगे (1 थिस्सलोनिकियों 4:17)। अंत में, स्वर्ग में, हम "मेम्ने के विवाह भोज" में शामिल होंगे (प्रकाशितवाक्य 19:9)। हमें यही उद्धार प्राप्त होगा। इसके अलावा, हम यीशु के

पुनरुत्थान के द्वारा बचाए जाएँगे (रोमियों 5:10)। यहाँ, शब्द "इसके अलावा" (moreover) पूर्ण निश्चितता पर ज़ोर देता है—यानी, हम *निश्चित रूप से* यीशु मसीह के पुनरुत्थान के द्वारा भविष्य का उद्धार प्राप्त करेंगे। यदि यीशु इस दुनिया में आए और जब हम अभी भी कमज़ोर, पापी और परमेश्वर के शत्रु थे, तब क्रूस पर प्रायश्चित के बलिदान के रूप में मरकर हमें बचाया, तो यह 100% निश्चित है कि जब वह इस दुनिया में लौटेंगे, तब हम बचाए जाएँगे। हमें उद्धार के इस विश्वास और भरोसे को मज़बूती से थामे रखना चाहिए।

प्रभु निश्चित रूप से और ज़रूर लौटेंगे! हमारे वे साथी विश्वासी जो गुज़र चुके हैं, निस्संदेह पुनर्जीवित होंगे, और जो उस समय तक जीवित रहेंगे, वे निश्चित रूप से महिमामयी प्रभु का स्वागत करने के लिए बदल दिए जाएँगे। बाइबल में देखें, 1 कुरिन्थियों 15:52–58: “देखो! मैं तुम्हें एक भेद बताता हूँ: हम सब सोएँगे नहीं, परन्तु हम सब बदल जाएँगे—एक पल में, पलक झपकते ही, अन्तिम तुरही बजने पर। क्योंकि तुरही बजेगी, और मरे हुए अविनाशी होकर जी उठेंगे, और हम बदल जाएँगे। क्योंकि इस नाशवान शरीर को अविनाशी शरीर धारण करना है, और इस मरणशील शरीर को अमरता धारण करनी है। जब यह नाशवान शरीर अविनाशी शरीर धारण कर लेगा, और यह मरणशील शरीर अमरता धारण कर लेगा, तब वह वचन पूरा होगा जो लिखा है: ‘मृत्यु विजय में निगल ली गई।’ ‘हे मृत्यु, तेरी विजय कहाँ रही? हे मृत्यु, तेरा डंक कहाँ रहा?’ मृत्यु का डंक पाप है, और पाप की शक्ति व्यवस्था है। परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें विजय प्रदान करता है। इसलिए, मेरे प्यारे भाइयों, स्थिर रहो, अडिग रहो, प्रभु के काम में सदा बढ़ते रहो, यह जानते हुए कि प्रभु में तुम्हारा परिश्रम व्यर्थ नहीं है।” हमें पुनरुत्थान के इस विश्वास और आशा में स्थिर और अडिग रहना चाहिए, और हमेशा प्रभु के काम के लिए स्वयं को पूरी तरह समर्पित रखना चाहिए (पद 58)। इसका कारण यह है कि प्रभु हमें प्रतिफल देंगे। प्रकाशितवाक्य 22:12 पर विचार करें: “देखो, मैं शीघ्र आनेवाला हूँ! मेरा प्रतिफल मेरे साथ है, और मैं हर एक व्यक्ति को उसके कामों के अनुसार दूँगा।” “मीनाओं के दृष्टांत” (लूका 19:11–27) में, जिस सेवक ने एक मीना से दस मीना कमाए, और जिस सेवक ने एक मीना से पाँच मीना कमाए, उन दोनों को स्वामी की ओर से यह सराहना मिली—"शाबाश, मेरे अच्छे सेवक! क्योंकि तुम बहुत छोटी सी बात में भी भरोसेमंद रहे हो"—और इसके साथ ही उन्हें क्रमशः “दस नगरों” और “पाँच नगरों” पर अधिकार का प्रतिफल भी मिला। उस समय इस्राएल में “मीना” मुद्रा की एक इकाई थी, जो एक मज़दूर की तीन महीने की मज़दूरी के बराबर होती

थी। फिर भी, स्वामी द्वारा दिए गए प्रतिफल—क्रमशः दस नगरों और पाँच नगरों पर अधिकार—इतने विशाल थे कि उनकी किसी से कोई तुलना ही नहीं की जा सकती थी। मैं प्रार्थना करता हूँ कि भविष्य में जब हम प्रभु के सामने अपना हिसाब देने के लिए खड़े होंगे (मत्ती 25:19), तो हम भी उन लोगों में शामिल होंगे जिन्हें उनकी प्रशंसा और प्रतिफल प्राप्त होंगे।

धर्मी ठहराए जाने के परिणाम (12): परमेश्वर में आनन्द

"और केवल यही नहीं, परन्तु हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा, जिसके द्वारा अब हमारा मेल हो गया है, परमेश्वर में भी आनन्द करते हैं" (रोमियों 5:11)।

प्रेरित पौलुस ने रोमियों 5:2 में पहले ही कह दिया था, "...हम परमेश्वर की महिमा की आशा में आनन्द करते हैं।" इसके अलावा, पद 3 में, उसने घोषणा की, "हम अपने दुखों में भी आनन्द करते हैं।" और पद 11 में, पौलुस ने एक बार फिर पुष्टि की, "हम परमेश्वर में भी आनन्द करते हैं।" जब, हमारे पाप के कारण, हम परमेश्वर की महिमा से वंचित रह गए थे (3:23), तो हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा विश्वास से धर्मी ठहराए गए (5:1–2)। यद्यपि हम कभी परमेश्वर के शत्रु थे, परन्तु उसके पुत्र, यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा, हमारा परमेश्वर से मेल हो गया (पद 10) और हमें परमेश्वर के साथ शान्ति का अनुभव हुआ (पद 1)। अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा (पद 1–2), हमें परमेश्वर के अनुग्रह के सिंहासन तक पहुँच मिली है और अब हम उसके सामने दृढ़ता से खड़े हैं (पद 2)। हम परमेश्वर की महिमा की आशा में आनन्द (और गर्व) करते हैं (पद 2)। महिमा के ये तीन पहलू जो पहले ही प्रकट हो चुके हैं, अभी 100% पूर्ण नहीं हैं। यदि परमेश्वर अभी अपनी 100% पूर्ण महिमा को पूरी तरह से प्रकट कर दे, तो हम उस सिद्ध महिमा को पूरी तरह से समझ नहीं पाएँगे। परमेश्वर की वह महिमा जो अभी प्रकट होनी बाकी है—एक शब्द में कहें तो—यीशु का दूसरा आगमन है। भविष्य में प्रकट होने वाली परमेश्वर की महिमा 100% पूर्ण और अनन्त महिमा होगी; उस समय, हम परमेश्वर को आमने-सामने देखेंगे (1 कुरिन्थियों 13:12)। परमेश्वर की यह महिमा हमारी भी महिमा है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर पिता की महिमा हमारी, यानी

उसके बच्चों की महिमा है। रोमियों 5:1–2 में वर्णित परमेश्वर की महिमा के तीन पहलुओं की तुलना, परमेश्वर की उस महिमा से पर्याप्त रूप से नहीं की जा सकती जो अभी प्रकट होनी बाकी है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर की वह महिमा जिसका आनंद हम अभी अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा उठा रहे हैं, परमेश्वर की उस महिमा की तुलना में फीकी पड़ जाती है जिसका अनुभव हम तब करेंगे जब भविष्य में हमारे प्रभु यीशु लौटकर आएंगे (5:1–2; cf. 8:18)। इस भविष्य की महिमा के संबंध में, जब यीशु प्रकट होंगे, तो हम भी उन्हीं के समान हो जाएंगे और उनका सच्चा रूप देखेंगे (1 यूहन्ना 3:2); वह हमारे इस दीन-हीन शरीर को बदलकर अपने महिमामय शरीर के समान बना देंगे (फिलिप्पियों 3:21)। हमारा विश्वास है कि परमेश्वर उन लोगों को अपने साथ लाएंगे जो यीशु में विश्वास रखते हुए मृत्यु को प्राप्त हुए हैं। प्रभु के दूसरे आगमन तक, हम जो जीवित बचे रहेंगे, वे उन लोगों से आगे नहीं बढ़ेंगे जो पहले ही इस संसार से विदा हो चुके हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि जब प्रभु स्वर्ग से एक ज़ोरदार ललकार के साथ, प्रधान स्वर्गदूत की वाणी के साथ, और परमेश्वर की तुरही की आवाज़ के साथ उतरेंगे, तो जो लोग मसीह में मरे थे, वे सबसे पहले जी उठेंगे। उसके बाद, हम जो अभी भी जीवित हैं, उन्हें उनके साथ बादलों में ऊपर उठा लिया जाएगा ताकि हम हवा में प्रभु से मिल सकें, और इस प्रकार हम प्रभु—जो सनातन हैं—के साथ सदा-सर्वदा रहेंगे (1 थिस्सलोनीकियों 4:14–17)। इसलिए, हम भी परमेश्वर में आनंद मनाते हैं (रोमियों 5:11)।

हमारे परमेश्वर परम आनंद के परमेश्वर हैं (भजन संहिता 43:4)। परम आनंद के परमेश्वर ही हमारा आनंद हैं। वेस्टमिंस्टर शॉर्टर कैटेकिज़्म (Westminster Shorter Catechism) का पहला प्रश्न पूछता है: "मनुष्य का मुख्य उद्देश्य क्या है?" इसका उत्तर है: "मनुष्य का मुख्य उद्देश्य परमेश्वर की महिमा करना, और सदा-सर्वदा उनका आनंद उठाना है।" हमारा प्राथमिक प्रयास परमेश्वर की महिमा करना होना चाहिए, और साथ ही सदा-सर्वदा उनका आनंद उठाना भी। हमें परमेश्वर का आनंद अनंतकाल तक उठाना है। केवल वही लोग जो परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप कर चुके हैं, वे ही वास्तव में उनमें आनंद मना सकते हैं। हमें अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर में आनंद मनाना चाहिए, जिन्होंने हमारे मेल-मिलाप का मार्ग प्रशस्त किया है। दूसरे शब्दों में—अपने एकमात्र पुत्र, यीशु मसीह के क्रूस पर दिए गए बलिदानपूर्ण मृत्यु के प्रताप से (पद 10)—हमारे समस्त पाप क्षमा कर दिए गए हैं; अतः, पाप से मुक्त किए गए लोगों के रूप में, हमें परमेश्वर में आनंद मनाना चाहिए। यही सच्चे आनंद का मूल सार है। वास्तव में, यह एक ऐसा आनंद है जो कभी नहीं बदलता—एक ऐसा आनंद जिसे

कोई भी हमसे कभी छीन नहीं सकता। यह एक ऐसा आनंद है जो सभी परिस्थितियों से परे है; जैसा कि प्रेरित पौलुस ने दिखाया, वह जेल में होने पर भी आनंदित होता रहा—और बार-बार आनंदित हुआ (फिलिप्पियों 1:18)। *न्यू हिमनल* के भजन 438 के तीसरे पद के बोल इस प्रकार हैं: "चाहे ऊँचे पहाड़ों पर हो या ऊबड़-खाबड़ खेतों में, एक साधारण सी झोपड़ी में हो या किसी भव्य महल में—जहाँ कहीं भी मेरे प्रभु यीशु निवास करते हैं, वही स्थान स्वर्ग का राज्य है।"

इस दुनिया में—जहाँ चिंताएँ बहुत हैं, मुश्किलें अनेक हैं, और पाप, दुख, पीड़ा, बीमारी और भूख के रूप में मौत लाने वाली ताकतें जमा होती रहती हैं—हमें अपनी खुशी परमेश्वर में ही ढूँढ़नी चाहिए। जब हम परमेश्वर को—जो आनंद का असली स्रोत हैं—अपनी खुशी के रूप में अपनाते हैं, और जब हम सचमुच उस खुशी को अपने भीतर महसूस करते हैं और उसमें आनंद लेते हैं, तो हम किसी भी परिस्थिति में खुश रह पाते हैं। प्रभु द्वारा दिए गए इस आनंद के बीच, हमें सुसमाचार—यानी यीशु मसीह की खुशखबरी—का प्रचार करने के लिए बुलाया गया है। जिन लोगों का परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप उनके इकलौते बेटे, यीशु मसीह की बलिदान वाली मृत्यु के द्वारा हुआ है, उन्हें परमेश्वर में मिलने वाले आनंद का मज़ा लेते हुए, इस खुशी भरे संदेश को दूसरों के साथ बाँटना चाहिए।

भजन 497: "प्रभु यीशु का विशाल प्रेम"

(पद 1) प्रभु यीशु के विशाल प्रेम और उनकी असीम कृपा का पूरे मन से प्रचार करना—यह सचमुच कितना खुशी भरा काम है! प्रभु यीशु के धन्य वचन ही जीवन और सत्य हैं; वे मेरे दिल की हर गहरी चाहत को पूरी तरह से संतुष्ट करते हैं।
(पद 2) जब भी मैं इस वचन को दूसरों के साथ बाँटता हूँ, तो मेरा दिल खुशी से भर जाता है; और जितना ज़्यादा मैं इसका प्रचार करता हूँ, उतना ही एक नया आनंद मेरे भीतर उमड़ पड़ता है। चूँकि इस दुनिया में ऐसे बहुत से लोग हैं जिन्होंने अभी तक उद्धार का यह धन्य संदेश नहीं सुना है, इसलिए आइए, हम अपनी पूरी ताकत लगाकर इसे दूसरों तक पहुँचाने की कोशिश करें।

(पद 3) जिन लोगों ने इस वचन को सुना है, वे इसे दोबारा सुनने के लिए तरसते हैं; वे इसके लिए प्यासे रहते हैं और इसे अपने दिल में सँजोकर रखते हैं, क्योंकि यह वचन सचमुच सत्य है। उनके राज्य की महिमा के बीच मैं जो नया गीत गाऊँगा, वह और कुछ नहीं, बल्कि यही वचन होगा जिसे मैं बहुत पहले से प्यार करता आया हूँ।

(दोहराव) युगों-युगों से प्रचार किया जाने वाला वचन—यानी प्रभु यीशु का विशाल प्रेम—इस संदेश का हमेशा प्रचार करना मुझे सचमुच बहुत आनंद देता है।

“एक व्यक्ति के द्वारा”

[रोमियों 5:12–21]

कृपया रोमियों 5:12 देखें: “इसलिए, जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, क्योंकि सब ने पाप किया।” यहाँ, बाइबल कहती है, “एक मनुष्य के द्वारा।” यदि हम रोमियों 5:12–21 के मूल यूनानी पाठ की जाँच करें, तो “एक मनुष्य” वाक्यांश बारह बार आता है (कोरियाई अनुवाद में यह दस बार आता है)। यह “एक मनुष्य” किसे संदर्भित करता है? जब प्रेरित पौलुस “एक मनुष्य” की बात करता है, तो वह दो अलग-अलग व्यक्तियों का उल्लेख कर रहा होता है। कृपया रोमियों 5:15 और 17 देखें: “परन्तु वह वरदान उस अपराध के समान नहीं है। क्योंकि यदि एक मनुष्य के अपराध के कारण बहुत से मर गए, तो परमेश्वर का अनुग्रह और उस एक मनुष्य, यीशु मसीह के अनुग्रह का वरदान बहुतों के लिए और भी अधिक हुआ... क्योंकि यदि एक मनुष्य के अपराध के कारण मृत्यु ने उस एक के द्वारा राज्य किया, तो जो लोग अनुग्रह और धर्म के वरदान की बहुतायत पाते हैं, वे उस एक, यीशु मसीह के द्वारा जीवन में और भी अधिक राज्य करेंगे।” इन दो पदों को देखने पर, हम पाते हैं कि पहला “एक मनुष्य” जिसका उल्लेख प्रेरित पौलुस करता है, वह उस “एक मनुष्य” को संदर्भित करता है जिसने “अपराध” किया था, जबकि दूसरा “एक मनुष्य” (पद 15 में)—या “वह एक” (पद 17 में)—यीशु मसीह को संदर्भित करता है।

तो फिर, वह “एक मनुष्य” कौन है जिसने “अपराध” किया था? वह कोई और नहीं, बल्कि आदम है—पहला मनुष्य और मानवता का आदिपुरुष—जो उत्पत्ति अध्याय 2 में प्रकट होता है। कृपया उत्पत्ति 2:7 देखें: “और

यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा, और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूँक दिया; और आदम एक जीवित प्राणी बन गया।" 1 कुरिन्थियों 15:45 में, प्रेरित पौलुस आदम को "पहला मनुष्य, आदम" कहकर संबोधित करता है। इसका कारण यीशु मसीह के साथ एक समानता स्थापित करना है—वह दूसरा "एक मनुष्य" या "एक व्यक्ति" (रोमियों 5:15, 17)। परिणामस्वरूप, यीशु मसीह को "अन्तिम आदम" (1 कुरिन्थियों 15:45) कहा गया है। ईश्वर ने पहले आदम को मानवता के प्रतिनिधि के रूप में स्थापित किया और उसके साथ एक वाचा (समझौता) की। इस वाचा को "कर्मों की वाचा" के नाम से जाना जाता है। इस कर्मों की वाचा के तहत, ईश्वर ने आदम को एक आज्ञा दी: यदि आदम ईश्वर की आज्ञा का पालन करता, तो उसे आशीष (अनन्त जीवन) प्राप्त होती; हालाँकि, यदि वह आज्ञा का उल्लंघन करता, तो उसे श्राप (मृत्यु) भोगना पड़ता। ईश्वर ने आदम को जो विशिष्ट आज्ञा दी थी, वह यह थी: "तुम भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल मत खाना, क्योंकि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे, तुम निश्चित रूप से मर जाओगे" (उत्पत्ति 2:17)। "एक मनुष्य" (रोमियों 5:12)—मानव जाति के जनक और प्रतिनिधि—के रूप में, "पहला मनुष्य, आदम" (1 कुरिन्थियों 15:45) पर वाचा करने वाले ईश्वर की आज्ञा का पालन करने की ज़िम्मेदारी थी।

रोमियों 5:12 में, बाइबल कहती है कि "संसार में पाप प्रवेश कर गया।" "पाप" शब्द रोमियों 5:12–21 के अंश में आठ बार आया है। तो फिर, "पाप" क्या है? बाइबल "पाप" का वर्णन चार तरीकों से करती है: (1) पाप व्यवस्थाहीनता है। दूसरे शब्दों में, पाप व्यवस्था का उल्लंघन है। 1 यूहन्ना 3:4 पर विचार करें: "जो कोई पाप करता है, वह व्यवस्था का उल्लंघन करता है; वास्तव में, पाप व्यवस्थाहीनता है।" (2) पाप यह जानना है कि अच्छा कैसे किया जाए, फिर भी उसे करने में असफल रहना है। कृपया बाइबल में याकूब 4:17 देखें: "इसलिए, जो कोई अच्छा करना जानता है और नहीं करता, उसके लिए यह पाप है।" (3) पाप विश्वास से कार्य करने में असफल रहना है। कृपया बाइबल में रोमियों 14:23 देखें: "परन्तु जो कोई सन्देह करता है, यदि वह खाता है तो दोषी ठहराया जाता है, क्योंकि वह विश्वास से नहीं खाता; क्योंकि जो कुछ विश्वास से नहीं है, वह पाप है।" (4) पाप विश्वास से कार्य करना है, फिर भी अपेक्षित मानक से कम रह जाना है। पाप आज्ञाकारिता की कमी है। कोरियन अमेरिकन प्रेस्बिटेरियन चर्च की *लघु प्रश्नोत्तरी* (Shorter Catechism) के प्रश्न 14 में, यह प्रश्न पूछा गया है: "पाप क्या है?" दिया गया उत्तर यह है: "पाप, परमेश्वर के नियम के अनुरूप न होना, या उसका उल्लंघन करना है" (1 यूहन्ना 3:4; याकूब 4:17; रोमियों 3:23; याकूब 2:10)। बाइबल के रोमियों 5:12 में, जिस "पाप"

का ज़िक्र प्रेरित पौलुस करते हैं, वह विशेष रूप से पहले मनुष्य, आदम—जो पूरी मानवजाति का पूर्वज और प्रतिनिधि था—द्वारा किए गए उल्लंघन की ओर इशारा करता है। पद 19 में, आदम के इस उल्लंघन को "एक मनुष्य की आज्ञा-उल्लंघन" के रूप में वर्णित किया गया है। इसलिए, रोमियों 5:12 में जिस "पाप" की बात की गई है, वह आदम का उल्लंघन है; विशेष रूप से, यह परमेश्वर की आज्ञा के विरुद्ध उसका आज्ञा-उल्लंघन का कार्य था: "तुम भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल मत खाना" (उत्पत्ति 2:17)। अंततः, आदम उस परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने की अपनी ज़िम्मेदारी निभाने में असफल रहा, जिसके साथ उसने एक वाचा (समझौता) किया था, और इसके बजाय उसने वाचा के वचन—वह विशिष्ट निर्देश जिसका पालन करना उसके लिए आवश्यक था—का उल्लंघन किया, जो यह था: "तुम भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल मत खाना" (पद 17)। यदि आदम ने 'कर्मों की वाचा' की शर्तों का पालन किया होता, तो पाप कभी भी इस संसार में प्रवेश न करता। आदम द्वारा 'कर्मों की वाचा' के वचन का उल्लंघन करने से पहले, इस संसार में कोई पाप नहीं था [हालाँकि पाप स्वर्गदूतों के (आत्मिक) क्षेत्र में मौजूद था]।

आदम—पहला मनुष्य, एक अकेला व्यक्ति—ने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन क्यों किया और पाप क्यों किया? ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि शैतान—स्वर्गदूतों के (आत्मिक) क्षेत्र से गिरा हुआ एक स्वर्गदूत—ने हव्वा (मानवजाति की पहली स्त्री) को लुभाने के लिए साँप (सभी जंगली जानवरों में सबसे चालाक) को उसके पास भेजा (उत्पत्ति 3:1; पद 1–5)। साँप के प्रलोभन के आगे झुकते हुए, हव्वा ने 'भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष' के फल को देखा—जिसे परमेश्वर ने स्पष्ट रूप से उन्हें न खाने की आज्ञा दी थी (2:17)—और उसने देखा कि वह फल खाने के लिए अच्छा, आँखों को भाने वाला, और बुद्धि प्राप्त करने के लिए वांछनीय था [तुलना करें: "शरीर की अभिलाषा, आँखों की अभिलाषा, और जीवन का घमंड" (1 यूहन्ना 2:16)]। नतीजतन, हव्वा ने वह फल लिया और उसे खा लिया; फिर उसने उसमें से कुछ अपने पति आदम को भी दिया, जो उसके साथ ही था, और उसने भी उसे खा लिया (उत्पत्ति 3:6)। इसके परिणामस्वरूप, दुनिया में पाप का प्रवेश हुआ (रोमियों 5:12)। और पाप के ज़रिए, मृत्यु का प्रवेश हुआ (पद 12)। यहाँ, "मृत्यु" का तात्पर्य मृत्यु के तीन अलग-अलग रूपों से है: (1) आत्मिक मृत्यु: परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करके, आदम ने अपनी आत्मा की मृत्यु—यानी एक आत्मिक

मृत्यु—को मोल ले लिया, जिसमें परमेश्वर के साथ उसका मेल-जोल टूट गया (उत्पत्ति 3:9–24)। (2) शारीरिक मृत्यु: इसके बाद, 930 वर्ष की आयु में, आदम की शारीरिक मृत्यु हो गई (5:5)। (3) अनंत मृत्यु: जब आदम की मृत्यु हुई, तो उसका शरीर और आत्मा अलग हो गए; उसका शरीर पृथ्वी की धूल में मिल गया, जबकि उसकी आत्मा अनंत लोक (अनंत नरक) में चली गई। यीशु के दूसरे आगमन पर, उसका भ्रष्ट शरीर और उसकी आत्मा—जो नरक में वास करती है—फिर से एक हो जाएँगे ताकि वे नरक में अनंत दंड का सामना कर सकें।

बाइबल में इफिसियों 2:1 को देखें: "और उसने तुम्हें भी जीवित किया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे" [(समकालीन कोरियाई बाइबल) "तुम ऐसे लोग थे जो आज्ञा न मानने और पाप के कारण आत्मिक रूप से मरे हुए थे"]। पहले मनुष्य, आदम—जो पूरी मानवजाति का प्रतिनिधि था—द्वारा किए गए आज्ञा न मानने के पाप के कारण, हम भी "ऐसे लोग थे जो आज्ञा न मानने और पाप के कारण आत्मिक रूप से मरे हुए थे।" दूसरे शब्दों में, यीशु पर विश्वास करने से पहले, हमारे शरीर तो जीवित थे, लेकिन आत्मिक रूप से हम मरे हुए थे। प्रेरित पौलुस इफिसियों 2:2–3 में उन लोगों की स्थिति का वर्णन करता है जो आत्मिक रूप से मरे हुए हैं, इस प्रकार: "जिनमें तुम पहले इस संसार की रीति के अनुसार, और आकाश के अधिकार के हाकिम (शैतान) के अनुसार चलते थे, वही आत्मा अब भी आज्ञा न मानने वाले लोगों में काम कर रही है; जिनके बीच हम सब भी पहले अपने शरीर की अभिलाषाओं में दिन बिताते थे, और शरीर तथा मन की इच्छाओं को पूरा करते थे, और स्वभाव से अन्य लोगों की तरह परमेश्वर के क्रोध के पात्र थे" [(समकालीन कोरियाई बाइबल) "पहले, तुम इस संसार के बुरे तरीकों का पालन करते हुए और शैतान की आज्ञा मानते हुए जीते थे, जो स्वर्ग के नीचे के क्षेत्र पर राज करता है। यह शैतान ही वह आत्मा है जो इस समय आज्ञा न मानने वाले लोगों के बीच काम कर रही है। हम भी, एक समय उन्हीं की तरह जीते थे, अपने शरीर की अभिलाषाओं का पालन करते हुए और जो कुछ हमारे शरीर और मन चाहते थे, वही करते थे; इस प्रकार, बाकी सभी लोगों की तरह, हम भी स्वभाव से परमेश्वर के क्रोध का सामना करने के लिए निर्धारित थे"]। बाइबल में लूका 9:60 को देखें: "यीशु ने उससे कहा, 'मरे हुओं को अपने मरे हुओं को गाड़ने दो, पर तुम जाकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार करो'" [(समकालीन कोरियाई बाइबल) "परन्तु, यीशु ने उससे कहा, 'मरे हुओं को गाड़ने का काम उन लोगों पर छोड़ दो जो आत्मिक रूप से मरे हुए हैं; जहाँ तक तुम्हारी बात है, तुम जाओ और परमेश्वर के राज्य का प्रचार करो'"]। इस अंश के अनुसार,

तीन प्रकार के लोग दिखाई देते हैं: (1) “मरे हुए” [“आत्मिक रूप से मरे हुए”]: वे लोग जो आत्मिक रूप से मरे हुए हैं (जिनका परमेश्वर के साथ मेल-जोल टूट चुका है); (2) “अपने मरे हुए” [“शारीरिक रूप से मरे हुए”]: वे लोग जिनकी शारीरिक मृत्यु हो चुकी है; और (3) “तुम”: वे लोग जो जीवित हैं—आत्मिक और शारीरिक दोनों रूप से—और जिनका परमेश्वर के साथ मेल-जोल बना हुआ है। ये वे लोग हैं जो परमेश्वर के राज्य की घोषणा करने के लिए आगे बढ़ते हैं।

इस तरह, हर किसी ने पाप किया है (रोमियों 5:12)। इस वचन का अर्थ यह है कि मानवता में हर एक व्यक्ति ने पाप किया है। हालाँकि इस अंश के बारे में अलग-अलग व्याख्याएँ हैं, लेकिन यह कहा जाता है कि किसी भी एक व्याख्या को 100% निश्चित नहीं माना जाता है। जिस व्याख्या का समर्थन भारी बहुमत करता है, वह यह है कि आदम—जो पहला मनुष्य था—ने मानवता के प्रतिनिधि के रूप में काम किया; इसलिए, उसके पाप करने का अर्थ यह है कि आदम के वंश से संबंधित सभी लोगों ने भी पाप किया है। उदाहरण के लिए, ओलंपिक्स में प्रतिस्पर्धा करने वाला हर एथलीट अपने-अपने देश के प्रतिनिधि के रूप में भाग लेता है। परिणामस्वरूप, जब कोई एथलीट किसी विशेष स्पर्धा में प्रतिस्पर्धा करता है और जीतता है—और पदक हासिल करता है—तो उस देश का राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है और राष्ट्रगान बजाया जाता है, जिसका प्रतिनिधित्व वह स्वर्ण पदक विजेता करता है। उस क्षण, उस देश के नागरिक—जो इस दृश्य को घटित होते देख रहे होते हैं—आनंदित होते हैं और चिल्लाकर कहते हैं, "हम जीत गए!" ठीक वैसे ही जैसे आदम, जो पहला मनुष्य था, ने मानवता के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करते हुए परमेश्वर की वाचा की आज्ञा का उल्लंघन करके पाप किया था, वैसे ही सभी लोगों ने भी पाप किया है (रोमियों 5:12)। कृपया रोमियों 3:23 देखें: "क्योंकि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से वंचित हैं।" इस संदर्भ में, "पाप" का तात्पर्य वास्तविक पापों से है—अर्थात् व्यक्तियों ने स्वयं, चाहे वे यहूदी हों या अन्यजाति, पापपूर्ण कार्य किए हैं। हालाँकि, रोमियों 5:12 में दिया गया यह कथन—कि सभी लोगों ने पाप किया है—व्यक्तियों द्वारा किए गए वास्तविक पापों का उल्लेख नहीं करता है, बल्कि यह दर्शाता है कि सभी लोगों को आदम के पाप के *आधार पर* पाप किया हुआ माना जाता है। धर्मशास्त्रीय दृष्टि से, इसका अर्थ यह है कि आदम—जो मानवता का प्रतिनिधि था—का पाप उसके सभी वंशजों पर, जो उससे संबंधित हैं, आरोपित किया गया। कृपया 'वेस्टमिंस्टर कन्फेशन ऑफ़ फेथ' (Westminster Confession of Faith) के अध्याय 6

(मनुष्य के पतन, पाप, और उसके दंड के विषय में), अनुच्छेद 3 और 4 को देखें: (अनुच्छेद 3) "चूँकि वे (आदम और हव्वा) समस्त मानवजाति की जड़ थे, इसलिए इस पाप का दोष उन पर (और उनके वंशजों पर) लगाया गया; और पाप के कारण होने वाली वही मृत्यु, तथा भ्रष्ट स्वभाव, साधारण जन्म-प्रक्रिया द्वारा उनसे उत्पन्न होने वाले उनके समस्त वंशजों तक पहुँचा (उत्पत्ति 1:27-28; 2:16-17; भजन 51:5; उत्पत्ति 5:3; अय्यूब 14:4, 15:14)।" (अनुच्छेद 4) "इसी मूल भ्रष्टता से—जिसके कारण हम पूरी तरह से अनिच्छुक, असमर्थ हो जाते हैं, और समस्त भलाई के विपरीत हो जाते हैं, तथा पूरी तरह से समस्त बुराई की ओर झुक जाते हैं—हमारे सभी वास्तविक पाप (उल्लंघन) उत्पन्न होते हैं (रोमियों 5:6, 8:7, 7:18; कुलुस्सियों 1:21; उत्पत्ति 6:5, 8:21; रोमियों 3:10-12; याकूब 1:14-15; इफिसियों 2:2-3; मत्ती 15:9)।" "तो फिर, आदम के पाप का प्रभाव उसके वंशजों तक क्यों पहुँचता है? और वह ठीक-ठीक क्या है जो आदम के वंशजों पर आरोपित किया गया है?"

(1) “आदम से ही दोष और भ्रष्ट स्वभाव हममें आया है।”

वेस्टमिंस्टर कन्फेशन ऑफ़ फेथ (Westminster Confession of Faith) का अध्याय 6, अनुच्छेद 3 यह घोषणा करता है कि, क्योंकि आदम और हव्वा मानवता के मूल स्रोत—यानी उसकी शुरुआत—के रूप में हैं, इसलिए उनके पाप के परिणाम (विशेष रूप से, मृत्यु) और उनका भ्रष्ट स्वभाव, उनके उन सभी वंशजों में पूरी तरह से आ गया है जो प्राकृतिक जन्म के द्वारा इस दुनिया में आते हैं। चूंकि आदम न केवल समस्त मानवजाति के जनक थे, बल्कि उसके प्रतिनिधि के रूप में भी कार्य करते थे, इसलिए उनके अकेले पाप का प्रभाव उनके सभी वंशजों तक फैला और उन्हें प्रभावित किया (इसे “प्रतिनिधित्व का सिद्धांत” कहा जाता है)।

(2) “हमारे भीतर मौजूद भ्रष्ट स्वभाव के कारण ही हम पाप करते हैं।”

यह इस बात पर ज़ोर देता है कि हमने आदम से जो विरासत में पाया है, वह उनके द्वारा किए गए किसी विशिष्ट पाप का दोष नहीं है, बल्कि एक ऐसा भ्रष्ट स्वभाव है जो पाप की ओर झुका होता है। दूसरे शब्दों में, आदम के वंशज होने के नाते, हमारे भीतर न तो भलाई करने की इच्छा है और न ही उसकी क्षमता; इसके विपरीत, हम उन सभी चीज़ों को अस्वीकार करते हैं जो अच्छी हैं, और हमने केवल बुराई की ओर झुकाव वाला स्वभाव

विरासत में पाया है, जो अंततः हमें वास्तविक पाप करने की ओर ले जाता है। दूसरे शब्दों में कहें तो, हमें आदम से जो विरासत में मिला है, वह एक पापपूर्ण और भ्रष्ट स्वभाव है, जो हमारे लिए पाप करना अनिवार्य बना देता है" (इंटरनेट स्रोत)।

अंततः, मृत्यु सभी लोगों में फैल गई है (रोमियों 5:12)। पहले मनुष्य, आदम—जो मानवता का प्रतिनिधि था—द्वारा की गई अवज्ञा के पाप के कारण, हम भी अपनी अवज्ञा और पाप के चलते आत्मिक रूप से मृत हो गए थे (इफिसियों 2:1)। हमने आत्मा की मृत्यु—एक "आत्मिक मृत्यु"—का अनुभव किया, जिसकी पहचान परमेश्वर के साथ हमारे मेल-जोल (संगति) के टूट जाने से होती है। इसके अलावा, ठीक आदम की तरह, शारीरिक मृत्यु का अनुभव करने के बाद, हमारा भी अनंत मृत्यु का सामना करना तय था। कहने का तात्पर्य यह है कि, मरने पर, हमारे शरीर और आत्माएँ अलग हो जाएँगी: हमारे शरीर तो धूल में मिल जाएँगे, जबकि हमारी आत्माएँ अनिवार्य रूप से एक अनंत नरक में भेज दी जाएँगी। परिणामस्वरूप, यीशु के दूसरे आगमन के समय, हमारे नश्वर शरीर और हमारी आत्माएँ—जो नरक के लिए निर्धारित थीं—फिर से एक हो जाएँगी, जिससे हमारे पास नरक में अनंत दंड भोगने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचेगा। इस स्थिति को "दूसरी मृत्यु, आग की झील" कहा गया है (प्रकाशितवाक्य 20:14)। कृपया बाइबल में मरकुस 9:48 देखें: "जहाँ उनका कीड़ा नहीं मरता, और आग नहीं बुझती" [(समकालीन अंग्रेजी संस्करण) "नरक में, कीड़े नहीं मरते, और आग कभी नहीं बुझती"]।

इस प्रकार, "एक मनुष्य" (रोमियों 5:12)—अर्थात् "पहला मनुष्य, आदम" (1 कुरिन्थियों 15:45)—के कारण, जिसने परमेश्वर की वाचा की आज्ञा का उल्लंघन किया और पाप किया, हम भी पापी बन गए। परिणामस्वरूप, हम आत्मिक और शारीरिक रूप से मर गए, और अनंत मृत्यु का सामना करने लगे (रोमियों 5:12); हम ऐसे लोग थे जो "[अपने] अपराधों और पापों में मृत" थे (इफिसियों 2:1), और जिनका भाग्य यह था कि वे नरक के नाम से जानी जाने वाली, कभी न बुझने वाली आग की झील में हमेशा जीवित रहें—यहाँ तक कि मर भी न सकें (मरकुस 9:48)। हालाँकि, एक अन्य "मनुष्य" (रोमियों 5:15)—अर्थात् "अंतिम आदम" (1 कुरिन्थियों 15:45),

यीशु मसीह—के द्वारा, जो क्रूस पर मृत्यु तक आज्ञाकारी बना रहा (फिलिप्पियों 2:6–7), परमेश्वर ने "पहले मनुष्य," आदम की आज्ञा न मानने के कारण आई मृत्यु के श्राप को उलट दिया, और हमें अनंत जीवन का वरदान दिया (व्यवस्थाविवरण 23:5; नहेमायाह 13:2)। "एक मनुष्य, यीशु मसीह" (रोमियों 5:17) के अनुग्रह से—जैसा कि पद 15 में बताया गया है—हमें हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनंत जीवन का उपहार मिला है (रोमियों 6:23) (पद 23, 15, और 17)। इसका कारण यह है कि परमेश्वर, जो दया में धनी है और जिसने हमसे बहुत गहरा प्रेम किया, उसने अपने उस असीम प्रेम का उपयोग करके हमें—जो अपने पापों के कारण आत्मिक रूप से मृत थे—मसीह के साथ जीवित किया। इस प्रकार, यह परमेश्वर के अनुग्रह से ही है कि हमें उद्धार मिला है (इफिसियों 2:4–5, *द कंटेम्पररी बाइबल*)—ठीक वैसे ही जैसे आदम को भी परमेश्वर के अनुग्रह से ही उद्धार मिला था (उत्पत्ति 3:21)। इफिसियों 2:8–10 (*द कंटेम्पररी बाइबल*) पर विचार करें: "परमेश्वर के अनुग्रह से, आप मसीह में विश्वास के द्वारा बचाए गए हैं। यह आपके अपने सामर्थ्य से पूरा नहीं हुआ, बल्कि यह परमेश्वर की ओर से एक उपहार है। यह हमारे अपने अच्छे कामों का परिणाम नहीं है; इसलिए, कोई भी घमंड नहीं कर सकता। यह परमेश्वर ही है जिसने हमें रचा। हमें यीशु मसीह में अच्छे काम करने के लिए रचा गया था—ऐसे काम जिन्हें परमेश्वर ने पहले से ही तैयार कर रखा था, ताकि हम उनके अनुसार जीवन जी सकें।" इसलिए, हमें अच्छे कामों में लगे रहना चाहिए। जब हम "परमेश्वर के महान प्रेम" की स्तुति करते हैं—उसके असीम, सदा न बदलने वाले प्रेम को, और उस अनुग्रह को याद करते हुए जिसके द्वारा उसने प्रभु में विश्वास करने वालों के प्रति इतना असीम प्रेम दर्शाया ताकि हमारे पापों को क्षमा कर सके (भजन 304)—तो हमें पूरे उत्साह के साथ यीशु मसीह के इस सुसमाचार की घोषणा करनी चाहिए।

“व्यवस्था से पहले भी संसार में पाप मौजूद था”

[रोमियों 5:12-21]

कृपया रोमियों 5:13-14 पर ध्यान दें: “क्योंकि व्यवस्था से पहले भी संसार में पाप मौजूद था, परन्तु जहाँ व्यवस्था नहीं होती, वहाँ पाप गिना नहीं जाता। फिर भी, आदम से लेकर मूसा तक मृत्यु का राज रहा—यहाँ तक कि उन लोगों पर भी, जिन्होंने आदम के अपराध की तरह पाप नहीं किया था; आदम तो उस आने वाले का एक नमूना (प्रतीक) था।” बाइबल बताती है कि व्यवस्था के अस्तित्व में आने से पहले भी संसार में पाप मौजूद था (पद 13)। यहाँ, “व्यवस्था से पहले” वाक्यांश में प्रयुक्त शब्द “व्यवस्था” का तात्पर्य उस व्यवस्था से है, जो परमेश्वर ने मूसा को सीनै पर्वत पर तब दी थी, जब इस्राएल के लोग मिस्र से निकलकर जंगल में स्थित उस पर्वत पर पहुँचे थे (निर्गमन 20:1-17; तुलना करें: व्यवस्थाविवरण 5:6-21)। तो, “व्यवस्था से पहले” वाक्यांश किस विशिष्ट समयावधि को दर्शाता है? यह उस समयावधि को इंगित करता है, जो आदम द्वारा अपना अपराध (पाप) किए जाने के क्षण (उत्पत्ति 3) से लेकर मूसा द्वारा सीनै पर्वत पर परमेश्वर से व्यवस्था प्राप्त करने के समय (निर्गमन 20) तक फैली हुई है—यह लगभग 2,500 वर्षों की अवधि है। इसका अर्थ यह है कि उस युग के दौरान भी पाप वास्तव में मौजूद था। वास्तव में, उत्पत्ति 3 से लेकर निर्गमन 20 से ठीक पहले तक फैली हुई बाइबल की कथा में, पाप के अनेक उदाहरण दर्ज हैं। उदाहरण के लिए, कैन—आदम के ज्येष्ठ पुत्र—द्वारा किए गए हत्या के पाप पर विचार करें, जब उसने अपने छोटे भाई हाबिल की हत्या कर दी थी (उत्पत्ति 4)। जैसे-जैसे पृथ्वी पर मनुष्यों की आबादी बढ़ने लगी (6:1), प्रभु ने देखा कि संसार भर में मनुष्यों की दुष्टता बहुत अधिक बढ़ गई थी और उनके हृदयों के विचारों की हर एक कल्पना लगातार बुरी ही होती थी (पद 5)। परमेश्वर की दृष्टि में, उस संसार के लोग अत्यंत दुष्ट और भ्रष्ट थे; परिणामस्वरूप, संपूर्ण

संसार पाप से पूरी तरह भर गया था (पद 11; *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)। इसी कारण से नूह के समय का जलप्रलय आया था (अध्याय 6–8)। एक अन्य उदाहरण सदोम और अमोरा के लोगों का है, जो अत्यंत दुष्ट थे और घोर पाप कर रहे थे (उत्पत्ति 18:20)। इसके अलावा, इस्राएलियों के मिस्र से निकलने से पहले, मिस्र के राजा फ़िरौन ने अनेक पाप किए थे।

बाइबल, रोमियों 5:13 में कहती है: "क्योंकि व्यवस्था के आने तक जगत में पाप तो था, परन्तु जहाँ व्यवस्था नहीं, वहाँ पाप गिना नहीं जाता।" लगभग 2,500 वर्षों की इस अवधि के दौरान—जब आदम ने पहला पाप किया था (उत्पत्ति 3) से लेकर जब मूसा ने सीनै पर्वत पर परमेश्वर से व्यवस्था प्राप्त की (निर्गमन 20 से पहले) तक—लोगों ने अनेक पाप किए, फिर भी उन पापों को उस रूप में गिना नहीं गया। वे पाप को उसके वास्तविक रूप में स्पष्ट रूप से पहचान नहीं पाए, और न ही उन्हें उसके दंड की गंभीरता का एहसास हुआ। परिणामस्वरूप, उन्होंने पाप को सामान्य बात समझा और उसे हल्के में लिया। हालाँकि, "व्यवस्था" का उद्देश्य पाप को उजागर करना है। रोमियों 3:20 पर विचार करें: "इसलिए व्यवस्था के कामों से कोई भी मनुष्य उसकी दृष्टि में धर्मी नहीं ठहरेगा, क्योंकि व्यवस्था के द्वारा तो पाप की पहचान होती है।" यहाँ, हमें व्यवस्था के तीन अलग-अलग उपयोगों पर विचार करना चाहिए: (1) पाप को उजागर करना और इस प्रकार पापी को मसीह की ओर ले जाना; (2) दंड के भय द्वारा पाप को रोकना; और (3) विश्वासियों के जीवन के लिए एक मापदंड के रूप में कार्य करना। इसलिए, हम जितना अधिक परमेश्वर के वचन को जानते हैं, उतना ही हम पाप के स्वभाव को पहचानते हैं और उसकी गंभीरता को समझते हैं। इसके विपरीत, यदि हम पवित्रशास्त्र से अनभिज्ञ रहते हैं, तो हम बिना एहसास हुए ही पाप कर बैठते हैं। हम जान-बूझकर किए गए पापों की तुलना में अज्ञानतावश कहीं अधिक पाप करते हैं। इस प्रकार, पाप के विरुद्ध युद्ध छेड़ने और उस पर विजय पाने के लिए, हमें परमेश्वर के वचन का लगन से अध्ययन करना चाहिए और उसकी गहरी समझ प्राप्त करनी चाहिए। कृपया *मॉडर्न पीपल्स बाइबल* में भजन संहिता 119:9 और 11 देखें: "एक जवान व्यक्ति शुद्ध हृदय से कैसे जी सकता है? इसका कोई अन्य मार्ग नहीं है, सिवाय इसके कि वह तेरे वचन के अनुसार चले। मैंने तेरे वचन को अपने हृदय में संजोकर रखा है, ताकि मैं तेरे विरुद्ध पाप न करूँ।" कृपया इफिसियों 6:11 और 13 देखें: “परमेश्वर का पूरा कवच पहन लो, ताकि तुम शैतान की चालों का सामना कर सको। इसलिए परमेश्वर का पूरा कवच पहन लो, ताकि जब बुरा दिन आए, तो तुम डटे रह सको, और सब कुछ करने के बाद भी, तुम खड़े रह सको।” परमेश्वर के पूरे कवच का जो सबसे पहला हिस्सा बताया गया

है, वह है: "अपनी कमर पर सच्चाई का पट्टा बाँधकर" (पद 14)। हमें सच्चाई के ज्ञान में बढ़ने के लिए पूरी तरह समर्पित होना चाहिए। हमें परमेश्वर के वचन को अपने करीब रखना चाहिए और दिन-रात उस पर मनन करना चाहिए।

रोमियों 5:14 में, बाइबल कहती है: "फिर भी, आदम से लेकर मूसा तक मृत्यु का राज रहा, यहाँ तक कि उन लोगों पर भी जिन्होंने आदम के अपराध की तरह पाप नहीं किया था।" आदम और मूसा के बीच के लगभग 2,500 वर्षों के दौरान रहने वाले लोगों ने आदम के अपराध जैसा पाप नहीं किया था। यहाँ, आदम के अपराध का अर्थ है आज्ञा न मानने का पाप (उत्पत्ति 3:6)—वादा निभाने वाले परमेश्वर की इस आज्ञा का उल्लंघन, "तुम भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल मत खाना" (उत्पत्ति 2:17)—जो कि अधर्म था (1 यूहन्ना 3:4)। यह आदम का एक अनोखा पाप था—आज्ञा न मानकर उस 'कर्मों की वाचा' (Covenant of Works) को नष्ट करने का पाप, जो उसने पूरी मानवजाति के प्रतिनिधि के रूप में परमेश्वर के साथ स्थापित की थी। आदम के समय से लेकर मूसा तक लोगों द्वारा किए गए सभी पाप, आदम के अपराध की प्रकृति के नहीं थे। दूसरे शब्दों में, वे आदम द्वारा किए गए उस विशिष्ट पाप के समान नहीं थे—यानी मानवजाति के प्रतिनिधि के रूप में परमेश्वर के साथ स्थापित 'कर्मों की वाचा' को नष्ट करने का पाप। और भी स्पष्ट रूप से कहें तो, आदम से लेकर मूसा तक लोगों द्वारा किए गए पाप, उन व्यक्तियों द्वारा उस पाप में भागीदार होने के उदाहरण थे, जो एक व्यक्ति—आदम—के द्वारा संसार में आया था (रोमियों 5:12)। यहाँ तक कि शिशु भी—जो ऐसी अवस्था में होते हैं जहाँ वे किसी विशिष्ट नियम का उल्लंघन करने में असमर्थ होते हैं और इसलिए कोई व्यक्तिगत पाप नहीं कर सकते—बाइबल में उनके बारे में भी कहा गया है कि उन्होंने पाप किया है; इसका अर्थ यह है कि पाप एक व्यक्ति—आदम—के द्वारा संसार में आया, और इस प्रकार, सभी लोगों ने पाप किया (पद 12)। इस संदर्भ में, "सभी लोग" वाक्यांश में शिशु भी शामिल हैं, जो ऐसी अवस्था में होते हैं जहाँ वे किसी विशिष्ट नियम का उल्लंघन नहीं कर सकते। तो फिर, यह कैसे समझाया जा सकता है कि शिशुओं ने भी पाप किया है? इसका उत्तर 'आरोपण' (imputation) में निहित है। इसका अर्थ यह है कि क्योंकि आदम—जो मानवजाति का प्रतिनिधि था—ने पाप किया, इसलिए उसका पाप सभी लोगों पर आरोपित कर दिया गया।

बाइबल कहती है, "जिसमें सभी ने पाप किया।" आदम की पापमयता विरासत के द्वारा हमारी अपनी बन गई है। 'आरोपण' के माध्यम से केवल आदम के पाप का दोष ही हमारा नहीं बनता; बल्कि, उसके स्वभाव की विकृति और भ्रष्टता भी हम तक पहुँच जाती है (आदि पाप/Original Sin)। भजन संहिता 51:5 पर विचार करें: "मेरी माँ ने मुझे पाप में ही गर्भ में धारण किया।" वेस्टमिंस्टर कन्फेशन ऑफ़ फेथ 6:3 देखें: "चूँकि वे (आदम और हव्वा) समस्त मानवजाति की जड़ थे, इसलिए इस पाप का दोष उन सभी पर लगाया गया, और पाप में वही मृत्यु तथा भ्रष्ट स्वभाव उन सभी संतानों में भी पहुँचा जो साधारण जन्म द्वारा उनसे उत्पन्न हुईं" (इंटरनेट)।

रोमियों 5:14 में, बाइबल कहती है, "मृत्यु ने राज किया।" यहाँ यह वाक्यांश—कि मृत्यु ने "राज किया"—यह दर्शाता है कि "एक मनुष्य" (पद 12) और "आदम के अपराध" (पद 14) के द्वारा, पाप संसार में आया; और पाप के द्वारा, मृत्यु आई, जिससे वह सभी लोगों में फैल गई (पद 12)। दूसरे शब्दों में, इसका अर्थ है कि प्रत्येक मनुष्य मृत्यु के अधीन हो गया है। परिणामस्वरूप, ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं हुआ जिसने मृत्यु पर विजय प्राप्त की हो। यहाँ तक कि मतूशेलह—नूह के दादा, जैसा कि उत्पत्ति में दर्ज है—969 वर्षों तक जीवित रहे, फिर भी अंततः, उनकी भी मृत्यु हो गई (उत्पत्ति 5:21)। किन शी हुआंग, चीन के पहले सम्राट (जिन्होंने 230 से 221 ईसा पूर्व तक शासन किया), ने चीन का पहला एकीकृत साम्राज्य स्थापित किया; उन्होंने अमरता के अमृत की इतनी बेसब्री से चाह की और उसे खोजा कि, जब उन्होंने एक ऐसा पदार्थ खाया जिसे वे वही अमृत मानते थे, तो अनजाने में उन्होंने अपनी ही मृत्यु को शीघ्र बुला लिया। अंततः, अमरता का उनका सपना व्यर्थ हो गया, और उनकी भी मृत्यु हो गई (इंटरनेट)।

रोमियों 5:14 में, बाइबल आगे कहती है, "आदम उस आने वाले का एक नमूना है।" तो फिर, यह "आने वाला" कौन है? यह कोई और नहीं, बल्कि यीशु मसीह हैं। रोमियों 5:14 के उत्तरार्ध को देखते हुए, *द कंटेम्पररी इंग्लिश वर्शन* इसका अनुवाद इस प्रकार करता है: "... आदम उस आने वाले का एक प्रतिरूप है।" एक "प्रतिरूप" का अर्थ है रूप में समानता, फिर भी स्वभाव में भिन्नता। दूसरे शब्दों में, पहला आदम और दूसरा—या अंतिम—आदम, यानी यीशु मसीह, आपस में समानताएँ रखते हैं, फिर भी वे एक जैसे नहीं हैं; वे

भिन्न हैं। रोमियों 5:12–14 में, आदम और यीशु मसीह के बीच समानताएँ और अंतर दोनों पाए जाते हैं: (1) समानता उनके प्रतिनिधि के रूप में निभाई गई भूमिका में है। आदम और यीशु मसीह दोनों ही प्रतिनिधि के रूप में कार्य करते हैं। आदम पुराने नियम का प्रतिनिधि है, जबकि यीशु मसीह नए नियम का प्रतिनिधि है। एक और समानता 'आरोपण' (imputation) की अवधारणा में पाई जाती है। जिस प्रकार आदम का पाप समस्त मानवजाति पर आरोपित किया गया, उसी प्रकार यीशु मसीह की धार्मिकता उन सभी विश्वासियों पर आरोपित की गई है, जो उन पर अपना विश्वास रखते हैं। (2) अंतर उनके राजत्व (kingship) के प्रयोग में है। आदम के अपराध के कारण, मृत्यु ने राजा के रूप में राज किया (पद 14); हालाँकि, यीशु मसीह के धार्मिक कार्य के द्वारा (पद 18), जो लोग मसीह में हैं, वे उनके द्वारा जीवन में राज करेंगे (पद 17)। व्यवस्था दिए जाने से पहले भी, एक ऐसा मनुष्य था जिसकी मृत्यु नहीं हुई थी; उसका नाम हनोक था। हनोक विश्वासपूर्वक परमेश्वर के साथ चलता रहा (उत्पत्ति 5:24) और बिना मृत्यु का अनुभव किए स्वर्ग में उठा लिया गया (इब्रानियों 11:5)। इसी प्रकार, व्यवस्था स्थापित होने के बाद, एक और मनुष्य था जिसकी मृत्यु नहीं हुई थी; उसका नाम एलिय्याह था। वह भी, बिना मृत्यु का स्वाद चखे, एक बवंडर में स्वर्ग में आरोहित हो गया (2 राजा 2:1–11)। जो लोग मसीह में हैं, वे ही मृत्यु पर विजय प्राप्त करते हैं। जब यीशु अपने दूसरे आगमन में लौटेंगे, तो जो संत उस समय जीवित होंगे, उनकी मृत्यु नहीं होगी, बल्कि उनका रूपांतरण हो जाएगा और वे स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करेंगे। अंतर का एक और बिंदु "यह वरदान" (रोमियों 5:15) और "यह मुफ्त वरदान" (पद 16) के रूप में संदर्भित है। यद्यपि हम पापी थे और परमेश्वर से विमुख थे, फिर भी यीशु मसीह की धार्मिकता हम पर आरोपित की गई, और परमेश्वर ने हमें धर्मी ठहराया है। हमने अनंत जीवन प्राप्त किया है (6:23)—यह एक ऐसा वरदान (पद 15) है जो यीशु मसीह के अनुग्रह के द्वारा प्रदान किया गया है।

इसलिए, हमें यीशु मसीह को जानने का भरसक प्रयास करना चाहिए! यह हमें *न्यू हिमनल* (New Hymnal) के भजन 453 की ओर ले जाता है, जिसका शीर्षक है: "मैं यीशु को और बेहतर जानना चाहता हूँ" (I Want to Know Jesus Better): (पद 1) मेरी यह तीव्र अभिलाषा है कि मैं यीशु को और बेहतर जानूँ—उनके अनुग्रह को जानूँ, जो इतना विशाल और विस्तृत है, और उनके उद्धारकारी प्रेम को जानूँ; मैं पूरी लगन से इन बातों को जानना चाहता हूँ। (पद 2) पवित्र आत्मा मेरे शिक्षक बनें, और मुझे सत्य की शिक्षा दें; वे मुझे परमेश्वर की पवित्र इच्छा की समझ प्रदान करें, ताकि मैं यीशु को सचमुच जान सकूँ। (पद 3) पवित्र आत्मा के प्रभाव से निर्देशित होकर, मैं परमेश्वर के वचन का अध्ययन करता हूँ; इसका हर एक पद मेरे हृदय के लिए एक सीख बन जाता है। (पद 4) जिस सिंहासन पर यीशु विराजमान हैं, वह महिमा से घिरा हुआ है; जैसे ही शांति

के राजा का आगमन होता है, उनका राज्य सामर्थ्य में फलता-फूलता है। (दोहराव) मेरे जीवन की यही अभिलाषा है—मेरे जीवन की यही अभिलाषा है—कि मैं उनके उद्धार करने वाले प्रेम को पूरी लगन से जान सकूँ। कृपया बाइबल में फिलिप्पियों 3:7–8 खोलें: "परन्तु जो जो बातें मेरे लाभ की थीं, उन्हीं को मैंने मसीह के कारण हानि समझा। वरन् मैं सब बातों को अपने प्रभु मसीह यीशु की पहचान की उत्तमता के कारण हानि समझता हूँ" [(समकालीन कोरियाई बाइबल) "तथापि, मैंने उन सभी बातों को त्याग दिया है जो कभी मेरे लिए लाभदायक थीं, और यह सब मसीह के खातिर किया है। इसके अतिरिक्त, मैं हर बात को हानि ही समझता हूँ, क्योंकि मेरे प्रभु यीशु मसीह का ज्ञान कहीं अधिक मूल्यवान है..."]। जैसे-जैसे हम यीशु मसीह के ज्ञान में बढ़ने का प्रयास करते हैं, आइए हम धन्यवाद दें, आनन्दित हों, और प्रभु की स्तुति तथा आराधना करें।

हम जो मसीह के साथ जी उठे हैं

[रोमियों 6:1–14]

मसीह की मृत्यु के बाद उनका पुनरुत्थान होता है। पुनरुत्थान के बिना मृत्यु अर्थहीन है; इसके विपरीत, मृत्यु के बिना पुनरुत्थान असंभव है। यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान एक सिक्के के दो पहलुओं की तरह हैं—एक तरफ और दूसरी तरफ। जिस तरह एक सिक्के के दो पहलुओं को अलग नहीं किया जा सकता, उसी तरह यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान को भी अलग नहीं किया जा सकता।

रोमियों 6:4 पर विचार करें: "इसलिए बपतिस्मा के द्वारा मृत्यु में उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन में चलें।" यहाँ, 'मरे हुओं' (dead) को संदर्भित करने वाले वाक्यांश की दो तरह से व्याख्या की जा सकती है: (1) मूल यूनानी पाठ के आधार पर, इसका अर्थ है "मृत्यु से बाहर"; और (2) कोरियाई बाइबल अनुवाद में, यह "मरे हुओं के बीच से" पढ़ा जाता है। कौन सा अनुवाद अधिक उपयुक्त है—कि यीशु मसीह "मृत्यु से बाहर" जी उठे, या कि वह "मरे हुओं के बीच से" जी उठे? कोरियाई बाइबल ने "मरे हुओं के बीच से" अनुवाद को अपनाया है। इसका कारण यह है कि जहाँ "मृत्यु से बाहर" अनुवाद यह प्रश्न खुला छोड़ देता है कि क्या अन्य मृत लोग मौजूद हैं या नहीं, वहीं "मरे हुओं के बीच से" अनुवाद स्पष्ट रूप से अन्य मृत व्यक्तियों की उपस्थिति की पुष्टि करता है। प्रेरितों का धर्मसार (Apostles' Creed) भी इसकी पुष्टि करता है, जिसमें कहा गया है कि वह "मरे हुओं के बीच से" जी उठे। निष्कर्ष रूप में, यीशु मसीह मरे हुओं के बीच से जी उठे। शास्त्र में अन्यत्र, यह शब्द—जो मरे हुओं को संदर्भित करता है—बहुवचन रूप में प्रकट होता है: "मरे हुए लोग" (the dead)। रोमियों 1:4 पर विचार करें: "...जो पवित्रता की आत्मा के अनुसार मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा सामर्थ्य के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा।" इफिसियों 1:20 पर देखें: "उसकी सामर्थ्य मसीह में काम कर रही थी जब उसने उसे मरे

हुओं में से जिलाया।" 1 कुरिन्थियों 15:20 पर देखें: "परन्तु अब मसीह मरे हुओं में से जी उठा है, और जो सो गए हैं, उनमें वह पहला फल ठहरा।" यहाँ 1 कुरिन्थियों 15:20 में, एकवचन शब्द "मरे हुए" (the dead) और बहुवचन शब्द "जो सो गए हैं" (अर्थात्, "मरे हुए लोग") दोनों एक साथ प्रकट होते हैं। यह कथन कि यीशु मसीह "उन लोगों के लिए जो सो गए हैं" (यानी मृत लोग) "पहला फल" बन गए, इसका अर्थ यह है कि यीशु के बाद, और भी "फल" (पुनरुत्थान के) होंगे; यह इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि यीशु के दूसरे आगमन के समय सभी का पुनरुत्थान होगा। यीशु के पुनरुत्थान के कारण, जो लोग मसीह में "सो गए हैं" (मृत लोग), उनका भी पुनरुत्थान होगा [उन्हें "नया जीवन" मिलेगा (रोमियों 6:4)]।

तो फिर, यीशु मसीह को किसने जिलाया? यह परमेश्वर पिता ही थे जिन्होंने यीशु मसीह को जिलाया। परमेश्वर पिता ने परमेश्वर पुत्र, यीशु मसीह को मृतकों में से कैसे जिलाया? रोमियों 6:5 के अनुसार, परमेश्वर ने यीशु मसीह को परमेश्वर पिता की महिमा के द्वारा—अर्थात्, परमेश्वर पिता की सामर्थ्य के द्वारा—मृतकों में से जिलाया। यहाँ, "परमेश्वर पिता की सामर्थ्य" का तात्पर्य सर्वोच्च—अर्थात् सबसे महान—सामर्थ्य से है। ऐसी अद्‌भुत, सर्वोच्च सामर्थ्य प्रेम से उत्पन्न होती है। परमेश्वर पिता ने अपने एकमात्र पुत्र, यीशु मसीह से सर्वोच्च प्रेम किया—न केवल शब्दों में, बल्कि पूर्ण समर्पण के साथ। इस प्रकार, जिस प्रकार परमेश्वर पिता की सामर्थ्य असीम है, उसी प्रकार परमेश्वर पुत्र की सामर्थ्य भी असीम है। यीशु ने घोषणा की: "पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ। जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, वह यदि मर भी जाए, तो भी जीवित रहेगा" (यूहन्ना 11:25)। इसके अतिरिक्त, यीशु ने कहा, "...मुझे इसे (अपने प्राणों को) देने का अधिकार है, और मुझे इसे फिर से ले लेने का भी अधिकार है..." (10:18)। पुत्र, यीशु मसीह ने मृत्यु की सामर्थ्य पर विजय प्राप्त की और कब्र से जी उठे। परमेश्वर पवित्र आत्मा के पास भी असीम सामर्थ्य है। पवित्र आत्मा ने क्रूस पर चढ़ाए गए यीशु मसीह को मृतकों में से जिलाया (रोमियों 1:4)। रोमियों 8:11 पर दृष्टि डालें: "यदि उसका आत्मा, जिसने यीशु को मृतकों में से जिलाया, तुम में वास करता है, तो जिसने मसीह यीशु को मृतकों में से जिलाया, वह अपने उस आत्मा के द्वारा जो तुम में वास करता है, तुम्हारे मरणशील शरीरों को भी जीवन प्रदान करेगा।"

वह कौन सा उद्देश्य था जिसके लिए परमेश्वर पिता ने परमेश्वर पुत्र, यीशु को मृतकों में से जिलाया? ["ठीक वैसे ही जैसे उसे जिलाया गया" (रोमियों 6:4)] रोमियों 6:10 पर ध्यान दें: "क्योंकि जिस मृत्यु को वह मरा, वह

पाप के लिए एक ही बार मरा; परन्तु जिस जीवन को वह जीता है, वह परमेश्वर के लिए जीता है" [(द मॉडर्न मैन'स बाइबल) "मसीह पाप के लिए एक ही बार मरा, और वह हमेशा के लिए परमेश्वर के लिए जीता है"]। यहाँ, "परमेश्वर के लिए" वाक्यांश में, 'to' (के लिए) शब्द का अनुवाद 'for' (के वास्ते) के रूप में किया जा सकता है; वास्तव में, *द मॉडर्न मैन'स बाइबल* इसका अनुवाद 'for' के रूप में ही करती है। दूसरे शब्दों में, यह तथ्य कि यीशु मसीह जीवित हैं, इसका अर्थ है कि वह परमेश्वर के लिए जीते हैं। परमेश्वर के एकलौते पुत्र, यीशु मसीह, पृथ्वी पर अपने तैंतीस वर्षों के दौरान परमेश्वर के लिए जिए; और मृत्यु, पुनरुत्थान तथा स्वर्गारोहण के बाद, वह स्वर्गीय लोकों में भी परमेश्वर के लिए ही विद्यमान हैं। यीशु मसीह पृथ्वी पर रहते हुए हमारे उद्धार के वास्ते जिए, और स्वर्ग में भी वह हमारे उद्धार के लिए ही कार्य करते रहते हैं।

यीशु मसीह का पुनरुत्थान हमारा पुनरुत्थान है। हमें मसीह के साथ ही जिलाया गया है। बाइबल में रोमियों 6:4 को देखें: "...जिस तरह पिता की महिमा के द्वारा मसीह मरे हुओं में से जिलाए गए, उसी तरह हम भी एक नया जीवन जी सकें।" त्रिएक परमेश्वर की शक्ति के द्वारा, हमें एक नए जीवन के लिए जिलाया गया है। इसका क्या अर्थ है? रोमियों 6:5 को देखें: "यदि हम उसकी मृत्यु जैसी मृत्यु में उसके साथ एक हो गए हैं, तो निश्चित रूप से हम उसके पुनरुत्थान जैसे पुनरुत्थान में भी उसके साथ एक होंगे।" हमें यीशु मसीह के साथ उसी समानता में जिलाया गया है। यहाँ, "समानता" का अर्थ है कि इसके पीछे अनिवार्य रूप से एक वास्तविकता—एक मूल तत्व—मौजूद है। किसी वास्तविकता के बिना, केवल समानता का कोई अस्तित्व नहीं हो सकता। उदाहरण के लिए, जिस सीनियर पादरी को हम किसी ऑनलाइन आराधना वीडियो में देखते हैं, वह स्वयं वास्तविकता नहीं है, बल्कि केवल एक समानता है। सीनियर पादरी की वास्तविकता—यानी वह असली व्यक्ति—तो अपने घर पर है। यीशु मसीह का पुनरुत्थान ही वास्तविकता है, जबकि हम—जिन्हें यीशु मसीह के साथ जिलाया गया है—उसकी समानता मात्र हैं। इस समानता में सहभागी होने के नाते, हमें एक नए जीवन के लिए जिलाया गया है (पद 4)। यीशु का पुनरुत्थान एक शारीरिक पुनरुत्थान था (ठीक वैसे ही, जैसे उनकी मृत्यु एक शारीरिक मृत्यु थी, जिसे उन्होंने हमारे पापों की खातिर सहा था)। यह यीशु का वही शरीर था—जिसे कब्र में दफनाया गया था—जिसे फिर से जिलाया गया। हालाँकि, हमारा पुनरुत्थान शारीरिक

पुनरुत्थान नहीं है (वह शारीरिक पुनरुत्थान तो यीशु के दूसरे आगमन के समय होगा); बल्कि, यह आत्मा का पुनरुत्थान है। कृपया इफिसियों 2:1 को देखें: "और उसने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे" [(आधुनिक कोरियाई बाइबल) "तुम ऐसे लोग थे, जो आज्ञा-उल्लंघन और पाप के कारण आत्मिक रूप से मरे हुए थे"]। यहाँ, "तुम्हें जिलाया" का अर्थ है कि उसने हमें एक नया जीवन प्रदान किया (पुनर्जन्म/फिर से जन्म लेना)। हमारे पुनरुत्थान के विषय में: हमारा आंतरिक अस्तित्व—हमारी आत्मा—अपराधों और पापों के कारण मर चुकी थी, जिसके चलते हम परमेश्वर के बजाय शैतान (दुष्ट आत्मा) का अनुसरण करने लगे थे; फिर भी, यीशु मसीह के साथ मरने और उनके साथ ही फिर से जिलाए जाने के द्वारा, हमारी वह मृत आत्मा फिर से जीवित हो उठी है। जहाँ एक ओर यीशु मसीह का पुनरुत्थान—जो कि वास्तविकता है—एक शारीरिक पुनरुत्थान था, वहीं हमारा पुनरुत्थान उनके पुनरुत्थान की तरह शारीरिक नहीं है, बल्कि यह आत्मा का पुनरुत्थान है; इसलिए, हमारा पुनरुत्थान स्वयं वास्तविकता नहीं है, बल्कि उसकी एक समानता है। कृपया रोमियों 6:8 देखें: "अब यदि हम मसीह के साथ मर गए, तो हम विश्वास करते हैं कि हम उसके साथ जीवित भी रहेंगे" [(आधुनिक कोरियाई बाइबिल) "यदि हम मसीह के साथ मर गए, तो हम यह भी विश्वास करते हैं कि हम उसके साथ जीवित रहेंगे"]। यहाँ, "हम जीवित भी रहेंगे" का तात्पर्य एक ऐसे जीवन से है जिसमें हमें एक नई जीवन-शक्ति के साथ जीवित किया जाता है, और हम तब तक पवित्रता की प्रक्रिया से गुज़रते रहते हैं जब तक कि अंततः हम अनंत जीवन प्राप्त नहीं कर लेते। इसके अलावा, इस बिंदु पर... "मैं विश्वास करता हूँ" कहने का अर्थ है पूरे हृदय से विश्वास करना। दूसरे शब्दों में, यह एक ऐसे दृढ़ विश्वास को दर्शाता है जो पूरी तरह से अडिग है।

1 कुरिन्थियों 15:58 देखें: "इसलिए, मेरे प्यारे भाइयों, स्थिर रहो, अडिग रहो, प्रभु के कार्य में सदैव बढ़ते रहो, यह जानते हुए कि प्रभु में तुम्हारा परिश्रम व्यर्थ नहीं है।" जिस कारण से हमें अपने विश्वास में दृढ़ रहना चाहिए—बिना डगमगाए अपना आध्यात्मिक जीवन जीना चाहिए—वह यह है कि प्रभु में हमारा परिश्रम व्यर्थ नहीं है। कहने का तात्पर्य यह है कि ऐसा इसलिए है क्योंकि हम स्वर्ग जाएँगे और प्रभु से प्रतिफल प्राप्त करेंगे। रोमियों 6:11 देखें: "इसलिए तुम भी, अपने आप को पाप के लिए वास्तव में मृत, परन्तु मसीह यीशु में परमेश्वर के लिए जीवित समझो" [(समकालीन अंग्रेजी संस्करण) "इसी तरह, तुम्हें अपने आप को पाप के लिए मृत, परन्तु मसीह यीशु में परमेश्वर के लिए जीवित समझना चाहिए"]। हम ऐसे लोग हैं जिन्हें परमेश्वर के

लिए जीना चाहिए। हमें अपने लिए नहीं जीना चाहिए। क्योंकि हमें यीशु के साथ एक नया जीवन जीने के लिए जिलाया गया है—और क्योंकि हम स्वर्ग में प्रवेश करेंगे—इसलिए हमें परमेश्वर के लिए जीना चाहिए। रोमियों 14:7–9 पर ध्यान दें: "क्योंकि हम में से कोई भी अपने लिए नहीं जीता, और न ही कोई अपने लिए मरता है। क्योंकि यदि हम जीते हैं, तो प्रभु के लिए जीते हैं; और यदि हम मरते हैं, तो प्रभु के लिए मरते हैं। इसलिए, चाहे हम जिएं या मरें, हम प्रभु के ही हैं। क्योंकि इसी उद्देश्य से मसीह मरे, फिर जी उठे और दोबारा जीवित हुए, ताकि वे मरे हुओं और जीवितों—दोनों के प्रभु बन सकें।" [(समकालीन अंग्रेज़ी संस्करण) "हम में से कोई भी केवल अपने लिए नहीं जीता, और न ही कोई केवल अपने लिए मरता है। यदि हम जीते हैं, तो प्रभु के लिए जीते हैं; और यदि हम मरते हैं, तो प्रभु के लिए मरते हैं। इसलिए, चाहे हम जिएं या मरें, हम प्रभु के ही हैं।"] "ठीक इसी कारण से मसीह मरे और फिर जी उठे—ताकि वे मरे हुओं और जीवितों—दोनों के प्रभु बन सकें।" हम ऐसे लोग नहीं हैं जो केवल अपने लिए जीते हैं। चाहे हम जिएं, हम प्रभु के लिए जीते हैं; और चाहे हम मरें, हम प्रभु के लिए मरते हैं। इसी उद्देश्य से प्रभु मरे हुओं में से जी उठे थे। जब तक हम जीवित हैं, हम प्रभु के लिए जी सकते हैं। लेकिन इस कथन का क्या अर्थ है कि हम प्रभु के लिए मरते भी हैं? इसका अर्थ यह है कि, हमारी मृत्यु के बाद और स्वर्गीय लोक में निवास करते हुए, हम अनंत काल तक और विशेष रूप से केवल प्रभु के लिए ही जीवित रहेंगे। इस प्रकार, हम ऐसे लोग हैं जो—चाहे जीवित हों या मृत—प्रभु के ही हैं। एक नई सृष्टि बन जाने के बाद—अब हम शैतान के लिए या अपने लिए नहीं जीते, जैसा कि हम पहले किया करते थे—अब हमें पूरी तरह से केवल प्रभु के लिए ही जीना चाहिए। और अंततः, स्वर्गीय लोक में प्रवेश करने पर, हम ऐसे लोग बन जाएंगे जो अनंत काल तक केवल प्रभु के लिए ही जीवित रहते हैं।

मसीह के साथ पुनर्जीवित होने का परिणाम

[रोमियों 6:1–14]

कृपया रोमियों 6:12–14 पर ध्यान दें: "इसलिए पाप को अपने मरणशील शरीर में राज न करने दो, ताकि तुम उसकी बुरी इच्छाओं का पालन न करो। अपने शरीर के अंगों को पाप के लिए, अधार्मिकता के हथियार के रूप में, अर्पित न करो; बल्कि अपने आप को परमेश्वर को अर्पित करो, उन लोगों के रूप में जिन्हें मृत्यु से जीवन में लाया गया है; और अपने शरीर के अंगों को उसके लिए धार्मिकता के हथियार के रूप में अर्पित करो। क्योंकि पाप अब तुम्हारा स्वामी नहीं रहेगा, क्योंकि तुम व्यवस्था के अधीन नहीं, बल्कि अनुग्रह के अधीन हो।" यहाँ, शब्द "तुम" (पद 12 में) रोमियों 6:1–14 में कुल सात बार आया है। इस संदर्भ में, "तुम" उन लोगों को संदर्भित करता है जिन्होंने बपतिस्मा प्राप्त किया है—यीशु के साथ मरते हुए—और तत्पश्चात् उसके साथ पुनर्जीवित हुए हैं। हम बपतिस्मा प्राप्त करने वालों को चार समूहों में वर्गीकृत कर सकते हैं: (1) वे जिन्होंने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त करने *के बाद* जल बपतिस्मा प्राप्त किया; (2) वे जिन्होंने जल बपतिस्मा प्राप्त करने *के बाद* पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त किया; (3) वे जिन्होंने *केवल* पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त किया; और (4) वे जिन्होंने *केवल* जल बपतिस्मा प्राप्त किया। इन चार समूहों में से, मैं आपका ध्यान पहली श्रेणी पर केंद्रित करना चाहूँगा: वे जिन्होंने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त करने के बाद जल बपतिस्मा प्राप्त किया।

तो फिर, "पवित्र आत्मा का बपतिस्मा" क्या है? बाइबल पवित्र आत्मा के बपतिस्मा को उस घटना के रूप में परिभाषित करती है जिसमें एक पापी बचाया जाता है और यीशु मसीह में जोड़ा जाता है (1 कुरिन्थियों 12:13)। इसलिए, पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पारंपरिक धर्मशास्त्रीय शब्द *पुनर्जन्म* (या *नया जन्म*) का ही पर्याय है। परमेश्वर सुसमाचार का उपयोग करके उस व्यक्ति की आत्मा को जीवित करता है जो पाप में

मृत था। जब कोई पापी सुसमाचार सुनता है, तो पवित्र आत्मा उनके हृदय को खोलने का कार्य करता है—जो पहले पाप के कारण कठोर और बंद था—जिससे वे पश्चाताप करने और प्रभु को ग्रहण करने में सक्षम होते हैं (प्रेरितों के काम 16:14)। इस प्रकार, वह उस व्यक्ति को मसीह में एक नई सृष्टि बना देता है (2 कुरिन्थियों 5:17)। इस प्रकार, क्योंकि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा वह कार्य है जिसके द्वारा पवित्र आत्मा एक ऐसे व्यक्ति को—जो पाप में मृत था—पुनः जीवित करता है, इसलिए इसे बार-बार प्राप्त नहीं किया जा सकता। एक विश्वासी अपने पूरे जीवनकाल में पवित्र आत्मा का बपतिस्मा केवल एक ही बार प्राप्त करता है। किसी ऐसे विश्वासी से, जिसका पहले ही नया जन्म हो चुका है, यह कहना कि वह पवित्र आत्मा का बपतिस्मा एक बार फिर से प्राप्त करे—यह कहने के बराबर है कि वह दूसरी बार नया जन्म ले। यह ठीक वैसा ही है जैसे लाज़र से—जब वह कब्र से बाहर आ चुका था—विनती करते हुए कहना, "तुम्हें कब्र का दरवाज़ा खोलकर एक बार फिर बाहर आना होगा!" जो लोग एक बार मसीह में जोड़ दिए गए हैं, उन्हें प्रभु में फिर से जोड़े जाने की कोई आवश्यकता नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि कोई भी विश्वासी को उसके हाथ से छीन नहीं सकता (रोमियों 8:38–39)। पवित्र आत्मा से भर जाना, पवित्र आत्मा के बपतिस्मा से भिन्न है। विशेष रूप से, जहाँ पवित्र आत्मा का बपतिस्मा एक एकल घटना है—जो उस समय आत्मा के कार्य को संदर्भित करती है जब कोई पहली बार यीशु को प्रभु के रूप में स्वीकार करता है (1 कुरिन्थियों 12:3, 13)—वहीं पवित्र आत्मा से भर जाने का अर्थ है आत्मा के पूर्ण नियंत्रण के प्रति समर्पित रहने की एक निरंतर अवस्था, और अपने जीवन में सुंदर फलों की बहुतायत उत्पन्न करना। यदि आप में से कोई ऐसा है जिसने अभी केवल जल बपतिस्मा ही प्राप्त किया है, तो मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि आप पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त करने के लिए विश्वास के साथ गंभीरतापूर्वक प्रार्थना करें। मेरी यह आशा है कि, जल बपतिस्मा प्राप्त करने के बाद, हम सभी ऐसे लोग बन जाएँ जिन्होंने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा भी प्राप्त कर लिया हो।

यदि हम बाइबल में रोमियों 6:12 को देखें, तो इसकी शुरुआत "इसलिए" (therefore) नामक संयोजक शब्द से होती है। चूँकि यह संयोजक शब्द रोमियों 6:11 के संदेश के साथ एक संबंध स्थापित करता है, इसलिए हमें उस पद पर ध्यानपूर्वक विचार करना चाहिए: "उसी प्रकार, तुम भी अपने आप को पाप के लिए मृत, परन्तु मसीह यीशु में परमेश्वर के लिए जीवित समझो।" यहाँ, "उसी प्रकार" (likewise) नामक संयोजक शब्द, पद 10 में दिए गए कथन के साथ एक संबंध स्थापित करता है: "क्योंकि जो मृत्यु उसने सही, वह पाप के लिए

एक ही बार सही; परन्तु जो जीवन वह जीता है, वह परमेश्वर के लिए जीता है" (पद 10)। दूसरे शब्दों में, जिस तरह यीशु मसीह पाप के लिए एक ही बार मरे और परमेश्वर के लिए हमेशा जीवित रहते हैं (पद 10), उसी तरह हमें भी खुद को पाप के लिए मरा हुआ, लेकिन मसीह यीशु में परमेश्वर के लिए जीवित समझना चाहिए। यीशु मसीह ही वह हैं जो पाप के लिए एक ही बार मरे (पद 10)। इसलिए, हम—जिन्होंने मसीह यीशु में बपतिस्मा लिया और मर गए (पद 3)—हमें भी यह विश्वास करना चाहिए और खुद को ऐसा समझना चाहिए कि हम पाप के लिए एक ही बार मर चुके हैं (पद 11)। यीशु मसीह ही वह हैं जो परमेश्वर के लिए हमेशा जीवित रहते हैं (पद 10)। नतीजतन, हम—जो मसीह यीशु के साथ मरे और उनके साथ फिर से जिलाए गए (पुनर्जन्म पाए) (पद 5, 8)—हमें भी खुद को परमेश्वर के लिए जीवित समझना चाहिए (पद 10) (पद 11)। हालाँकि, बाइबल हमें निर्देश देती है कि हम सिर्फ खुद को ऐसा "समझने" तक ही सीमित न रहें (पद 11), बल्कि असल में उन लोगों की तरह जिएँ जो मसीह यीशु में परमेश्वर के लिए जीवित हैं (पद 11) (पद 12–14)। सबसे पहले, उन लोगों की तरह जीना जो मसीह यीशु में परमेश्वर के लिए जीवित हैं, इसका मतलब है खुद को पाप के लिए मरा हुआ समझते हुए जीना (पद 11)। तो फिर, खुद को पाप के लिए मरा हुआ समझते हुए जीने का क्या मतलब है? बाइबल, रोमियों 6:12–13 में, तीन खास बातें बताती है:

सबसे पहले, हमें पाप को अपने शरीरों पर राज करने नहीं देना चाहिए।

रोमियों 6:12 पर ध्यान दें: "इसलिए पाप को अपने मरणशील शरीर में राज न करने दो..." पाप का स्वभाव बुरा होता है और वह लगातार हम पर हावी होने की कोशिश करता है। हालाँकि, क्योंकि हम पाप के लिए पहले ही एक ही बार मर चुके हैं (पद 11), इसलिए पाप न तो हम पर हावी हो सकता है और न ही हम पर अपना दावा जता सकता है। इसलिए, हमें पाप को अपने शरीरों पर राज करने नहीं देना चाहिए (पद 12)। पाप के लिए एक ही बार मर जाने के बाद, हम पाप नहीं करते। 1 यूहन्ना 3:6 और 9 पर विचार करें: "जो कोई उसमें बना रहता है, वह पाप नहीं करता। जो कोई पाप करता है, उसने न तो उसे देखा है और न ही उसे जाना है... जो कोई परमेश्वर से जन्मा है, वह पाप नहीं करता, क्योंकि उसका बीज उसमें बना रहता है; और वह पाप नहीं कर सकता, क्योंकि वह परमेश्वर से जन्मा है।" यहाँ, यह पाठ कहता है कि कोई व्यक्ति "पाप नहीं करता" (पद 6) और "पाप का अभ्यास नहीं करता" (पद 9); लेकिन यहाँ किस विशेष प्रकार के पाप का ज़िक्र किया जा रहा है? इसकी व्याख्या करने के तीन तरीके हैं:

(a) जान-बूझकर किए गए पाप:

भजन संहिता 19:13 देखें: "अपने दास को ढिठाई के पापों से भी बचाए रख; उन्हें मुझ पर प्रभुता न करने दे। तब मैं निर्दोष रहूँगा, और बड़े अपराध से बचा रहूँगा" [(समकालीन अंग्रेज़ी संस्करण) "अपने दास को जान-बूझकर पाप करने से बचाए रख, और उन्हें मुझ पर हावी न होने दे। तब मैं निर्दोष और सिद्ध रहूँगा, और बड़ी दुष्टता से मुक्त रहूँगा"]।

(b) आदत बन चुके पाप:

1 कुरिन्थियों 8:7 देखें: "परन्तु सब को यह ज्ञान नहीं है। कुछ लोग अब तक मूर्तियों के इतने आदी हैं कि जब वे ऐसा भोजन करते हैं, तो वे इसे मूर्ति को चढ़ाया गया प्रसाद समझते हैं, और क्योंकि उनका विवेक कमज़ोर है, इसलिए वह अशुद्ध हो जाता है" [(समकालीन अंग्रेज़ी संस्करण) "परन्तु हर कोई इस सच्चाई को नहीं जानता। कुछ लोग अब भी मूर्तियों के संबंध में अपनी पुरानी आदतें बनाए हुए हैं; क्योंकि वे ऐसा भोजन यह विश्वास करके खाते हैं कि यह मूर्ति को चढ़ाया गया प्रसाद है, इसलिए उनका विवेक कमज़ोर और अशुद्ध हो जाता है"]।

(c) सोचे-समझे (योजनाबद्ध) और जान-बूझकर किए गए पाप:

प्रेरितों के काम 5:1–4 देखें: "परन्तु हनन्याह नाम के एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी सफीरा के साथ मिलकर अपनी एक संपत्ति बेच दी। और उसने उस बिक्री से मिली रकम का एक हिस्सा अपने पास रख लिया—जिसकी जानकारी उसकी पत्नी को भी थी—और बाकी हिस्सा लाकर प्रेरितों के चरणों में रख दिया। तब पतरस ने कहा, 'हे हनन्याह, शैतान ने तेरे मन में यह बात क्यों डाल दी कि तू पवित्र आत्मा से झूठ बोले और ज़मीन की कीमत का एक हिस्सा अपने पास रख ले? जब वह तेरे पास थी, तो क्या वह तेरी अपनी नहीं थी? और जब वह बिक गई, तो क्या वह तेरे अपने अधिकार में नहीं थी? तूने अपने मन में ऐसी बात क्यों सोची? तूने मनुष्यों से नहीं, बल्कि परमेश्वर से झूठ बोला है।'" यदि हम अब भी पाप कर रहे हैं—चाहे जान-बूझकर,

आदत के तौर पर, या सोचे-समझे ढंग से—तो यह उस व्यक्ति का जीवन नहीं है जो मसीह के साथ पुनर्जीवित हुआ है। इसलिए, हमें अपने पाप परमेश्वर के सामने स्वीकार करने चाहिए और पश्चाताप करना चाहिए। फिर भी, जब हम पश्चाताप करें, तो हमें दाऊद की तरह करना चाहिए। भजन संहिता 19:7–9 पर ध्यान दें: "यहोवा की व्यवस्था सिद्ध है, वह प्राण को बहाल करती है; यहोवा की चितौनी सच्ची है, वह भोले लोगों को बुद्धिमान बनाती है; यहोवा के विधि-नियम सीधे हैं, वे हृदय को आनन्दित करते हैं; यहोवा की आज्ञा निर्मल है, वह आँखों को ज्योति देती है; यहोवा का भय पवित्र है, वह सदा बना रहता है; यहोवा के नियम सत्य हैं, और वे पूरी तरह से धर्ममय हैं।" दूसरे शब्दों में, दाऊद की तरह, हमें परमेश्वर के वचन के द्वारा अपने पापों का पश्चाताप करना चाहिए। हमें परमेश्वर के वचन के लिए और भी गहरी लालसा रखनी चाहिए—वह सिद्ध वचन जो प्राण को बहाल करता है, भोले लोगों को बुद्धिमान बनाता है, हृदय को आनन्दित करता है और आँखों को ज्योति देता है, जो निर्मल रहता है और सदा बना रहता है, और जो सत्य और पूरी तरह से धर्ममय है—और, दिन-रात उस वचन पर गहराई से मनन करते हुए, हमें परमेश्वर के सामने अपने पापों का पश्चाताप करना चाहिए। भजन संहिता 19:13 पर ध्यान दें: "अपने दास को ढिठाई के पापों से भी रोक रख; वे मुझ पर प्रभुता न करने पाएं! तब मैं निर्दोष ठहरूंगा, और बड़े अपराध से बचा रहूंगा" [(समकालीन अंग्रेजी संस्करण) "अपने दास को जान-बूझकर किए गए पापों से बचाए रख, और उन्हें मुझ पर हावी न होने दे। तब मैं निर्दोष और सिद्ध ठहरूंगा, और बड़ी दुष्टता से मुक्त रहूंगा"]। संक्षेप में, दाऊद की तरह, हमें परमेश्वर से पूरी लगन से प्रार्थना करके अपने पापों का पश्चाताप करना चाहिए।

शैतान द्वेषपूर्ण और दुष्ट है। शैतान, जिसने कभी पाप के द्वारा हम पर प्रभुता जमा रखी थी, अब क्रोधित है क्योंकि हम यीशु मसीह के साथ मरकर फिर से जीवित हो उठे हैं; और चूंकि अब पवित्र आत्मा हमारे भीतर वास करता है, इसलिए शैतान अब हम पर अपना नियंत्रण नहीं जमा सकता। परिणामस्वरूप, शैतान किसी भी संभव तरीके से हमारे भीतर घुसपैठ करने की कोशिश करता है। तथापि, हमें अपने आप को परमेश्वर के अधीन करना चाहिए और शैतान का विरोध करना चाहिए। यदि हम ऐसा करते हैं, तो शैतान हमसे दूर भाग जाएगा (याकूब 4:7)। तो फिर, हमें शैतान का विरोध कैसे करना चाहिए? बाइबल के इन शब्दों पर विचार करें जो फिलिप्पियों 2:12–13 में लिखे हैं: "इसलिए, हे मेरे प्रियों, जैसा तुम सदा से आज्ञा मानते आए हो—न केवल मेरी उपस्थिति में, बल्कि अब मेरी अनुपस्थिति में और भी अधिक—अपने उद्धार के लिए भय और

कम्पन के साथ काम करते रहो, क्योंकि परमेश्वर ही है जो तुम में इच्छा और कार्य दोनों उत्पन्न करता है, ताकि उसका उत्तम उद्देश्य पूरा हो सके।" हमें हमेशा परमेश्वर के अधीन रहना चाहिए और, डर और कांपते हुए, अपने उद्धार के लिए काम करते रहना चाहिए। जो इसे संभव बनाता है, वह परमेश्वर का पवित्र आत्मा है, जो हमारे भीतर काम कर रहा है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर का पवित्र आत्मा हमारे भीतर काम करने की इच्छा और क्षमता—दोनों पैदा करता है; वह हमें शक्ति देता है और हमारे द्वारा काम करके शैतान का विरोध करता है और उसे भगा देता है। हम कई पाप करते हैं—जिनमें जान-बूझकर किए गए पाप, आदत बन चुके पाप, और पहले से सोचे-समझे पाप शामिल हैं—साथ ही कई अन्य प्रकार के पाप भी। हमें 1 यूहन्ना 1:9 में दिए गए वादे को मज़बूती से थामे रहना चाहिए, अपने पापों को स्वीकार करना चाहिए, और पश्चाताप करना चाहिए: "यदि हम दावा करते हैं कि हमने पाप नहीं किया है, तो हम उसे झूठा ठहराते हैं और उसका वचन हमारे भीतर नहीं है" [(समकालीन अंग्रेजी संस्करण) "यदि हम अपने पापों को स्वीकार करते हैं, तो परमेश्वर—जो विश्वासयोग्य और न्यायी है—हमारे पापों को क्षमा कर देगा और हमें सारी अधार्मिकता से शुद्ध कर देगा।"]

दूसरे, हमें शरीर की पापपूर्ण इच्छाओं के आगे नहीं झुकना चाहिए। कृपया बाइबल में रोमियों 6:12 देखें: "...इसकी बुरी इच्छाओं की आज्ञा न मानो।" यहाँ, मूल यूनानी शब्द जिसका अनुवाद "बुरी इच्छाओं" के रूप में किया गया है, उसे आठ अलग-अलग तरीकों से व्यक्त किया गया है। सबसे आम अनुवाद "हवस" (lust) है। अन्य अनुवादों में "लालच," "लोभ," "स्वार्थी इच्छाएँ," "सांसारिक तृष्णाएँ," "इच्छा," "संकल्प," और "जुनून" शामिल हैं। हमारे पास एक पापपूर्ण, पुराना स्वभाव है—एक ऐसी सहज प्रवृत्ति जो हमें ठीक उन कार्यों की ओर झुकाती है जिन्हें बाइबल इस आज्ञा के साथ मना करती है: "ऐसा मत करो।" हमें उस पुराने स्वभाव की तृष्णाओं की आज्ञा नहीं माननी चाहिए। हमें हृदय की इच्छाओं या शरीर की तृष्णाओं के आगे नहीं झुकना चाहिए।

तीसरा, हमें अपने अंगों को पाप के आगे अधार्मिकता के औजारों के रूप में नहीं सौंपना चाहिए; बल्कि, हमें खुद को परमेश्वर को अर्पित करना चाहिए और अपने अंगों को धार्मिकता के औजारों के रूप में उनके सामने प्रस्तुत करना चाहिए।

कृपया रोमियों 6:13 देखें: "अपने शरीर के अंगों को पाप के आगे दुष्टता के औजारों के रूप में मत सौंपो, बल्कि खुद को परमेश्वर को उन लोगों के रूप में अर्पित करो जिन्हें मृत्यु से जीवन में लाया गया है—और अपने शरीर के अंगों को धार्मिकता के औजारों के रूप में उनके सामने प्रस्तुत करो।" यहाँ, शब्द "अंग" का अर्थ हमारे भौतिक शरीर के विभिन्न हिस्सों से समझा जा सकता है—उदाहरण के लिए, हमारी आँखें, कान, मुँह, पैर, हाथ, और इसी तरह अन्य। इसके अलावा, शब्द "अंग" में हमारी सोचने-समझने की शक्तियाँ और हमारे अस्तित्व के अन्य ऐसे पहलू भी शामिल हैं। शब्द "औजार" का अर्थ उपकरणों से है। बाइबल सिखाती है कि हम—जिन्हें मसीह के साथ जिलाया गया है—अपने अंगों को पाप के आगे अधार्मिकता के औजारों (उपकरणों) के रूप में इस्तेमाल होने के लिए नहीं सौंपना चाहिए। यदि पाप हमारे अंगों पर कब्ज़ा कर लेता है और उन्हें अपने औजारों के रूप में इस्तेमाल करता है, तो पाप करने वाले हम ही होते हैं। उदाहरण के लिए, पाप हमारे पैरों को—जो हमारे शरीर के अंग हैं—लुभा सकता है और उन्हें पापियों के मार्ग पर खड़ा कर सकता है (भजन संहिता 1:1)। एक और उदाहरण के तौर पर, पाप हमारी आँखों को लुभा सकता है, और आँखों की अभिलाषा के द्वारा हमें भटका सकता है (1 यूहन्ना 2:16); इसके कारण हम अपनी आँखों से पाप करते हैं और यहाँ तक कि अपने हृदय में व्यभिचार भी करते हैं (मत्ती 5:28)।

बाइबल हमें उन लोगों के रूप में जीने का निर्देश देती है जिन्हें मृतकों में से जीवित किया गया है। तो फिर, जिन्हें जीवित किया गया है, उन्हें अपना आचरण कैसा रखना चाहिए? हमें उस तरीके से जीना चाहिए जो उन लोगों के लिए उचित है जिन्हें मसीह के साथ जिलाया गया है। हमें गरिमापूर्ण ढंग से जीना चाहिए (रोमियों 6:13)। हमें खुद को परमेश्वर को अर्पित करना चाहिए (पद 13)। हमें अपने शरीर के अंगों को धार्मिकता के औजारों (उपकरणों) के रूप में परमेश्वर के सामने प्रस्तुत करना चाहिए (पद 13)। कृपया *न्यू हिमनल* (New Hymnal) संख्या 213 देखें, "मैं अपना जीवन आपको सौंपता हूँ": (पद 1) मैं अपना जीवन आपको

सौंपता हूँ; हे प्रभु, कृपया इसे स्वीकार करें, और मुझे पृथ्वी पर अपने जीवन के सभी दिनों में आपकी स्तुति गाने दें। (पद 2) मैं अपने हाथ और पैर आपको सौंपता हूँ; हे प्रभु, कृपया इन्हें स्वीकार करें, और इन्हें अपना काम करने में फुर्तीला बनाएँ। (पद 3) मैं अपनी आवाज़ आपको सौंपता हूँ; हे प्रभु, कृपया इसे स्वीकार करें, और मुझे केवल आपके वचन का सत्य ही सुनाने दें। (पद 4) मैं अपने खजाने आपको सौंपता हूँ; हे प्रभु, कृपया इन्हें स्वीकार करें, और स्वर्ग के राज्य की भलाई के लिए, अपनी इच्छा के अनुसार इनका उपयोग करें। (पद 5) मैं अपना समय आपको सौंपता हूँ; हे प्रभु, कृपया इसे स्वीकार करें, और मुझे अपने जीवन के सभी दिनों में आपकी सेवा करने दें। आमीन। क्योंकि हम जानते हैं कि परमेश्वर धर्मी है (1 यूहन्ना 2:29)—और उन लोगों के रूप में जिन्हें यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा धर्मी ठहराया गया है (रोमियों 5:1–11)—हमें धार्मिकता का अभ्यास करना चाहिए (1 यूहन्ना 2:29)। हमें धार्मिकता से जीना चाहिए (पद 29, *द कंटेम्पररी बाइबल*)। हमारे लिए धार्मिकता का अभ्यास करने—यानी धार्मिकता से जीने—का अर्थ यह है कि, जिस प्रकार प्रभु धर्मी है, उसी प्रकार हम—धर्मी लोगों के रूप में (3:7)—स्वयं को शुद्ध करें (पद 3)। इसके अलावा, इसका अर्थ है प्रभु की आज्ञाओं के अनुसार एक-दूसरे से प्रेम करना (पद 11, 23, 24)। इस प्रकार, अपने शारीरिक अंगों को—जिनके द्वारा हम धार्मिकता का अभ्यास करते हैं—परमेश्वर को धार्मिकता के उपकरणों के रूप में समर्पित करते हुए (रोमियों 6:13), हम प्रभु की आज्ञाओं के अनुसार एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, और साथ ही स्वयं को भी उसी प्रकार शुद्ध करते हैं जिस प्रकार प्रभु शुद्ध है। कृपया रोमियों 6:14 देखें: "क्योंकि पाप तुम पर प्रभुता न करेगा, क्योंकि तुम व्यवस्था के अधीन नहीं, परन्तु अनुग्रह के अधीन हो" [(द कंटेम्पररी बाइबल) "क्योंकि तुम व्यवस्था के अधीन नहीं, परन्तु अनुग्रह के अधीन हो, इसलिए पाप तुम पर हावी नहीं हो पाएगा"]। बाइबल घोषणा करती है कि पाप हम पर हावी नहीं होगा, न ही वह हम पर प्रभुता करेगा। इसका कारण यह है कि हम व्यवस्था के अधीन नहीं, बल्कि अनुग्रह के अधीन हैं। परमेश्वर का असीम अनुग्रह ऐसा अनुग्रह है जो हमारे सभी पापों को ढकने में सक्षम है।

“परमेश्वर का धन्यवाद हो”

[रोमियों 6:15-18]

आइए, हम एक बार फिर रोमियों 6:12-14 के शब्दों पर विचार करें [शीर्षक: मसीह के साथ पुनरुत्थित होने का परिणाम]। जिस प्रकार यीशु मसीह पाप के लिए एक ही बार मरे और परमेश्वर के लिए सदा जीवित रहते हैं (पद 10), उसी प्रकार हमें भी अपने आप को पाप के लिए मरा हुआ, परन्तु मसीह यीशु में परमेश्वर के लिए जीवित समझना चाहिए—और हमें उसी के अनुसार जीवन जीना चाहिए।

पहला, हमें अपने आप को पाप के लिए मरा हुआ समझकर जीवन जीना चाहिए।

हमें पाप को अपने शरीरों पर राज करने नहीं देना चाहिए (पद 12)। हमें अपने शरीरों की बुरी अभिलाषाओं की आज्ञा नहीं माननी चाहिए (पद 12)। यहाँ प्रयुक्त शब्द “अभिलाषाएँ” (*saryok*) के विषय में: यद्यपि मैंने पिछले सप्ताह की बुधवार की प्रार्थना सभा में उल्लेख किया था कि मूल यूनानी शब्द का अनुवाद आठ अलग-अलग तरीकों से किया गया है, परन्तु वास्तव में, इसका अनुवाद दस से भी अधिक तरीकों से किया गया है। इन अनुवादों में, इसे अच्छी बातों के लिए “इच्छा” या “लालसा” के रूप में भी प्रस्तुत किया गया है—न कि केवल पाप के लिए। फिलिप्पियों 1:23 पर विचार करें: “मैं दोनों के बीच दुविधा में हूँ; मेरी इच्छा है कि मैं इस संसार से विदा होकर मसीह के साथ रहूँ, क्योंकि यह कहीं अधिक उत्तम है।” यहाँ, बाइबल के *संशोधित कोरियाई संस्करण* में “मसीह के साथ रहना” वाक्यांश का अनुवाद इस प्रकार किया गया है: “मसीह के साथ रहने की इच्छा।” हमें अपने शरीर के अंगों को अधार्मिकता के हथियार के रूप में पाप को नहीं सौंपना चाहिए (रोमियों 6:13)।

दूसरा, हमें उन लोगों के रूप में जीवन जीना चाहिए जो परमेश्वर के लिए जीवित हैं।

हमें उन लोगों के रूप में जीवन जीना चाहिए जो मसीह के साथ पुनरुत्थित हुए हैं (पद 13)। हमें अपने आप को परमेश्वर को समर्पित करना चाहिए (पद 13)। हमें अपने शरीर के अंगों को धार्मिकता के हथियार (साधन) के रूप में परमेश्वर को समर्पित करना चाहिए (पद 13)। आज, रोमियों 6:15–18 के अंश पर ध्यान केंद्रित करते हुए, हम "परमेश्वर का धन्यवाद हो" शीर्षक के अंतर्गत परमेश्वर का वचन ग्रहण करने का प्रयास करते हैं। कृपया रोमियों 6:17–18 देखें: "परमेश्वर का धन्यवाद हो कि यद्यपि तुम पहले पाप के दास थे, परन्तु अब तुमने उस शिक्षा के स्वरूप को, जिसके अनुसार तुम सौंपे गए थे, अपने पूरे मन से मान लिया है। अब तुम पाप से स्वतंत्र होकर धर्म के दास बन गए हो।" रोमियों 6:17 में पाया जाने वाला शब्द "पहले" (या "मूल रूप से") इस तथ्य को दर्शाता है कि, यद्यपि हम कभी पाप के दास थे (पद 17), परमेश्वर ने—यीशु मसीह के क्रूस पर मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा—अब हमें धर्म का दास बनने में समर्थ किया है (पद 18)। इसलिए, हमें परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए (पद 17)। इसके अलावा, रोमियों 6:17 को देखने पर हम पाते हैं कि शब्द "तुम" दो बार आता है। रोमियों 6:1–23 में, शब्द "हम" (जो मुख्य रूप से अध्याय के पहले भाग में आता है) 11 बार आता है, जबकि शब्द "तुम" (जो मुख्य रूप से दूसरे भाग में आता है) 21 बार आता है; फिर भी, "हम" और "तुम" दोनों का अर्थ एक ही है—यह उन "हम" या "तुम" लोगों को संदर्भित करता है जिन्होंने यीशु मसीह के साथ बपतिस्मा पाया है, उनके साथ गाड़े गए हैं, और तत्पश्चात जीवन के लिए जिलाए गए हैं (पद 4)। इस संदर्भ में, मैंने "बपतिस्मा" के संबंध में चार श्रेणियां मानी हैं: (1) वे जिन्होंने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने के बाद जल बपतिस्मा पाया; (2) वे जिन्होंने जल बपतिस्मा पाने के बाद पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया; (3) वे जिन्होंने केवल पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया; और (4) वे जिन्होंने केवल जल बपतिस्मा पाया। शब्द "हम" और "तुम" केवल श्रेणियों (1) से (3) पर लागू होते हैं। जिन लोगों ने केवल जल बपतिस्मा पाया है, वे "हम" और "तुम" के दायरे में शामिल नहीं हैं। दूसरे शब्दों में, शब्द "हम" और "तुम" निम्नलिखित को संदर्भित करते हैं: (1) वे जिन्होंने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने के बाद जल बपतिस्मा पाया; (2) वे जिन्होंने जल बपतिस्मा पाने के बाद पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया; और (3) वे जिन्होंने केवल पवित्र

आत्मा का बपतिस्मा पाया—लेकिन *उनको नहीं* (4) जिन्होंने केवल जल बपतिस्मा पाया। चर्च के अंदर ऐसे बहुत से लोग हैं जिन्हें केवल जल बपतिस्मा मिलता है, वे आधिकारिक पदों पर सेवा करते हैं, और बाद में जाकर उन्हें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिलता है। हालाँकि, ऐसे लोग भी हैं—और उनकी संख्या कम नहीं है—जिन्हें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिले बिना ही केवल जल बपतिस्मा मिला है। यदि यह बात आप पर भी लागू होती है, तो आपको निश्चित रूप से पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त करना चाहिए। आपको पवित्र आत्मा के बपतिस्मा की सच्ची इच्छा करनी चाहिए और इसके लिए परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए। पवित्र आत्मा का बपतिस्मा 'पुनर्जन्म' का प्रतीक है—यानी 'दोबारा जन्म लेना'। यह तथ्य कि हम यीशु मसीह को ग्रहण करके परमेश्वर की संतान बन गए हैं, पवित्र आत्मा के बपतिस्मा का ही सीधा परिणाम है। इसलिए, हमें परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए (पद 17)। इसका कारण यह है कि, हालाँकि हम मूल रूप से पाप के दास थे—[हम मूल रूप से आत्मिक रूप से मृत थे; हम मृत अवस्था में ही जन्मे थे, और इस प्रकार, अपनी शारीरिक मृत्यु के बाद, हमारा भाग्य अनंत मृत्यु ("दूसरी मृत्यु") का सामना करना तय था]—परमेश्वर ने अब, केवल अपनी कृपा से, हमें धर्म के दास बनने के योग्य बनाया है (पद 17–18)।

बाइबल में ऐसे लोगों के उदाहरण मिलते हैं जिन्होंने, धन्यवाद देने के हर कारण के बावजूद, अपनी कृतज्ञता व्यक्त नहीं की। उदाहरण के लिए, यदि हम लूका 17:11–19 को देखें, तो हम पाते हैं कि जब यीशु यरूशलेम की ओर यात्रा कर रहे थे, तो वे एक गाँव में प्रवेश किए और वहाँ उनकी भेंट कुष्ठ रोग से पीड़ित दस पुरुषों से हुई (लूका 17:11–12)। उसी क्षण, उन कुष्ठ रोगियों ने यीशु को पुकारते हुए कहा, "हे यीशु, हे स्वामी, हम पर दया कर!" (पद 13)। उन्हें देखकर, यीशु ने उन्हें निर्देश दिया, "जाओ, अपने आप को याजकों को दिखाओ"; और जब वे अपने मार्ग पर जा रहे थे, तो वे शुद्ध हो गए (पद 14)। हालाँकि, उन दस कुष्ठ रोगियों में से जो शुद्ध हुए थे, केवल एक—एक सामरी—वापस लौटा; यह देखकर कि वह ठीक हो गया है, उसने ऊँची आवाज़ में परमेश्वर की महिमा की, यीशु के चरणों में गिर पड़ा, और उनका धन्यवाद किया (पद 15–16)। बाइबल के 'प्रेरितों के काम' (Acts) 3:1–10 में इसका एक और उदाहरण मिलता है: जब प्रेरित पतरस और यूहन्ना मंदिर की ओर जा रहे थे, तो जन्म से ही लंगड़े एक व्यक्ति ने उन्हें मंदिर के द्वार पर देखा और भीख माँगी (पद 1–3)। उसी क्षण, पतरस ने कहा, “चाँदी और सोना तो मेरे पास नहीं है, पर जो मेरे पास है, वह मैं तुम्हें देता हूँ: नासरत के यीशु मसीह के नाम से, उठ और चल!” (पद 6)। तब पतरस ने उस लंगड़े

व्यक्ति का दाहिना हाथ पकड़ा और उसे ऊपर उठाया; तुरंत ही, उस व्यक्ति के पैरों और टखनों में जान आ गई, और वह उछलकर खड़ा हो गया और चलने लगा (पद 7–8)। इसके अलावा, जब वह पतरस और यूहन्ना के साथ मंदिर में प्रवेश कर रहा था, तो वह चलता, उछलता और परमेश्वर की स्तुति करता जा रहा था (पद 8)। हमें भी परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए और आनन्दित होना चाहिए—ठीक उसी सामरी कोढ़ी की तरह जो कृतज्ञता में यीशु के चरणों में गिर पड़ा था, और उस लंगड़े व्यक्ति की तरह जिसे चंगाई मिली थी। इसका कारण यह है कि, जहाँ हम कभी पाप के दास थे, वहीं अब हम धार्मिकता के दास बन गए हैं। इसलिए, हमें अपने दिन की शुरुआत कृतज्ञता के साथ करनी चाहिए, पूरा दिन कृतज्ञता में बिताना चाहिए, और—दिन समाप्त होने के बाद भी—अपने सपनों में भी परमेश्वर का धन्यवाद करते रहना चाहिए। स्वर्ग में जीवन के अलावा, यह और क्या हो सकता है?

इसके अलावा, रोमियों 6:17 में, बाइबल "शिक्षा के उस नमूने" की बात करती है जो आपको सौंपा गया था; यहाँ, "शिक्षा" का अर्थ यीशु मसीह का सुसमाचार है—विशेष रूप से, क्रूस पर उनकी मृत्यु और उनका पुनरुत्थान। "नमूना" का अर्थ परमेश्वर का वचन है—जो स्वयं सुसमाचार का ही नमूना है। हमें इस सुसमाचार को अपने जीवन में उतारना चाहिए और इसे अपने आप को बदलने देना चाहिए। हमारे विचार भी यीशु मसीह का सुसमाचार बन जाने चाहिए, और उस सुसमाचार की शक्ति के द्वारा, हमारे कार्यों से उसकी सुगंध फैलनी चाहिए। हम अपनी स्वयं की शक्ति से ऐसा नहीं कर सकते, बल्कि पवित्र आत्मा ऐसा करने के लिए हमारे भीतर कार्य करता है। पवित्र आत्मा हमें दृढ़ विश्वास प्रदान करता है, जिससे हम परमेश्वर का धन्यवाद कर पाते हैं और उसमें आनंद पा सकते हैं। इसके अतिरिक्त, रोमियों 6:17 इस बात पर ज़ोर देता है कि "हृदय से आज्ञापालन" का अर्थ है परमेश्वर के वचन—अर्थात् यीशु मसीह के सुसमाचार—का शुद्ध और सच्चे हृदय से पालन करना (न कि केवल ऊपरी तौर पर रस्में निभाना)। इसका एक उत्तम उदाहरण थिस्सलोनीके की कलीसिया के विश्वासियों में देखा जा सकता है। भारी क्लेशों के बीच भी, उन्होंने पवित्र आत्मा के आनंद के साथ वचन को ग्रहण किया और उसका पालन किया; परिणामस्वरूप, वे प्रेरित पौलुस और स्वयं प्रभु के अनुकरणकर्ता बन गए (1 थिस्सलोनीकियों 1:6)। इसके अलावा, वे मकिदुनिया और अखाया भर में सभी विश्वासियों के लिए एक उदाहरण बन गए (पद 7)। आज्ञापालन विश्वास का फल है; यदि किसी के पास विश्वास

है, तो वह आज्ञापालन करेगा। फिर, कुछ लोग आज्ञापालन का जीवन जीने में संघर्ष क्यों करते हैं? इसका कारण यह है कि उनका विश्वास कमज़ोर है।

रोमियों 6:18 में, बाइबल घोषणा करती है कि हम "पाप से स्वतंत्र किए गए हैं।" मूल रूप से, पाप हमारे जीवन पर राजा की तरह राज करता था; उसने हमें बंदी बना रखा था और हमें हिलने-डुलने में भी पूरी तरह से असमर्थ बना दिया था। हालाँकि, अब—यीशु मसीह के द्वारा—हम पाप के बंधन से मुक्त हो गए हैं। परिणामस्वरूप, अब हम पाप के विरुद्ध खड़े होने और लड़ने, तथा उस पर विजय प्राप्त करने के लिए सशक्त हो गए हैं। शैतान स्वयं हमारे सामने से भाग खड़ा होता है। हम ऐसे लोग नहीं हैं जो पाप का अभ्यास करते हैं (1 यूहन्ना 3:6, 9)। अब हम जानबूझकर किए गए पाप (धृष्टतापूर्ण पाप) नहीं करते, न ही हम आदतन पापों (आदत के पाप) में पड़ते हैं, और न ही हम सुनियोजित, षड्यंत्रपूर्ण पापों (साज़िश वाले पाप) में लिप्त होते हैं। फिर भी, हम दूसरे तरह के पाप भी करते हैं। इसका एक बाइबिल का उदाहरण प्रेरित पतरस में मिलता है। जब यीशु ने उसे बुलाया, तो पतरस ने यीशु का अनुसरण करने के लिए सब कुछ छोड़ दिया; और हालाँकि उसने तीन साल तक यीशु का अनुसरण किया, फिर भी उसने पाप किया। इससे पहले कि यीशु गेथसेमानी के बगीचे में—जहाँ उसकी आत्मा दुख से इतनी भर गई थी कि उसे लगा जैसे वह मरने वाला है—प्रार्थना करने गए, उन्होंने अपने शिष्यों से कहा, "तुम यहीं रुको और जागते रहो।" हालाँकि, जब वे अपनी प्रार्थना से लौटे, तो उन्होंने देखा कि शिष्य ऊँघ रहे थे (मरकुस 14:32–37)। यह देखकर, यीशु ने पतरस से कहा, "...जागते रहो और प्रार्थना करते रहो ताकि तुम परीक्षा में न पड़ो। आत्मा तो तैयार है, पर शरीर कमज़ोर है" (पद 37–38)। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि आत्मा तो तैयार थी, पर शरीर कमज़ोर था, जिसके कारण अंत में उसने पाप कर ही दिया। यह न तो कोई ढिठाई वाला पाप था, न कोई आदत वाला पाप, और न ही कोई सोचा-समझा पाप; बल्कि, यह कमज़ोरी के कारण किया गया पाप था—यानी परीक्षा का सामना करने में असफलता। प्रेरित पतरस ने यीशु को तीन बार नकारने का पाप भी किया, जब यीशु को गिरफ्तार किया गया था (मत्ती 26:70, 72, 74)। हालाँकि, यीशु के शब्दों को याद करके—कि मुर्गे के बांग देने से पहले वह उन्हें तीन बार नकार देगा—पतरस बाहर गया और पछतावे में फूट-फूटकर रोया (पद 75)। इसके अलावा, अंतियोख में, प्रेरित पतरस ने एक ऐसा काम किया जिसके लिए प्रेरित पौलुस ने उसे डाँटा (गलतियों 2:11)। गैर-यहूदियों के साथ खाना खाते समय, जब उसने देखा कि यरूशलेम से याकूब द्वारा भेजे गए कई यहूदी

आ गए हैं, तो वह डर के मारे पीछे हट गया और चला गया (पद 12, *द बाइबिल फॉर मॉडर्न पीपल*)। इसके परिणामस्वरूप, दूसरे यहूदियों ने भी ऐसा दिखावा किया जैसे वे खाना नहीं खा रहे थे और वे भी पीछे हट गए; और यहाँ तक कि बरनबास भी उनके इस पाखंड के बहकावे में आ गया (पद 13, *द बाइबिल फॉर मॉडर्न पीपल*)। जब हम—ठीक प्रेरित पतरस की तरह—पाप करते हैं क्योंकि "आत्मा तो तैयार है, पर शरीर कमज़ोर है," तो हमें 1 यूहन्ना 1:9 के वचनों को मज़बूती से थामे रहना चाहिए, अपने पापों को स्वीकार करना चाहिए, और पश्चाताप करना चाहिए: "यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह विश्वासयोग्य और धर्मी है, कि हमारे पापों को क्षमा करे और हमें सब अधर्म से शुद्ध करे" [(आधुनिक लोगों के लिए बाइबल) "यदि हम अपने पापों को मान लें, तो परमेश्वर—जो विश्वासयोग्य और धर्मी है—हमारे पापों को क्षमा करेगा और हमें सारी दुष्टता से शुद्ध करेगा"]। हमें अपने पश्चाताप में तत्पर रहना चाहिए।

रोमियों 6:18 में, बाइबल "धर्म के दास" होने की बात करती है। यीशु मसीह धर्म का सेवक है: "धर्मी सेवक" (यशायाह 53:11), "धर्मी डाल" (यिर्मयाह 23:5), और "धर्म का सूर्य" (मलाकी 4:2, *आधुनिक लोगों के लिए बाइबल*)। हम यीशु मसीह के सेवक बन गए हैं। रोमन युग के दौरान—पौलुस के समय में—बहुत से सेवक होते थे। उस संदर्भ में, एक "सेवक" का अर्थ दास होता था। एक दास के पास न तो व्यक्तिगत स्वतंत्रता होती थी और न ही मानवाधिकार; वह अपने स्वामी के हाथों में केवल एक औज़ार मात्र होता था। लोग विभिन्न कारणों से दास बन जाते थे: युद्ध हारने के कारण, कर्ज़ चुकाने में असमर्थ होने के कारण, या केवल दासता में जन्म लेने के कारण। संक्षेप में, वे नितांत आवश्यकता के कारण दास बन जाते थे। हालाँकि, क्योंकि हम यीशु मसीह के द्वारा पाप से मुक्त किए गए हैं, इसलिए हम अपनी स्वतंत्र इच्छा से उसके सेवक बन गए हैं।

इन दिनों में—जिन्हें कोरोनावायरस ने कई तरीकों से कठिन बना दिया है—हमें परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए। इसका कारण यह है कि, यद्यपि हम मूल रूप से पाप के दास थे, यीशु मसीह के द्वारा हमने पाप से स्वतंत्रता प्राप्त की और अब हम धर्म के दास बन गए हैं। इसलिए, किसी भी परिस्थिति में, हमें मसीह में सच्ची स्वतंत्रता, आनंद और कृतज्ञता का अनुभव करना चाहिए। जब हम धन्यवाद देते हैं, तो हमारी समस्याएँ हल हो जाएँगी।

“इन बातों का अंत मृत्यु है”

[रोमियों 6:19-21]

रोमियों की किताब का छठा अध्याय एक ऐसा अध्याय है जिसकी शुरुआत “पाप” (पद 1) से होती है और अंत भी “पाप” (पद 23) से होता है। यह एक ऐसा अध्याय है जिसकी शुरुआत “अनुग्रह” (पद 1) से होती है और अंत एक “उपहार” (अनुग्रह) (पद 23) से होता है। रोमियों अध्याय 6 एक ऐसा अध्याय है जहाँ, जहाँ पाप बढ़ा है, वहाँ अनुग्रह और भी अधिक बढ़ गया है (5:20)। रोमियों 6:19-21 पर ध्यान दें: “मैं रोज़मर्रा की ज़िंदगी से एक उदाहरण दे रहा हूँ क्योंकि आपका मानवीय स्वभाव कमज़ोर है। जिस तरह आप अपने शरीर के अंगों को अशुद्धता और लगातार बढ़ती दुष्टता की गुलामी में सौंपते थे, उसी तरह अब उन्हें उस धार्मिकता की गुलामी में सौंपें जो पवित्रता की ओर ले जाती है। जब आप पाप के गुलाम थे, तब आप धार्मिकता के नियंत्रण से मुक्त थे। उस समय आपको उन बातों से क्या लाभ मिला, जिनके लिए अब आप शर्मिंदा हैं? उन बातों का परिणाम मृत्यु है।” हम पद 19-21 में पाए जाने वाले वचन पर—जो रोमियों अध्याय 6 का अंतिम भाग है—तीन हिस्सों में बाँटकर मनन करेंगे: (1) “इन बातों का अंत मृत्यु है,” (2) अंत अनंत जीवन है, और (3) “परमेश्वर का उपहार।”

सबसे पहले, हम इस कथन पर विचार करते हैं: “इन बातों का अंत मृत्यु है” (रोमियों 6:21)।

किसके लिए अंत मृत्यु है? यह उन लोगों के लिए है जो पाप के गुलाम हैं (पद 20)। जब आप आज रोमियों अध्याय 6 के इस अंतिम भाग से संदेश सुन रहे हैं, तो मैं पूरी ईमानदारी से प्रार्थना करता हूँ कि जो लोग अभी भी पाप के गुलाम हैं, वे उस बंधन से मुक्त हो जाएँ। पाप के गुलाम का अंतिम परिणाम मृत्यु है।

(1) पाप का गुलाम अपने शरीर के अंगों को अशुद्धता और दुष्टता की गुलामी में सौंप देता है। बाइबल में रोमियों 6:19 को देखें: "मैं तुम्हारी शारीरिक कमज़ोरी के कारण इंसानी भाषा में बात कर रहा हूँ। क्योंकि जिस तरह तुमने अपने अंगों को अशुद्धता और अधार्मिकता का दास बना दिया था, जिसके परिणामस्वरूप और भी ज़्यादा अधार्मिकता फैली..." [(समकालीन अंग्रेज़ी संस्करण) "मैं इसे आसान शब्दों में समझा रहा हूँ क्योंकि तुम्हारा इंसानी स्वभाव कमज़ोर है। ठीक वैसे ही जैसे तुमने पहले अपने शरीरों को पाप का दास बना दिया था—अशुद्धता और अधार्मिकता की खातिर..."]। यहाँ, "अंगों" का मतलब हमारे हाथ-पैर—हमारा भौतिक शरीर (उदाहरण के लिए, हमारी आँखें, नाक, मुँह, पैर, हाथ, आदि) है। इसके अलावा, "अंगों" की व्याख्या और भी व्यापक रूप से की जा सकती है, जिसमें हमारा समय, संपत्ति और हमारे पास मौजूद अन्य संसाधन भी शामिल हैं। यदि आप भजन संहिता (अध्याय 1–150) को देखें, तो भजनकार इंसानों के विभिन्न अंगों—भौतिक शरीर—के बारे में विस्तार से बात करता है। और उसने लगातार अपने सभी अंगों को भलाई और धार्मिकता के लिए समर्पित किया। इसके विपरीत, दुष्ट लोगों ने अपने अंगों को अधार्मिकता के लिए समर्पित किया (हालाँकि भजनकार इस बारे में कम ही बात करता है)। भजन संहिता 140:2–3 को देखें: "वे अपने दिलों में बुरी बातें सोचते हैं; वे लगातार युद्ध के लिए इकट्ठा होते हैं। वे अपनी ज़बानों को साँप की तरह तेज़ करते हैं; उनके होठों के नीचे एक ज़हरीले साँप का ज़हर छिपा होता है।" दुष्ट लोगों ने (जिनका ज़िक्र पद 1 में है) अपने दिलों में बुराई सोची—जो उनके अंगों में से एक है (पद 2)। इसके अलावा, उन्होंने अपनी ज़बानों को साँप की ज़बान की तरह तेज़ किया, और उनके होठों के नीचे एक ज़हरीले साँप का ज़हर छिपा था (पद 3)। भजन संहिता 140:9 को देखें: "जो लोग मुझे घेरे हुए हैं—उनके अपने होठों की शरारत—उनके सिरों को ढक ले।" जब भजनकार को घेरने वाले दुष्ट लोगों ने अपने सिर उठाए, तो उन्होंने अपने होठों का इस्तेमाल उसके खिलाफ़ बुरी बातें और श्राप देने के लिए किया। हम, जो धर्मी हैं, परमेश्वर की स्तुति, आराधना और धन्यवाद करने के लिए अपने सिर उठाते हैं। (2) पाप के दास का जीवन, धार्मिकता से आज़ादी का जीवन होता है।

रोमियों 6:20 को देखें: "क्योंकि जब तुम पाप के दास थे, तो तुम धार्मिकता के मामले में आज़ाद थे" [(आधुनिक लोगों की बाइबल) "जब तुम पाप के दास थे, तो धार्मिकता से तुम्हारा कोई लेना-देना नहीं था"]। दूसरे शब्दों में, पाप का गुलाम व्यक्ति नेकी के मामले में अपनी ही मनमर्ज़ी के अनुसार काम करता है; फिर भी, क्योंकि उसका दिल न तो साफ़ है और न ही पवित्र—बल्कि बुराई से भरा हुआ है—इसलिए वह उसी बुरे दिल से जान-बूझकर पाप करता है। उदाहरण के लिए, पाप का गुलाम व्यक्ति परमेश्वर के वचन की अवज्ञा करता है, नेकी पर चलने में नाकाम रहता है और उसके बजाय अधार्मिकता का अभ्यास करता है; वह परमेश्वर के वचन की आज्ञा मानने के बजाय अवज्ञा को चुनता है (जैसे, प्रभु की इस आज्ञा की अवज्ञा करना कि "एक-दूसरे से प्रेम करो"—एक-दूसरे से प्रेम न करना और उसके बजाय एक-दूसरे से नफ़रत करना)।

(3) पाप का गुलाम व्यक्ति शर्मनाक फल देता है।

रोमियों 6:21 पर नज़र डालें: "उस समय तुम्हें क्या फल मिला था? ऐसी बातें जिनके लिए अब तुम शर्मिंदा हो..." यहाँ, "उस समय" (पद 21) उस समय को दर्शाता है जब हम पाप के गुलाम थे (पद 20)। जब हम पाप के गुलाम थे, तो हम अंधेरे में जीते थे और हमें यह एहसास भी नहीं था कि हमें शर्मिंदा होना चाहिए। इसके अलावा, जब हम पाप के गुलाम थे—यहाँ तक कि जब हम अंधेरे के शर्मनाक कामों में लिप्त होकर परमेश्वर के विरुद्ध पाप कर रहे थे—तब भी हम असल में उन्हीं कामों को गौरवशाली मानते थे। फिलिप्पियों 3:19 पर नज़र डालें: "जिनका अंत विनाश है, जिनका ईश्वर उनका पेट है, और जिनका गौरव उनकी शर्म में है—जो अपना मन सांसारिक चीज़ों पर लगाते हैं" [(Modern People's Bible) "उनका अंत विनाश है। वे अपनी शारीरिक इच्छाओं को अपना ईश्वर बना लेते हैं, शर्म को गौरव मानते हैं, और केवल सांसारिक मामलों के बारे में सोचते हैं"]। (4) पाप का गुलाम होने का अंतिम परिणाम मृत्यु है।

कृपया बाइबल में रोमियों 6:21 पर नज़र डालें: "... क्योंकि उन चीज़ों का अंत मृत्यु है" [(Contemporary English Version) "... ऐसे जीवन का परिणाम अनंत मृत्यु है"]। यहाँ, "मृत्यु" का अर्थ शारीरिक मृत्यु है। इसके अलावा, इस शारीरिक मृत्यु का अंतिम परिणाम अनंत मृत्यु है। शारीरिक शरीर के मरने का कारण यह है कि यह पाप के लिए चुकाया गया दंड है ["क्योंकि पाप की मज़दूरी मृत्यु है..." (रोम 6:23)]। हालाँकि, हम मसीहियों के लिए—जो नेकी के सेवक हैं—हमारे शारीरिक शरीर पाप के दंड के रूप में नहीं मरते। इसका कारण यह है कि, क्योंकि परमेश्वर ने हमें धर्मी ठहराया है, इसलिए हममें से जो लोग मसीह यीशु में हैं, उनके लिए अब कोई भी दोष नहीं है। कृपया बाइबल में रोमियों 8:1–2 देखें: "इसलिए अब जो लोग मसीह यीशु में हैं, उनके लिए कोई भी दोष नहीं है, क्योंकि मसीह यीशु में जीवन के आत्मा के नियम ने तुम्हें पाप और मृत्यु के नियम से स्वतंत्र कर दिया है।" बाइबल में, शारीरिक शरीर की मृत्यु को "सो जाना" बताया गया है। कृपया बाइबल में प्रेरितों के काम 7:60 देखें: "तब वह घुटने टेककर ऊँचे स्वर से चिल्लाया, 'हे प्रभु, इस पाप का दोष उन पर मत लगाना।' यह कहकर वह सो गया।" यहाँ, बाइबल डीकन स्तेफानोस की मृत्यु का वर्णन यह कहकर करती है कि वह "सो गया।" इसके अलावा, कृपया 1 थिस्सलोनीकियों 4:13–15 देखें: "भाइयों, हम नहीं चाहते कि तुम उन लोगों के बारे में अनजान रहो जो मृत्यु में सो गए हैं, ताकि तुम बाकी इंसानों की तरह शोक न करो, जिनके पास कोई आशा नहीं है। क्योंकि हम विश्वास करते हैं कि यीशु मरा और फिर से जी उठा, और इसलिए हम विश्वास करते हैं कि परमेश्वर उन लोगों को भी यीशु के साथ ले आएगा जो उसमें सो गए हैं। प्रभु के वचन के अनुसार, हम तुमसे कहते हैं कि हम जो अभी भी जीवित हैं और प्रभु के आगमन तक बचे रहेंगे, वे निश्चित रूप से उन लोगों से पहले नहीं जाएँगे जो सो गए हैं।" यहाँ, मृतकों के बारे में बात करते हुए, बाइबल उन्हें तीन बार "वे जो सोते हैं" कहकर संबोधित करती है। हम ईसाइयों के लिए, शरीर वास्तव में नहीं मरता—क्योंकि मृत्यु का अर्थ है एक अंतिम अंत—बल्कि, यह सो जाता है। हम, किसी न किसी समय, जाग उठेंगे। वह क्षण ठीक तब होगा जब यीशु मसीह वापस आएँगे (पद 15)। दूसरे शब्दों में, प्रभु स्वयं स्वर्ग से एक ऊँची आज्ञा के साथ, महादूत की आवाज़ के साथ, और परमेश्वर की तुरही की पुकार के साथ उतरेंगे, और मसीह में मरे हुए लोग सबसे पहले जी उठेंगे [वे लोग जो मसीह में विश्वास करते हुए मरे, वे सबसे पहले पुनर्जीवित होंगे (समकालीन कोरियाई बाइबल)] (पद 16)। हालाँकि, अविश्वासियों के लिए—वे लोग जो यीशु में विश्वास नहीं करते, या "पाप के दास"—चूँकि वे मसीह के बाहर

मरते हैं, इसलिए उनकी शारीरिक मृत्यु का परिणाम अनंत मृत्यु है: "दूसरी मृत्यु।" कृपया प्रकाशितवाक्य 21:8 देखें: "परन्तु कायर, अविश्वासी, घिनौने, हत्यारे, व्यभिचारी, टोन्हे, मूर्तिपूजक और सब झूठे—इनका भाग उस झील में होगा जो आग और गन्धक से जलती है। यही दूसरी मृत्यु है।" यहाँ, "दूसरी मृत्यु" का अर्थ उन अविश्वासियों और अन्य लोगों के भाग्य से है जिन्हें आग और गन्धक से जलती हुई झील में डाल दिया जाता है—एक ऐसी जगह जहाँ न तो उनका पूरी तरह से विनाश होता है और न ही वे भस्म होते हैं, बल्कि इसके बजाय वे अनंत दंड भोगते हैं। यही उनका अंतिम परिणाम है!

हमें इस बात पर गहराई से विचार करना चाहिए कि पाप कितना भयानक है, और साथ ही उसका अंतिम परिणाम भी कितना डरावना है! स्वभाव से, हम कभी पाप के गुलाम थे—ऐसे लोग जिनका भाग्य दूसरी मृत्यु, यानी आग की उस अनंत झील में अनंत दंड भोगना तय था। हालाँकि, परमेश्वर के संप्रभु अनुग्रह और प्रेम के द्वारा, हमने यीशु मसीह पर अपना विश्वास रखा, उद्धार पाया, और अनंत जीवन प्राप्त किया। अब हम पाप के गुलाम नहीं रहे, बल्कि अब हम धार्मिकता के सेवक हैं; इसलिए, हमारा अंतिम भाग्य मृत्यु नहीं, बल्कि अनंत जीवन है। जब हम परमेश्वर के इस असीम अनुग्रह और प्रेम पर विचार करते हैं, तो हम भला कैसे अपनी कृतज्ञता पूरी तरह से व्यक्त कर सकते हैं, या उन्हें अपनी स्तुति, आराधना और महिमा यथोचित रूप से अर्पित कर सकते हैं? उस दिन तक—ठीक उस क्षण तक—जब तक हमारी अंतिम साँस नहीं निकल जाती, हमें परमेश्वर को अपना धन्यवाद, स्तुति, आराधना और महिमा अर्पित करते रहना चाहिए।

“अंतिम परिणाम है अनंत जीवन”

[रोमियों 6:19-22]

“इसका परिणाम मृत्यु है” (रोमियों 6:21)। दूसरे शब्दों में, पाप के दास का अंतिम परिणाम मृत्यु है।

पहला, पाप का दास अपने शरीर के अंगों को अशुद्धता और अधर्म के लिए समर्पित कर देता है (पद 19)। यहाँ, “अशुद्धता” का अर्थ नैतिक अपवित्रता की स्थिति से है, जबकि “अधर्म” का अर्थ परमेश्वर के नियम की अवहेलना और उल्लंघन करने से है। दूसरा, पाप के दास का जीवन धार्मिकता से रहित होता है (पद 20)। तीसरा, पाप का दास शर्मनाक फल उत्पन्न करता है (पद 21)। चौथा, पाप के दास का अंतिम परिणाम मृत्यु है (पद 21)। यहाँ, “मृत्यु” तीन बातों का संकेत देती है: (1) आत्मिक मृत्यु: पाप का दास वह व्यक्ति है जो पहले से ही आत्मिक रूप से मृत है। इसका कारण यह है कि उसका मेल-जोल परमेश्वर से टूट गया है—वही जो जीवन है, जीवन का स्रोत है, और जीवन देने वाला है। (2) शारीरिक मृत्यु: यह शरीर और आत्मा का अलग होना है। पाप के दास के लिए, मृत्यु पाप का वेतन है (पद 23)। (3) अनंत मृत्यु: शारीरिक मृत्यु के बाद, पाप के दास को “दूसरी मृत्यु” का सामना करना पड़ता है (प्रकाशितवाक्य 20:14; 21:8)। यहाँ, “दूसरी मृत्यु” का अर्थ “आग की झील” से है (प्रकाशितवाक्य 20:14); इसका अर्थ यह है कि डरपोक, अविश्वासी, घिनौने, हत्यारे, व्यभिचारी, जादू-टोना करने वाले, मूर्तिपूजक, और सभी झूठे लोग आग और गंधक से जलती हुई एक झील में डाल दिए जाएँगे (21:8)। उस आग की झील में, कीड़े नहीं मरते, और आग कभी नहीं बुझती (मरकुस 9:48)। एक धनी व्यक्ति मर गया और उसे दफना दिया गया; अधोलोक (Hades) में पीड़ा सहते हुए, उसने ऊपर देखा और दूर पिता अब्राहम को देखा, जिनकी गोद में लाज़र विश्राम कर रहा था। उसने ऊँची आवाज़ में पुकारा, “पिता अब्राहम, मुझ पर दया करो! कृपया लाज़र को भेजो ताकि वह अपनी उंगली का सिरा पानी

में डुबोकर मेरी ज़बान को ठंडक दे, क्योंकि मैं इन लपटों में बहुत तकलीफ़ में हूँ—मैं मौत के कगार पर हूँ!" (लूका 16:19, 22–24, *The Bible for Modern People*). शारीरिक मृत्यु किसी भी तरह से अंत नहीं है। इसका मतलब यह है कि हमारा जीवन शरीर की मृत्यु के साथ समाप्त नहीं होता। बाइबल साफ़ तौर पर कहती है कि एक "दूसरी मृत्यु" भी होती है। यह साफ़ तौर पर घोषणा करती है कि जो लोग यीशु पर विश्वास नहीं करते, वे हमेशा के लिए आग की झील में रहेंगे—आग और गंधक में जलते हुए—जहाँ कीड़े कभी नहीं मरते और आग कभी नहीं बुझती। इसलिए, मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप यीशु मसीह पर विश्वास करें और इस तरह दूसरी मृत्यु से बचें।

"इसका अंतिम परिणाम अनंत जीवन है" (रोम 6:22)। दूसरे शब्दों में, नेकी के सेवक का अंतिम भाग्य अनंत जीवन है।

कृपया रोम 6:22 देखें: "लेकिन अब जब आप पाप से आज़ाद हो गए हैं और परमेश्वर के सेवक बन गए हैं, तो आपको जो लाभ मिलता है, वह पवित्रता की ओर ले जाता है, और इसका परिणाम अनंत जीवन है" [(जैसा कि *The Bible for Modern People* में दिया गया है: "लेकिन अब आप पाप से मुक्त हो गए हैं और परमेश्वर के सेवक बन गए हैं, और आप एक पवित्र जीवन जीने लगे हैं; इसलिए, इसका परिणाम अनंत जीवन है")]। यहाँ, शब्द "परिणाम" (या "अंत") पाप के सेवक के अंतिम भाग्य को नहीं, बल्कि नेकी के सेवक के अंतिम भाग्य को दर्शाता है—यानी, अनंत जीवन। इसके अलावा, वाक्यांश "लेकिन अब" यहाँ तीन गुना ज़ोर देता है, जो एक गहरा महत्व बताता है। यह सचमुच एक बहुत ही ज़रूरी और कीमती शब्द है। शुरू में (पद 17), पाप के गुलाम के तौर पर, हमने अपने अंगों को अशुद्धता और अधर्म के हवाले कर दिया था (पद 19); हम नेकी से आज़ाद थे (पद 20); हमने शर्मनाक फल दिए (पद 21); और हमारा अंत मृत्यु था (पद 21)। लेकिन अब (पद 22), हम पाप के गुलाम नहीं रहे, बल्कि आज्ञा मानने के गुलाम बन गए हैं (पद 16)—नेकी के गुलाम बन गए हैं (पद 18)—और, पाप से आज़ाद होकर (पद 22), हम ऐसा फल लाते हैं जो पवित्रता की ओर ले जाता है, जिसका अंत अनंत जीवन है (पद 22)। इस संदर्भ में, "नेकी के गुलाम" शब्द का मतलब किससे है?

(1) नेकी के गुलाम वे लोग हैं जो पाप से आज़ाद हो चुके हैं।

रोमियों 6:22 में, "आप" शब्द उन लोगों के लिए इस्तेमाल हुआ है जो पहले पाप के गुलाम थे, लेकिन अब उससे आज़ाद हो गए हैं। पाप के गुलाम के तौर पर, हम पहले पाप के पीछे चलते थे और उसके राज का पालन करते थे, क्योंकि वह हम पर राज करता था। हम पाप के गुलाम कैसे बने? एक आदमी—आदम—के गुनाह की वजह से, हम सब पाप के गुलाम बन गए (5:12)। इस तरह, हालाँकि हम पहले पाप के गुलाम थे (6:17), हम उससे आज़ाद हो गए हैं (पद 22)। क्योंकि हमारा "पुराना इंसान" यीशु के साथ सलीब पर चढ़ा दिया गया था, इसलिए हमारा पापी शरीर मर गया; इससे यह पक्का हो गया कि हम अब पाप के गुलाम नहीं रहेंगे (पद 6)। हमें पाप से आज़ादी मिली है (पद 22)। पहले, हम अपने अंगों को अशुद्धता और अधर्म के हवाले कर देते थे, जिसका नतीजा और ज़्यादा अधर्म होता था (पद 19)। "लेकिन अब" (पद 22), नेकी के गुलाम के तौर पर—और यीशु मसीह पर विश्वास के ज़रिए, जो हमारी नेकी हैं—हम नेकी के पीछे चलते हैं और उसकी सेवा करते हैं। अब (पद 19, 22), हम अपने अंगों को नेकी के गुलाम के तौर पर पेश करते हैं, जो पवित्रता की ओर ले जाता है (पद 19)। पवित्र शास्त्र कहता है कि कोई भी दो मालिकों की सेवा नहीं कर सकता। कृपया बाइबल में मत्ती 6:24 देखें: "कोई भी दो मालिकों की सेवा नहीं कर सकता। या तो तुम एक से नफ़रत करोगे और दूसरे से प्यार, या तुम एक के वफ़ादार रहोगे और दूसरे को तुच्छ समझोगे। तुम परमेश्वर और पैसे, दोनों की सेवा नहीं कर सकते।" हमें यीशु मसीह—जो हमारी नेकी हैं—को अपने प्रभु के तौर पर अपनाना चाहिए, और हमें उनके पीछे चलना चाहिए और उनकी सेवा करनी चाहिए। हमें अपने शरीरों को नेकी के औज़ार के तौर पर पेश करना चाहिए ताकि हम पवित्र जीवन जी सकें (रोमियों 6:19); हमें उन्हें पाप के साधन के रूप में प्रस्तुत नहीं करना चाहिए, जिससे हम अपने शरीरों को अशुद्धता और अधार्मिकता के हवाले कर दें (पद 19)।

(2) धार्मिकता का एक सेवक अपने अंगों को धार्मिकता के सेवक के रूप में प्रस्तुत करता है।

यद्यपि हमने पहले अपने अंगों को अशुद्धता और अधार्मिकता के लिए प्रस्तुत किया था, जब हम पाप के दास के रूप में सेवा कर रहे थे, अब हम उन्हें धार्मिकता के सेवक के रूप में प्रस्तुत करते हैं (पद 19)। उदाहरण के लिए, भजनकार ने अपने अंगों को धार्मिकता के सेवक के रूप में प्रस्तुत किया। यदि आप *न्यू हिमनल*

(New Hymnal) में भजन 213 के बोल देखें—जिसका शीर्षक है "मैं अपना जीवन अर्पित करता हूँ"—तो यह स्तुति का एक भक्तिपूर्ण गीत प्रस्तुत करता है, जो इस बात की पुष्टि करता है कि हमें अपने अंगों (अपने शरीरों) को धार्मिकता के सेवक के रूप में प्रस्तुत करना चाहिए: (पद 1) "मैं अपना जीवन अर्पित करता हूँ; हे प्रभु, कृपया इसे स्वीकार करें, और मुझे पृथ्वी पर अपने दिनों के दौरान आपकी स्तुति गाने दें।" (पद 2) "मैं अपने हाथ और पैर अर्पित करता हूँ; हे प्रभु, कृपया उन्हें स्वीकार करें, और उन्हें आपका कार्य करने में फुर्तीला बनाएँ।" (पद 3) "मैं अपनी आवाज़ अर्पित करता हूँ; हे प्रभु, कृपया इसे स्वीकार करें, और इसे केवल आपके वचन के सत्य की घोषणा करने दें।" (पद 4) "मैं अपने खजाने अर्पित करता हूँ; हे प्रभु, कृपया उन्हें स्वीकार करें, और स्वर्ग के राज्य की भलाई के लिए अपनी इच्छा के अनुसार उनका उपयोग करें।" (पद 5) "मैं अपना समय अर्पित करता हूँ; हे प्रभु, कृपया इसे स्वीकार करें, और मुझे अपने जीवन के सभी दिनों में विश्वासयोग्यता से आपकी सेवा करने दें। आमीन।" इन बोलों का शास्त्रीय आधार रोमियों 6:13 में मिलता है: "अपने शरीर के अंगों को पाप के लिए, अधार्मिकता के साधनों के रूप में प्रस्तुत न करें, बल्कि अपने आप को परमेश्वर को अर्पित करें, उन लोगों के रूप में जिन्हें मृत्यु से जीवन में लाया गया है; और अपने शरीर के अंगों को धार्मिकता के साधनों के रूप में उसे अर्पित करें।" अब जब हम धार्मिकता के सेवक बन गए हैं, तो हमें अपने शरीरों को परमेश्वर को अर्पित करना चाहिए और उसे महिमा देनी चाहिए। 2 कुरिन्थियों 5:14–15 देखें: "क्योंकि मसीह का प्रेम हमें विवश करता है, क्योंकि हम इस प्रकार विचार करते हैं: कि यदि एक सब के लिए मरा, तो सब मर गए; और वह सब के लिए मरा, ताकि जो जीवित हैं, वे अब अपने लिए नहीं, बल्कि उसके लिए जिएँ जो उनके लिए मरा और फिर से जीवित हो उठा।" रोमियों 14:7–8 पर ध्यान दें: "क्योंकि हम में से कोई भी अपने लिए नहीं जीता, और न ही कोई अपने लिए मरता है। क्योंकि यदि हम जीते हैं, तो प्रभु के लिए जीते हैं; और यदि हम मरते हैं, तो प्रभु के लिए मरते हैं। इसलिए, चाहे हम जिएं या मरें, हम प्रभु के ही हैं।" यह ठीक वैसी ही ज़िंदगी है जो वे लोग जीते हैं जो नेकी के सेवक बन गए हैं।

(3) नेकी के सेवक ऐसे फल लाते हैं जो पवित्रता की ओर ले जाते हैं।

रोमियों 6:19 पर ध्यान दें: "...अब अपने अंगों को पवित्रता के लिए नेकी के सेवकों के रूप में पेश करें।" नेकी का सेवक उसी पल पवित्र हो गया जिस पल उसे धर्मी ठहराया गया। इसीलिए नेकी के सेवक को "संत" कहा जाता है। कुलुस्सियों 1:2 पर ध्यान दें: "कुलुस्से में मसीह में रहने वाले संतों और विश्वासी भाइयों को: हमारे पिता परमेश्वर की ओर से आप पर कृपा और शांति हो।" कैथोलिक परंपरा में, किसी व्यक्ति को केवल इसलिए "संत" नहीं कहा जाता कि उसे एक ही पल में धर्मी घोषित कर दिया गया हो। बल्कि, किसी को "संत" या "पवित्र जन"—जैसे संत टेरेसा—तभी कहा जाता है, जब वह नेकी भरा ऐसा जीवन जीता है जो बहुत से लोगों का आदर और प्रशंसा पाता है। रोमियों 6:19 में "पवित्रता की ओर बढ़ते रहने" का उपदेश (या आज्ञा) एक पवित्र जीवन जीने का बुलावा है, जो एक संत के लिए उचित है। नेकी के सेवकों के रूप में, हमें अपने शरीरों को नेकी के औजारों के रूप में पेश करना है और पवित्रता में जीना है, जिससे हम पवित्र यीशु के और भी अधिक समान होते जाएं। दूसरे शब्दों में, हमें ऐसे फल लाने होंगे जो पवित्रता की ओर ले जाते हैं (पद 22)। इसका अर्थ है कि हमें परिपक्वता की स्थिति प्राप्त करनी होगी; हमें यीशु जैसा बनना होगा। रोमियों 8:29 पर विचार करें: "क्योंकि जिन्हें परमेश्वर ने पहले से जान लिया, उन्हें उसने पहले से ही यह भी ठहराया कि वे उसके पुत्र की छवि के अनुरूप बनें, ताकि वह बहुत से भाइयों और बहनों के बीच पहलौठा ठहरे" [(समकालीन अंग्रेजी संस्करण) "परमेश्वर अपने लोगों को पहले से जानता था, और उसने उन्हें अपने पुत्र जैसा बनने के लिए चुना, ताकि उसका पुत्र बहुत से विश्वासियों के बीच पहलौठा ठहरे"]। जिस उद्देश्य के लिए परमेश्वर ने हमें पहले से ठहराया, वह यह है कि हम मसीह की छवि के अनुरूप बनें—जो पिता का "पहलौठा पुत्र" है—ताकि हम भी "छोटे मसीह" बन सकें। (4) नेकी के सेवक का अंतिम परिणाम अनंत जीवन है (रोमियों 6:22)।

रोमियों 6:22 पर ध्यान दें: "पर अब जब तुम पाप से आज़ाद हो गए हो और परमेश्वर के सेवक बन गए हो, तो तुम्हें जो लाभ मिलता है, वह पवित्रता की ओर ले जाता है, और उसका परिणाम अनंत जीवन है।" हम अब पाप के गुलाम नहीं रहे; बल्कि, "आज्ञा मानने वाले सेवक" (पद 16) और "नेकी के सेवक" (पद 18) बनकर—इस तरह पाप से आज़ाद होकर (पद 22) और पवित्रता की ओर ले जाने वाला फल लाकर—हमारा अंतिम परिणाम अनंत जीवन है (पद 22)।

परमेश्वर का उपहार

[रोमियों 6:23]

कृपया बाइबल में रोमियों 6:23 देखें: "क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है" [(समकालीन कोरियाई बाइबल: "पाप की कीमत मृत्यु है, परन्तु जो उपहार परमेश्वर मुफ़्त में देता है, वह हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन है")]। यहाँ, हम "परमेश्वर के उपहार"—यानी, "वह उपहार जो परमेश्वर मुफ़्त में देता है"—पर दो भागों में बाँटकर विचार करेंगे:

पहला, पुनर्जन्म।

"पुनर्जन्म" क्या है? यह अनन्त जीवन का आरम्भ (या शुरुआत) है। इसका तात्पर्य आत्मा के फिर से जन्म लेने (पुनर्जीवित होने) से है। कृपया बाइबल में यूहन्ना 3:3 देखें: "यीशु ने उत्तर देकर उससे कहा, 'मैं तुझसे सच सच कहता हूँ, यदि कोई नए सिरे से न जन्मे, तो वह परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता'" [(समकालीन कोरियाई बाइबल: "तब यीशु ने नीकुदेमुस को उत्तर दिया, 'मैं तुमसे स्पष्ट रूप से कहता हूँ: जब तक कोई नए सिरे से न जन्मे, वह परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता'")]। पुनर्जन्म का अर्थ एक नई सृष्टि बन जाना है। कृपया बाइबल में 2 कुरिन्थियों 5:17 देखें: "इसलिए यदि कोई मसीह में है, तो वह एक नई सृष्टि है; पुरानी बातें बीत गईं; देखो, सब कुछ नया हो गया।" इसका तात्पर्य उस आत्मा से है—जो अपराधों और पापों में मृत थी—जिसे फिर से जीवित किया गया है। कृपया बाइबल में इफिसियों 2:1 देखें: "और उसने तुम्हें भी जीवित किया, जो अपराधों और पापों में मृत थे।" पुनर्जन्म का अनुभव करने से पहले—हमारे नए सिरे से जन्म लेने

से पहले, हमारे नई सृष्टि बनने से पहले—हम ऐसे लोग थे जो अपराधों और पापों में मृत थे (इफिसियों 2:1)। हम ऐसे लोग थे जिनकी आत्माएँ मृत थीं (आत्मिक रूप से मृत), और हम ऐसे लोग थे जिनका अंत शारीरिक मृत्यु होना निश्चित था। इसका कारण यह है कि आदम—पहला मनुष्य—एक "जीवित आत्मा" के रूप में अनन्त काल तक जीवित रह सकता था (उत्पत्ति 2:7), यदि उसने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया होता और उस वाचा के अनुसार, जो परमेश्वर ने स्थापित की थी, भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खाने से स्वयं को रोका होता। हालाँकि, परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करके और वर्जित फल (Gen. 3:6) खाकर, उसने उस वाचा को तोड़ दिया जो परमेश्वर ने उसके साथ की थी। इसके परिणामस्वरूप, केवल आदम की आत्मा ही नहीं मरी (एक आत्मिक मृत्यु); बल्कि, उसके द्वारा पाप संसार में प्रवेश कर गया, और पाप के द्वारा मृत्यु आ गई। इस प्रकार, क्योंकि सभी लोगों ने पाप किया है, इसलिए मृत्यु सभी लोगों तक फैल गई है (Rom. 5:12)। दूसरे शब्दों में, आदम के अपराध के कारण, न केवल स्वयं आदम, बल्कि हम सभी जो उससे संबंधित हैं, मृत आत्माओं वाले लोग बन गए; इसके अलावा, हम शारीरिक मृत्यु का सामना करने और अंततः अनंत मृत्यु ("दूसरी मृत्यु") तक पहुँचने के लिए नियत हो गए। पाप की मजदूरी मृत्यु है (Rom. 6:23)—इसका ठीक यही अर्थ है।

तो, हमारा पुनर्जन्म कब हुआ? हमारी मृत आत्माएँ कब फिर से जीवित हुईं? ठीक उसी समय, जब हम अपने अपराधों और पापों में मृत थे (Eph. 2:1)। उस समय, हम उनमें चलते थे, इस संसार की रीति का अनुसरण करते हुए और वायु के राज्य के शासक की आज्ञा मानते हुए (v. 2)। हम संसार के बुरे तरीकों का अनुसरण करते हुए और शैतान के अधीन रहते हुए जीते थे, जिसका स्वर्ग के नीचे के क्षेत्र पर प्रभुत्व है (v. 2; *Contemporary Korean Version*)। पहले, हम सभी उनके बीच रहते थे, अपनी पापमय प्रकृति की लालसाओं को पूरा करते हुए और शरीर तथा मन की इच्छाओं को पूरा करते हुए; बाकी मानवजाति की तरह, हम स्वभाव से ही क्रोध के पात्र थे (v. 3)। ठीक उसी क्षण (v. 2) हमारा पुनर्जन्म हुआ—हम फिर से जन्मे—और हमारी मृत आत्माओं को फिर से जीवित किया गया, जिससे हम नई सृष्टि बन गए।

हमारा पुनर्जन्म कैसे हुआ? हमारी मृत आत्माएँ फिर से जीवित कैसे हुईं? परमेश्वर, जो दया में धनी है, उस महान प्रेम के कारण जिससे उसने हमसे प्रेम किया—तब भी जब हम अपने अपराधों में मृत थे—उसने हमें मसीह के साथ जीवित किया (vv. 4–5)। तो फिर, उसने हमें कैसे जीवित किया? उसने हमें *हमारे प्रभु मसीह

यीशु में* जिलाया (Rom. 6:23)। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर ने हमें—जो अपने अपराधों और पापों के कारण आत्मिक रूप से मृत थे—यीशु मसीह के साथ एक कर दिया, जिससे हम उनके साथ ही मरे और दफनाए गए (पद 3–4, 8)। इसके अलावा, जिस तरह उन्होंने मसीह को मृतकों में से जिलाया (पद 4), उसी तरह उन्होंने हमें भी उनके साथ जीवित रहने की सामर्थ्य दी (पद 8), जिससे हम जीवन की नवीनता में चल सकें (पद 4)। यीशु मसीह के साथ इस रहस्यमय मिलन के द्वारा, हमारा "पुराना स्वरूप" (वह आत्मिक रूप से मृत व्यक्ति जो हम पुनर्जन्म से पहले थे) यीशु के साथ क्रूस पर मर गया; परिणामस्वरूप, हम एक "नया स्वरूप" बन गए हैं—एक पुनर्जीवित, नया जन्म पाया हुआ, और नई सृष्टि—जो एक नए जीवन में चलने के लिए सामर्थ्यवान है।

इसलिए, आज के पाठ के पहले भाग—रोमियों 6:23—में पाया जाने वाला यह कथन, जो घोषित करता है कि "पाप की मजदूरी तो मृत्यु है," अब हम विश्वासियों पर लागू नहीं होता, जिन्होंने नया जन्म पाया है। दूसरे शब्दों में, अब यह सच नहीं है कि हमें पाप के दंड के रूप में मृत्यु का सामना करना पड़ता है। मसीही होने के नाते, जो अब धार्मिकता के सेवक बन गए हैं, हम पाप के भुगतान के रूप में शारीरिक मृत्यु नहीं भोगते। इसका कारण यह है कि, क्योंकि परमेश्वर ने हमें धर्मी ठहराया है, इसलिए अब हममें से जो यीशु मसीह में हैं, उन पर कोई भी दंड की आज्ञा नहीं है (8:1)। हम विश्वासियों के लिए, जो यीशु मसीह में विश्वास करते हैं, यीशु मसीह में जीवन के आत्मा के नियम ने हमें पाप और मृत्यु के नियम से पहले ही स्वतंत्र कर दिया है (पद 2)। यद्यपि हम मूल रूप से पाप के दास थे (6:17), अब जब हम पाप से स्वतंत्र हो गए हैं (पद 22; तुलना करें पद 18), तो हमें पाप के दंड के रूप में मृत्यु का सामना नहीं करना पड़ता (पद 23)। बल्कि, हम वे लोग हैं जो मसीह *में* मरे हैं—वह जो पुनरुत्थान और जीवन है (यूहन्ना 11:25) (1 थिस्स. 4:16)। यहाँ, पवित्रशास्त्र उन लोगों को, जो मसीह *में* मरे हैं, "सोए हुए लोग" कहकर संबोधित करता है (पद 13)। हमारी शारीरिक मृत्यु पाप का दंड नहीं है, बल्कि यह उस द्वार से होकर गुज़रने का एक कार्य है जो स्वर्ग की ओर जाता है। हम अभी स्वर्ग में इसलिए प्रवेश नहीं कर सकते, क्योंकि हमारे पास अभी भी यह भौतिक शरीर है। दूसरे शब्दों में, क्योंकि हमने अभी तक शारीरिक मृत्यु का सामना नहीं किया है, इसलिए हम इस समय स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकते; हालाँकि, एक बार जब हम शारीरिक मृत्यु का सामना कर लेंगे—भले ही हमारे शरीर धूल में मिल जाएँगे—हमारी आत्माएँ स्वर्ग में प्रवेश कर जाएँगी। इसलिए, हम जो यीशु में विश्वास करते हैं, भले ही

हम मर जाएँ, हम जीवित रहेंगे; और जो कोई जीवित है और यीशु मसीह में विश्वास करता है, वह कभी नहीं मरेगा (यूहन्ना 11:24–25)। परिणामस्वरूप, यह जानते हुए कि यदि हम अभी भी मर जाएँ, तो भी हमारी आत्माएँ स्वर्ग में प्रवेश करेंगी, हम परमेश्वर की स्तुति और धन्यवाद किए बिना नहीं रह सकते। इसका एक उदाहरण उन दो अपराधियों में से एक है, जिन्हें यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया था। उसने यीशु से कहा, "हे यीशु, जब तू अपने राज्य में आए, तो मुझे याद करना" (लूका 23:42)। इसके उत्तर में, यीशु ने उस अपराधी से कहा, "मैं तुझसे सच कहता हूँ, आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा" (पद 43)। आम तौर पर, उस युग में क्रूस पर चढ़ाए जाने वाले कैदियों को मरने में दो से तीन दिन लगते थे। फिर भी, यीशु ने इस अपराधी से कहा, "आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।" यह वादा—कि वह "आज ही" यीशु के साथ स्वर्गलोक में होगा—निम्नलिखित बात को दर्शाता है: चूँकि यीशु को तीसरे पहर (लगभग सुबह 9:00 बजे) क्रूस पर चढ़ाया गया था (मरकुस 15:25) और नौवें पहर (लगभग दोपहर 3:00 बजे) उनकी मृत्यु हो गई थी (15:34, 37), इसलिए मृत्यु से पहले वे लगभग छह घंटे तक क्रूस पर लटके रहे। उस डाकू के लिए—एक ऐसा पापी जो, हर तरह से, अनंत मृत्यु का हकदार था—खुद को यीशु के साथ स्वर्गलोक में पाना, परमेश्वर के अनुग्रह और प्रेम का वास्तव में एक अत्यंत विशाल कार्य है। इसके अलावा, यह विचार करते हुए कि अन्यथा उसे क्रूस पर दो या तीन दिनों तक शारीरिक पीड़ा सहने के लिए विवश होना पड़ता, फिर भी उसे केवल लगभग छह घंटे की पीड़ा सहने के बाद बचा लिया गया; क्या यह भी परमेश्वर के अनुग्रह और प्रेम की महानता का प्रमाण नहीं है?

दूसरा: अनंत जीवन।

तो फिर, "अनंत जीवन" क्या है? अनंत जीवन, पुनर्जन्म का पर्याय नहीं है। बल्कि, इसे पुनर्जन्म की परिपूर्णता के रूप में वर्णित किया जा सकता है। अनंत जीवन उस अवस्था को संदर्भित करता है—प्रभु के द्वितीय आगमन के समय—जिसमें किसी व्यक्ति का भौतिक शरीर या तो रूपांतरित हो जाता है (यदि वह उस समय जीवित है) या पुनर्जीवित हो जाता है (यदि उसकी मृत्यु हो चुकी है); तत्पश्चात, शरीर का आत्मा के साथ पुनर्मिलन होता है, जिससे व्यक्ति स्वर्ग—अर्थात् "नए स्वर्ग और नई पृथ्वी"—में प्रवेश कर पाता है और ईश्वर की उपस्थिति में अनंत काल तक निवास करता है।

आइए शरीर के पुनरुत्थान पर विचार करें। प्रकाशितवाक्य 20:13 देखें: "समुद्र ने उन मरे हुओं को जो उसमें थे, लौटा दिया; और मृत्यु और अधोलोक ने उन मरे हुओं को जो उनमें थे, लौटा दिया; और हर एक का न्याय उसके कामों के अनुसार किया गया" [(मॉडर्न पीपल्स बाइबल) "समुद्र, मृत्यु और नरक ने अपने अंदर के मरे हुए लोगों को उगल दिया, और उनमें से हर एक का न्याय उनके कर्मों के अनुसार किया गया"]। मरे हुए लोग लौटा दिए जाएँगे। दूसरे शब्दों में, मरे हुए लोग फिर से जीवित हो जाएँगे। 1 थिस्सलोनिकियों 4:16 देखें: "क्योंकि प्रभु स्वयं एक ऊँचे शब्द के साथ, प्रधान स्वर्गदूत की वाणी के साथ, और परमेश्वर की तुरही की आवाज़ के साथ स्वर्ग से उतरेगा; और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे।" जो संत मसीह में मरे हैं, वे सबसे पहले पुनर्जीवित होंगे। 1 कुरिन्थियों 15:52–53 देखें: "क्योंकि तुरही बजेगी, और मरे हुए अविनाशी होकर जी उठेंगे, और हम बदल जाएँगे। क्योंकि इस नाशमान शरीर को अविनाशी शरीर धारण करना है, और इस मरणशील शरीर को अमरता धारण करनी है।" जब यीशु लौटेंगे (दूसरे आगमन पर), तो मरे हुए लोग अविनाशी शरीरों के साथ 'पुनर्जीवित' (फिर से जीवित) किए जाएँगे, और जो संत उस समय जीवित होंगे, वे "बदल जाएँगे।" फिलिप्पियों 3:21 देखें: "वह अपनी उस शक्ति के द्वारा, जिससे वह सब कुछ अपने अधीन कर सकता है, हमारे इस दीन-हीन शरीर को बदलकर अपने महिमामय शरीर के समान बना देगा" [(मॉडर्न पीपल्स बाइबल) "जब वह आएगा, तो अपनी उस शक्ति के द्वारा, जिससे वह सब कुछ अपने अधीन कर सकता है, वह हमारे इस दीन-हीन शरीर को बदलकर अपने महिमामय शरीर के समान बना देगा"]। प्रभु हमारे दीन-हीन शरीरों (हमारे विनम्र शरीरों) को बदलकर अपने महिमामय शरीर के समान बना देगा।

आइए स्वर्ग पर चिंतन करें। प्रकाशितवाक्य 22:4–5 देखें: "वे उसका मुख देखेंगे, और उसका नाम उनके माथों पर लिखा होगा। वहाँ फिर कभी रात न होगी। उन्हें दीपक के प्रकाश या सूर्य के प्रकाश की आवश्यकता न होगी, क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें प्रकाश देगा। और वे युगानुयुग राज्य करेंगे।" स्वर्ग में, मृतकों के लोक में मौजूद कोई भी चीज़ उपस्थित नहीं होती (इसके विपरीत, जो चीज़ें मृतकों के लोक में अनुपस्थित होती हैं, वे स्वर्ग में पाई जाती हैं)। स्वर्ग में, हम प्रभु का मुख देखेंगे। उस समय, हम उन्हें आमने-सामने देखेंगे (1 कुरिन्थियों 13:12)। जब यीशु प्रकट होंगे, तो हम उनके जैसे होंगे और उन्हें वैसे ही देखेंगे जैसे वे वास्तव में हैं (1 यूहन्ना 3:2)। "यदि उद्धारकर्ता का मात्र विचार ही इतनी खुशी लाता है, तो जब हम उनका मुख देखेंगे,

तब वह खुशी कितनी अधिक होगी?" (न्यू हिमनल 85, "जस्ट टू थिंक ऑफ़ द सेवियर," पद 1)। स्वर्ग में, हम प्रभु के साथ सदा-सर्वदा राज करेंगे (प्रकाशितवाक्य 22:5)। यह कैसे संभव हुआ है? यह हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनंत जीवन के माध्यम से ही संभव हुआ है—जो परमेश्वर की ओर से एक निःशुल्क उपहार है (रोमियों 6:23; तुलना करें यूहन्ना 3:16)। "हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनंत जीवन" के संदर्भ में, "प्रभु में" वाक्यांश 164 बार आता है; यहाँ, हम केवल तीन उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं: "...वे जो यीशु में सो गए हैं..." (मृतक) (1 थिस्सलोनिकियों 4:14); "...अपने आप को पाप के लिए मृत, परन्तु परमेश्वर के लिए यीशु मसीह में जीवित समझो" (पुनर्जन्म पाए हुए लोग) (रोमियों 6:11); और "...हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनंत जीवन" (अनंत जीवन की पूर्णता—स्वर्ग में प्रभु के साथ राज करना) (रोमियों 6:23)।

बाइबल: 1 कुरिन्थियों। 1 कुरिन्थियों 15:57–58 पर दृष्टि डालें: "परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो! वह हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जय देता है। इसलिए, मेरे प्यारे भाइयों और बहनों, दृढ़ रहो। कोई भी चीज़ तुम्हें डिगा न सके। सदैव प्रभु के कार्य में पूरी तरह से समर्पित रहो, क्योंकि तुम जानते हो कि प्रभु में तुम्हारा परिश्रम व्यर्थ नहीं है।" प्रकाशितवाक्य 22:12 पर भी दृष्टि डालें: "देखो, मैं शीघ्र आनेवाला हूँ! मेरा प्रतिफल मेरे साथ है, और मैं प्रत्येक व्यक्ति को उसके कार्यों के अनुसार दूँगा।" हमें दृढ़ रहना चाहिए, अडिग रहना चाहिए, और हमेशा प्रभु के कार्य के लिए पूरी तरह से समर्पित रहना चाहिए, इस आशा के साथ कि जब वे लौटेंगे, तो हमें वह प्रतिफल मिलेगा जो वे हमें प्रदान करेंगे।

जब मैं परमेश्वर के उपहारों पर—विशेष रूप से, उन उपहारों पर जो वे हमें मुक्त रूप से प्रदान करते हैं—मनन कर रहा था, और पुनर्जन्म तथा अनंत जीवन के बीच अंतर कर रहा था, तो मैंने इस बात पर विचार करना शुरू किया कि हम मसीहियों को इस बीच के समय में कैसे जीना चाहिए: वह अंतराल जो पुनर्जन्म (अनंत जीवन की शुरुआत, या आरंभ) और स्वयं अनंत जीवन (जिसे उस पुनर्जन्म की पूर्णता के रूप में वर्णित किया जा सकता है) के बीच स्थित है। दूसरे शब्दों में, प्रश्न यह है: हम—मसीही लोग जिनका *पहले ही* (अतीत में) पुनर्जन्म हो चुका है, जो दोबारा जन्म ले चुके हैं, और जो नई सृष्टि बन चुके हैं—इस *वर्तमान* (वह समय जो "पहले ही" और "अभी तक नहीं" के बीच है) को कैसे जिएँ, जबकि हम यीशु के दूसरे आगमन

पर अनंत जीवन की *भविष्य की* पूर्णता की प्रतीक्षा कर रहे हैं? मुझे इस प्रश्न का उत्तर *न्यू हिमनल* (New Hymnal) के भजन 436 के तीसरे पद में मिला—जिसका शीर्षक है "अब मैंने प्रभु का नया जीवन प्राप्त कर लिया है"—जो इस प्रकार है: "जिसने नया जीवन प्राप्त कर लिया है, वह अनंत जीवन का आनंद लेता है; वह हृदय जो प्रभु का स्वागत करता है, वह स्वयं एक नया स्वर्ग बन जाता है।" सीधे शब्दों में कहें तो, इसका अर्थ यह है कि जैसे-जैसे हम इस सांसारिक जीवन को जीते हैं—जो हमारे पुनर्जन्म के "पहले ही" और हमारे अनंत जीवन के "अभी तक नहीं" के बीच स्थित है—हमें उन लोगों के अनुरूप जीवन जीना चाहिए जिन्होंने यह नया जीवन प्राप्त किया है, और यहाँ तथा अभी ही अनंत जीवन की वास्तविकता का सक्रिय रूप से आनंद लेना चाहिए। इसके अलावा, अनंत जीवन का आनंद लेने वाला यह जीवन, सार रूप में, स्वर्ग में बिताया जाने वाला जीवन ही है; वह हृदय जो इस अनंत जीवन का आनंद लेता है, वह स्वयं एक स्वर्ग है (देखें लूका 17:21); और वह [जीवन] जो इस अनंत जीवन का आनंद लेता है... समुदाय—विशेष रूप से, एक परिवार और एक कलीसिया जो प्रभु पर केंद्रित है—वही स्वर्ग है। तो फिर, हमें कैसे जीना चाहिए ताकि हम अनंत जीवन का आनंद ले सकें, जब हम अपने पुनर्जन्म—जो अनंत जीवन की शुरुआत का *'पहले ही'* वाला पहलू है—और उसकी अंतिम पूर्णता—जो उसके समापन का *'अभी तक नहीं'* वाला पहलू है—के बीच के अंतराल को तय कर रहे हैं? हमें एकमात्र सच्चे परमेश्वर और यीशु मसीह के ज्ञान में बढ़ना चाहिए [(यूहन्ना 17:3): "और अनन्त जीवन यह है कि वे तुझे, एकमात्र सच्चे परमेश्वर को, और यीशु मसीह को, जिसे तूने भेजा है, जानें।"]। यहाँ, परमेश्वर पिता और पुत्र यीशु के ज्ञान में हमारे बढ़ने का अर्थ निम्नलिखित है: हमें दिए गए पवित्र आत्मा के द्वारा (1 यूहन्ना 3:24), हम परमेश्वर पिता के साथ *सहभागिता* (मेल-जोल) का आनंद लेते हैं—जिन्होंने हम पर अपना असीम प्रेम बरसाया और हमें अपने बच्चों के रूप में अपना लिया (3:1–2)—और पुत्र यीशु के साथ भी—जो जीवन का वचन है, जो आदि से विद्यमान था और स्वयं ही अनन्त जीवन है, और जिसने हमारे पापों के प्रायश्चित बलिदान के रूप में स्वेच्छा से क्रूस पर अपने प्राण दे दिए (2:2; 3:16)। इस सहभागिता के माध्यम से (1:1–3), हम प्रभु की आज्ञाओं का पालन करते हुए जीते हैं (3:11, 23, 24) और पवित्र आत्मा का फल उत्पन्न करते हैं (गलातियों 5:22–23)। प्रभु की ये आज्ञाएँ एक *दोहरी* आज्ञा का रूप लेती हैं: "तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से, और अपनी सारी आत्मा से, और अपनी सारी बुद्धि से प्रेम रखना" (परमेश्वर के साथ हमारी ऊर्ध्वगामी सहभागिता से संबंधित आज्ञा) और "तू अपने पड़ोसी से

अपने समान प्रेम रखना" (हमारे भाइयों और बहनों के साथ हमारी क्षैतिज सहभागिता से संबंधित आज्ञा) (मत्ती 22:37, 39)। ये आज्ञाएँ, वास्तव में, स्वर्ग की आज्ञाएँ हैं। प्रभु की इस दोहरी आज्ञा (स्वर्ग की आज्ञा) का पालन करते हुए जीना ही प्रभु को जानना है, प्रभु *में* जीना है, और प्रभु के प्रेम में *बने रहना* है; यही स्वर्गीय जीवन का मूल सार है—एक ऐसा जीवन जो प्रेम और आनंद से लबालब भरा हुआ है (यूहन्ना 15:9–12)। ठीक यही अर्थ है उस अनन्त जीवन का अनुभव करने का—इस वर्तमान संसार में आंशिक रूप से, फिर भी वास्तविक रूप में—जिसका पूर्ण आनंद हम आने वाले संसार (स्वर्ग) में लेंगे। यही तो जीवन है।

वे लोग जो व्यवस्था के लिए मर चुके हैं

[रोमियों 7:1–4]

कृपया रोमियों 7:1–4 देखें: "या क्या तुम नहीं जानते, भाइयों (क्योंकि मैं उनसे बात कर रहा हूँ जो व्यवस्था को जानते हैं), कि व्यवस्था का अधिकार मनुष्य पर तब तक रहता है जब तक वह जीवित है? क्योंकि जिस स्त्री का पति है, वह व्यवस्था के अनुसार अपने पति से तब तक बंधी रहती है जब तक वह जीवित है; परन्तु यदि पति मर जाता है, तो वह अपने पति की व्यवस्था से मुक्त हो जाती है। इसलिए, यदि उसका पति जीवित रहते हुए वह किसी दूसरे पुरुष से जुड़ जाती है, तो वह व्यभिचारिणी कहलाएगी; परन्तु यदि उसका पति मर जाता है, तो वह उस व्यवस्था से स्वतंत्र हो जाती है, ताकि यदि वह किसी दूसरे पुरुष से जुड़ भी जाए, तो भी वह व्यभिचारिणी न कहलाए। इसलिए, मेरे भाइयों, तुम भी मसीह के शरीर के द्वारा व्यवस्था के लिए मर चुके हो, ताकि तुम किसी दूसरे के साथ विवाह में जुड़ सको—उसके साथ जो मरे हुओं में से जिलाया गया, ताकि हम परमेश्वर के लिए फल ला सकें।" रोमियों अध्याय 7 "व्यवस्था का अध्याय" है। रोमियों 7:1–3 में, "व्यवस्था" शब्द पाँच बार आया है, और पद 4 में, "व्यवस्था" शब्द एक बार आया है। यहाँ, "व्यवस्था" शब्द (पद 1–3 में) उस "व्यवस्था" (पार्क यून-सन) को संदर्भित करता है। जब प्रेरित पौलुस ने रोम की कलीसिया को अपना पत्र लिखा, तो उसने उन्हें "भाइयों" (पद 1) कहकर संबोधित किया; रोम की कलीसिया के भीतर, ये "भाई" और "बहनें" ऐसे संत थे जो व्यवस्था से परिचित थे—जिसमें दस आज्ञाएँ भी शामिल थीं। इसलिए, जब वह उन्हें अपना पत्र लिख रहा था, तो प्रेरित पौलुस ने कहा, "भाइयों, मैं उनसे बात कर रहा हूँ जो व्यवस्था को जानते हैं..." (पद 1)। इसके बाद, पद 2 और 3 में, उसने व्यवस्था पर चर्चा करने के लिए पति और पत्नी के बीच के संबंध को नियंत्रित करने वाली व्यवस्था का एक दृष्टांत के रूप में उपयोग किया। पद 2 में, प्रेरित पौलुस ने समझाया कि व्यवस्था केवल तब तक लागू होती है जब तक पति जीवित है, और एक बार जब वह

मर जाता है, तो व्यवस्था का प्रभाव समाप्त हो जाता है। जब कोई जोड़ा विवाह बंधन में बंधता है, तो वे प्रतिज्ञाएँ करते हैं। वह प्रतिज्ञा एक वादा है कि पति और पत्नी मृत्यु के अलावा किसी अन्य कारण से अलग नहीं होंगे। पद 3 में, पॉल ने कहा कि यदि कोई स्त्री अपने पति के जीवित रहते हुए किसी दूसरे पुरुष से विवाह कर लेती है, तो उसे व्यभिचारिणी माना जाता है [अर्थात् वह व्यभिचार का पाप करती है (मॉडर्न मैन्स बाइबल)] (पद 3)। इसके बाद, पद 4 में, पॉल ने रोम की कलीसिया के विश्वासियों को संबोधित करते हुए कहा, "तुम भी मसीह के शरीर के द्वारा व्यवस्था के लिए मृत हो गए..." यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण पद है। इस अंश के आधार पर, मैंने "वे लोग जो व्यवस्था के लिए मृत हो गए" शीर्षक चुना है।

कृपया रोमियों 7:4 पर फिर से दृष्टि डालें: "इसलिए, मेरे भाइयों, तुम भी मसीह के शरीर के द्वारा व्यवस्था के लिए मृत हो गए, ताकि तुम किसी दूसरे के हो सको—उसका जो मृतकों में से जिलाया गया है—ताकि हम परमेश्वर के लिए फल ला सकें" [(मॉडर्न मैन्स बाइबल) "भाइयों, इसलिए, मसीह के द्वारा जिसे क्रूस पर चढ़ाया गया था, तुम भी व्यवस्था के लिए मर चुके हो। ऐसा इसलिए है ताकि हम किसी दूसरे के हो सकें—विशेष रूप से, पुनरुत्थित मसीह के—ताकि हम परमेश्वर के लिए फल ला सकें"]। वे कौन लोग हैं जो व्यवस्था के लिए मृत हो गए? वे ठीक वही "भाई" हैं (पद 1, 4)। दूसरे शब्दों में, यह रोम की कलीसिया के विश्वासियों, और साथ ही हम—आज के विश्वासियों—को संदर्भित करता है। पहले (इससे पहले कि हम यीशु पर विश्वास करते), हम सब व्यवस्था के अधीन थे (और पाप के अधीन थे)। कृपया रोमियों 3:19 पर दृष्टि डालें: "अब हम जानते हैं कि व्यवस्था जो कुछ कहती है, वह उन लोगों से कहती है जो व्यवस्था के अधीन हैं, ताकि हर मुँह बंद हो जाए, और सारा संसार परमेश्वर के प्रति जवाबदेह ठहराया जाए।" हम सब ऐसे लोग थे जो व्यवस्था के अधीन थे (और पाप के अधीन थे), और हम परमेश्वर के न्याय के अधीन भी थे। इसका कारण यह है कि हम सबने व्यवस्था को तोड़ा था। कृपया रोमियों 3:23 पर दृष्टि डालें: "क्योंकि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से वंचित हैं।" पहले—अर्थात्, इससे पहले कि हम यीशु पर विश्वास करते—क्योंकि हम सब व्यवस्था के अधीन थे (पाप के अधीन), हम अपने स्वयं के प्रयासों (अच्छे कामों) के द्वारा परमेश्वर के सामने धर्मी नहीं ठहराए जा सकते थे। कृपया रोमियों 3:20 देखें: "इसलिए व्यवस्था के कामों से कोई भी परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी नहीं ठहराया जाएगा; बल्कि, व्यवस्था के द्वारा हमें अपने पाप का ज्ञान होता है।"

तो फिर, *कैसे* हम व्यवस्था के संबंध में मृत्यु को प्राप्त हुए? यह ठीक मसीह के शरीर के द्वारा हुआ (7:4)। कृपया गलतियों 4:4–5 देखें: "परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ, ताकि जो लोग व्यवस्था के अधीन थे, उन्हें मोल लेकर छुड़ा ले, और हम लेपालक पुत्र होने का अधिकार पाएं।" जब परमेश्वर द्वारा ठहराया गया समय पूरी तरह आ गया, तो उसने अपने एकलौते पुत्र, यीशु मसीह को इस पृथ्वी पर भेजा; उसने पवित्र आत्मा के द्वारा उसे कुंवारी मरियम से जन्म दिलाया, और उसे व्यवस्था के अधीन उत्पन्न करवाया। इसका उद्देश्य हमें—उन लोगों को जो व्यवस्था के अधीन थे—बचाना था। कृपया गलतियों 2:19 देखें: "क्योंकि मैं तो व्यवस्था के द्वारा व्यवस्था के लिए मर गया, ताकि परमेश्वर के लिए जीवित रह सकूं।" यह प्रेरित पौलुस की स्वीकारोक्ति है; यद्यपि उसने व्यवस्था का कड़ाई से पालन करके और उसे मानकर धर्मी ठहरने की कोशिश की थी, और उसने ऐसा करने के लिए चाहे कितनी भी कड़ी मेहनत क्यों न की हो, वह सब व्यर्थ रहा। केवल दमिश्क के मार्ग पर यीशु मसीह से भेंट होने के द्वारा—जिससे वह व्यवस्था के लिए मर गया और परमेश्वर के लिए जीवित हो गया—उसे उद्धार प्राप्त हुआ। परमेश्वर ने यीशु मसीह को इसलिए भेजा था ताकि वह शाऊल (पौलुस)—जो व्यवस्था के अधीन था—और साथ ही हमें भी बचा सके। कृपया बाइबल में इफिसियों 2:4–5 देखें: "परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है, अपने उस बड़े प्रेम के कारण, जिससे उसने हमसे प्रेम किया, जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे, तो मसीह के साथ हमें भी जीवित किया—अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है।" परमेश्वर ने हमें जीवित किया—हमें, जो अपराधों और पापों में मरे हुए थे (पद 1)। परमेश्वर ने हमें फिर से जन्म दिया (पुनर्जन्म)। हम, जो स्वभाव से क्रोध की संतान थे (पद 3), परमेश्वर के हमारे प्रति उस बड़े प्रेम के कारण—वह जो दया का धनी है (पद 4)—मसीह के साथ जीवित किए गए, तब भी जब हम अपराधों में मरे हुए थे (पद 5); उन्होंने हमें भी उनके साथ उठाया (जिसका अर्थ है कि हम मसीह के साथ पुनर्जीवित हुए) और हमें मसीह यीशु में स्वर्गीय लोकों में उनके साथ बिठाया (पद 6)। कृपया बाइबल में प्रकाशितवाक्य 3:21 देखें: "जो जय पाता है, मैं उसे अपने साथ अपने सिंहासन पर बिठाऊँगा, जैसा कि मैंने जय पाई और अपने पिता के साथ उनके सिंहासन पर बैठ गया" [(समकालीन अंग्रेजी संस्करण) "जो विश्वास में विजयी है, मैं उसे अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठने का विशेषाधिकार दूँगा, जैसा कि मैं विजयी हुआ और अपने पिता के साथ

उनके सिंहासन पर बैठ गया"]। उन्होंने वादा किया कि स्वर्गीय राज्य में, वह हमें पुत्र के सिंहासन पर मसीह के साथ बैठने का विशेषाधिकार प्रदान करेंगे।

हमें छुड़ाने के लिए—उन लोगों को जो व्यवस्था के अधीन थे (पद 5)—और हमें परमेश्वर की संतान बनने में सक्षम बनाने के लिए (पद 5; समकालीन अंग्रेजी संस्करण), परमेश्वर ने धर्मी यीशु मसीह (1 यूहन्ना 2:1) को हमारे पापों के प्रायश्चित बलिदान के रूप में नियुक्त किया (पद 2)। यीशु मसीह, जिनका जन्म व्यवस्था के अधीन हुआ था (गलातियों 4:4), उन्होंने व्यवस्था को पूरी तरह से पूरा किया और व्यवस्था के श्राप को पूरी तरह से सहा; इसके अलावा, हमारी खातिर क्रूस पर अपने प्राण देकर (1 यूहन्ना 3:16), उन्होंने हमारा परमेश्वर के साथ मेल कराया। इसलिए, परमेश्वर पिता द्वारा प्रदान किए गए महान प्रेम के माध्यम से, हम परमेश्वर की संतान बन गए हैं (पद 1–2)। परिणामस्वरूप, अब हम परमेश्वर को पुकारते हुए कह सकते हैं, "अब्बा, पिता" (रोमियों 8:15; गलातियों 4:6; तुलना करें: मरकुस 14:36)। हम नई सृष्टि बन गए हैं [(2 कुरिन्थियों 5:17): "इसलिए, यदि कोई मसीह में है, तो वह एक नई सृष्टि है; पुरानी बातें बीत गईं, नई बातें आ गईं!"]। हम, जो पहले व्यवस्था के अधीन थे, अब यीशु मसीह में नई सृष्टि बन गए हैं।

मसीह के शरीर के द्वारा, व्यवस्था के संबंध में हमें जिस उद्देश्य के लिए मार डाला गया था, वह उद्देश्य क्या है? वह उद्देश्य यह है कि हम परमेश्वर के लिए फल लाएँ। रोमियों 7:4 को देखिए: "...ताकि हम किसी दूसरे के हो जाएँ—अर्थात् उसके, जो मरे हुओं में से जिलाया गया—ताकि हम परमेश्वर के लिए फल लाएँ" [(समकालीन अंग्रेज़ी संस्करण) "...यह इसलिए है ताकि हम किसी दूसरे के लोग बन जाएँ—अर्थात्, पुनर्जीवित मसीह के—और परमेश्वर के लिए फल लाएँ"]। यहाँ, "फल" का तात्पर्य उस अनंत जीवन से है जिसका उल्लेख रोमियों 6:22 में किया गया है। रोमियों 6:22 को देखिए: "पर अब जब तुम पाप से स्वतंत्र होकर परमेश्वर के दास बन गए हो, तो इसका जो लाभ तुम्हें मिलता है, वह पवित्रता की ओर ले जाता है, और इसका परिणाम अनंत जीवन है।" यह अनंत जीवन, पुत्र के सिंहासन पर मसीह के साथ बैठने का फल नहीं है। इसका कारण यह है कि अनंत जीवन का यह फल केवल परमेश्वर के अनुग्रह से ही प्राप्त होता है। रोमियों 6:23 को देखिए: "...परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनंत जीवन है" [(समकालीन अंग्रेज़ी

संस्करण) "...परन्तु परमेश्वर का दिया हुआ मुफ़्त वरदान हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनंत जीवन है"]। संक्षेप में, रोमियों 7:4 में जिस "फल" का उल्लेख किया गया है, वह हमारे निरंतर पवित्र होते जाने की प्रक्रिया—अर्थात् यीशु के जैसा अधिकाधिक बनते जाने की प्रक्रिया—को दर्शाता है। जिस फल को हमें लाना है, वह ठीक यही है: अधिकाधिक पवित्र होते जाना और यीशु की समानता में निरंतर बढ़ते जाना, और इस प्रकार "छोटे मसीह" बन जाना। फिलिप्पियों 2:12 को देखिए: "...अपने उद्धार के लिए भय और कम्पन के साथ काम करते रहो।" यह हमारी पवित्रता की प्रक्रिया की बात करता है, जिसका तात्पर्य यह है कि हमें अपने अनंत जीवन को उसकी पूर्ण परिणति तक पहुँचाना है। चूँकि हम मसीह के द्वारा मसीह के साथ एक हो गए हैं, इसलिए हमें उसके जैसा बनने का भरसक प्रयत्न करना चाहिए।

यदि ऐसा है—और चूँकि व्यवस्था के संबंध में हमें मार डाला गया है—तो क्या इसका अर्थ यह है कि अब व्यवस्था से हमारा कोई भी संबंध नहीं रह गया है? नहीं, ऐसी बात नहीं है। कृपया बाइबल में मत्ती 5:17 को देखिए: "यह मत सोचो कि मैं व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं को मिटाने आया हूँ; मैं उन्हें मिटाने नहीं, बल्कि पूरा करने आया हूँ।" यीशु व्यवस्था को मिटाने नहीं आए थे; बल्कि, वह उसे पूरा करने आए थे। इसलिए, हमें भी—यीशु के उदाहरण का पालन करते हुए—व्यवस्था को पूरा करना चाहिए। इसका क्या अर्थ है? कृपया रोमियों 13:8–10 देखें: "किसी का कुछ भी उधार मत रखो—सिवाय आपस में प्रेम करने के। यदि तुम अपने पड़ोसी से प्रेम करते हो, तो तुमने व्यवस्था को पूरा कर दिया है। क्योंकि ये आज्ञाएँ—'व्यभिचार मत करना,' 'हत्या मत करना,' 'चोरी मत करना,' 'लालच मत करना,' और कोई भी अन्य आज्ञा—इन सब का सार इस एक आज्ञा में है: 'अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करना।' प्रेम अपने पड़ोसी को कोई हानि नहीं पहुँचाता; इसलिए, प्रेम ही व्यवस्था की पूर्ति है।" इसका अर्थ यह है कि, इस सत्य के अनुसार कि प्रेम ही व्यवस्था की पूर्ति है, हमें एक-दूसरे से प्रेम करना चाहिए। दूसरे शब्दों में, व्यवस्था को पूरा करने के लिए हमें एक-दूसरे से प्रेम करना चाहिए।

मैं भजन 213, "मैं अपना जीवन तुझे देता हूँ" के साथ अपनी बात समाप्त करूँगा: (पद 1) हे प्रभु, मैं अपना जीवन तुझे देता हूँ; कृपया इसे स्वीकार कर, और मुझे पृथ्वी पर अपने जीवन के सभी दिनों में तेरी स्तुति गाने दे। (पद 2) हे प्रभु, मैं अपने हाथ और पैर तुझे देता हूँ; कृपया इन्हें स्वीकार कर, और मुझे तेरा कार्य करने में फुर्तीला बना। (पद 3) हे प्रभु, मैं अपनी वाणी तुझे देता हूँ; कृपया इसे स्वीकार कर, और मुझे केवल तेरे वचन के सत्य की घोषणा करने दे। (पद 4) हे प्रभु, मैं अपना धन-सम्पत्ति तुझे देता हूँ; कृपया इसे स्वीकार कर, और स्वर्ग के राज्य की भलाई के लिए अपनी इच्छा के अनुसार इसका उपयोग कर। (पद 5) हे प्रभु, मैं अपना समय तुझे देता हूँ; कृपया इसे स्वीकार कर, और मुझे अपने जीवन के सभी दिनों में विश्वासयोग्यता से तेरी सेवा करने दे। आमीन।

जो लोग व्यवस्था से मुक्त हुए

[रोमियों 7:5-6]

कृपया रोमियों 7:5-6 देखें: "क्योंकि जब हम शारीरिक दशा में थे, तो पाप की अभिलाषाएँ, जो व्यवस्था के द्वारा थीं, हमारे अंगों में काम करती थीं, ताकि मृत्यु का फल उत्पन्न करें। परन्तु अब हम व्यवस्था से मुक्त हो गए हैं, क्योंकि जिस बात ने हमें जकड़ रखा था, उसके लिए हम मर चुके हैं; ताकि हम अक्षर की पुरानी रीति पर नहीं, परन्तु आत्मा की नई रीति पर सेवा करें।" रोमियों 7:5-6 में, "हम" शब्द पाँच बार आया है। यह पद 5 में तीन बार और पद 6 में दो बार आया है; हालाँकि, पद 5 का "हम" और पद 6 का "हम" पूरी तरह से अलग हैं। पद 5 का "हम" उस "हम" को संदर्भित करता है जो *पुनर्जन्म से पहले* की स्थिति में थे, जबकि पद 6 का "हम" उस "हम" को संदर्भित करता है जो *पुनर्जन्म के बाद* की स्थिति में हैं। यहाँ, पुनर्जन्म से पहले का "हम" उन लोगों को संदर्भित करता है जो अविश्वासी हैं—वे लोग जिन्होंने अभी तक यीशु पर विश्वास नहीं किया है; इसके विपरीत, पुनर्जन्म के बाद का "हम" उन लोगों को संदर्भित करता है जो विश्वासी हैं—वे लोग जिन्होंने यीशु पर अपना विश्वास रखा है।

आइए सबसे पहले हम उन "हम" पर विचार करें जो पुनर्जन्म से पहले अस्तित्व में थे।

कृपया रोमियों 7:5 को फिर से देखें: "क्योंकि जब हम शारीरिक दशा में थे, तो पाप की अभिलाषाएँ, जो व्यवस्था के द्वारा थीं, हमारे अंगों में काम करती थीं, ताकि मृत्यु का फल उत्पन्न करें।" वाक्यांश "जब हम शारीरिक दशा में थे" में, "शरीर" शब्द आम तौर पर तीन अलग-अलग चीजों को संदर्भित करता है: (1)

भौतिक शरीर अपनी शुद्ध, मिलावट-रहित अवस्था में; (2) वह शरीर जो बुराई से प्रभावित हुआ है और इसलिए नैतिक रूप से भ्रष्ट है; और (3) वह शरीर जो भलाई से प्रभावित हुआ है और इसलिए नैतिक रूप से अच्छा है। रोमियों 7:5 में, जिस "शरीर" का उल्लेख प्रेरित पौलुस कर रहे हैं, वह इन श्रेणियों में से दूसरी श्रेणी है—वह शरीर जो बुराई से प्रभावित हुआ है और परिणामस्वरूप नैतिक रूप से भ्रष्ट है। वाक्यांश "जब हम शारीरिक दशा में थे" हमारे पुनर्जन्म से पहले के समय को संदर्भित करता है—जब हम पाप में जीते थे (या पाप में वास करते थे)। उस समय, व्यवस्था द्वारा जगाई गई पापपूर्ण वासनाएँ हमारे अंगों में सक्रिय थीं (पद 5)। यहाँ, "पापपूर्ण वासनाएँ" वाक्यांश के संबंध में, "वासनाएँ" शब्द का अर्थ आमतौर पर शुद्ध उत्साह, जोश या गहरी लालसा होता है; हालाँकि, रोमियों 7:5 में, प्रेरित पौलुस ने इसका उपयोग विशेष रूप से "पापपूर्ण वासनाओं" का वर्णन करने के लिए किया है। इसका तात्पर्य यह है कि ये "पापपूर्ण वासनाएँ" हमारे शरीर के केवल एक विशिष्ट अंग में ही नहीं, बल्कि हमारे *सभी* अंगों में सक्रिय थीं—जैसे हमारी आँखें, नाक, मुँह, हाथ, पैर, आदि। जब हम शारीरिक अवस्था में थे, तब इन पापपूर्ण वासनाओं के कारण हमने मृत्यु का फल उत्पन्न किया (पद 5)। एक विश्वासी व्यक्ति पुनर्जन्म *के बाद* जो फल उत्पन्न करता है, वह परमेश्वर के लिए उत्पन्न किया गया फल है (पद 4), और वह फल अनंत जीवन है (6:23); इसके विपरीत, एक अविश्वासी व्यक्ति पुनर्जन्म *से पहले* जो फल उत्पन्न करता है, वह शैतान के लिए उत्पन्न किया गया फल है, और वह फल वास्तव में मृत्यु है (पद 5)। अत्याचारी शैतान ने—हमारे पुनर्जन्म से पहले—हमें मृत्यु का फल उत्पन्न करने के लिए विवश किया। इसका अर्थ यह है कि, पाप के वेतन के रूप में, हमने ऐसा फल उत्पन्न किया जिसने न केवल हमारे भौतिक शरीरों को मृत्यु के अधीन कर दिया, बल्कि अंततः हमें "दूसरी मृत्यु"—अर्थात् आग की अनंत झील में मृत्यु—की ओर ले गया। जब हमने अपने पुनर्जन्म से पहले मृत्यु का यह फल उत्पन्न किया, तब हमारी आत्माएँ आध्यात्मिक रूप से मृत थीं; हम परमेश्वर के शत्रु के रूप में खड़े थे, और उनके साथ हमारा मेल-जोल टूट गया था। कोई भी व्यक्ति जिसने यीशु मसीह को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार नहीं किया है—अर्थात् कोई भी अविश्वासी जो उन पर विश्वास नहीं करता—उसे पाप के वेतन के रूप में शारीरिक मृत्यु का सामना करना पड़ेगा, जिसके बाद अनंत दंड (अर्थात् "दूसरी मृत्यु") मिलेगा। वास्तव में, यीशु पर विश्वास करने से पहले—हमारे पुनर्जन्म से पहले—हम अनिवार्य रूप से पाप के वेतन के रूप में शारीरिक मृत्यु का सामना करने के लिए, और अंततः उस अंतिम परिणाम: दूसरी मृत्यु का सामना

करने के लिए नियत थे। हालाँकि, क्योंकि परमेश्वर ने हमसे पहले प्रेम किया, इसलिए उन्होंने अपने एकलौते पुत्र, यीशु को, हमारे पापों के प्रायश्चित के रूप में क्रूस पर मरने के लिए भेजा; इस प्रकार, उन्होंने हमें बचाया और हमारा पुनर्जन्म करवाया। इसलिए, अब हमें अपने पापों के दंड के रूप में शारीरिक मृत्यु का सामना नहीं करना पड़ता; इसके बजाय, हम बस "सो जाएँगे" (1 थिस्सलोनिकियों 4:13–18)। इसके अलावा, हमेशा की तबाही का सामना करने के बजाय, अब हमें हमेशा की ज़िंदगी मिल गई है (यूहन्ना 3:16)।

"हम"—यानी हम कौन हैं—इस पर सोचिए, हमारे नए जन्म के बाद।

रोमियों 7:6 को फिर से देखिए: "लेकिन अब हम व्यवस्था से आज़ाद हो गए हैं, क्योंकि हम उस चीज़ के लिए मर गए हैं जिसने हमें गुलाम बना रखा था, ताकि हम आत्मा के नए तरीके से सेवा करें, न कि लिखे हुए नियम के पुराने तरीके से।" यहाँ, "लेकिन अब" वाक्यांश तीन तरह से ज़ोर देने वाला संकेत है। हमारे नए जन्म से पहले, हम शैतान की खातिर मौत का फल ला रहे थे—मतलब कि हमें न केवल पाप की सज़ा के तौर पर शारीरिक मौत का सामना करना था, बल्कि हमेशा की तबाही भी झेलनी थी। हालाँकि, "लेकिन अब," हम परमेश्वर की खातिर हमेशा की ज़िंदगी का फल लाने लगे हैं (पद 4; 6:23)। जिस चीज़ ने हमें गुलाम बना रखा था, उसके लिए मर जाने के बाद, हम व्यवस्था से आज़ाद हो गए हैं (7:6)। हमारे नए जन्म से पहले, हम व्यवस्था से बँधे हुए थे; हम उसका पालन करने के लिए मजबूर थे। लेकिन अब, हम व्यवस्था से आज़ाद हो गए हैं। इसका कारण यह है कि हम—यीशु पर विश्वास के ज़रिए नया जन्म पाने के बाद—उसी व्यवस्था के लिए मर गए हैं जिसने कभी हमें गुलाम बना रखा था। हम व्यवस्था की पाबंदियों और सीमाओं से आज़ाद हो गए हैं, और अब हम सच्ची आज़ादी का आनंद लेते हैं। तो, हम व्यवस्था से ठीक कैसे आज़ाद हुए हैं? कृपया गलातियों 4:4–5 को देखिए: "लेकिन जब तय समय पूरी तरह आ गया, तो परमेश्वर ने अपने बेटे को भेजा, जो एक औरत से पैदा हुआ, और व्यवस्था के अधीन पैदा हुआ, ताकि वह उन्हें छुड़ा ले जो व्यवस्था के अधीन थे, ताकि हम बेटे होने का अधिकार पा सकें।" हम व्यवस्था से इसलिए आज़ाद हुए हैं क्योंकि परमेश्वर ने अपने बेटे, यीशु मसीह को इस धरती पर भेजा—जो पवित्र आत्मा से गर्भ में आया और कुँवारी मरियम से पैदा हुआ—और उसे व्यवस्था के अधीन पैदा करके, परमेश्वर ने हमें छुड़ा लिया जो व्यवस्था के अधीन थे। यहाँ, यह बात कि परमेश्वर ने अपने इकलौते बेटे, यीशु मसीह के ज़रिए हमें "छुड़ा लिया," इसका मतलब यह

है कि उसने हमें शैतान और व्यवस्था, दोनों की गुलामी से आज़ाद कराने (बचाने) के लिए पूरी और सही कीमत चुकाई। इसका यह मतलब बिल्कुल नहीं है—किसी भी तरह से नहीं—कि यह सही कीमत, या फिरौती, शैतान को दी गई थी; बल्कि, इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर ने अपने इकलौते बेटे, यीशु को, खुद को ही एक प्रायश्चित बलिदान के रूप में अर्पित किया। परमेश्वर ने ऐसा क्यों किया? उनका क्या उद्देश्य था? इसका उद्देश्य हमें परमेश्वर की संतान बनाना था (पद 5, *द कंटेम्पररी बाइबल*)। परमेश्वर पिता ने न केवल अपने बेटे को भेजा (पद 4); बल्कि उन्होंने पवित्र आत्मा को भी भेजा—जो उनके बेटे की आत्मा है (पद 6)—ताकि वह हमारे भीतर वास करे। इस प्रकार, परमेश्वर ने हमें पवित्र आत्मा का मंदिर बनाया (1 कुरिन्थियों 6:19) और यह विधान किया कि पवित्र आत्मा हमेशा हमारे साथ रहेगा। परिणामस्वरूप, परमेश्वर ने हमें यह सामर्थ्य दिया कि हम उन्हें "अब्बा, पिता" कहकर पुकार सकें (गलातियों 4:6)। कृपया रोमियों 8:15–17 पर ध्यान दें: "क्योंकि तुम्हें फिर से डर में डालने वाली दासता की आत्मा नहीं मिली, बल्कि तुम्हें गोद लिए जाने की आत्मा मिली है, जिसके द्वारा हम पुकारते हैं, 'अब्बा, पिता।' पवित्र आत्मा स्वयं हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है कि हम परमेश्वर की संतान हैं, और यदि संतान हैं, तो वारिस भी हैं—परमेश्वर के वारिस और मसीह के साथ सह-वारिस; बशर्ते हम उनके साथ दुख उठाएँ, ताकि हम भी उनके साथ महिमान्वित हो सकें।" इस प्रकार, हम—जो कभी शैतान के गुलाम थे—अब परमेश्वर की संतान और वारिस बन गए हैं, क्योंकि उन्होंने अपने इकलौते बेटे, यीशु मसीह को भेजा, और साथ ही पवित्र आत्मा को भी भेजा, जो उनके बेटे की आत्मा है। इसलिए, हम पवित्र आत्मा की नवीनता में सेवा करने के लिए आए हैं (7:6)। दूसरे शब्दों में, हमारे नए जन्म से पहले, हम शैतान के द्वारा चलाए जाते थे और शैतान की सेवा करते थे; लेकिन हमारे नए जन्म के बाद, हम पवित्र आत्मा की नवीनता में परमेश्वर की सेवा करने के लिए आए हैं। यहाँ, "पवित्र आत्मा की नवीनता में" का अर्थ यह है कि, क्योंकि पवित्र आत्मा—जिसे परमेश्वर ने भेजा—हमारे भीतर वास करता है और उसने हमें नया बना दिया है, इसलिए अब हम पवित्र आत्मा के माध्यम से, नई सृष्टि के रूप में परमेश्वर की सेवा करते हैं (2 कुरिन्थियों 5:17)। पहले, शैतान हमारे अंगों का उपयोग ऐसे फल लाने के लिए करता था जिनका परिणाम मृत्यु होता था; लेकिन अब, पवित्र आत्मा हमारे अंगों का उपयोग ऐसे फल लाने के लिए करता है जिनका परिणाम अनंत जीवन होता है। अब, हम पवित्र आत्मा के माध्यम से स्तुति करते हैं, प्रार्थना करते हैं, और आराधना करते हैं। हमें अपना पूरा जीवन—जिसमें हमारे अंग जैसे हाथ, पैर, आवाज़, धन-संपत्ति और समय शामिल हैं—पूरी तरह से परमेश्वर को समर्पित कर देना चाहिए, और पवित्र आत्मा के

मार्गदर्शन का पालन करते हुए प्रभु की सेवा करनी चाहिए (New Hymnal 213: “I Offer My Life”)। अब, हम व्यवस्था की पुरानी लिखित विधि के अनुसार सेवा नहीं करते (रोमियों 7:6)। यहाँ, "लिखित विधि" (written code) शब्द उस व्यवस्था को दर्शाता है जो परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों को सीनै पर्वत पर पहुँचने पर दी थी; उन्होंने मूसा को पर्वत पर बुलाया और स्वयं दो पत्थर की पट्टियों पर आज्ञाएँ लिखीं, जिन्हें उन्होंने फिर मूसा को सौंप दिया—यही लिखित आज्ञाएँ "लिखित विधि" कहलाती हैं। हालाँकि, हम जो अब नए सिरे से जन्मे हैं, वे अब उस लिखित विधि के अधीन सेवा नहीं करते, बल्कि पवित्र आत्मा के द्वारा सेवा करते हैं। इस प्रकार, परमेश्वर की कृपा से—और क्रूस पर यीशु मसीह की बलिदानी मृत्यु के द्वारा—हमारा उद्धार हुआ है और हम नए सिरे से जन्मे हैं, जिससे हम पवित्र आत्मा की सामर्थ्य के द्वारा प्रभु की सेवा करने में सक्षम हुए हैं। अब, नए सिरे से जन्मे हुए लोगों के रूप में, हम परमेश्वर के लिए फल उत्पन्न करते हैं। वह फल अनंत जीवन है।

परमेश्वर ने हम पर असीम प्रेम बरसाया है। यीशु ने हमारे उद्धार के लिए बहुत बड़ी कीमत चुकाई। पवित्र आत्मा हमारी ओर से व्यक्तिगत रूप से ऐसी गहरी आहों के साथ मध्यस्थता करता है जिन्हें शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता (8:26)। अपनी मध्यस्थता में, पवित्र आत्मा परमेश्वर की इच्छा के अनुसार हमारे लिए विनती करता है (पद 27)। इसके अलावा, पवित्र आत्मा हमें पवित्र करता है, हमें पावन बनाता है और हमें यीशु के स्वरूप में बढ़ने में सक्षम बनाता है। इसलिए, हमें पवित्र आत्मा का विरोध नहीं करना चाहिए, बल्कि उसके मार्गदर्शन के अनुसार जीना चाहिए। परिणामस्वरूप, जैसे-जैसे हम दिन-ब-दिन अधिक पवित्र होते जाते हैं और हर दिन यीशु के अधिक समान बनते जाते हैं, हमें "छोटे मसीह" बन जाना चाहिए। हमें अपने पड़ोसियों से प्रेम करना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसा कि पवित्रशास्त्र घोषित करता है: "जो किसी दूसरे से प्रेम करता है, उसने व्यवस्था को पूरा किया है" (13:8)। परमेश्वर के लिए फल लाने का ठीक यही अर्थ है; अनंत जीवन पाने वाले व्यक्ति के रूप में जीने का यही अर्थ है (1 यूहन्ना 3:14); और स्वर्ग के नागरिक के रूप में जीने का यही अर्थ है (फिलिप्पियों 3:20)। जब हम पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में जीते हैं—प्रभु की आज्ञाओं का पालन करते हुए और अपने पड़ोसियों से अपने समान प्रेम करते हुए—तो हमारा आनंद पूर्ण होगा (यूहन्ना 15:11)।

“क्या व्यवस्था पाप है?”

[रोमियों 7:7–9]

कृपया रोमियों 7:7–9 देखें: “तो फिर हम क्या कहें? क्या व्यवस्था पाप है? कदापि नहीं! वास्तव में, मुझे पता ही नहीं चलता कि पाप क्या है, यदि व्यवस्था यह न कहती, ‘तू लालच न करना।’ परन्तु पाप ने, आज्ञा द्वारा मिले अवसर का लाभ उठाकर, मुझमें हर प्रकार का लालच उत्पन्न कर दिया। क्योंकि व्यवस्था के बिना पाप मृत है। एक समय मैं व्यवस्था के बिना जीवित था; परन्तु जब आज्ञा आई, तो पाप जीवित हो उठा और मैं मर गया।” क्या व्यवस्था पाप है? (पद 7) व्यवस्था पाप नहीं है। परमेश्वर द्वारा दी गई व्यवस्था पाप नहीं हो सकती। इसके विपरीत, व्यवस्था पवित्र, धर्मी और अच्छी है। कृपया रोमियों 7:12 देखें: “इसलिए व्यवस्था पवित्र है, और आज्ञा पवित्र, धर्मी और अच्छी है” [(मॉडर्न पीपल्स बाइबल) “इसलिए, व्यवस्था और आज्ञा सभी पवित्र, धर्मी और अच्छी हैं”]। इसीलिए प्रेरित पौलुस ने कहा, “क्या व्यवस्था पाप है? कदापि नहीं!” [(पद 7, मॉडर्न पीपल्स बाइबल) “तो क्या व्यवस्था पाप है? बिल्कुल नहीं”]। कृपया रोमियों 6:14 देखें: “क्योंकि पाप तुम पर प्रभुता न करेगा, क्योंकि तुम व्यवस्था के अधीन नहीं, परन्तु अनुग्रह के अधीन हो।” कृपया रोमियों 7:4 देखें: “इसलिए, मेरे भाइयों, तुम भी मसीह के शरीर के द्वारा व्यवस्था के लिए मर गए, ताकि तुम किसी दूसरे के हो सको—उसका जो मरे हुओं में से जिलाया गया—ताकि हम परमेश्वर के लिए फल ला सकें।” कृपया रोमियों 7:6 देखें: “परन्तु अब हम व्यवस्था से मुक्त हो गए हैं, क्योंकि हम उसके लिए मर गए हैं जिसके द्वारा हम बंधे हुए थे, ताकि हम आत्मा की नई रीति से सेवा करें, न कि अक्षर की पुरानी रीति से।” ये तीनों पद यह प्रश्न उठाते हैं: “क्या व्यवस्था पाप है?” (पद 7)। प्रेरित पौलुस ने कहा, “मैं व्यवस्था के बिना पाप को न जान पाता” (पद 7)। व्यवस्था पाप को प्रकट करती है। व्यवस्था के बिना कोई पाप को नहीं जान सकता। कृपया रोमियों 3:20 देखें: “इसलिए व्यवस्था के कामों से कोई

भी प्राणी उसकी दृष्टि में धर्मी नहीं ठहरेगा, क्योंकि व्यवस्था के द्वारा पाप की पहचान होती है।" इसके एक उदाहरण के तौर पर, प्रेरित पौलुस ने कहा, "...क्योंकि यदि व्यवस्था यह न कहती, 'तू लालच न करना,' तो मैं लालच को न जानता" (7:7)। क्योंकि व्यवस्था यह घोषणा करती है कि लालच एक पाप है, इसलिए हम इसे पाप के रूप में पहचान पाते हैं। कृपया निर्गमन 20:17 देखें: "तू अपने पड़ोसी के घर का लालच न करना; तू अपने पड़ोसी की पत्नी का, न उसके दास का, न उसकी दासी का, न उसके बैल का, न उसके गधे का, और न किसी भी ऐसी चीज़ का लालच करना जो तेरे पड़ोसी की है।" दस आज्ञाओं में से दसवीं आज्ञा स्पष्ट रूप से कहती है, "तू लालच न करना।"

हालाँकि, पाप, आज्ञा के द्वारा अवसर पाकर, हमारे भीतर हर प्रकार का लालच उत्पन्न करता है (रोमियों 7:8)। पाप कुछ ऐसा है जिसे हम करते हैं; यह व्यवस्था के अनुसार जीवन जीने में हमारी असफलता है। वाक्यांश "पाप, अवसर पाकर" में, शब्द "पाप" शैतान को संदर्भित करता है। दूसरे शब्दों में, शैतान एक अवसर लपक लेता है—आज्ञा का उपयोग करके—ताकि मेरे भीतर हर प्रकार का लालच भड़का सके। इसका एक प्रमुख उदाहरण उत्पत्ति की पुस्तक में मिलता है, जिसमें पहले मनुष्य, आदम का ज़िक्र है। उत्पत्ति 2:7 के अनुसार, बाइबल बताती है कि प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को ज़मीन की धूल से बनाया और उसकी नासिका में जीवन का श्वास फूँका, और मनुष्य एक जीवित प्राणी बन गया। हालाँकि, शैतान इस अवसर की ताक में बैठा था कि वह कोई ऐसा तरीका निकाले जिससे आदम—जो जीवित प्राणी बनने वाला पहला मनुष्य था—परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करे और पाप करे। इस संदर्भ में, परमेश्वर की आज्ञा यह थी: "तू भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल न खाना, क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा, उसी दिन तू निश्चय मर जाएगा" (पद 17)। वह सर्प—जो वास्तव में शैतान है—प्रभु परमेश्वर द्वारा बनाए गए किसी भी जंगली जानवर से अधिक चालाक था। इस सर्प ने उस स्त्री से, जो आदम की पत्नी थी, पूछा: "क्या परमेश्वर ने सचमुच कहा है कि 'तुम वाटिका के किसी भी वृक्ष का फल न खाना'?" (3:1)। उस स्त्री के जवाब पर ध्यान दें: "हम बगीचे के पेड़ों से फल खा सकते हैं, लेकिन परमेश्वर ने कहा था, 'तुम उस पेड़ से मत खाना जो बगीचे के बीच में है, और न ही उसे छूना, वरना तुम मर जाओगे'" (पद 2–3)। स्त्री के जवाब की जाँच करने पर, दो बातें सामने आती हैं: पहली, परमेश्वर ने असल में

कभी यह निर्देश नहीं दिया था कि “तुम भले और बुरे के ज्ञान के पेड़ को मत छूना”; और दूसरी, जहाँ परमेश्वर ने साफ़-साफ़ कहा था, “तुम निश्चित रूप से मर जाओगे” (2:17), वहीं स्त्री ने इसे बदलकर कहा, “तुम मर जाओगे” (3:3)। फिर शैतान (“साँप”) ने उस स्त्री से कहा, “तुम निश्चित रूप से नहीं मरोगे”—यह बात परमेश्वर के वचन, “तुम निश्चित रूप से मर जाओगे” के ठीक विपरीत थी—इसके बजाय उसने दावा किया कि जिस दिन वे उस पेड़ का फल खाएँगे, वे परमेश्वर जैसे बन जाएँगे। आखिरकार, स्त्री और आदम दोनों ने ही परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया—"तुम भले और बुरे के ज्ञान के पेड़ से मत खाना" (2:17)—और इस तरह उन्होंने आज्ञा न मानने का काम किया। कृपया बाइबल में उत्पत्ति 3:6 देखें: “स्त्री ने देखा कि वह पेड़ खाने के लिए अच्छा और देखने में सुंदर था, और बुद्धि पाने के लिए भी बहुत लुभावना था। इसलिए उसने उसका कुछ फल तोड़ा और खा लिया; उसने कुछ फल अपने पति को भी दिया, जो उसके साथ था, और उसने भी उसे खा लिया।" शैतान मौके की ताक में बैठा था, फिर उसने परमेश्वर की आज्ञा को तोड़-मरोड़कर पेश किया; आखिरकार, उसने आदम से पाप करवाया, और इस तरह उसे मृत्यु की ओर धकेल दिया।

इसने मेरे अंदर हर तरह का लालच पैदा कर दिया (रोमियों 7:8)। लालच के ज़रिए, शैतान हमें लुभाता है, और हमारे मन में हर तरह की लालची इच्छाएँ पैदा करने—और उन्हें बढ़ाने—की कोशिश करता है। इसका एक उदाहरण है भौतिक धन-दौलत का लालच। इंसान जितना ज़्यादा भौतिक सामान जमा करता है, उसकी सत्ता की भावना उतनी ही बढ़ती जाती है; फिर भी, असंतुष्ट रहकर, वह और आगे बढ़ता है—राजनीतिक सत्ता (ऊँचे अधिकार) की चाहत रखता है और यहाँ तक कि नाम और इज़्ज़त के लिए भी उसकी भूख कभी न मिटने वाली बन जाती है। इस तरह, भौतिक चीज़ों का लालच लगातार बढ़कर हर तरह के लोभ का रूप ले लेता है। यहाँ, वाक्यांश "उत्पन्न हुआ" (पद 8) इस लालच के वास्तविक रूप लेने को दर्शाता है। असंतोष की स्थिति में, व्यक्ति लगातार और अधिक पाने की चाह रखता है। उसे संतोष नहीं मिल पाता। चाहे वह भौतिक धन-संपत्ति हो, मान-सम्मान हो, लोकप्रियता हो, या कुछ और—इनमें से कोई भी चीज़ सच्चा संतोष नहीं दे सकती। परिणामस्वरूप, बहुत अधिक धन जमा करने और उसका भरपूर आनंद लेने के बाद भी, कुछ लोग असंतुष्ट ही रहते हैं—इस हद तक कि वे आत्महत्या का सहारा भी ले सकते हैं। हम इस संसार की चीज़ों में सच्चा संतोष नहीं पा सकते। हमें अपना संतोष केवल यीशु में ही खोजना चाहिए। हमें उन आशीषों के लिए आभारी और संतुष्ट होना चाहिए

जो परमेश्वर ने अब तक कृपापूर्वक हमें प्रदान की हैं। हमें उस अनंत जीवन के उपहार के लिए आभारी और संतुष्ट होना चाहिए जो परमेश्वर ने हमें दिया है (6:23)। हमें विश्वास के उपहार और अन्य सभी आत्मिक आशीषों के लिए भी धन्यवाद देना चाहिए—और उनमें संतोष पाना चाहिए—जो उसने हमें प्रदान की हैं (इफिसियों 1:3; 2:8)।

क्योंकि व्यवस्था के बिना, पाप मृत है (7:8)। यह आज्ञा के माध्यम से ही था—परमेश्वर के विशिष्ट निर्देश द्वारा—कि शैतान ने आदम को अपने जाल में फंसाया और उसे पाप में गिरने का कारण बना। व्यवस्था के बिना, पाप शक्तिहीन हो जाता है; ऐसा लगता है मानो वह मृत हो। हालाँकि, जहाँ व्यवस्था मौजूद होती है, वहाँ पाप जीवित हो उठता है; वह हमें प्रलोभित करता है और हमें पाप करने की ओर ले जाता है। इससे पहले कि हम व्यवस्था को समझते, हम जीवित थे; लेकिन जब आज्ञा आई, तो पाप जीवित हो उठा, और हम मर गए (पद 9)। जब तक हम व्यवस्था को ठीक से नहीं समझ पाते, हम इस भ्रम में रहते हैं कि "हम जीवित हैं।" इसका एक उदाहरण दस आज्ञाओं में से चौथी आज्ञा है: "सब्त के दिन को पवित्र मानने के लिए याद रखना" (निर्गमन 20:8)। इस व्यवस्था को समझने से पहले, हम सब्त का उल्लंघन करते थे। हमें परमेश्वर की आज्ञाओं को जानना चाहिए; यदि हम ऐसा नहीं करते, तो हम अनिवार्य रूप से पाप में गिर जाएँगे। हमारी मानवीय दुर्बलता के कारण, हम अक्सर तब भी पाप कर बैठते हैं जब हम सही बात जानते होते हैं। फिर भी, जो पाप हम अज्ञानतावश करते हैं—क्योंकि हम बस जानते ही नहीं थे—उनकी संख्या और भी अधिक होती है। इसलिए, हमें परमेश्वर के वचन का गहरा ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। इसके अतिरिक्त, हमें परमेश्वर के वचन से स्वयं को सुसज्जित करना चाहिए। साथ ही, हमें परमेश्वर के वचन को सही ढंग से समझना चाहिए। इसका कारण यह है कि शैतान परमेश्वर के वचन में कुछ जोड़कर या उसमें से कुछ घटाकर हमें प्रलोभन देता है। वह परमेश्वर के वचन को ही तोड़-मरोड़कर हमें प्रलोभित करता है। अंधकार में, हम अनजान बने रहते हैं; केवल जब प्रकाश चमकता है, तभी हम अंधकार को पहचान पाते हैं। हमें यह सुनिश्चित करने का प्रयास करना चाहिए कि हम अज्ञानतावश कोई पाप न करें। हमें एक पवित्र जीवन जीने के लिए बुलाया गया है। शैतान के प्रलोभनों को दूर भगाने के लिए हमें परमेश्वर के वचन का उपयोग करना चाहिए। जब शैतान हमें प्रलोभित करने के लिए परमेश्वर के वचन को तोड़-मरोड़ता है, तो हमें उसी वचन का उपयोग करके उसे दूर भगाना चाहिए, उसके हमलों पर विजय प्राप्त करनी चाहिए और विजय की ओर आगे बढ़ना चाहिए।

इससे *न्यू हिमनल* (New Hymnal) का भजन 200 याद आता है, "वह मधुर और रहस्यमय वचन": "वह मधुर और रहस्यमय वचन—जीवन का वचन—एक अनमोल वचन है; सचमुच, जीवन का यह वचन मेरे मार्ग और मेरे विश्वास को स्पष्ट रूप से प्रकाशित करता है।" मुझे *न्यू हिमनल* का भजन 453 भी याद आता है, "मैं यीशु को और अधिक जानना चाहता हूँ": "पवित्र आत्मा मेरे शिक्षक बनें, जो मुझे सत्य की शिक्षा दें, ताकि परमेश्वर की पवित्र इच्छा को समझते हुए, मैं यीशु को जान सकूँ"; "जैसे-जैसे मैं पवित्र आत्मा की प्रेरणा के अधीन परमेश्वर का वचन सीखता हूँ, उसका प्रत्येक पद मेरे हृदय के लिए एक शिक्षा बन जाता है"; "यह मेरी आत्मा की जीवन भर की अभिलाषा है—मेरी जीवन भर की चाहत—कि मैं उस उद्धारकारी प्रेम को पूरी लगन से जान सकूँ जो उसने मुझ पर प्रकट किया है।"

“वह आज्ञा जो जीवन लाने वाली थी” (1)

[रोमियों 7:8–13]

कृपया रोमियों 7:10 देखें: “वही आज्ञा जो जीवन लाने वाली थी, वास्तव में मेरे लिए मृत्यु ले आई।” यहाँ, “आज्ञा” का तात्पर्य उस आदेश से है जो परमेश्वर ने पहले आदम को दिया था, जैसा कि उत्पत्ति 2:16–17 में दर्ज है: “और यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य को आज्ञा दी, ‘वाटिका के हर पेड़ का फल तुम बेझिझक खा सकते हो; परन्तु भले और बुरे के ज्ञान के पेड़ का फल तुम न खाना, क्योंकि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे, तुम निश्चित रूप से मर जाओगे।’” यदि आदम ने उस आज्ञा का पालन किया होता और भले और बुरे के ज्ञान के पेड़ का फल खाने से परहेज़ किया होता, तो यह उसे जीवन की ओर ले जाता। दूसरे शब्दों में, यदि आदम ने उस आज्ञा का पालन किया होता जिसका उद्देश्य जीवन लाना था (रोमियों 7:10), तो उसे अनंत जीवन प्राप्त होता। हालाँकि, प्रेरित पौलुस ने कहा, “यह वास्तव में मेरे लिए मृत्यु ले आई” (पद 10)। वह आज्ञा जिसका उद्देश्य जीवन लाना था, अंततः मृत्यु कैसे ले आई? (पद 10) कृपया रोमियों 7:11 देखें: “क्योंकि पाप ने, आज्ञा के द्वारा अवसर पाकर, मुझे धोखा दिया, और उसी के द्वारा मुझे मार डाला” [(समकालीन कोरियाई बाइबिल) “ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि पाप ने, आज्ञा द्वारा मिले अवसर का लाभ उठाकर, मुझे धोखा दिया और उस आज्ञा का उपयोग मुझे मारने के लिए किया”]। पाप (पाप की शक्ति / सर्प / शैतान) ने आज्ञा का उपयोग करके आदम को धोखा देने का अवसर लपक लिया (उत्पत्ति 3:1–5), जिसके कारण उसने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया (उत्पत्ति 2:17); परिणामस्वरूप, अंततः उसकी परिणति मृत्यु में हुई—जो पाप का वेतन है (रोमियों 6:26)। और ठीक जैसे एक मनुष्य—आदम—के द्वारा पाप संसार में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, वैसे ही मृत्यु सभी मनुष्यों में फैल गई क्योंकि सभी ने पाप किया है (5:12)। यदि हम परमेश्वर के वचन के अनुसार जीवन जीते हैं, तो यह अनिवार्य रूप से हमें जीवन की ओर ले जाएगा। दूसरे शब्दों में, यदि हम परमेश्वर के वचन का पालन करते हैं,

तो हमें अनंत जीवन प्राप्त होगा। इसलिए, हमें परमेश्वर के वचन का पालन करना ही चाहिए, भले ही इसके लिए हमें अपने प्राणों की ही कीमत क्यों न चुकानी पड़े। चाहे यह कितना भी कठिन, दुष्कर या कष्टदायक क्यों न हो, इसकी तुलना मृत्यु से नहीं की जा सकती। इसलिए, हमें अपनी जान की कीमत पर भी परमेश्वर के वचन को थामे रखना चाहिए—अपना पूरा अस्तित्व ही इस पर दाँव पर लगा देना चाहिए। यही सच्चे जीवन का मार्ग है, और यही अनंत जीवन का मार्ग भी है। हालाँकि, पाप ने—आज्ञा द्वारा मिले अवसर का लाभ उठाकर—मेरे भीतर हर प्रकार की लालसा उत्पन्न कर दी [(समकालीन कोरियाई बाइबल): "परन्तु पाप ने, आज्ञा का लाभ उठाकर, मेरे भीतर हर प्रकार की लालसा जगा दी"]। पाप—या पाप की शक्ति, जिसका प्रतिनिधित्व शैतान करता है—उस अवसर की ताक में रहती है जब वह आज्ञा का उपयोग करके हमारे भीतर हर प्रकार की लालसा जगा सके। सर्प ने—जो सभी जंगली जानवरों में सबसे अधिक धूर्त था (उत्पत्ति 3:1)—उस अवसर को लपक लिया ताकि वह उस स्त्री (आदम की पत्नी) के भीतर लालसा जगा सके; उसने 'भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष' को उस स्त्री की नज़रों में अत्यंत आकर्षक बना दिया—ऐसा वृक्ष जो खाने में स्वादिष्ट, देखने में सुंदर और मनुष्य को बुद्धिमान बनाने में सक्षम था (पद 6)। आज भी, धूर्त शैतान लगातार ऐसे अवसरों की तलाश में रहता है जिनसे वह हमारे भीतर लालसा जगा सके; वह हमें संसार की हर उस चीज़ के पीछे भागने के लिए ललचाता है—अर्थात्, शरीर की अभिलाषा, आँखों की अभिलाषा और जीवन का घमंड (1 यूहन्ना 3:16, समकालीन कोरियाई बाइबल)। शैतान का अंतिम उद्देश्य हमारी मृत्यु का कारण बनना है। कहने का तात्पर्य यह है कि शैतान का लक्ष्य हमें मृत्यु की ओर ले जाना है (रोमियों 8:10)। इसलिए, हमें शैतान के उद्देश्यों, उसकी योजनाओं और उसके छलावों के प्रति पूरी तरह से सचेत रहना चाहिए।

कोरोनावायरस के कारण, लोग यह कह रहे हैं कि प्रभु के पुनरागमन का दिन अब निकट आ गया है। बाइबल में मत्ती 24:24 पर दृष्टि डालें: "क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे और बड़े-बड़े चिन्ह और चमत्कार दिखाएँगे, ताकि यदि संभव हो तो वे चुने हुए लोगों को भी भरमा सकें" [(आधुनिक लोगों की बाइबल) "झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे और बड़े-बड़े चमत्कार तथा अद्भुत कार्य करेंगे, और यदि संभव हुआ तो वे चुने हुए लोगों को भी भरमाने का प्रयास करेंगे"]। शैतान तो परमेश्वर के बच्चों को भी भरमाने का प्रयास करता है—अर्थात् उन लोगों को जिन्हें परमेश्वर ने स्वयं चुना है। तथापि, हमें परमेश्वर के वचन के द्वारा

ऐसे छलावों का डटकर सामना करना चाहिए और उन पर विजय प्राप्त करनी चाहिए। हमें यीशु के उदाहरण का पालन करना चाहिए। यीशु को पवित्र आत्मा द्वारा जंगल में ले जाया गया, जहाँ शैतान ने उनकी परीक्षा ली (मत्ती 4:1)। जब शैतान ने तीन बार उनकी परीक्षा ली, तो यीशु ने यह कहकर जवाब दिया, "यह लिखा है" ["धर्मग्रंथों में" (मॉडर्न पीपल्स बाइबिल)], और उन्होंने पुराने नियम के धर्मग्रंथों के लिखित शब्दों का उपयोग करके शैतान की परीक्षाओं को विफल कर दिया (पद 4, 7, 10)। हमें भी शैतान के छलावों के खिलाफ लड़ना चाहिए और "आत्मा की तलवार" का उपयोग करके जीत हासिल करनी चाहिए, जो कि परमेश्वर का वचन है (इफिसियों 6:17)। यदि हम परमेश्वर के वचन को दृढ़ता से थामे रहें और ईमानदारी से उसका पालन करें, तो परमेश्वर हमारी रक्षा करेगा और हमें अनंत जीवन की ओर ले जाएगा। बाइबिल में मत्ती 24:22 पर नज़र डालें: "और यदि वे दिन घटाए न जाते, तो कोई भी प्राणी न बचता; परन्तु चुने हुओं के कारण वे दिन घटाए जाएँगे" [(मॉडर्न पीपल्स बाइबिल) "यदि कष्टों की यह अवधि कम न की जाती, तो कोई भी जीवित न बचता। हालाँकि, चुने हुए लोगों की खातिर, वह अवधि कम कर दी जाएगी"]। यदि परमेश्वर इन क्लेश के दिनों की विभिन्न आपदाओं को बिना किसी रोक-टोक के अपना पूरा प्रभाव दिखाने देता, तो कोई भी न बचता। हालाँकि, अपने चुने हुए लोगों की खातिर, परमेश्वर क्लेश के उन दिनों को कम कर देगा। कृपया बाइबिल में मत्ती 24:31 पर नज़र डालें: "और वह तुरही की बड़ी आवाज़ के साथ अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा, और वे चारों दिशाओं से, स्वर्ग के एक छोर से दूसरे छोर तक, उसके चुने हुए लोगों को इकट्ठा करेंगे" [(कंटेम्पररी बाइबिल) "मैं तुरही की ज़ोरदार आवाज़ के साथ स्वर्गदूतों को भेजूँगा, और वे चारों दिशाओं से, स्वर्ग के एक छोर से दूसरे छोर तक, चुने हुए लोगों को इकट्ठा करेंगे"]। परमेश्वर अपने चुने हुए सभी बच्चों को इकट्ठा करने के लिए अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा, और उन्हें यीशु का स्वागत करने के लिए एक साथ लाएगा। परमेश्वर अपने बच्चों की रक्षा करेगा और उन पर नज़र रखेगा, और अंततः उन्हें उद्धार प्रदान करेगा। प्रभु की कलीसिया के तौर पर—विशेष रूप से विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च, जिसे स्वयं प्रभु स्थापित कर रहे हैं—हम प्रार्थना करते हैं कि हम फिलाडेल्फिया की कलीसिया के समान बन सकें, जो प्रकाशितवाक्य के अध्याय 2 और 3 में वर्णित एशिया माइनर की सात कलीसियाओं में से एक है। कृपया प्रकाशितवाक्य 3:8 देखें: “मैं तुम्हारे कामों को जानता हूँ। देखो, मैंने तुम्हारे सामने एक खुला द्वार रखा है, और कोई उसे बंद नहीं कर सकता; क्योंकि तुम्हारे पास थोड़ी शक्ति है, तुमने मेरे वचन का पालन किया है, और मेरे नाम से इनकार नहीं किया है।” हम प्रार्थना करते हैं कि यह कलीसिया—प्रभु की कलीसिया, जिसे स्वयं प्रभु ने स्थापित किया है—एक ऐसी मंडली बनी रहे जो उसके वचन का पालन करती

है और उसके नाम से कभी इनकार नहीं करती, भले ही हमारे पास केवल थोड़ी ही शक्ति क्यों न हो, और चाहे हमें किसी भी तरह के प्रलोभनों, धोखों या कठिनाइयों का सामना क्यों न करना पड़े। इसके अलावा, हम पूरी लगन से प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर के वचन को अगली पीढ़ी तक विश्वासपूर्वक पहुँचाने से, वे भी प्रभु के वचन का पालन और आज्ञा मान सकें, और इस प्रकार अनंत जीवन प्राप्त कर सकें। कृपया प्रकाशितवाक्य 3:11 देखें: "देखो, मैं शीघ्र आनेवाला हूँ! जो तुम्हारे पास है उसे थामे रहो, ताकि कोई तुम्हारा मुकुट न छीन ले।" प्रभु उन लोगों को मुकुट प्रदान करता है जो उसके वचन का पालन करते हैं। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हम उस मुकुट को न खो दें; बल्कि, जब प्रभु वापस आएँ, तो हमें उसे मज़बूती से थामे हुए उनका स्वागत करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

वह आज्ञा जो जीवन की ओर ले जाती है (2)

[रोमियों 7:8-13]

कृपया रोमियों 7:10 देखें: "वही आज्ञा जिसका उद्देश्य जीवन देना था, वास्तव में मेरे लिए मृत्यु ले आई।" यहाँ, "आज्ञा" का तात्पर्य परमेश्वर द्वारा दी गई जीवन-दायक आज्ञा से है। यदि कोई इस आज्ञा का पालन करता है, तो वह जीवित रह सकता है (उदाहरण के लिए: यदि कोई 10 वर्षों तक इसका पालन करता है, तो वह 10 वर्षों तक जीवित रह सकता है; यदि 100 वर्षों तक, तो 100 वर्षों तक; और यदि 1,000 वर्षों तक, तो 1,000 वर्षों तक)। यदि कोई इस आज्ञा के अनुसार जीवन जीता है, तो उसे आशीषें प्राप्त होंगी। परमेश्वर ने आदम को—जो मानवता का प्रतिनिधि था—जो सबसे पहली आज्ञा दी थी, वह उत्पत्ति 2:16-17 में दर्ज है: "और परमेश्वर यहोवा ने मनुष्य को यह आज्ञा दी, 'तू वाटिका के हर पेड़ का फल बेखटके खा सकता है; परन्तु भले और बुरे के ज्ञान के पेड़ का फल तू न खाना, क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा, उसी दिन तू निश्चय मर जाएगा।'" इस आज्ञा के अनुसार, यदि कोई भले और बुरे के ज्ञान के पेड़ का फल खाने से परहेज़ करता, तो वह जीवित रहता। हालाँकि, यदि कोई उस आज्ञा का पालन करने में असफल रहता, तो वह निश्चय मर जाता। यदि हम आज्ञा के अनुसार जीवन जीते हैं, तो हमें आशीषें प्राप्त होती हैं, हम मरते नहीं हैं, और हम अपने जीवन को बनाए रखने में सक्षम होते हैं (अर्थात्, हम जीवित रहने में सक्षम होते हैं)।

प्रेरित पौलुस ने कहा, "यह वास्तव में मेरे लिए मृत्यु ले आई" (रोमियों 7:10)। "आज्ञा... वास्तव में मृत्यु कैसे ले आई?" कृपया रोमियों 7:11 देखें: "क्योंकि पाप ने, आज्ञा के द्वारा अवसर पाकर मुझे धोखा दिया, और उसी के द्वारा मुझे मार डाला।" शैतान ("पाप") ने एक अवसर पाकर (पैर जमाने की जगह ढूँढ़कर), उस आज्ञा का उपयोग धोखा देने के लिए किया। क्योंकि मैं धोखे में आ गया, इसलिए मैंने पाप किया; और परिणामस्वरूप,

इसने मुझे मार डाला। शैतान ने आदम पर हमला किया, उसे पाप के जाल में फँसाने की कोशिश की, और इस प्रकार उसकी मृत्यु का कारण बनने का प्रयास किया। और इसलिए, वह अवसर की ताक में बैठा रहा। आदम ने, उस स्त्री के प्रति अपने प्रेम के कारण जिसे परमेश्वर ने उसे दिया था, संभवतः उसे परमेश्वर की आज्ञाएँ सिखाने में बहुत सावधानी बरती होगी। उन्होंने मिलकर पक्का इरादा किया कि वे परमेश्वर के आदेशों का पालन करते हुए जिएँगे और पाप से दूर रहेंगे। लेकिन, शैतान एक साँप के रूप में आया और हव्वा के पास पहुँचा। उसने उसे लुभाना शुरू कर दिया। उत्पत्ति 3:1–3 में, बाइबल उस बातचीत का ज़िक्र करती है जो साँप और उस औरत के बीच हुई थी। हव्वा ने खुद को साँप के सामने कमज़ोर पड़ने दिया (उत्पत्ति 3:1–3)। नतीजतन, वह साँप के बहकावे में आ गई और परमेश्वर के आदेशों का पालन करने में नाकाम रही (पद 4–5)। इसके परिणामस्वरूप, उसे अपने पाप की सज़ा मिली (पद 7)। शैतान लोगों को पाप करने के लिए लुभाता है, और इस तरह उन्हें अपना गुलाम बना लेता है। झूठे मसीहों और झूठे नबियों को अपने औज़ार के तौर पर इस्तेमाल करके, शैतान परमेश्वर के चुने हुए बच्चों को भी धोखा देने की कोशिश करता है—अगर ऐसा करना मुमकिन होता (मत्ती 24:24)। हमें ऐसे धोखे का शिकार नहीं होना चाहिए; बल्कि, परमेश्वर के वचन को मज़बूती से थामकर, हमें प्रलोभन पर जीत पाने की ताकत के साथ आगे बढ़ना चाहिए।

प्रकाशितवाक्य किताब के अध्याय 2 और 3 में, बाइबल एशिया माइनर (वह इलाका जिसे आज तुर्की के नाम से जाना जाता है) के सात कलीसियाओं के बारे में बताती है। इन सात के अलावा, पवित्र शास्त्र—खास तौर पर पौलुस के पत्रों के ज़रिए—दूसरी कलीसियाओं का भी ज़िक्र करता है, जैसे कि गलातिया, कुलुस्से और फिलिप्पी की कलीसियाएँ। हालाँकि उस ज़माने में और भी कई कलीसियाएँ मौजूद थीं, लेकिन प्रेरित यूहन्ना—जो प्रकाशितवाक्य का लेखक है—ने इन सात को खास तौर पर चुना, क्योंकि वे उस समय की कलीसियाओं के प्रतिनिधि उदाहरण थे। हमारी कलीसिया को भी फिलाडेल्फिया की कलीसिया जैसा बनने की कोशिश करनी चाहिए। फिलाडेल्फिया की कलीसिया एक बहुत ही आशीष पाई हुई कलीसिया थी, जिसकी खासियत उसके सामने रखा गया "खुला दरवाज़ा" था (प्रकाशितवाक्य 3:8)। बाइबल के विद्वान आम तौर पर इस "खुले दरवाज़े" का मतलब सुसमाचार प्रचार और मिशनरी काम का रास्ता समझते हैं। इसके अलावा, फिलाडेल्फिया की कलीसिया इस मामले में भी अनोखी है कि उसे प्रभु से सिर्फ़ तारीफ़ ही मिलती है। सीमित ताकत होने के बावजूद, उस कलीसिया ने प्रभु के वचन को ईमानदारी से माना और उसके नाम से इनकार

नहीं किया (पद 8)। प्रभु ने फिलाडेल्फिया की कलीसिया से कहा, "मैं उन्हें यह एहसास दिलाऊँगा कि मैं तुमसे प्यार करता हूँ" (पद 9)। क्योंकि फिलाडेल्फिया के चर्च ने प्रभु के धीरज भरे वचन का पालन किया था, इसलिए उन्होंने वादा किया कि वे भी उस चर्च की रक्षा करेंगे और उसे परीक्षा की घड़ी से बचाए रखेंगे (पद 10)। उस चर्च को अपना प्रतिफल इसी धरती पर रहते हुए ही मिल चुका था (पद 11: "तुम्हारा मुकुट")। हम सभी को फिलाडेल्फिया के चर्च के विश्वासियों जैसा बनने का प्रयास करना चाहिए। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम सभी एक ऐसा चर्च बनें, जिसे प्रभु से भरपूर प्रशंसा मिले।

आध्यात्मिक नियम

[रोमियों 7:14–20]

कृपया बाइबल में रोमियों 7:14 देखें: "क्योंकि हम जानते हैं कि व्यवस्था तो आत्मिक है, परन्तु मैं शारीरिक हूँ, और पाप के अधीन बिका हुआ हूँ" [(आधुनिक अंग्रेज़ी संस्करण) "हम जानते हैं कि व्यवस्था आत्मिक है, परन्तु मैं शरीर का व्यक्ति बन गया हूँ, और पाप का दास बनकर बिक गया हूँ"]। बाइबल के इस अंश को तीन भागों में बाँटा जा सकता है: (1) "क्योंकि हम जानते हैं कि व्यवस्था तो आत्मिक है" (हम जानते हैं कि व्यवस्था एक आत्मिक चीज़ है); (2) "परन्तु मैं शारीरिक हूँ" ("मैं शरीर का व्यक्ति बन गया हूँ"); और (3) "पाप के अधीन बिका हुआ हूँ" ("पाप का दास बनकर बिक गया हूँ")। आज, मैं इस अंश के तीसरे भाग पर मनन करना चाहूँगा: "पाप के अधीन बिका हुआ हूँ।"

प्रेरित पौलुस ने कहा, "...पाप के अधीन बिका हुआ हूँ" ("पाप का दास बनकर बिक गया हूँ")। यहाँ, "बिका हुआ" शब्द पुराने नियम में भी पाया जा सकता है। कृपया बाइबल में 1 राजा 21:20 देखें: "अहाब ने एलिय्याह से कहा, 'हे मेरे शत्रु, क्या तू ने मुझे पा लिया?' उसने उत्तर दिया, 'हाँ, मैंने तुझे पा लिया है, क्योंकि तू ने यहोवा की दृष्टि में बुराई करने के लिए अपने आप को बेच डाला है।'" दुष्ट राजा अहाब ने अपने आप को पाप के हाथों बेच दिया था। हालाँकि, प्रेरित पौलुस यह नहीं कह रहे हैं कि उन्होंने अपने आप को पाप के हाथों बेचा, बल्कि यह कह रहे हैं कि किसी और ने उन्हें पाप के अधीन बिकवा दिया। कृपया बाइबल में भजन संहिता 51:5 देखें: "देख, मैं अधर्म में उत्पन्न हुआ, और पाप ही में मेरी माता ने मुझे गर्भ में धारण किया" [(आधुनिक अंग्रेज़ी संस्करण) "मैं जन्म लेते ही क्षण से ही एक पापी था, और जिस क्षण मेरी माता ने मुझे गर्भ में धारण

किया, उसी क्षण से मेरे स्वभाव में पाप बसा हुआ था"]। यह भजन पश्चाताप का भजन है जिसे दाऊद ने लिखा था। जहाँ तक इस बात का सवाल है कि दाऊद ने पश्चाताप का यह भजन कब रचा, तो यह उस समय की बात है—जब ऊरिय्याह की पत्नी बतशेबा के साथ व्यभिचार करने के बावजूद, और उसके बाद अपने पाप को छिपाने के प्रयास में वफ़ादार सैनिक ऊरिय्याह की हत्या की साज़िश रचने के बावजूद—वह अभी भी अपने ही अपराध की गंभीरता से बेखबर था। तभी परमेश्वर ने नबी नातान को दाऊद का सामना करने के लिए भेजा, ताकि उसे उसके पाप का एहसास हो और वह पश्चाताप की ओर अग्रसर हो; इसी क्षण दाऊद ने यह पश्चाताप-गीत लिखा—बाइबल का भजन 51। दाऊद ने घोषणा की कि वह स्वयं "अधर्म में जन्मा था"—जिसका अर्थ है कि वह अपने जन्म के बिल्कुल पहले क्षण से ही एक पापी था। ऐसा प्रतीत होता था मानो किसी बाहरी शक्ति ने दाऊद को ये पाप करने के लिए विवश किया हो। रोमियों 7:14 में, प्रेरित पौलुस कहता है, "मैं पाप के अधीन बिक गया हूँ"; इस वाक्यांश का तात्पर्य है कि वह "पाप के सेवक (या दास) के रूप में बेच दिया गया था।" प्रेरित पौलुस के युग के संदर्भ में, ऐसा "पाप का सेवक"—या पाप का दास—अकथनीय कष्टों से भरा जीवन जीने के लिए अभिशप्त होता था। दासों में, जहाँ कुछ लोग ऐसे थे जो दासता में ही जन्मे थे क्योंकि उनके माता-पिता दास थे, वहीं कुछ ऐसे व्यक्ति भी थे जिन्हें दासता में बेच दिया गया था। दासता में बेचे गए इन लोगों के पास न तो कोई अधिकार होते थे और न ही कोई स्वतंत्रता; वे केवल अपने स्वामियों की संपत्ति के रूप में ही अस्तित्व में रहते थे। चूँकि उन्हें पैसे देकर खरीदा गया था, इसलिए उन्हें मात्र संपत्ति—घर के फर्नीचर के समान—ही समझा जाता था, जिसका उपयोग पूरी तरह से स्वामी की इच्छा पर निर्भर होता था; स्वामी जब चाहे उन्हें बेच सकता था या यहाँ तक कि उन्हें त्याग भी सकता था। जब प्रेरित पौलुस ने स्वयं का वर्णन "पाप के दास के रूप में बिके हुए" व्यक्ति के तौर पर किया, तो वह किसी अज्ञानी अपराधी के रूप में नहीं बोल रहा था—ऐसा व्यक्ति जो पाप के स्वभाव या व्यवस्था से अनभिज्ञ हो—बल्कि वह एक विश्वासी पौलुस के रूप में बोल रहा था: प्रभु का एक सेवक और एक मिशनरी, जिसे मसीह ने अन्यजातियों के लिए प्रेरित नियुक्त किया था। वास्तव में, जिस क्षण पौलुस ने रोमियों के नाम पत्र (Epistle) लिखा, वह ठीक वही समय था जब वह अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा में सक्रिय रूप से व्यस्त था। फिर भी, इन सबके बावजूद, उसने यही घोषणा की कि वह "पाप के दास के रूप में बिक गया है।" तो फिर, पौलुस को पाप की दासता में किसने बेचा? वह कोई और नहीं, बल्कि शैतान—अर्थात् इब्लीस—ही था।

यह केवल प्रेरित पौलुस की ही बात नहीं है; हम भी—भले ही हम यीशु में विश्वास करते हैं, हमारे भीतर पवित्र आत्मा का वास है, और हम परमेश्वर से उसके बच्चों के रूप में प्रार्थना करते हुए उसे "अब्बा, पिता" कहकर पुकारते हैं—पाप की दासता के अधीन बिके हुए हैं, ठीक वैसे ही जैसे पौलुस बिका हुआ था। फिर भी, कई बार ऐसा होता है जब हम यह महसूस भी नहीं कर पाते कि हम स्वयं पाप की दासता में बिक चुके हैं। नतीजतन, पाप के गुलाम बन जाने के कारण, हम अक्सर पाप वाले काम करते हैं, बस वहीं चले जाते हैं जहाँ पाप हमें ले जाता है। भले ही हमारा नया जन्म हो चुका है, हम परमेश्वर को "अब्बा, पिता" कहकर पुकारते हैं, और उसकी आराधना करते हैं, फिर भी हम अक्सर अपना जीवन उन लोगों की तरह जीते हैं जो पाप की गुलामी में बिक चुके हैं। बाइबल में 1 तीमुथियुस 1:15 पर नज़र डालें: "यह बात सच है और पूरी तरह से स्वीकार करने योग्य है, कि मसीह यीशु पापियों को बचाने के लिए इस दुनिया में आए—जिनमें मैं सबसे बड़ा पापी हूँ" [(समकालीन कोरियाई बाइबल) "यह एक भरोसेमंद बात है जिसे हर किसी को स्वीकार करना चाहिए: मसीह यीशु पापियों को बचाने के लिए इस दुनिया में आए—और मैं उन सबमें सबसे बुरा हूँ"]। प्रेरित पौलुस ने यह स्वीकारोक्ति—"जिनमें मैं सबसे बड़ा पापी हूँ"—तब की थी जब वह रोम की जेल में कैद थे। दूसरे शब्दों में, रोम की जेल में बंद रहते हुए, इस अनिश्चितता का सामना करते हुए कि उनकी मृत्यु कब हो सकती है (या वे कब शहीद हो सकते हैं), उन्होंने स्वीकार किया कि वे पापियों में सबसे बड़े पापी थे। प्रेरित पौलुस यह घोषणा कर रहे थे कि उनके भीतर का पाप इतनी बड़ी मात्रा में था।

हमारा क्या? क्या हम पाप से मुक्त हैं? क्या हम पाप से बहुत दूर हैं? ठीक इसी पल, हम पाप को बहुत हल्के में ले रहे हैं। यहाँ तक कि जब हम पाप वाले काम करते हैं, तब भी हम इस बात से अनजान रहते हैं कि हम पाप की गुलामी में बिकते जा रहे हैं। क्या हम, असल में, ठीक इसी तरह से पाप के बीचों-बीच अपना जीवन नहीं जी रहे हैं? प्रेरित पौलुस पाप की गंभीरता को समझते थे। उन्हें पूरी तरह से पता था कि वे पाप की गुलामी में बिकते जा रहे हैं। परमेश्वर के प्रेम और अनुग्रह के द्वारा इतनी दूर तक आने के बावजूद, पौलुस ने अपने हृदय में गहरी पीड़ा का अनुभव किया क्योंकि उन्होंने पाया कि वे अभी भी पाप के गुलाम हैं। प्रेरित पतरस को भी इसी तरह के संघर्ष का सामना करना पड़ा। मत्ती 26:74–75 के अनुसार, पतरस ने यीशु को तीन बार नकारा; तीसरी बार तो उन्होंने यहाँ तक कह दिया, "मैं उस आदमी [यीशु] को नहीं जानता," और अपनी बात

के साथ उन्होंने श्राप और कसमें भी खाईं (पद 74)। ठीक उसी पल, एक मुर्गा बांग देने लगा; यीशु के शब्दों को याद करते हुए—"इससे पहले कि मुर्गा बांग दे, तुम मुझे तीन बार नकारोगे"—पतरस बाहर गए और फूट-फूटकर रोए (पद 75)। ऐसा कहा जाता है कि उसके बाद, जब भी पतरस किसी मुर्गे की बांग सुनते थे, तो वे पश्चाताप में अपने घुटनों पर गिर पड़ते थे। तो फिर, हम कहाँ ठहरते हैं? क्या हम पाप के गुलाम होने की अपनी स्थिति को पहचानते हैं, और—प्रेरित पतरस की तरह—क्या हम फूट-फूटकर रोते हैं और पश्चाताप करते हैं? शैतान—वही जिसने अदन के बगीचे में आदम और हव्वा को लुभाया था, और उन्हें पाप तथा गुलामी की ओर धकेला था—लगातार हम पर हमला करने की ताक में रहता है, जब भी उसे कोई मौका मिलता है। शैतान के इन हमलों से लड़ने और विजयी होने के लिए, हमें पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना चाहिए, और वचन तथा प्रार्थना से स्वयं को सुसज्जित करना चाहिए। हम पाप के प्रति सदैव सतर्क रहें, और अंत तक यह अच्छी लड़ाई लड़ते रहें, ताकि हम सभी ऐसे विजयी संत बन सकें जिन्हें हमारे लिए तैयार किया गया धर्म का मुकुट प्राप्त हो (2 तीमुथियुस 4:7–8)।

“वह पाप जो मुझमें बसता है”

[रोमियों 7:17–20]

कृपया रोमियों 7:17 और 20 को देखें: “इसलिए अब, यह मैं नहीं हूँ जो ऐसा करता हूँ, बल्कि वह पाप है जो मुझमें बसता है... अब यदि मैं वह करता हूँ जो मैं नहीं करना चाहता, तो यह मैं नहीं हूँ जो ऐसा करता हूँ, बल्कि वह पाप है जो मुझमें बसता है।” प्रेरित पौलुस इस वाक्यांश— “वह पाप जो मुझमें बसता है”—को दो बार दोहराते हैं। यहाँ, “मुझमें” शब्द प्रेरित पौलुस के लिए ही प्रयुक्त हुआ है। पौलुस किस प्रकार के व्यक्ति थे? वह ऐसे व्यक्ति थे जो बड़े जोश के साथ कलीसिया को सताते थे। कृपया फिलिप्पियों 3:6 और 1 तीमुथियुस 1:13 को देखें: “जोश के मामले में, कलीसिया को सताने वाला...” (फिलिप्पियों 3:6), और “मैं पहले निंदक, सताने वाला और एक उद्दंड व्यक्ति था...” (1 तीमुथियुस 1:13)। दमिश्क जाकर वहाँ के मसीहियों को बंदी बनाने के अपने सफ़र के दौरान, दमिश्क के मार्ग पर उनकी भेंट यीशु से हुई (प्रेरितों के काम 9)। यीशु और शाऊल (पौलुस) के बीच हुई बातचीत पर ध्यान दें:

यीशु: “शाऊल, शाऊल, तुम मुझे क्यों सता रहे हो?” (पद 4)।
शाऊल (पौलुस): “हे प्रभु, आप कौन हैं?” (पद 5)।
यीशु: “मैं यीशु हूँ, जिसे तुम सता रहे हो” (पद 5)।

चूँकि यीशु कलीसिया के सिर हैं, इसलिए शाऊल (पौलुस) द्वारा मसीहियों को सताना, वास्तव में, स्वयं यीशु को सताना ही था। शाऊल (पौलुस) ने यीशु को ग्रहण किया और कलीसिया के सदस्य बन गए। वह अन्यजातियों के लिए प्रेरित बने (रोमियों 11:13; गलतियों 2:8)। अंतियोख में सेवा करते हुए, पौलुस एक मिशनरी बन गए। उन्होंने उस क्षेत्र की यात्रा की जिसे आज यूरोप के नाम से जाना जाता है; वहाँ वह कुरिन्थ में तीन महीने तक रुके, और वहीं उन्होंने रोमियों के नाम पत्र (रोमियों की पत्री) लिखा। प्रेरित पौलुस ने—इस बात को दो बार दोहराते हुए—कहा कि यह "वह पाप है जो मुझमें बसता है"; यहाँ, "मुझमें" शब्द पौलुस के अपने भौतिक शरीर को संदर्भित करता है। कृपया रोमियों 7:18 को देखें: "क्योंकि मैं जानता हूँ कि मुझमें (अर्थात्, मेरे शरीर में) कोई भी अच्छी बात नहीं बसती...।" तो फिर, यह "शरीर" क्या है? कृपया रोमियों 7:14 देखें: "...मैं शारीरिक हूँ, पाप के अधीन बिका हुआ हूँ।" वाक्यांश "मेरे शरीर में" (पद 18) यह दर्शाता है कि पौलुस शरीर के क्षेत्र से संबंधित है। और शरीर से संबंधित होने का अर्थ है एक ऐसा भौतिक शरीर रखना जो प्रलोभन और भ्रष्टाचार के प्रति संवेदनशील हो। आदम के अपराध के कारण, हम भी अपराधी बन गए हैं और भ्रष्ट हो गए हैं। यद्यपि आदम को एक जीवित आत्मा के रूप में बनाया गया था, उसने परमेश्वर के वाचा के वचन की अवज्ञा की, पाप किया, और इस प्रकार पाप का दास बन गया। कृपया 1 कुरिन्थियों 6:19 देखें: "या क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारा शरीर पवित्र आत्मा का मंदिर है, जो तुम में बसा हुआ है, जिसे तुमने परमेश्वर से पाया है...?" बाइबल यह घोषणा करती है कि हमारे शरीर पवित्र आत्मा के मंदिर हैं; दूसरे शब्दों में, यह इस बात की पुष्टि करती है कि पवित्र आत्मा हमारे भीतर निवास करता है। इसलिए, हम संत हैं। कृपया 1 कुरिन्थियों 1:2 और 3:3 देखें: "परमेश्वर की उस कलीसिया के नाम जो कुरिन्थ में है, उन लोगों के नाम जो मसीह यीशु में पवित्र किए गए हैं, और संत होने के लिए बुलाए गए हैं..." (1:2), और "क्योंकि तुम अभी भी शारीरिक हो..." (3:3)। फिर भी, बाइबल यह भी कहती है कि हम अभी भी "शारीरिक" हैं—अर्थात्, "शरीर से संबंधित" हैं। यद्यपि हमारा नया जन्म हो चुका है—और इसलिए, हम संत हैं—फिर भी हम शरीर के क्षेत्र से ही संबंधित हैं। परिणामस्वरूप, ठीक प्रेरित पौलुस की तरह, हम संतों के भौतिक शरीर भी प्रलोभन और भ्रष्टाचार के प्रति संवेदनशील बने रहते हैं।

रोमियों 7:17 और 20 में, जिस शब्द का अनुवाद "बसना" (dwelling) के रूप में किया गया है, उसका यह अर्थ नहीं है कि पाप ने घुसपैठ करने के लिए बस एक अवसर का लाभ उठाया। न ही इसका यह अर्थ है कि पाप एक

आमंत्रित अतिथि के रूप में आया। यह कोई अस्थायी निवास या पट्टे पर ली गई जगह भी नहीं है। "बसने" का अर्थ है निवास करना—स्थायी रूप से रहना। उदाहरण के लिए, जब तक हम इस पृथ्वी पर जीवित हैं, हम यहीं निवास कर रहे हैं (स्थायी रूप से रह रहे हैं)। पवित्र आत्मा हमारे भीतर निवास करती है (1 कुरिन्थियों 6:19), फिर भी पाप भी वहीं निवास करता है (रोमियों 7:17, 20)। जब तक हम इस संसार में जीवित हैं, पाप हमारे भीतर निवास करता है। जब तक प्रभु अपने दूसरे आगमन में वापस नहीं आते, तब तक हम अपने भीतर निवास करने वाले इस पाप को पूरी तरह मिटा नहीं सकते। इसके अलावा, रोमियों 7:17 और 20 में—जहाँ प्रेरित पौलुस "मेरे भीतर निवास करने वाले पाप" की बात करते हैं—हमें रुककर पाप की उत्पत्ति पर विचार करना चाहिए। उत्पत्ति 2:17 में, परमेश्वर ने एक आज्ञा दी—एक आदेश, एक नियम—जिसमें कहा गया था: "तुम भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल मत खाना।" हालाँकि, उस स्त्री ने साँप के प्रलोभन के आगे घुटने टेक दिए; उसने फल तोड़ा और खा लिया—जो उसे खाने में अच्छा, देखने में सुंदर और बुद्धि प्राप्त करने के लिए वांछनीय लगा—और उसमें से कुछ अपने पति, आदम को भी दिया, जो उसके साथ ही था, और उसने भी उसे खा लिया। आज्ञा न मानने के इस कार्य के द्वारा, वे पाप में गिर गए (अध्याय 3)। इसका परिणाम क्या हुआ? रोमियों 5:12 पर दृष्टि डालें: "इसलिए, जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, क्योंकि सब ने पाप किया।" जैसे-जैसे हम पाप की उत्पत्ति पर विचार करते हैं, हमें साथ ही साथ सुसमाचार की उत्पत्ति पर भी विचार करना चाहिए। कृपया बाइबल में उत्पत्ति 3:15 पर दृष्टि डालें: "और मैं तेरे और स्त्री के बीच, और तेरे वंश और उसके वंश के बीच बैर उत्पन्न करूँगा; वह तेरे सिर को कुचलेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा।" यह भविष्यसूचक वचन लगभग 4,000 वर्षों बाद यीशु मसीह द्वारा क्रूस पर पूरा किया गया (यूहन्ना 19:30)। दूसरे शब्दों में, क्रूस पर, यीशु ने साँप के सिर को कुचल दिया (उन्होंने शैतान के सिर को चूर-चूर कर दिया)। इसलिए, उन्होंने हमारे उद्धार को पूरी तरह से पूरा किया। साँप (शैतान) ने यीशु की एड़ी पर चोट की; यानी, शैतान ने यीशु को सलीब पर कीलों से जड़ दिया। कृपया बाइबल में कुलुस्सियों 2:15 देखें: “उन्होंने शासकों और अधिकारियों को निहत्था कर दिया और उन्हें सबके सामने तमाशा बना दिया, सलीब के द्वारा उन पर जीत हासिल की” [(समकालीन अंग्रेजी संस्करण) “और मसीह ने शैतान के अधिकार को कुचल दिया, सलीब के द्वारा जीत हासिल की, और इस तरह अपनी जीत सभी लोगों के सामने प्रकट की”]। यहाँ, “शासकों और अधिकारियों” का तात्पर्य शैतान से है—वह दुष्ट स्वर्गदूत। यीशु ने सलीब पर शैतान को हरा दिया।

पाप की शक्ति विश्वासियों के भीतर ही रहती है। हालाँकि शैतान यीशु द्वारा सलीब पर हरा दिया गया था, फिर भी वह अभी भी मौजूद है। शैतान के चेले—उसकी सेना के हारे हुए बचे हुए सैनिक—अभी भी मौजूद हैं। इसलिए, हम शैतान के खिलाफ एक आध्यात्मिक युद्ध में लगे हुए हैं। कृपया बाइबल में गलतियों 5:17 देखें: "क्योंकि शरीर उन बातों की इच्छा करता है जो आत्मा के विपरीत हैं, और आत्मा उन बातों की जो शरीर के विपरीत हैं। वे एक-दूसरे के विरोध में हैं, ताकि आप वह न कर सकें जो आप करना चाहते हैं।" हम पवित्र आत्मा—जो हमारे भीतर वास करती है—और शरीर की पापपूर्ण इच्छाओं—जो हमारे भीतर रहती हैं—के बीच एक लड़ाई में लगे हुए हैं। इसलिए, हमें लगातार शैतान और उसके चेलों के खिलाफ लड़ना चाहिए। प्रेरित पौलुस यह समझ नहीं पा रहे थे कि वह उन कामों को क्यों नहीं करते थे जिनकी वह इच्छा करते थे, बल्कि इसके बजाय ठीक वही काम करते थे जिनसे वह घृणा करते थे (रोमियों 7:15, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)। उन्होंने वह अच्छा काम नहीं किया जो वह करना चाहते थे; बल्कि, उन्होंने वह बुरा काम किया जो वह नहीं करना चाहते थे (पद 19)। यह देखते हुए कि वह अच्छे काम करने की इच्छा रखते थे, फिर भी उन्हें पूरा करने में असमर्थ थे, उन्हें एहसास हुआ कि उनके पुराने स्वभाव के भीतर कुछ भी अच्छा नहीं था (पद 18, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)। उन्होंने एक बार सोचा था कि व्यवस्था (कानून) ही उन्हें पाप करने के लिए उकसाती है; हालाँकि, यह एहसास होने पर कि ऐसा नहीं था—बल्कि वह इसलिए पाप करते थे क्योंकि शैतान के चेले उनके भीतर वास करते थे—उन्होंने इस बात की पुष्टि की और स्वीकार किया कि व्यवस्था वास्तव में अच्छी है (पद 14)। इसके अलावा, उसने यह भी स्वीकार किया कि उसके अंदर बसा हुआ पाप उसे ऐसे बुरे काम करने के लिए मजबूर कर रहा था, जिन्हें वह करना नहीं चाहता था (पद 17, 20)। जब तक हम इस धरती पर हैं, हमें अपने अंदर मौजूद पाप की शक्ति के खिलाफ लगातार संघर्ष करना होगा। चूंकि यीशु मसीह ने क्रूस पर शैतान का सिर कुचल दिया है और विजय प्राप्त कर ली है (उत्पत्ति 3:15; यूहन्ना 19:30; कुलुस्सियों 2:15), इसलिए हमें विजय के भरोसे से लैस होकर, एक जुझारू विश्वास का जीवन जीना चाहिए। हमें खुद को परमेश्वर के अधीन करना चाहिए और शैतान का विरोध करना चाहिए। यदि हम ऐसा करते हैं, तो शैतान हमसे दूर भाग जाएगा (याकूब 4:7, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)। 1 कुरिन्थियों 15:52–54 में पाए जाने वाले पवित्रशास्त्र के इन शब्दों पर विचार करें: "क्योंकि तुरही बजेगी, और मरे हुए लोग अविनाशी होकर जी उठेंगे, और हम बदल जाएंगे। क्योंकि इस नाशवान शरीर को अविनाशी शरीर धारण करना है, और इस मरणशील शरीर को अमरता धारण करनी है। जब यह नाशवान

शरीर अविनाशी शरीर धारण कर लेगा, और यह मरणशील शरीर अमरता धारण कर लेगा, तब वह वचन पूरा होगा जो लिखा है: 'मृत्यु विजय में समा गई है।'" यह भविष्यवाणी ठीक वैसे ही पूरी होगी जैसा पहले से बताया गया है। इसलिए, यीशु मसीह के क्रूस की विजय पर विश्वास करते हुए, हमें इस आत्मिक युद्ध को पूरी निष्ठा से लड़ना चाहिए—विजय को सुनिश्चित करते हुए—ताकि हम प्रभु के सामने खड़े हो सकें।

ईश्वर का नियम: नियम (1)

[रोमियों 7:21–23]

कृपया बाइबल में रोमियों 7:21–23 देखें: “इसलिए मुझे यह नियम काम करता हुआ मिलता है: हालाँकि मैं अच्छा करना चाहता हूँ, बुराई ठीक मेरे साथ ही मौजूद रहती है। क्योंकि अपने भीतरी अस्तित्व में मैं ईश्वर के नियम में आनंद लेता हूँ; लेकिन मैं अपने शरीर के अंगों में एक और नियम को काम करते हुए देखता हूँ, जो मेरे मन के नियम के विरुद्ध युद्ध छेड़ रहा है और मुझे पाप के उस नियम का बंदी बना रहा है जो मेरे अंगों के भीतर काम कर रहा है।” यहाँ, संयोजक शब्द “इसलिए” (पद 21) पद 20 के पिछले भाग से जुड़ता है, जिसमें कहा गया है: “...अब वह मैं नहीं हूँ जो ऐसा करता हूँ, बल्कि वह पाप है जो मुझमें वास करता है।” इसके अलावा, वाक्यांश “पाप जो मुझमें वास करता है” (पद 20) पाप की शक्ति—विशेष रूप से, शैतान की शक्ति—को संदर्भित करता है। यह सोचना एक गलत धारणा है कि शैतान की शक्ति वास्तव में हमारे *भीतर* रहती है। शैतान की शक्ति हमारे अंदर मौजूद नहीं हो सकती। इसका कारण यह है कि हमारे भीतर केवल एक ही सत्ता वास करती है, और वह है स्वयं ईश्वर।

हमारे ईश्वर सर्वव्यापी ईश्वर हैं। दूसरे शब्दों में, ईश्वर हर जगह मौजूद हैं। ईश्वर की सर्वव्यापकता का अर्थ है कि वे एक ही समय में सभी स्थानों पर मौजूद रहते हैं। यह कहने का अर्थ कि ईश्वर हर जगह मौजूद हैं, यह है कि वे ही हैं जो हर स्थान पर पाए जाते हैं। यीशु ने कहा, “क्योंकि जहाँ दो या तीन मेरे नाम पर एकत्रित होते हैं, वहाँ मैं उनके साथ होता हूँ” (मत्ती 18:20)। चूँकि हमारे प्रभु एक सर्वव्यापी ईश्वर हैं—जो एक ही समय में हर जगह मौजूद रहते हैं—इसलिए वे उन अनगिनत स्थानों पर एक साथ मौजूद रहने में सक्षम हैं जहाँ दो या तीन लोग एकत्रित हुए हैं। हालाँकि, शैतान ऐसा नहीं कर सकता। दूसरे शब्दों में, प्रभु के विपरीत, शैतान एक ही समय में सभी स्थानों पर मौजूद नहीं हो सकता। हालाँकि शैतान स्वयं एक ही समय में हर जगह मौजूद नहीं हो सकता,

फिर भी उसकी शक्ति—जो उसके गुर्गों के माध्यम से प्रयोग की जाती है—हम पर, जो ईश्वर की संतानें हैं, एक बुरा प्रभाव डालती है। इसलिए, ऐसा नहीं है कि शैतान की शक्ति हमारे *भीतर* वास करती है, बल्कि यह है कि उसका बुरा प्रभाव हम *पर* एक हानिकारक असर डालता है।

रोमियों 7:21 में, प्रेरित पौलुस “एक नियम” की बात करते हैं। रोमियों 7:21–23 में "नियम" शब्द पाँच बार आया है: "एक नियम" (पद 21), "परमेश्वर का नियम" (पद 22), "एक दूसरा नियम" (पद 23), "मेरे मन का नियम" (पद 23), और "पाप का नियम" (पद 23)। "नियम" के इन पाँच उल्लेखों को दो समूहों में बाँटा जा सकता है: परमेश्वर का नियम और पाप का नियम। यहाँ, पाप का नियम—जिसमें "एक नियम" (पद 21), "एक दूसरा नियम" (पद 23), और "पाप का नियम" (पद 23) शामिल हैं—शैतान की शक्ति को दर्शाता है। इसके विपरीत, परमेश्वर का नियम—जिसमें "परमेश्वर का नियम" (पद 22) और "मेरे मन का नियम" (पद 23) शामिल हैं—उस नियम को दर्शाता है जो परमेश्वर ने इस्राएलियों को—जिन्हें मिस्र से छुड़ाया गया था—मूसा के द्वारा सीनै पर्वत पर दिया था। रोमियों 7:23 पर विचार करें: "मैं अपने अंगों में एक दूसरा नियम देखता हूँ, जो मेरे मन के नियम के विरुद्ध लड़ता है, और मुझे पाप के नियम का बन्दी बना लेता है, जो मेरे अंगों में है" [(समकालीन कोरियाई संस्करण) "मुझे एहसास हुआ कि मेरे शरीर के भीतर एक दूसरा नियम है; यह मेरे मन के विरुद्ध लड़ता है और मुझे उस पाप का दास बना देता है जो अभी भी मेरे भीतर वास करता है"]। ठीक इसी क्षण, परमेश्वर का नियम और पाप का नियम हमारे शरीरों के भीतर संघर्ष में उलझे हुए हैं। इसके अलावा, यह संघर्ष एक तीव्र आत्मिक युद्ध का रूप लेता है—एक भयंकर आत्मिक लड़ाई जिसे हमें अपनी जान की बाज़ी लगाकर लड़ना होगा।

रोमियों 7:21–23 को पढ़ते समय, प्रेरित पौलुस लगभग ऐसा प्रतीत होता है मानो वह कोई ऐसा व्यक्ति हो जो विजय प्राप्त करने में असफल रहा हो। यदि हम केवल अपनी ही शक्ति पर भरोसा करते हैं, तो हम इस आत्मिक युद्ध में कदापि विजयी नहीं हो सकते; हमारी नियति हार ही है। तो, यह लड़ाई अभी कहाँ हो रही है? यह एक आत्मिक युद्ध है जो वर्तमान में मेरे अपने ही अंगों के भीतर लड़ा जा रहा है (पद 23)। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर का नियम और पाप का नियम वर्तमान में हमारे अपने ही शरीरों के भीतर एक भयंकर आत्मिक लड़ाई में उलझे हुए हैं। यहाँ, "अंग" शब्द का अर्थ केवल बाहरी शारीरिक अंगों—जैसे आँखें, कान, हाथ और पैर—से ही नहीं

है, बल्कि इसका अर्थ आत्मा से जुड़े मनोवैज्ञानिक पहलुओं से भी है (पार्क यून-सन)। कहने का तात्पर्य यह है कि यह भीषण आध्यात्मिक युद्ध न केवल उन स्थानों पर लड़ा जा रहा है जो हमारी भौतिक आँखों को दिखाई देते हैं, बल्कि उन आध्यात्मिक लोकों में भी लड़ा जा रहा है जो हमारी भौतिक आँखों से अदृश्य रहते हैं। प्रेरित पौलुस की यह स्वीकारोक्ति सुनिए: "मैं देखता हूँ कि यह मुझे पाप के नियम द्वारा बंदी बना रहा है" (पद 23)। इस कथन का अर्थ है कि व्यक्ति पाप के नियम द्वारा बंदी बना लिया जाता है। तो क्या इसका मतलब यह है कि जब भी हम कोई पाप करते हैं, तो हम पाप के नियम द्वारा बंदी बना लिए जाते हैं? इस प्रश्न को दूसरे शब्दों में कहें तो: क्या पाप करने का अर्थ यह है कि हम एक बार फिर से पाप के दास बन जाते हैं? बिल्कुल नहीं। हम चाहे कितना भी गंभीर पाप क्यों न कर लें, हम फिर कभी पाप के दास नहीं बन सकते। इसका कारण यह है कि हम पहले ही परमेश्वर की संतान बन चुके हैं। इसलिए, यह कथन पौलुस के व्यक्तिगत अनुभव का वर्णन करता है—कि पाप करने के बाद, उसे ऐसा महसूस होता था मानो उसे घसीटा जा रहा हो, ठीक वैसे ही जैसे पाप के किसी दास को घसीटा जाता है। यही कारण है कि पद 14 के उत्तरार्ध में, पौलुस ने यह भी घोषणा की: "मैं शारीरिक हूँ, और पाप के अधीन बिक चुका हूँ" [(समकालीन कोरियाई बाइबल) "मैं एक शारीरिक व्यक्ति बन गया हूँ, जिसे पाप के दास के रूप में बेच दिया गया है"]।

पवित्र आत्मा के लोगों के रूप में, हमें परमेश्वर के नियम और पाप के नियम के बीच लड़े जा रहे इस भीषण आध्यात्मिक युद्ध में विजयी होकर उभरना चाहिए। धर्म-सुधार आंदोलन (Reformation) के दौरान—जब सुधारक लूथर यह 'अच्छा युद्ध' लड़ रहे थे—तब उन्होंने एक नया भजन (Hymn) रचा (*New Hymnal* में भजन संख्या 585)। इसके दूसरे पद के बोल कुछ इस प्रकार हैं: "यदि मैं केवल अपनी ही शक्ति पर निर्भर रहूँ, तो मेरी हार निश्चित है; / परंतु एक पराक्रमी सेनापति मेरी ओर से युद्ध करने के लिए आगे आता है। / यह सेनापति कौन है? यह प्रभु यीशु मसीह हैं, जो सेनाओं के यहोवा हैं! / उनके विरुद्ध कौन खड़ा हो सकता है? उनकी विजय निश्चित है।" यदि हम केवल अपनी ही शक्ति पर निर्भर रहते हैं, तो इस भीषण आध्यात्मिक युद्ध में हमारी पराजय निश्चित है। हमें अपना संपूर्ण भरोसा प्रभु पर रखना चाहिए; केवल तभी हम इस गहन आध्यात्मिक युद्ध में विजयी हो सकते हैं।

परमेश्वर का नियम: तोराह (2)

[रोमियों 7:24-25]

रोमियों अध्याय 7 बाइबल के सबसे कठिन अध्यायों में से एक है। इसका कारण यह है कि इस बात को लेकर काफी विवाद है कि क्या रोमियों 7 में प्रेरित पौलुस के उस अनुभव का वर्णन है जो उसने यीशु पर विश्वास करने *से पहले* किया था, या उस अनुभव का जो उसने यीशु को स्वीकार करने *के बाद* किया था। व्यक्तिगत रूप से, मेरा मानना है कि रोमियों 7 में पौलुस के उस अनुभव का वर्णन है जो उसने यीशु पर विश्वास करने *के बाद* किया था। यदि ऐसा है, तो क्या रोमियों 7 में चित्रित पौलुस एक नया विश्वासी था, या वह कोई ऐसा व्यक्ति था जिसका विश्वास परिपक्व हो चुका था? कृपया 2 कुरिन्थियों 3:3 देखें: "क्योंकि तुम अभी भी शारीरिक हो। क्योंकि जहाँ तुम्हारे बीच ईर्ष्या, झगड़ा और फूट है, क्या तुम शारीरिक नहीं हो और केवल मनुष्यों की तरह व्यवहार नहीं कर रहे हो?" [(समकालीन अंग्रेजी संस्करण) "तुम अभी भी सांसारिक लोगों की तरह जी रहे हो। क्योंकि तुम्हारे बीच ईर्ष्या और झगड़ा है, तो तुम यह दावा कैसे कर सकते हो कि तुम सांसारिक लोगों की तरह व्यवहार नहीं कर रहे हो?"] यहाँ, कुरिन्थ की कलीसिया के विश्वासियों को लिखते समय, प्रेरित पौलुस ने उनमें से उन लोगों को संबोधित किया जिन्हें उसने "शारीरिक" बताया—यानी, वे लोग जो शरीर के अधीन थे। रोमियों 7 के संदर्भ में, प्रेरित पौलुस कोई नया विश्वासी नहीं था; बल्कि, वह एक परिपक्व मिशनरी था जिसने अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान कुरिन्थ में तीन साल बिताते हुए रोमियों के नाम यह पत्र लिखा था।

कृपया रोमियों 7:25 देखें: "मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ—हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा! तो फिर, अपने मन से मैं स्वयं परमेश्वर के नियम की सेवा करता हूँ, परन्तु शरीर से पाप के नियम की।" प्रेरित पौलुस परमेश्वर के नियम में आनंद लेता था। पद 22 देखें: "क्योंकि मैं अपने आंतरिक मनुष्यत्व के अनुसार परमेश्वर के नियम में आनंद लेता हूँ।" यहाँ, "परमेश्वर का नियम" जिसमें प्रेरित पौलुस आनंद लेता था, विशेष रूप से परमेश्वर द्वारा

दिए गए नियम (तोराह) को संदर्भित करता है। नियम तीन उद्देश्यों की पूर्ति करता है: (1) नियम हमें पाप दिखाता है। कृपया बाइबल में रोमियों 7:7 देखें: "तो फिर हम क्या कहें? क्या व्यवस्था पाप है? कदापि नहीं! सच तो यह है कि यदि व्यवस्था न होती, तो मैं पाप को न जानता। क्योंकि यदि व्यवस्था यह न कहती, 'तू लालच न करना,' तो मैं यह भी न जानता कि लालच वास्तव में क्या है।" [(आधुनिक अंग्रेज़ी संस्करण) "तो क्या व्यवस्था पाप है? कदापि नहीं! यदि व्यवस्था न होती, तो मैं पाप को न जानता। यदि व्यवस्था यह न कहती, 'तू लालच न करना।'"] ...यदि उसने यह न कहा होता, 'तू लालच न करना,' तो मैं यह न जानता कि लालच क्या है]।" (2) व्यवस्था एक शिक्षक (ट्यूटर) का काम करती है। अर्थात्, व्यवस्था हमें यीशु मसीह के पास ले जाती है, जो पाप की समस्या का समाधान करते हैं। बाइबल में गलतियों 3:24 देखें: "इस प्रकार व्यवस्था मसीह के आने तक हमारी रखवाली करने वाली बनी रही, ताकि हम विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाएँ" [(समकालीन कोरियाई बाइबल) "इस प्रकार, व्यवस्था ने एक निजी शिक्षक के रूप में काम किया जो हमें मसीह के पास ले गई, ताकि हम विश्वास के माध्यम से धर्मी के रूप में पहचाने जा सकें"]। (3) व्यवस्था आचरण के उस मापदंड के रूप में कार्य करती है जिसके अनुसार मसीहियों को अपना जीवन जीना चाहिए [व्यवस्था के केल्विन के तीन उपयोग: (1) राजनीतिक उपयोग: पाप पर रोक (निवारण), एक बाध्यकारी कार्य; (2) शैक्षणिक उपयोग: एक दर्पण जैसा कार्य, जो मानवता के पापमय स्वभाव को उजागर करता है; (3) उपदेशात्मक उपयोग: एक मार्गदर्शक, जो दीपक की तरह काम करता है और पवित्रता की ओर मार्ग दिखाता है (इंटरनेट)]।

प्रेरित पौलुस की तरह, हमें भी व्यवस्था में आनंद लेना चाहिए। हमें यीशु की दो महान आज्ञाओं का पालन करने में आनंद लेना चाहिए—जो व्यवस्था की पूर्ति हैं—अर्थात्: "तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से, और अपनी सारी आत्मा से, और अपनी सारी बुद्धि से प्रेम रखना," और "तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना" (मत्ती 22:37, 39) [(रोमियों 13:10b) "... "इसलिए प्रेम ही व्यवस्था की पूर्ति है।" प्रेरित पौलुस को व्यवस्था में आनंद मिलता था (रोमियों 7:22), फिर भी उसने अपने ही अंगों में पाप की व्यवस्था को अपनी बुद्धि की व्यवस्था—जो कि परमेश्वर की व्यवस्था है—के विरुद्ध लड़ते हुए और उसे पाप की व्यवस्था का बंदी बनाते हुए पाया (पद 23)। दूसरे शब्दों में, क्योंकि पाप की व्यवस्था ने प्रेरित पौलुस पर आक्रमण किया, इसलिए वह उसके विरुद्ध लड़ने के लिए विवश हो गया। हालाँकि, उसे यह एहसास हुआ कि पाप की व्यवस्था वास्तव में उसे बंदी

बना रही थी। उदाहरण के लिए, पौलुस परमेश्वर की व्यवस्था—विशेष रूप से यीशु की दोहरी आज्ञा—का पालन करना चाहता था, यानी परमेश्वर से प्रेम करना और परिणामस्वरूप, अपने पड़ोसी से प्रेम करना; फिर भी, क्योंकि पाप की व्यवस्था के आक्रमण इतने तीव्र थे, उसने पाया कि वह अपने पड़ोसी से प्रेम नहीं कर रहा था, बल्कि उससे घृणा कर रहा था। इस प्रकार, पौलुस ने वेदना में पुकारते हुए कहा: "हाय! मैं कैसा अभागा मनुष्य हूँ! मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा?" (पद 24)। यहाँ, "अभागा मनुष्य" उस व्यक्ति को संदर्भित करता है जो पीड़ित है, दुखी है, या वास्तव में एक अत्यंत विकट स्थिति में है। पौलुस ने इस प्रकार विलाप किया क्योंकि उसने पहचान लिया था कि उसके भीतर की पाप की व्यवस्था परमेश्वर की व्यवस्था के विरुद्ध लड़ रही थी, और इस प्रकार उसे पाप का दास बनाए हुए थी। इसके अलावा, चूँकि पाप का दास होने का अंतिम परिणाम मृत्यु है, इसलिए पौलुस ने पुकारते हुए कहा, "मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा?" (पद 24)। यह जानते हुए कि वह स्वयं को इस "मृत्यु की देह" से नहीं छुड़ा सकता—और यह महसूस करते हुए कि कोई और भी उसे नहीं छुड़ा सकता—पौलुस ने वह वेदनापूर्ण पुकार लगाई: "हाय! मैं कैसा अभागा मनुष्य हूँ!" पौलुस की तरह, जब हम ईमानदारी से स्वयं को देखते हैं, तो हम भी ऐसे लोग हैं जो विलाप की ऐसी पुकारें निकाले बिना नहीं रह सकते। हम स्वयं को सबसे अधिक पवित्र कब मानते हैं? क्या यह भोर का समय होता है? क्या यह आधी रात का समय होता है? जब हम परमेश्वर की उपस्थिति में अकेले होते हैं? जब हम प्रार्थना कर रहे होते हैं? जब हम आराधना कर रहे होते हैं? जब हम स्तुति के गीत गा रहे होते हैं? क्या हम सचमुच यह दावा कर सकते हैं कि, उन क्षणों में भी, हम पवित्रता के ऐसे समय का अनुभव करते हैं जो पूरी तरह से दोषरहित और निष्कलंक हो? हम पाते हैं कि हम बार-बार असफल हो जाते हैं। परिणामस्वरूप, हमारे पास इस स्वीकारोक्ति के अलावा कोई विकल्प नहीं बचता: "मैं असहाय हूँ।"

यह बात न केवल हमारे लिए, बल्कि बाइबल में बताए गए नबी एलिय्याह के लिए भी सच थी। वह राजा अहाब के पास गए और निडर होकर घोषणा की, “जिस इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के सामने मैं खड़ा हूँ, उसके जीवन की शपथ, इन वर्षों में न तो ओस पड़ेगी और न ही वर्षा होगी, सिवाय मेरे वचन के अनुसार” (1 राजा 17:1)। फिर, तीसरे वर्ष में, परमेश्वर के उस वचन का पालन करते हुए जो उन्हें मिला था—जिसमें कहा गया था, “जाओ, अहाब के सामने उपस्थित हो, और मैं पृथ्वी पर वर्षा भेजूँगा” (18:1)—वह राजा अहाब के पास गए (पद 2, 17)। इसके अलावा, कर्मेल पर्वत पर, नबी एलिय्याह ने 850 नबियों की एक संयुक्त सेना का सामना किया और उन्हें

हराया: इनमें बाल के 450 नबी और अशेरा के 400 नबी शामिल थे, जो ईज़ेबेल की मेज़ पर भोजन करते थे (पद 19; विजय का वर्णन पद 21–38 में है)। तब एलिय्याह उन नबियों को कीशोन नाले के पास ले गए और उनमें से हर एक को मार डाला (पद 40)। यह सुनकर, रानी ईज़ेबेल ने एलिय्याह के पास एक दूत भेजा और यह धमकी दी: "देवता मेरे साथ वैसा ही करें, और उससे भी बढ़कर करें, यदि मैं कल इसी समय तक तुम्हारे प्राणों को उनमें से किसी एक के प्राणों जैसा न कर दूँ" (19:2)। भयभीत होकर, एलिय्याह भागते हुए बेर्शेबा तक पहुँच गए (पद 3), जहाँ वह एक झाड़ीदार पेड़ के नीचे बैठ गए और परमेश्वर से प्रार्थना की कि वह मर जाएँ (पद 4)। क्या नबी एलिय्याह का यह रूप, रोमियों 7:24 में चित्रित प्रेरित पौलुस से बहुत अधिक मिलता-जुलता नहीं है?

परमेश्वर बचाता है! क्योंकि प्रेरित पौलुस स्वयं को इस "मृत्यु के शरीर" से नहीं छुड़ा सकते थे—और क्योंकि कोई और भी उन्हें इससे नहीं छुड़ा सकता था—इसलिए उन्होंने वेदना में भरकर पुकारा, "हाय! मैं कैसा अभागा मनुष्य हूँ!" फिर भी, उन्होंने हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद किया (पद 25)। इसका कारण यह है कि परमेश्वर ने हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा पौलुस को बचाया है। इस प्रकार, हमारे परमेश्वर वह परमेश्वर हैं जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें बचाते हैं। उत्पत्ति 3:15 के वचनों के अनुसार, हमारे प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर उस प्राचीन सर्प—शैतान—का सिर कुचल दिया। शैतान पर विजय प्राप्त करने के बाद, हमारे प्रभु यीशु मसीह ने हमारे समस्त पापों का बोझ अपने ऊपर ले लिया; और अपना रक्त बहाकर तथा क्रूस पर अपने प्राणों की आहुति देकर, उन्होंने हमें हमारे हर एक पाप से क्षमा प्रदान की। अतः, यीशु मसीह के क्रूस के पुण्य-प्रताप से हमें मुक्ति प्राप्त हुई है। परिणामस्वरूप, हम परमेश्वर के प्रति अपना धन्यवाद, स्तुति और आराधना अर्पित किए बिना नहीं रह सकते। अपनी मुक्ति के इस सुदृढ़ विश्वास के साथ, और कृतज्ञ हृदय से विजय के गीत गाते हुए, हमें इस दुष्ट संसार में एक विजयी जीवन व्यतीत करना चाहिए।

त्रिएक परमेश्वर द्वारा उद्धार (1)

[रोमियों 8:1-4]

रोमियों 8:1-4 के वचनों पर आधारित होकर, मैं "त्रिएक परमेश्वर द्वारा उद्धार" शीर्षक के अंतर्गत परमेश्वर के वचन पर मनन करना चाहूँगा। परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र (यीशु), और परमेश्वर पवित्र आत्मा मिलकर एक ही परमेश्वर—त्रिएक परमेश्वर—का निर्माण करते हैं। रोमियों 8:1 में, पवित्रशास्त्र "मसीह यीशु" (परमेश्वर पुत्र) की बात करता है; पद 2 में, यह "पवित्र आत्मा" (परमेश्वर पवित्र आत्मा) का उल्लेख करता है; और पद 3 में, यह "परमेश्वर" (परमेश्वर पिता) का संदर्भ देता है। आज, "त्रिएक परमेश्वर द्वारा उद्धार" के विभिन्न पहलुओं में से, मैं अपने विचारों को परमेश्वर पुत्र—यीशु—द्वारा लाए गए उद्धार पर केंद्रित करना चाहूँगा।

रोमियों 8:1 पर दृष्टि डालें: "इसलिए अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर कोई दंड की आज्ञा नहीं है।" "मसीह यीशु" परमेश्वर का पुत्र है [जिसे रोमियों 1:2, 3 में "उसका पुत्र" कहा गया है]। यीशु—परमेश्वर पिता का एकलौता पुत्र—एक मनुष्य बन गया [जिसे पद 3 में "शरीर में" आने के रूप में संदर्भित किया गया है]। यूहन्ना 1:14 पर दृष्टि डालें: "वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच डेरा किया..." यहाँ, "वचन" का तात्पर्य यीशु से है—वह एकलौता पुत्र जो स्वयं परमेश्वर है (जैसा कि पद 1 में कहा गया है)। यीशु, वह एकलौता पुत्र, दाऊद के वंश से जन्मा था (रोमियों 1:3)। दूसरे शब्दों में, यीशु—परमेश्वर का एकलौता पुत्र—दाऊद के वंशज, कुँवारी मरियम के द्वारा इस संसार में आया (मत्ती 1:20; लूका 1:69)। इसके अतिरिक्त, यीशु—परमेश्वर पिता का एकलौता पुत्र—पवित्रता की आत्मा के अनुसार मरे हुओं में से जिलाया गया (रोमियों 1:4)। कहने का तात्पर्य यह है कि, यीशु मसीह पवित्र आत्मा की सामर्थ्य द्वारा मरे हुओं में से पुनर्जीवित हुआ। पुनर्जीवित होकर और स्वर्गारोहण करके, यीशु मसीह अब परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान होकर हमारे लिए मध्यस्थता करता

है। रोमियों 8:1 की शुरुआत करते हुए, प्रेरित पौलुस ने "इसलिए" (therefore) नामक संयोजक शब्द का प्रयोग किया। यह संयोजक उस अंश को, जो इससे पहले आता है, उस अंश से जोड़ता है जो इसके बाद आता है। इस बारे में कई अलग-अलग व्याख्याएँ हैं कि पिछला अंश ठीक कहाँ से शुरू होता है; उदाहरण के लिए, एक व्याख्या यह मानती है कि यह रोमियों 3:21 से 7:25 तक फैले भाग से जुड़ा हुआ है। यह संयोजक बाइबल के तीन विशिष्ट वचनों के साथ एक संबंध स्थापित करता है: (1) (रोमियों 5:6) "क्योंकि जब हम अभी भी कमज़ोर थे, तो सही समय पर मसीह अधर्मियों के लिए मर गया।" जब हम इतने कमज़ोर थे कि कोई भी अच्छा काम करने में पूरी तरह असमर्थ थे, तब परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह ने हमारी जगह—हम जो अधर्मी थे—क्रूस पर अपने प्राण दे दिए, और इस प्रकार हमारा उद्धार किया। इसलिए, "अब उन लोगों के लिए कोई दंड नहीं है जो मसीह यीशु में हैं" (8:1)। (2) (रोमियों 5:8) "परन्तु परमेश्वर हमारे प्रति अपने प्रेम को इस प्रकार प्रकट करता है कि जब हम अभी भी पापी थे, तब मसीह हमारे लिए मर गया।" एक मनुष्य, आदम की आज्ञा-उल्लंघन के कारण, पाप संसार में प्रवेश कर गया; परिणामस्वरूप, हम सब पाप के प्रभाव में आ गए, और हर व्यक्ति पापी बन गया (पद 12)। फिर भी, जब हम अभी भी पापी थे, तब परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह ने हमारे लिए अपने प्राण दे दिए, और इस प्रकार हमारा उद्धार सुनिश्चित किया। इसलिए, "अब उन लोगों के लिए कोई दंड नहीं है जो मसीह यीशु में हैं" (8:1)। (3) (रोमियों 5:10) "क्योंकि यदि जब हम शत्रु थे, तब उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा परमेश्वर के साथ मेल हो गया, तो अब जब हमारा मेल हो चुका है, तो उसके जीवन के द्वारा हमारा उद्धार और भी अधिक निश्चित रूप से होगा।" जब, हमारे पाप के कारण, हम परमेश्वर के शत्रु के रूप में खड़े थे, तब परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह ने प्रायश्चित के रूप में क्रूस पर अपने प्राण दे दिए, और इस प्रकार हमारा परमेश्वर के साथ मेल करा दिया। मेल हो जाने के बाद, यीशु मसीह के पुनरुत्थान के द्वारा हमारा उद्धार और भी अधिक निश्चित रूप से होगा (भविष्य का उद्धार)। इसलिए, अब उन लोगों के लिए कोई दंड नहीं है जो मसीह यीशु में हैं (8:1)। इस प्रकार—क्योंकि पुत्र, यीशु मसीह, हमें बचाने के लिए क्रूस पर मर गया, जब हम अभी भी कमज़ोर थे, जब हम अभी भी पापी थे, और जब हम अभी भी शत्रु थे—इसलिए अब उन लोगों के लिए बिल्कुल भी कोई दंड नहीं है जो मसीह यीशु में हैं! रोमियों 8:1 में, प्रेरित पौलुस "अब" शब्द का प्रयोग करते हैं; यहाँ, "अब" एक ऐसी स्थिति को दर्शाता है जो पहले की स्थिति से बिल्कुल अलग है। यह रोमियों 7:25 से पहले की हर चीज़ से पूरी तरह भिन्न किसी बात की ओर संकेत करता है। उदाहरण के लिए, यह रोमियों 7:24–25 के विपरीत है: "हाय, मैं कैसा अभागा मनुष्य हूँ! मुझे इस मृत्यु के शरीर से कौन छुड़ाएगा? मैं अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का

धन्यवाद करता हूँ! सो मैं आप ही अपने मन से तो परमेश्वर की व्यवस्था का सेवक हूँ, परन्तु शरीर से पाप की व्यवस्था का।" इस प्रकार, यह "अभागा मनुष्य" होने का, या "इस मृत्यु के शरीर" में रहने का समय नहीं है (7:24); बल्कि—क्योंकि यीशु मसीह हमारी मुक्ति के लिए तब मरे "जब हम अभी भी निर्बल थे," "जब हम अभी भी पापी थे," और "जब हम अभी भी शत्रु थे" (5:6–8)—"अब" हम वे लोग हैं जो मसीह यीशु में हैं (8:1)।

बाइबल के रोमियों 8:1 में, प्रेरित पौलुस उन लोगों के बारे में बात करते हैं जो "मसीह यीशु में" हैं। अगर हम इस अंश के मूल यूनानी पाठ को देखें, तो यह वाक्यांश बहुवचन में दिखाई देता है: "वे लोग जो मसीह यीशु में हैं।" यहाँ, "वे लोग जो मसीह यीशु में हैं" उन लोगों को संदर्भित करता है जिन्हें बचाया गया है—विशेष रूप से, वे लोग जो यीशु मसीह के साथ एक हो गए हैं। बाइबल यीशु मसीह के साथ इस मिलन का वर्णन करने के लिए रूपकों का उपयोग करती है। ऐसा ही एक रूपक है दाखलता और डालियों का। रोमियों 15:5–6 पर विचार करें: "दाखलता मैं हूँ; तुम डालियाँ हो। यदि तुम मुझ में बने रहो और मैं तुम में, तो तुम बहुत फल लाओगे; क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते। यदि कोई मुझ में बना नहीं रहता, तो वह उस डाली के समान है जिसे फेंक दिया जाता है और वह सूख जाती है; ऐसी डालियों को उठाकर आग में फेंक दिया जाता है और वे जल जाती हैं।" यीशु मसीह दाखलता हैं, और हम डालियाँ हैं। डालियों के रूप में, हम यीशु मसीह—दाखलता—के साथ एक हैं, और इसलिए, उनके बिना, हम कुछ भी नहीं कर सकते। एक और रूपक है सिर और शरीर का। इफिसियों 1:22–23 पर विचार करें: "और परमेश्वर ने सब कुछ उसके पैरों के नीचे कर दिया और उसे कलीसिया के लिए सब कुछ का सिर नियुक्त किया, जो उसका शरीर है, उसकी परिपूर्णता है जो हर तरह से सब कुछ भर देता है।" यीशु मसीह "कलीसिया के सिर" हैं, और हम—उनके साथ एक होकर—मिलकर "उनका शरीर" बनाते हैं। बपतिस्मा का रूपक भी है। कृपया रोमियों 6:3–4 देखें: "या क्या तुम नहीं जानते कि हम में से जितने लोगों ने मसीह यीशु में बपतिस्मा लिया, उन सब ने उसकी मृत्यु में बपतिस्मा लिया? इसलिए बपतिस्मा के द्वारा मृत्यु में हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जिस तरह पिता की महिमा के द्वारा मसीह मरे हुओं में से जिलाए गए, उसी तरह हम भी जीवन की नई चाल चलें।" प्रेरित पौलुस ने यीशु मसीह के साथ हमारे मिलन को समझाने के लिए बपतिस्मा का उपयोग किया। हम वे लोग हैं जिन्होंने मसीह यीशु में बपतिस्मा लिया है।

दूसरे शब्दों में, हम वे लोग हैं जिन्होंने यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान में बपतिस्मा लिया है—या उनके साथ एक हो गए हैं। हम वे लोग हैं जो मसीह यीशु में मर गए हैं और फिर से जी उठे हैं।

रोमियों 8:1 में, प्रेरित पौलुस घोषणा करते हैं: “इसलिए अब कोई दंड नहीं है।” यहाँ, शब्द "दोष-निर्णय" (condemnation) एक कानूनी शब्द है। यदि कोई न्यायाधीश किसी को दोषी ठहराता है, तो वह व्यक्ति दोषी है; यदि कोई न्यायाधीश किसी को दोषी नहीं ठहराता, तो वह व्यक्ति दोषी नहीं है (निर्दोष है)। इसलिए, इसका अर्थ यह है कि उन लोगों के लिए बिल्कुल भी कोई दोष-निर्णय नहीं है जो अब मसीह यीशु के साथ एक हो गए हैं—वह जिसने कमज़ोरों, पापियों और अपने शत्रुओं को बचाने के लिए क्रूस पर अपने प्राण दिए। यह शब्द "दोष-निर्णय" रोमियों की पुस्तक में सात बार आया है [चार बार क्रिया के रूप में और तीन बार संज्ञा के रूप में]। रोमियों 8:1 में, "दोष-निर्णय" का प्रयोग एक संज्ञा के रूप में किया गया है। कृपया रोमियों 5:16 देखें: "और यह वरदान उस चीज़ जैसा नहीं है जो उस एक व्यक्ति के द्वारा आई जिसने पाप किया था; क्योंकि एक ओर तो एक ही अपराध के कारण न्याय का निर्णय हुआ, जिसका परिणाम दोष-निर्णय था; परन्तु दूसरी ओर, अनेक अपराधों के बावजूद यह वरदान मिला, जिसका परिणाम धर्मी ठहराया जाना था।" एक मनुष्य—आदम—की आज्ञा-उल्लंघन के कारण, सभी लोग दोष-निर्णय के अधीन आ गए। आदम को अदन की वाटिका से निकाल दिया गया था क्योंकि उसने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया और 'भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष' का फल खा लिया। इस कार्य के द्वारा, संसार में पाप का प्रवेश हुआ, और हम सब पापी बन गए। परिणामस्वरूप—न केवल 'आदि पाप' (original sin) का, बल्कि हमारे अतीत, वर्तमान और भविष्य के प्रत्येक व्यक्तिगत पाप का बोझ उठाते हुए—यीशु मसीह क्रूस पर मर गए, और उनके बलिदान के द्वारा, हम धर्मी ठहराए गए हैं (अर्थात् परमेश्वर हमें निष्पाप मानते हैं)। कृपया बाइबल में रोमियों 5:18 देखें: "इसलिए, जिस प्रकार एक मनुष्य के अपराध के कारण सभी मनुष्यों पर दोष-निर्णय आया, उसी प्रकार एक मनुष्य के धर्मी कार्य के द्वारा सभी मनुष्यों को यह वरदान मिला, जिसका परिणाम जीवन के लिए धर्मी ठहराया जाना है।" एक मनुष्य—आदम—के एक ही अपराध के कारण, बहुत से लोग दोष-निर्णय की ओर ले जाए गए। तथापि, उस एक मनुष्य—यीशु मसीह (अंतिम आदम)—के एक ही धर्मी कार्य के द्वारा, बहुत से लोग धर्मी ठहराए गए हैं और उन्होंने अनंत जीवन प्राप्त किया है। इस प्रकार, यीशु मसीह द्वारा दिया गया उद्धार निश्चित और पूर्ण है। रोमियों 8:1 के कोरियाई अनुवाद

में, शब्द "कभी नहीं" (never) वाक्य के बिल्कुल अंत में आता है; तथापि, जब मूल यूनानी पाठ को देखा जाता है, तो यह वास्तव में वाक्य के बिल्कुल आरंभ में आता है। इसके अलावा, जहाँ कोरियाई पाठ एक ऐसे वाक्यांश के साथ समाप्त होता है जिसका अर्थ है "कोई नहीं है," वहीं मूल पाठ बस इतना कहता है कि "कोई दोष नहीं है।" यह विशिष्ट शब्दावली दो बातों पर ज़ोर देती है: शब्द "कभी नहीं" इस बात को रेखांकित करता है कि "बिल्कुल भी कोई दोष नहीं है," जबकि शब्द "कोई नहीं" इस निश्चितता पर ज़ोर देता है कि हमने वास्तव में उद्धार प्राप्त कर लिया है। कोई भी—बिल्कुल कोई भी नहीं—हम पर, जो मसीह यीशु में हैं, दोष नहीं लगा सकता। कृपया रोमियों 8:33–34 देखें: "परमेश्वर के चुने हुओं पर दोष कौन लगाएगा? परमेश्वर ही है जो निर्दोष ठहराता है। वह कौन है जो दोषी ठहराएगा? ..." कोई भी व्यक्ति या कोई भी चीज़ हमें मसीह के प्रेम से कभी अलग नहीं कर सकती। पद 35 और 39 देखें: "मसीह के प्रेम से हमें कौन अलग करेगा? क्या क्लेश, या संकट, या सताव, या अकाल, या नग्नता, या खतरा, या तलवार? ... न ऊँचाई, न गहराई, और न ही सारी सृष्टि में कोई और चीज़ हमें परमेश्वर के उस प्रेम से अलग कर सकेगी जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है।"

हम स्वयं को नहीं बचा सकते थे, लेकिन यीशु मसीह ने हमें बचाया है। जब हम अभी भी कमज़ोर थे, जब हम अभी भी पापी थे, और जब हम परमेश्वर के शत्रु थे, तब यीशु मसीह ने हमारे सारे पापों को अपने ऊपर ले लिया और हमें बचाने के लिए क्रूस पर अपने प्राण दे दिए। इसलिए, अब उन लोगों के लिए कोई दोष नहीं है जो मसीह यीशु में हैं! (रोमियों 8:1) हमें विश्वास के साथ अपने उद्धार की पूर्णता की ओर आगे बढ़ना चाहिए—अपने उद्धार के आश्वासन को मज़बूती से थामे हुए और उसके आशीषों में आनंद मनाते हुए। हमें ऐसा जीवन जीना चाहिए जो उन लोगों के लिए उचित हो जिन्होंने उद्धार प्राप्त किया है।

त्रिएक परमेश्वर द्वारा उद्धार (2)

[रोमियों 8:1-4]

आज, मैं पवित्र आत्मा परमेश्वर द्वारा लाए गए उद्धार पर मनन करना चाहूँगा—विशेष रूप से, "त्रिएक परमेश्वर द्वारा उद्धार" के व्यापक विषय के एक भाग के रूप में। कृपया रोमियों 8:2 देखें: "क्योंकि मसीह यीशु में जीवन के आत्मा की व्यवस्था ने तुझे पाप और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया है।" क्या पवित्र आत्मा परमेश्वर है? मैं यह प्रश्न इसलिए पूछता हूँ क्योंकि कुछ लोग दावा करते हैं कि पवित्र आत्मा परमेश्वर नहीं है। वे ज़ोर देकर कहते हैं कि पवित्र आत्मा केवल "परमेश्वर की शक्ति" या "परमेश्वर की ऊर्जा" है। हालाँकि, बाइबल घोषणा करती है कि पवित्र आत्मा वास्तव में परमेश्वर है। कृपया प्रेरितों के काम 5:3-4 देखें: "परन्तु पतरस ने कहा, 'हनन्याह, शैतान ने तेरे मन में यह क्यों डाला है कि तू पवित्र आत्मा से झूठ बोले और भूमि की कीमत में से कुछ रख छोड़े? जब तक वह तेरे पास रही, क्या वह तेरी अपनी न थी? और जब वह बिक गई, तब भी क्या वह तेरे ही अधिकार में न थी? तू ने अपने मन में ऐसी बात क्यों सोची? तू ने मनुष्यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से झूठ बोला है।'" हनन्याह ने अपनी पत्नी सफीरा के साथ मिलकर षड्यंत्र रचा, ज़मीन का एक टुकड़ा बेचा, लेकिन चुपके से उसकी कीमत का एक हिस्सा अपने पास रख लिया, और केवल शेष राशि ही प्रेरितों के पास लाया। उस क्षण, पतरस ने हनन्याह से कहा, "तू ने पवित्र आत्मा से झूठ बोला है" (पद 3) और "तू ने मनुष्यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से झूठ बोला है" (पद 4)। इन पदों के आधार पर, बाइबल स्पष्ट रूप से पुष्टि करती है कि पवित्र आत्मा परमेश्वर है।

पवित्र आत्मा सर्वव्यापी है—वह हर जगह मौजूद है। कृपया 1 कुरिन्थियों 6:19 देखें: "क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारा शरीर पवित्र आत्मा का मन्दिर है, जो तुम में बसा हुआ है और जिसे तुम ने परमेश्वर से पाया है, और तुम अपने नहीं हो?" जब हमने यीशु पर अपना विश्वास रखा, तो परमेश्वर ने हमें पवित्र आत्मा दिया (रोमियों 5:5)। इसलिए, हममें से प्रत्येक के लिए जो यीशु में विश्वास करता है, पवित्र आत्मा हमारे भीतर वास करता है। दूसरे

शब्दों में, परमेश्वर ने हमें पवित्र आत्मा का मन्दिर बनाया है। परिणामस्वरूप—क्योंकि हममें से हर कोई पवित्र आत्मा का मंदिर है—यीशु में विश्वास करने वाले लोग पूरी दुनिया में फैले हुए हैं। इसका मतलब है कि पवित्र आत्मा ही परमेश्वर है, जो हर जगह मौजूद है। हालाँकि, शैतान, जो एक सृजित प्राणी है, हर जगह मौजूद नहीं हो सकता। बेशक, हम भी—जो सृजित प्राणी हैं—हर जगह मौजूद नहीं हो सकते। जब सभी चीज़ें बनाई गईं, तब पवित्र आत्मा परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र (यीशु) के साथ मौजूद था। दूसरे शब्दों में, पवित्र आत्मा ही सृष्टिकर्ता है। बाइबल में उत्पत्ति 1:1–2 देखें: "शुरू में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी को बनाया। पृथ्वी बेढब और खाली थी, और गहरे पानी की सतह पर अंधेरा छाया हुआ था; और परमेश्वर की आत्मा पानी की सतह पर घूम रही थी।" यहाँ, "परमेश्वर की आत्मा" का मतलब पवित्र आत्मा से है। सृष्टि का यह काम केवल परमेश्वर ही कर सकता है; कोई सृजित प्राणी सृष्टि नहीं कर सकता। क्योंकि पवित्र आत्मा ही परमेश्वर है, इसलिए उसने परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र के साथ मिलकर आकाश और पृथ्वी को बनाया। पवित्र आत्मा ही परमेश्वर है, जिसका दर्जा परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र के बराबर है। बाइबल में 2 कुरिन्थियों 13:13 देखें: "प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह, और परमेश्वर का प्रेम, और पवित्र आत्मा की संगति, आप सभी के साथ हो।" इस अंश का इस्तेमाल मुख्य रूप से पादरी लोग आराधना सभाओं के आखिर में आशीर्वाद के तौर पर करते हैं। इस आशीर्वाद में, हमें "प्रभु यीशु मसीह," "परमेश्वर," और "पवित्र आत्मा" के ज़िक्र मिलते हैं। एक ऐसे अंश के तौर पर जो त्रिएक परमेश्वर को दिखाता है, यह साबित करता है कि पवित्र आत्मा ही परमेश्वर है, जो परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र के बराबर है।

पवित्र आत्मा किस तरह का परमेश्वर है? बाइबल में रोमियों 8:2 देखें: "क्योंकि मसीह यीशु में जीवन की आत्मा के नियम ने तुम्हें पाप और मृत्यु के नियम से आज़ाद कर दिया है।" पवित्र आत्मा जीवन का परमेश्वर है। दूसरे शब्दों में, पवित्र आत्मा ही जीवन है। पवित्र आत्मा खुद ही जीवन है। परमेश्वर पिता, जो अनंत काल से खुद से ही अस्तित्व में है, जीवन है। परमेश्वर पुत्र, यीशु ने ऐलान किया, "मैं ही मार्ग, सत्य और जीवन हूँ" (यूहन्ना 14:6)। पवित्र आत्मा ही जीवन है (रोमियों 8:2)। पवित्र आत्मा वह परमेश्वर है जिसने जीवन की रचना की। पवित्र आत्मा वह परमेश्वर है जो जीवन प्रदान करता है। आइए, हम *मॉडर्न पीपल्स बाइबल* में रोमियों 8:2 पर दृष्टि डालें: "यह पवित्र आत्मा की उस सामर्थ्य को संदर्भित करता है, जो मसीह यीशु के द्वारा जीवन प्रदान करती है...।"

पवित्र आत्मा वह परमेश्वर है जो हमें न केवल शारीरिक जीवन, बल्कि आत्मिक जीवन भी प्रदान करता है। पवित्र आत्मा हमें बचाता है। हमें बचाते समय, पवित्र आत्मा उस उद्धार के आधार पर कार्य करता है जिसे यीशु मसीह ने हमारे लिए पूरा किया था—अर्थात्, "मसीह यीशु में" (पद 2)। क्योंकि यीशु मसीह हमारे लिए तब मरे जब हम अभी भी निर्बल और अधर्मी थे, ठीक नियुक्त समय पर (5:6); क्योंकि यीशु मसीह हमारे लिए तब मरे जब हम अभी भी पापी थे (पद 8); और क्योंकि उन्होंने अपनी मृत्यु के द्वारा हमें परमेश्वर के साथ तब मिलाया जब हम उनके शत्रु थे (पद 10)—इसलिए अब, हममें से जो लोग मसीह यीशु में हैं, उनके लिए किसी भी प्रकार का कोई दण्ड नहीं है (8:1)। यीशु मसीह के उद्धार की इसी नींव पर पवित्र आत्मा हमें बचाता है।

रोमियों 8:2 में, प्रेरित पौलुस घोषणा करते हैं: "क्योंकि जीवन के आत्मा की व्यवस्था ने तुम्हें पाप और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया है।" यहाँ, "व्यवस्था" शब्द का अर्थ शक्ति से है। पवित्र आत्मा के पास शक्ति है। इसलिए, यीशु मसीह द्वारा पूरी की गई मुक्ति के आधार पर, पवित्र आत्मा हमारी मुक्ति लाने में सक्षम है। संक्षेप में कहें तो, पवित्र आत्मा की शक्ति सर्वशक्तिमत्ता है। पवित्र आत्मा ही सर्वशक्तिमान परमेश्वर है। पवित्र आत्मा उस मुक्ति को हम पर लागू करता है जिसे यीशु मसीह ने लगभग 2,000 साल पहले पूरा किया था, और इस प्रकार उसे हमारा अपना बना देता है (हमारे पापों की क्षमा और हमारी मुक्ति)। "पाप और मृत्यु की व्यवस्था"—यानी, पाप और मृत्यु की शक्ति (बल)—भी बहुत प्रबल है। कोई भी इस शक्ति (बल) पर विजय पाने में सक्षम नहीं है। परिणामस्वरूप, यीशु पर विश्वास करने से पहले, हम सभी पाप के गुलाम थे, और पाप तथा मृत्यु की उस शक्ति के अधीन जी रहे थे। हालाँकि, परमेश्वर पवित्र आत्मा ने हमें पाप की गुलामी से बचाया, हमें मुक्त किया, और हमें स्वतंत्र कर दिया (पद 2)। कुलुस्सियों 1:13–14 पर विचार करें: "उसी ने हमें अंधकार के अधिकार से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में पहुँचाया। जिसमें हमें उसके लहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त हुई है।" [(समकालीन अंग्रेजी संस्करण) "परमेश्वर ने हमें अंधकार की शक्ति से बचाया और हमें अपने प्रिय पुत्र के राज्य में स्थानांतरित कर दिया।"] "उसी में हमें उसके लहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त हुई है।"

हमें पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना चाहिए और आत्मा के अनुसार जीवन जीना चाहिए। केवल तभी हम पाप और मृत्यु की शक्ति पर विजय पाते हुए, एक विजयी जीवन जी सकते हैं। परमेश्वर की शक्ति उन लोगों में प्रकट होती

है जो पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होते हैं। प्रेरित पतरस, जो पवित्र आत्मा से परिपूर्ण थे, ने लोगों के शासकों और बुजुर्गों के सामने साहसपूर्वक यीशु मसीह की घोषणा की। प्रेरितों के काम 4:8 देखें: “तब पतरस ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर उनसे कहा: ‘हे लोगों के शासकों और बुजुर्गों...’” फिर भी, जब पतरस पवित्र आत्मा से परिपूर्ण नहीं थे, तो उन्होंने तीन बार यीशु का इनकार किया था। प्रेरितों के काम 4:31 पर ध्यान दें: “जब उन्होंने प्रार्थना की, तो वह जगह जहाँ वे मिल रहे थे, हिल उठी। और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए और परमेश्वर का वचन निडर होकर सुनाने लगे।” यदि हम पवित्र आत्मा से भरे हुए हैं, तो हमें सामर्थ्य मिलेगी और हम यीशु के गवाह बनेंगे। प्रेरितों के काम 1:8 पर ध्यान दें: “परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा, तो तुम सामर्थ्य पाओगे; और तुम यरूशलेम, और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।” यदि हम पवित्र आत्मा से भरे हुए हैं, तो हम किसी भी कठिनाई, विपत्ति, बाधा या सताव के बीच भी—एक शहीद के विश्वास के साथ—यीशु मसीह के सुसमाचार का निडर होकर प्रचार करेंगे। यदि हम पवित्र आत्मा से भरे हुए हैं, तो हम आत्मा का फल उत्पन्न करेंगे। गलतियों 5:22–23 पर ध्यान दें: "पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम है। ऐसी बातों के विरोध में कोई व्यवस्था नहीं है।" जब तक हम इस पृथ्वी पर पवित्र आत्मा से भरे हुए और उसके नौ प्रकार के फल उत्पन्न करते हुए जीवन बिताते हैं, तब जब प्रभु इस संसार में लौटकर आएंगे, तो हम एक महिमामय देह धारण करेंगे और स्वर्ग में चले जाएंगे; वहाँ, हम पवित्र आत्मा के फल को पूर्णता के साथ उत्पन्न करेंगे और प्रभु के साथ अनंतकाल तक जीवित रहेंगे।

त्रिएक परमेश्वर का उद्धार (3)

[रोमियों 8:1-4]

कृपया बाइबल में रोमियों 8:3-4 देखें: "क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर की कमज़ोरी के कारण न कर सकी, वह परमेश्वर ने किया: उसने अपने ही पुत्र को पापमय शरीर के रूप में, पाप के कारण भेजकर, शरीर में पाप को दोषी ठहराया; ताकि व्यवस्था की धार्मिक माँग हममें पूरी हो जाए, जो शरीर के अनुसार नहीं, बल्कि आत्मा के अनुसार चलते हैं।" हालाँकि कोरियाई बाइबल अनुवाद की शुरुआत "व्यवस्था" वाक्यांश से होती है, लेकिन यदि हम मूल यूनानी पाठ को देखें, तो इसकी शुरुआत वास्तव में "क्योंकि" शब्द से होती है। यहाँ, संयोजक शब्द "क्योंकि" पिछले पदों—रोमियों 8:1-2—से जुड़ने का काम करता है और जो बात अभी-अभी कही गई है, उसकी विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत करता है। पद 2 देखें: "क्योंकि मसीह यीशु में जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने तुम्हें पाप और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया है।" यीशु पर विश्वास करने से पहले—जब हम पाप और मृत्यु की व्यवस्था (या शक्ति) द्वारा बंदी और गुलाम बनाए गए थे—ठीक वही समय था जब हम अपने अपराधों और पापों में मरे हुए थे (इफिसियों 2:1)। दूसरे शब्दों में, हम ऐसे लोग थे जो आत्मिक रूप से मरे हुए थे, और हम पाप और मृत्यु की व्यवस्था के गुलाम थे। उस समय, हम इस संसार की रीति के अनुसार चलकर, अवज्ञा और पाप में जीवन बिताते थे (पद 2)। कहने का तात्पर्य यह है कि हम उस संसार के चलन और तरीकों का अनुसरण करते थे जो परमेश्वर के बिना अस्तित्व में था। उस समय, हम "हवा के अधिकार के सरदार" (पद 2) का अनुसरण करते थे। विशेष रूप से, हम दुष्ट आत्मा (शैतान) का अनुसरण करते थे—वह आत्मा जो अब अवज्ञा के पुत्रों के बीच कार्य कर रही है (पद 2)। हालाँकि, अपने उस महान

प्रेम के कारण जिससे उसने हमसे प्रेम किया—वह जो दया में धनी है—परमेश्वर ने हमें, जो अपने अपराधों में मरे हुए थे, मसीह के साथ जीवित किया (पद 4-5)। संक्षेप में, हम परमेश्वर के अनुग्रह से बचाए गए हैं (पद 5)।

प्रेरित पौलुस कहता है: "क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर की कमज़ोरी के कारण न कर सकी..." (रोमियों 8:3)। बात यह है कि व्यवस्था हमें नहीं बचा सकती। इसका कारण शरीर की कमज़ोरी है। चूँकि हमारे शरीर में न तो अच्छा करने की क्षमता है और न ही परमेश्वर की महिमा करने की योग्यता, इसलिए व्यवस्था हमें बचाने में असमर्थ है। हालाँकि व्यवस्था हमें नहीं बचा सकती, फिर भी परमेश्वर हमें बचाने में समर्थ है ["परमेश्वर ने ऐसा किया" (पद 3)]। तो फिर, परमेश्वर ने हमें कैसे बचाया? रोमियों 8:3 के पहले भाग पर फिर से ध्यान दें: "पाप के कारण।" हम पाप और मृत्यु की व्यवस्था (शक्ति) के अधीन बंदी थे। पाप और मृत्यु की इस व्यवस्था से हमारी मुक्ति के लिए, एक प्रायश्चितकारी बलिदान की आवश्यकता थी। इसलिए, प्रायश्चित के रूप में परमेश्वर को एक बलिदान चढ़ाया जाना ज़रूरी था। इसके अलावा, क्योंकि हम परमेश्वर के शत्रु थे (5:10), इसलिए उसके साथ हमारा मेल-मिलाप कराने के लिए एक मेल-मिलाप के बलिदान की आवश्यकता थी। परमेश्वर पिता ने अपने ही पुत्र—यीशु पुत्र—को उस प्रायश्चितकारी बलिदान और उस मेल-मिलाप के बलिदान, दोनों के रूप में सेवा करने के लिए नियुक्त किया ["उसका अपना पुत्र" (8:3)]। यहाँ, "उसका अपना पुत्र" का तात्पर्य 'एकलौते पुत्र' से है। यह यीशु मसीह—उस एकलौते पुत्र—की बात करता है, जो परमेश्वर पिता से अद्वितीय रूप से उत्पन्न हुआ था, जो परमेश्वर के बराबर है, और जिसका परमेश्वर पिता के साथ एक अद्वितीय संबंध है। हालाँकि हमने परमेश्वर के अनुग्रह से उद्धार पाया है—उसके पुत्र और पुत्रियाँ बनकर, उसे "अब्बा, पिता" कहकर पुकारते हुए (पद 15; गलातियों 4:6), और उसके वारिस बनकर (रोमियों 4:16; 8:17; इफिसियों 3:6; तीतुस 3:7)—फिर भी हम परमेश्वर के गोद लिए हुए संतान हैं (रोमियों 8:15, 23); हम वह 'एकलौता पुत्र' नहीं हैं जिसका उसके साथ वह अद्वितीय संबंध है, जैसा कि यीशु का है। इसलिए, हम उस प्रायश्चितकारी बलिदान या उस मेल-मिलाप के बलिदान के रूप में सेवा नहीं कर सकते। केवल वह 'एकलौता पुत्र', यीशु मसीह ही, वह प्रायश्चितकारी बलिदान और वह मेल-मिलाप का बलिदान है (रोमियों 3:25; 1 यूहन्ना 2:2; 4:10)।

पिता परमेश्वर ने अपने इकलौते पुत्र, यीशु मसीह को—जो प्रायश्चित बलिदान और पाप-निवारक दोनों का काम करते हैं—पापी शरीर के रूप में भेजा (रोमियों 8:3)। यहाँ, "भेजा" शब्द इकलौते पुत्र (अवतारित प्रभु) के आगमन को दर्शाता है। इस संसार में उनके आगमन के साथ ही, 'वचन' देह बन गया (यूहन्ना 1:14)। इस संदर्भ में, "वचन" कोई और नहीं, बल्कि स्वयं परमेश्वर ही हैं (पद 1)। परमेश्वर के पुत्र के रूप में, इकलौते यीशु का जन्म—शारीरिक रूप से—दाऊद के वंश में हुआ था (रोमियों 1:3)। यीशु, जो कि 'वचन' हैं—अर्थात्, यीशु जो स्वयं परमेश्वर हैं—का जन्म कुँवारी मरियम से हुआ था, जो दाऊद के ही वंशज थीं। यीशु की वंशावली पर एक नज़र डालने से पता चलता है कि दाऊद का एक पुत्र नाथन था (लूका 3:31); नाथन उन चार पुत्रों (शम्मुआ, शोबाब, नाथन और सुलैमान) में से एक था, जिन्हें बतशेबा—जो हित्ती ऊरिय्याह की पत्नी थी (2 शमूएल 11:3)—ने दाऊद के लिए जन्म दिया था (1 इतिहास 3:5)। यीशु की माता, कुँवारी मरियम, नाथन की वंशज थीं, और इस प्रकार वे दाऊद के ही वंश से थीं। निष्पाप और इकलौते पुत्र, यीशु, पाप-रहित हैं (इब्रानियों 4:15) क्योंकि उनका गर्भधारण, पापी कुँवारी मरियम के भीतर, जीवन-दायक पवित्र आत्मा के द्वारा हुआ था (मत्ती 1:18, 20)। इसलिए, यीशु वह निष्पाप 'वचन' हैं जो देह बन गए। यद्यपि यीशु वास्तव में वह हैं जो पाप-रहित हैं (इब्रानियों 4:15), फिर भी पिता परमेश्वर ने अपने पुत्र को पापी शरीर के रूप में भेजा (रोमियों 8:3)। स्पष्ट है कि जहाँ एक ओर पवित्रशास्त्र—विशेष रूप से यूहन्ना 1:14 और रोमियों 1:3—इस बात की पुष्टि करते हैं कि यीशु का शरीर निष्पाप था, वहीं रोमियों 8:3 उनका वर्णन "पापी शरीर के रूप में" आने वाले के तौर पर करता है। यीशु थके हुए थे (यूहन्ना 4:6) और भूखे भी थे (मरकुस 11:12)। यीशु ही वह हैं जिनकी हर तरह से परीक्षा ली गई, ठीक वैसे ही जैसे हमारी ली जाती है (इब्रानियों 4:15)। फिर भी, वे डगमगाए नहीं, बल्कि उन्होंने उन सभी परीक्षाओं पर विजय प्राप्त की। यीशु निष्पाप हैं (पद 15)। यीशु मसीह का जन्म एक निष्पाप शरीर में हुआ था; फिर भी, उन्हें प्रलोभन का सामना करना पड़ा—हालाँकि उन्होंने उसके आगे घुटने नहीं टेके—जब वे पापमय शरीर के रूप में मौजूद थे, और वे विजयी होकर निकले। इस निष्पाप पुत्र, यीशु पर, परमेश्वर पिता ने पाप को दंडित किया [“उसने शरीर में पाप को दंडित किया” (रोमियों 8:3)]। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर पिता ने अपने एकलौते पुत्र, यीशु को, पाप-बलि और प्रायश्चित—दोनों बनाया। 2 कुरिन्थियों 5:21 देखें: “परमेश्वर ने उसे, जो पाप नहीं जानता था, हमारी खातिर पाप बना दिया, ताकि उसमें हम परमेश्वर की धार्मिकता बन सकें”

[(समकालीन कोरियाई बाइबल) “परमेश्वर ने हमारे पापों का बोझ मसीह पर डाल दिया—जो पाप नहीं जानता था—ताकि, मसीह में, हमें परमेश्वर के सामने धर्मी के रूप में स्वीकार किया जा सके”]। यशायाह 53:6 देखें: “हम सब, भेड़ों की तरह, भटक गए हैं, हममें से हर एक अपने-अपने मार्ग पर चला गया है; और प्रभु ने उस पर हम सब के अधर्म का बोझ डाल दिया है।” यूहन्ना 1:29 देखें: “अगले दिन यूहन्ना ने यीशु को अपनी ओर आते देखा और कहा, ‘देखो, परमेश्वर का मेम्ना, जो जगत के पाप को उठा ले जाता है!’” परमेश्वर पिता ने निष्पाप यीशु के व्यक्तित्व में पाप को दंडित किया, जिससे उन्हें हमारे सभी पापों का पूरा बोझ उठाना पड़ा। इसके अलावा, पाप को दंडित करते हुए, परमेश्वर पिता ने यह विधान किया कि निष्पाप यीशु क्रूस पर हमारे सभी पापों का पूरा दंड चुकाएंगे। इसलिए, एकलौते पुत्र, यीशु मसीह ने हमारे सभी पापों को उठाया और हर प्रकार की पीड़ा सहन की—यहाँ तक कि परमेश्वर पिता द्वारा त्याग दिए जाने की हद तक—और हमें पाप से मुक्त करने के लिए अपनी जान दे दी।

परमेश्वर पिता ने अपने एकलौते और निष्पाप पुत्र, यीशु मसीह को इस संसार में भेजा; उन्होंने उसे प्रायश्चित और मेल-मिलाप के लिए एक बलि के रूप में नियुक्त किया, और उसे क्रूस पर मरने दिया, जिससे उसने हमारे सभी पापों का बोझ उठाया। इस प्रकार, परमेश्वर पिता ने हमारे सभी पापों का प्रायश्चित किया, हमें अपने साथ मिलाप कराया, और हमें अनंत जीवन प्रदान किया, जिससे हमारा उद्धार हुआ। कृपया बाइबल में यूहन्ना 3:16 देखें: “क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।” परमेश्वर से यह अद्भुत और उद्धार देने वाला प्रेम पाकर, हमें उसका धन्यवाद करना चाहिए, और उसकी स्तुति तथा आराधना करनी चाहिए। इसके अलावा, प्रभु की महान आज्ञा के अनुसार, हमें अपने प्रभु परमेश्वर से अपने पूरे हृदय, अपनी पूरी आत्मा और अपने पूरे मन से प्रेम करना चाहिए, और अपने पड़ोसियों से अपने समान ही प्रेम करना चाहिए (मत्ती 22:37, 39)।

त्रिएक परमेश्वर का उद्धार (4)

[रोमियों 8:1–4]

कृपया रोमियों 8:4 देखें: “ताकि व्यवस्था की धार्मिक माँग हममें पूरी हो जाए, जो शरीर के अनुसार नहीं, बल्कि आत्मा के अनुसार चलते हैं” [(समकालीन अंग्रेज़ी संस्करण) “यह हममें व्यवस्था की माँगों को पूरा करने के लिए है, जो शरीर के अनुसार नहीं, बल्कि पवित्र आत्मा के अनुसार जीते हैं”]। यदि आप लैव्यव्यवस्था अध्याय 16 देखें, तो बाइबल प्रायश्चित के दिन के बारे में बात करती है। यह वह दिन है जिस पर प्रायश्चित का बलिदान—जो वर्ष में केवल एक बार चढ़ाया जाता है—प्रस्तुत किया जाता है। जब महायाजक (हारून) (पद 3) प्रायश्चित का बलिदान चढ़ाने के लिए—वर्ष में एक बार—परमपवित्र स्थान में प्रवेश करता था, तो वह बलि के चढ़ावे के रूप में सेवा करने के लिए दो नर बकरों को चुनता था (पद 5)। फिर उसने उन्हें मिलाप के तम्बू के प्रवेश द्वार पर प्रभु के सामने रखा (पद 7) और दोनों बकरों के लिए चिट्ठियाँ डालीं: एक चिट्ठी प्रभु के लिए और दूसरी अज़ाज़ेल के लिए (पद 8)। यहाँ, "अज़ाज़ेल" एक यौगिक शब्द प्रतीत होता है जो *azal* ("चले जाना") और *ez* ("बकरा") से बना है, जिसका अर्थ है "चले जाना" या "दूर भेज देना।" वैकल्पिक रूप से, इसका अर्थ "बहुत दूर भेज देना" या "पूरी तरह से हटा देना" हो सकता है। चूँकि "अज़ाज़ेल" बकरा—बलि का बकरा—उस जानवर का प्रतीक था जिसने इस्राएल के पापों और अपराधों को अपने ऊपर ले लिया था और जिसे निर्जन जंगल में भगा दिया गया था, इसलिए कहा जाता है कि जब कोई याजक किसी पहाड़ पर चढ़कर यह पुष्टि कर लेता था कि बकरा दूर कहीं ओझल हो गया है, तो महायाजक घोषणा करता था, "तुम्हारे पाप ओझल हो गए हैं" (इंटरनेट स्रोत)। कृपया भजन संहिता 103:12 देखें: “जैसे पूरब पश्चिम से दूर है, वैसे ही उसने हमारे अपराधों को हमसे दूर कर दिया है।” यशायाह 38:17 देखें: “देखो, यह मेरे अपने ही भले के लिए था कि मुझे इतनी बड़ी पीड़ा सहनी पड़ी; परन्तु तूने प्रेमपूर्वक मेरी आत्मा को विनाश के गड्ढे से बचाया है, क्योंकि तूने मेरे सारे पापों को अपनी पीठ के पीछे

फेंक दिया है।" यिर्मयाह 31:34 पर ध्यान दें: "अब वे अपने पड़ोसी को नहीं सिखाएँगे, न ही एक-दूसरे से कहेंगे, 'यहोवा को जानो,' क्योंकि वे सब मुझे जानेंगे, उनमें से छोटे से लेकर बड़े तक," यहोवा की यह वाणी है। "क्योंकि मैं उनकी दुष्टता को क्षमा कर दूँगा और उनके पापों को फिर कभी याद नहीं करूँगा।" महायाजक हारून ने यहोवा के लिए चिट्ठी द्वारा चुने गए बकरे को पाप-बलि के रूप में चढ़ाया; हालाँकि, अज़ाज़ेल के लिए चिट्ठी द्वारा चुने गए बकरे को यहोवा के सामने जीवित रखा गया, प्रायश्चित करने के लिए इस्तेमाल किया गया, और फिर अज़ाज़ेल के लिए जंगल में भेज दिया गया (पद 9–10)। यहोवा के लिए निर्धारित बकरे को तुरंत मार डाला गया; महायाजक उसका लहू लेता, 'परम पवित्र स्थान' में प्रवेश करता, और वहाँ लहू छिड़कता (पद 15)। यहाँ, यहोवा के लिए बकरा परमेश्वर के साथ संबंध स्थापित करने के लिए दी गई एक भेंट का प्रतिनिधित्व करता है; यह पाप के दंड से मुक्ति का संकेत है—एक ऐसा बलिदान जो लहू बहाने के द्वारा एक ही बार में और हमेशा के लिए पूरा हो गया। संक्षेप में, यह 'धर्मी ठहराए जाने' के कार्य का प्रतीक है—जिसके द्वारा परमेश्वर हमें, जो पापी हैं, धर्मी घोषित करता है—यह कार्य यीशु मसीह के उस बहुमूल्य लहू के द्वारा पूरा हुआ जो क्रूस पर बहाया गया (इंटरनेट स्रोत)। अज़ाज़ेल के लिए बकरे के संबंध में, महायाजक हारून अपने दोनों हाथ उसके सिर पर रखता, और इस्राएल के लोगों के सभी पापों को स्वीकार करता; फिर वह उन पापों को बकरे के सिर पर डाल देता और उसे एक नियुक्त व्यक्ति को सौंप देता ताकि उसे जंगल में भेज दिया जाए (पद 21)। जब वह बकरा—जो इस्राएल के लोगों के सभी पापों को ढो रहा था—निर्जन जंगल में पहुँच जाता, तो उसे छोड़ दिया जाता (पद 22)। यहाँ, अज़ाज़ेल के लिए बकरा शैतान—अर्थात् इब्लीस—के साथ हमारे संबंध को तोड़ने के लिए दी गई एक भेंट को संदर्भित करता है; यह पाप के अस्तित्व और प्रभाव से मुक्ति का संकेत है, और यह एक ऐसी बलि-प्रक्रिया का प्रतिनिधित्व करता है जो धीरे-धीरे और क्रमिक रूप से आगे बढ़ती है। संक्षेप में, यह 'पवित्रीकरण' की सेवकाई को दर्शाता है—जो पवित्र आत्मा द्वारा निर्देशित होती है—जिसके माध्यम से परमेश्वर हमें व्यावहारिक रूप से और निर्णायक रूप से पाप से अलग होने में समर्थ बनाता है (इंटरनेट स्रोत)।

परमेश्वर प्रेम है (1 यूहन्ना 4:8, 16)। प्रेम के इस परमेश्वर ने—"जब हम अभी भी कमज़ोर थे" (रोमियों 5:6), "जब हम अभी भी पापी थे" (पद 8), और "जब हम परमेश्वर के शत्रु थे" (पद 10)—अपने इकलौते पुत्र, यीशु मसीह

को इस संसार में भेजा (पद 9, 10, 14) ताकि हमें उद्धार प्रदान कर सके। उसने उसे प्रायश्चित के रूप में (1 यूहन्ना 4:10) और संसार के उद्धारकर्ता के रूप में (पद 14) भेजा; हमारे खातिर क्रूस पर अपने प्राण देकर, उसने हमें मसीह के साथ मिलकर नया जीवन दिया—हम जो अपने पापों के कारण आत्मिक रूप से मृत थे (इफिसियों 2:4, 5)। परमेश्वर पिता ने हमें पाप से, मृत्यु से, और अनंत विनाश से बचाया है। हम न्यायसंगत रूप से अनंत दंड का सामना करने और हमेशा के लिए एक अनंत नरक में रहने के लिए निर्धारित थे; फिर भी, परमेश्वर पुत्र, यीशु की क्रूस पर हुई प्रायश्चितकारी मृत्यु के द्वारा, उसने हमें बचाया और हमें अनंत जीवन प्रदान किया। तो फिर, जो लोग बचाए गए हैं—जो मसीह यीशु में हैं और जिन्होंने परमेश्वर पुत्र (रोमियों 8:1), परमेश्वर पवित्र आत्मा (पद 2), और परमेश्वर पिता (पद 3–4) का उद्धार करने वाला प्रेम प्राप्त किया है—उन्हें अपना जीवन कैसे जीना चाहिए?

सबसे पहले, हमें शरीर की अभिलाषाओं के अनुसार नहीं जीना चाहिए।

रोमियों 8:4 पर ध्यान दें: “जो शरीर के अनुसार नहीं चलते” [(आधुनिक लोगों के लिए बाइबल) “यानी, वे लोग जो शरीर के अनुसार नहीं जीते”]। यहाँ, शरीर के अनुसार जीने का मतलब है इस दुनिया के चलन को अपनाना और “हवा के अधिकार के सरदार” (इफिसियों 2:2) का अनुसरण करना। *आधुनिक लोगों के लिए बाइबल* के अनुसार, शरीर के अनुसार जीने का अर्थ है दुनिया के बुरे तरीकों पर चलना और शैतान की आज्ञा मानकर जीना, जो स्वर्ग के नीचे के क्षेत्र पर राज करता है (पद 2)। यह उन जीवनों का वर्णन करता है जो हमने उद्धार पाने से पहले जिए थे—ऐसे जीवन जिनमें हम आज्ञा न मानने और पाप के कारण आत्मिक रूप से मरे हुए थे (पद 1)—जिनकी पहचान थी अपनी शारीरिक इच्छाओं के अनुसार जीना और वह सब करना जिसकी हमारे शरीर और मन को लालसा थी (पद 3)। बाइबल हमें बताती है कि हम—वे उद्धार पाए हुए लोग जो मसीह यीशु में हैं और जिन्होंने त्रिएक परमेश्वर का उद्धार करने वाला प्रेम पाया है (रोमियों 8:1–3)—इस शरीर के अनुसार नहीं जीना चाहिए (पद 4)। हमें शरीर के कामों का अभ्यास नहीं करना चाहिए। गलातियों 5:19–21 पर ध्यान दें: “अब शरीर के काम स्पष्ट हैं: व्यभिचार, अशुद्धता, कामुकता, मूर्तिपूजा, टोना-टोटका, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध

के आवेश, प्रतिद्वंद्विता, फूट, गुटबंदी, डाह, पियक्कड़पन, रंगरलियाँ, और ऐसी ही अन्य बातें। मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ, जैसा मैंने पहले भी दी थी, कि जो लोग ऐसे काम करते हैं, वे परमेश्वर के राज्य के वारिस नहीं होंगे।"

दूसरे, हमें पवित्र आत्मा के अनुसार जीना चाहिए।

रोमियों 8:4 पर ध्यान दें: "हमारे लिए जो आत्मा के अनुसार चलते हैं" [(आधुनिक लोगों के लिए बाइबल) "हमारे लिए जो पवित्र आत्मा के अनुसार जीते हैं"]। यहाँ, "आत्मा के अनुसार चलना" का अर्थ है पवित्र आत्मा के अनुरूप जीवन जीना। कृपया गलातियों 5:16, 22–23 देखें: "इसलिए मैं कहता हूँ, आत्मा के अनुसार चलो, और तुम शरीर की इच्छाओं को पूरा नहीं करोगे... परन्तु आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वासयोग्यता, नम्रता और संयम है। ऐसी बातों के विरुद्ध कोई व्यवस्था नहीं है।" जिस उद्देश्य के लिए त्रिएक परमेश्वर ने हमें बचाया—ताकि हम अब शरीर के अनुसार नहीं, बल्कि केवल पवित्र आत्मा के अनुसार जी सकें—वह हमारे भीतर व्यवस्था की आवश्यकताओं को पूरा करना है (रोमियों 8:4)। यहाँ, "व्यवस्था की आवश्यकताओं को पूरा करने" का अर्थ है, हमें यीशु की दोहरी आज्ञा के आज्ञापालन में जीने के योग्य बनाना। कृपया लूका 10:27 देखें: "उसने उत्तर दिया, 'तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन, और अपनी सारी आत्मा, और अपनी सारी शक्ति, और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख'; और, 'अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।'" कृपया रोमियों 13:8–10 देखें: "आपस में प्रेम करने के निरन्तर ऋण को छोड़कर, किसी का कुछ भी उधार मत रखो, क्योंकि जो दूसरे से प्रेम रखता है, उसने व्यवस्था पूरी कर ली है। ये आज्ञाएँ कि, 'तू व्यभिचार न करना,' 'तू हत्या न करना,' 'तू चोरी न करना,' 'तू लालच न करना,' और जो कोई भी अन्य आज्ञा हो, उन सबका सारांश इस एक आज्ञा में है: 'अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।' प्रेम पड़ोसी को कोई हानि नहीं पहुँचाता; इसलिए प्रेम ही व्यवस्था की पूर्ति है।" उन लोगों के रूप में जो सच्ची स्वतंत्रता का आनन्द लेते हैं—जिन्हें पाप और मृत्यु की व्यवस्था से छुड़ाया गया है (पद 2) और जिन्हें त्रिएक परमेश्वर के उद्धार के कारण किसी भी प्रकार की दण्ड-आज्ञा का सामना नहीं करना पड़ता (रोम 8:1)—हमें यीशु की दोहरी आज्ञा के अनुसार जीना चाहिए: प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन, आत्मा और शक्ति के साथ प्रेम करना, और अपने पड़ोसियों से अपने समान प्रेम करना। कृपया रोमियों 5:5 देखें: "और आशा हमें लज्जित नहीं करती, क्योंकि परमेश्वर का प्रेम पवित्र

आत्मा के द्वारा, जो हमें दिया गया है, हमारे हृदयों में उण्डेला गया है।" पवित्र आत्मा के द्वारा, जो उसने हमें दिया है, परमेश्वर ने अपना प्रेम हमारे हृदयों में उण्डेला है। जितना अधिक हम प्रेम करते हैं, उतना ही अधिक परमेश्वर अपना प्रेम हम पर उण्डेलता रहता है, और हमें छलक उठने तक भर देता है। हमारे भीतर वास करने वाला पवित्र आत्मा लगातार प्रेम का फल उत्पन्न करता रहता है (गलातियों 5:22)।

ठीक इसी क्षण—जैसा कि यीशु ने भविष्यवाणी की थी—अधर्म बढ़ रहा है, जिसके कारण बहुत से लोगों का प्रेम ठंडा पड़ता जा रहा है (मत्ती 24:12)। आज बहुत से लोग प्रेम की गहरी कमी से पीड़ित हैं। त्रिएक परमेश्वर के उद्धारकारी प्रेम को प्राप्त करने वालों के रूप में, हमें उसी प्रेम का उपयोग करके उन लोगों तक पहुँचने और उन्हें सँवारने के लिए बुलाया गया है, जो इस कमी से जूझ रहे हैं। हमें यीशु मसीह के सुसमाचार की घोषणा करनी चाहिए—जो परमेश्वर की वह सामर्थ्य है जो विश्वास करने वाले हर व्यक्ति के लिए उद्धार लाती है (रोमियों 1:16)। इसके अलावा, अपने स्वयं के उद्धार के भरोसे के साथ, हमें उनकी आत्माओं के उद्धार के लिए परमेश्वर के सामने मध्यस्थता करनी चाहिए (भजन संहिता 55:1, 16–18)।

आत्मा का मन

[रोमियों 8:5-8]

कृपया रोमियों 8:5-8 पर ध्यान दें: "क्योंकि जो लोग शरीर के अनुसार जीवन बिताते हैं, वे शरीर की बातों पर मन लगाते हैं; परन्तु जो लोग आत्मा के अनुसार जीवन बिताते हैं, वे आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं। क्योंकि शरीर पर मन लगाना मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है। क्योंकि शरीर पर मन लगाना परमेश्वर से बैर रखना है; क्योंकि वह न तो परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन है, और न हो ही सकता है। और जो लोग शारीरिक दशा में हैं, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते।" यहाँ जो शब्द बार-बार आते हैं, वे हैं "शरीर" (5 बार) और "आत्मा" (3 बार)। इस अनुच्छेद में, हम विशेष रूप से पद 5 और 6 पर मनन करेंगे।

रोमियों 8:5-6 को देखने पर, यह कहता है: "...जो लोग आत्मा के अनुसार जीवन बिताते हैं, वे आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं... आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है।" यहाँ, "आत्मा" का तात्पर्य पवित्र आत्मा से है। इसलिए, "जो लोग आत्मा के अनुसार जीवन बिताते हैं" का अर्थ उन लोगों से है जो पवित्र आत्मा का अनुसरण करते हैं, और "आत्मा का मन" का अर्थ पवित्र आत्मा के विचारों—या मानसिकता—से है। यहाँ, मैं तीन बिंदुओं पर विचार करना चाहूँगा: (1) पवित्र आत्मा का अनुसरण करने वाला व्यक्ति किस प्रकार का होता है? (2) पवित्र आत्मा के कार्य क्या हैं? (3) पवित्र आत्मा का मन क्या है?

पहला, पवित्र आत्मा का अनुसरण करने वाला व्यक्ति किस प्रकार का होता है?

पवित्र आत्मा का अनुसरण करने वाले व्यक्ति को तीन तरीकों से समझा जा सकता है:

(1) पवित्र आत्मा का अनुसरण करने वाला व्यक्ति वह है जो पहले शरीर के बंधन में था।

शरीर के बंधन में जकड़ा हुआ व्यक्ति उस व्यक्ति को दर्शाता है जैसा वह पवित्र आत्मा का अनुयायी *बनने से पहले* था—एक ऐसा समय जिसका वर्णन रोमियों 5:12 में किया गया है, जब "एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई; और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, क्योंकि सब ने पाप किया।" यह ऐसे व्यक्ति का वर्णन करता है जो पाप और मृत्यु के प्रभुत्व के अधीन था। (2) पवित्र आत्मा का अनुसरण करने वाला व्यक्ति वह है जो यीशु मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया और मर गया है। कृपया बाइबल में रोमियों 6:6 देखें: "हम जानते हैं कि हमारा पुराना स्वभाव उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप के अधीन शरीर नष्ट हो जाए, और हम अब पाप के दास न रहें।" यहाँ, "पुराना स्वभाव" उस व्यक्ति को दर्शाता है जो शरीर के अधीन था—वह व्यक्ति जो पाप और मृत्यु की व्यवस्था के अधीन था (8:2)। दूसरे शब्दों में, जब हम अपने "पुराने स्वभाव" में थे—यीशु पर विश्वास करने से पहले—और पाप तथा मृत्यु की व्यवस्था के अधीन शरीर के अनुसार जी रहे थे, तब हम यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ाए गए; परिणामस्वरूप, हमारे पापी शरीर मर गए, और हम अब पाप के दास नहीं रहे। इसके विपरीत, धर्मी ठहराए जाने और पाप से मुक्त होने के बाद (6:7), हम धर्म के सेवक बन गए हैं, जिससे पवित्रता प्राप्त होती है (पद 19)। कृपया बाइबल में 2 कुरिन्थियों 5:14 देखें: "क्योंकि मसीह का प्रेम हमें विवश करता है, क्योंकि हम इस बात से आश्वस्त हैं कि एक व्यक्ति सब के लिए मरा, और इसलिए सब मर गए।" यहाँ, "एक व्यक्ति" का तात्पर्य यीशु मसीह से है। चूँकि यीशु मसीह हमारी जगह मरा, इसलिए हमारा "पुराना स्वभाव"—अर्थात्, शरीर के अधीन व्यक्ति—पहले ही यीशु मसीह के साथ क्रूस पर मर चुका है। क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु एक ऐसी मृत्यु थी जो एक ही बार, हमेशा के लिए हुई। कृपया बाइबल में रोमियों 6:10–11 देखें: "जो मृत्यु वह मरा, वह पाप के लिए एक ही बार मरा; परन्तु जो जीवन वह जीता है, वह परमेश्वर के लिए जीता है। इसी प्रकार, तुम भी अपने आप को पाप के लिए मरा हुआ, परन्तु मसीह यीशु में परमेश्वर के लिए जीवित समझो।" इब्रानियों 10:10 देखें: "इसी इच्छा के द्वारा हम यीशु मसीह के शरीर के एक ही बार के बलिदान से पवित्र किए गए हैं।" अब पाप-बलि या मेल-बलि चढ़ाने की कोई आवश्यकता नहीं रही।

(3) जो लोग पवित्र आत्मा का अनुसरण करते हैं, वे ऐसे लोग हैं जिन्हें यीशु मसीह के साथ जीवन के लिए जिलाया गया है।

रोमियों 6:10–11 देखें: "क्योंकि जो मृत्यु वह मरा, वह पाप के लिए एक ही बार मरा; परन्तु जो जीवन वह जीता है, वह परमेश्वर के लिए जीता है। इसी प्रकार तुम भी अपने आप को पाप के लिए सचमुच मरा हुआ, परन्तु हमारे प्रभु मसीह यीशु में परमेश्वर के लिए जीवित समझो।" हम परमेश्वर के लिए जीवित हैं। इफिसियों 2:1 को देखिए: "और उसने तुम्हें भी जीवित किया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे।" 2 कुरिन्थियों 5:17 को देखिए: "इसलिए, यदि कोई मसीह में है, तो वह एक नई सृष्टि है; पुरानी बातें बीत गईं; देखो, सब कुछ नया हो गया है।"

संक्षेप में, जो पवित्र आत्मा का अनुसरण करता है, वह ऐसा व्यक्ति है जिसे यीशु मसीह के साथ जीवन दिया गया है—एक ऐसा व्यक्ति जिसका पुनर्जन्म हुआ है, या जिसे नया जीवन मिला है। पवित्र आत्मा का अनुसरण करने का अर्थ है पवित्र आत्मा के अनुसार चलना। रोमियों 8:4 देखें: "ताकि व्यवस्था की धार्मिक माँग हममें पूरी हो जाए, जो शरीर के अनुसार नहीं, बल्कि आत्मा के अनुसार चलते हैं।" हम—जो पवित्र आत्मा के अनुसार चलते हैं—वही हैं जो सचमुच उसका अनुसरण करते हैं। गलतियों 5:25 देखें: "यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आइए हम आत्मा के अनुसार चलें" [(समकालीन अंग्रेजी संस्करण) "यदि हम पवित्र आत्मा के अनुसार जीवित हैं, तो हमें उसकी शिक्षाओं को व्यवहार में भी लाना चाहिए"]। यदि हम पवित्र आत्मा के अनुसार जीवित हैं, तो हमें उसके वचन का पालन करना चाहिए। हमें पवित्र आत्मा की शिक्षाओं को व्यवहार में लाना चाहिए।

हम इस कसौटी पर कितने खरे उतरते हैं? क्या हम—जो कभी शरीर के बंधन में थे—सचमुच यीशु मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाए गए और मर गए हैं? क्या हम सचमुच यीशु मसीह के साथ जीवन पाए हैं? क्या हमारा सचमुच पुनर्जन्म हुआ है? क्या हमें नया जीवन मिला है? क्या हम एक नई सृष्टि (एक नए व्यक्ति) बन गए हैं?

क्या हम सचमुच पवित्र आत्मा का अनुसरण कर रहे हैं? क्या हम पवित्र आत्मा के अनुसार चल रहे हैं? या हम अभी भी शरीर का अनुसरण कर रहे हैं?

दूसरे, पवित्र आत्मा का कार्य क्या है? दूसरे शब्दों में, पवित्र आत्मा क्या करता है?

पवित्र आत्मा यीशु मसीह की गवाही देता है। यूहन्ना 15:26 देखें: "जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं पिता की ओर से तुम्हारे पास भेजूँगा—अर्थात् सत्य का आत्मा, जो पिता की ओर से निकलता है—तो वह मेरे विषय में गवाही देगा।" पवित्र आत्मा इसलिए आया क्योंकि परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र (यीशु) ने उसे भेजा था। साथ ही, पवित्र आत्मा अपनी इच्छा से आया—एक इच्छुक हृदय और आनंदित आत्मा के साथ। बाइबल में यूहन्ना 16:8 देखें: "और जब वह आएगा, तो वह संसार को पाप, धार्मिकता और न्याय के विषय में दोषी ठहराएगा।" पवित्र आत्मा हमारे सामने यीशु मसीह के विषय में गवाही देने आता है। पवित्र आत्मा हमारा आत्मिक पुनर्जन्म (नया जन्म) कराती है, हमें पश्चाताप की ओर ले जाती है, हमें यीशु मसीह पर विश्वास करने में समर्थ बनाती है, हमें 'अच्छी लड़ाई' लड़ने की शक्ति देती है, हमारे उद्धार को पूरा करती है, और हमें पवित्र करती है—जिससे हम यीशु के समान बनने में बढ़ सकें। पवित्र आत्मा हमें आत्मिक वरदान देती है और हमें ऊपर उठाती है; ठीक वैसे ही जैसे उसने अंतियोखिया की कलीसिया से बरनबास और पौलुस को अलग करके यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने के लिए भेजा था, वैसे ही वह हमें भी ऊपर उठाती है और सुसमाचार को दूर-दूर तक फैलाने के लिए भेजती है। बाइबल में यूहन्ना 14:12 पर ध्यान दें: "मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि जो मुझ पर विश्वास करता है, जिन कामों को मैं करता हूँ, वह भी करेगा; और उनसे भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं अपने पिता के पास जाता हूँ।" यीशु ने घोषणा की थी कि पवित्र आत्मा ठीक वही काम करेगी जो उसने स्वयं किए थे—और वास्तव में, उनसे भी बड़े काम करेगी। बाइबल में प्रेरितों के काम 1:8 पर ध्यान दें: "परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा, तब तुम सामर्थ्य पाओगे; और तुम यरूशलेम में, और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।" जहाँ यीशु ने अपने सांसारिक सेवकाई के दौरान, सुसमाचार का प्रचार एक सीमित भौगोलिक क्षेत्र के भीतर किया था, वहीं पवित्र

आत्मा—उदाहरण के लिए, प्रेरित पौलुस के माध्यम से काम करते हुए—सुसमाचार को कहीं अधिक व्यापक क्षेत्र में प्रचारित करने में समर्थ बनाया।

आज भी, पवित्र आत्मा पूरे संसार में सुसमाचार फैलाने के लिए अनेक मिशनरियों का उपयोग करना जारी रखे हुए है। वास्तव में, यहाँ तक कि कोरोनावायरस महामारी के इस दौर में भी, पवित्र आत्मा सुसमाचार को हर कोने में—यहाँ तक कि इंटरनेट के माध्यम से भी—प्रचारित करने में समर्थ बना रही है। हमें पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना चाहिए, सामर्थ्य प्राप्त करना चाहिए, और यीशु के गवाह बनना चाहिए। जब हम पवित्र आत्मा से भर जाते हैं, तो हमें किसी भी कठिनाई, विपत्ति, बाधा या सताव के बीच—एक शहीद के विश्वास के साथ—साहसपूर्वक यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करना चाहिए। इस प्रकार, पवित्र आत्मा महान कार्य संपन्न कर रही है (यूहन्ना 14:12)। बाइबल में फिलिप्पियों 4:13 पर ध्यान दें: "जो मुझे सामर्थ्य देता है, उसके द्वारा मैं सब कुछ कर सकता हूँ।"

अंत में, तीसरी बात: पवित्र आत्मा का मन (विचार) क्या है?

पवित्र आत्मा का मन "जीवन और शांति" है। बाइबल में रोमियों 5:6 देखें: "क्योंकि शारीरिक मन तो मृत्यु है, परन्तु आत्मिक मन जीवन और शांति है।" तो फिर, इस संदर्भ में "जीवन" क्या है? पवित्र आत्मा जीवन का परमेश्वर है। पवित्र आत्मा वह परमेश्वर है जो जीवन की रचना करता है। पवित्र आत्मा वह परमेश्वर है जो हमें जीवन प्रदान करता है (रोमियों 8:2)। "जीवन" इन तीन तत्वों से मिलकर बना है: (1) जीवन परमेश्वर के साथ मधुर संगति है। अदन की वाटिका में, आदम द्वारा पाप करने से पहले, वह परमेश्वर के साथ मधुर संगति का आनंद लेता था। यही जीवन था। हालाँकि, क्योंकि उसने वाचा के परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया और पाप किया, इसलिए परमेश्वर के साथ उसकी वह संगति टूट गई। ठीक यही बात मृत्यु कहलाती है। (2) जीवन अपने हृदय में परमेश्वर के प्रेम की पूर्णता को धारण करना है। (3) जीवन परमेश्वर के आनंद की पूर्णता का अनुभव करना है। परमेश्वर की महिमा की आशा में आनंदित होना (रोमियों 5:2)—वास्तव में यही जीवन है। हम महिमा के उस लोक तक पहुँचने के लिए निर्धारित हैं। उस लोक की ओर देखना और उसमें आनंदित होना ही वास्तव में जीवन (अनन्त जीवन) है। तो फिर, "शांति" (8:2) क्या है? यह परमेश्वर के साथ शांति (या परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप) है। बाइबल में रोमियों 5:1 देखें: "इसलिए, जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो

अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें" [(समकालीन कोरियाई बाइबल) "इसलिए, विश्वास के द्वारा धर्मी माने जाने के कारण, हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप कर चुके हैं"]। यदि हमारा परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप हो गया है, तो हमारे हृदयों में शांति होगी। यदि मेरे हृदय में शांति (मन की स्थिरता) की कमी है, तो इसका अर्थ है कि मैं इस समय परमेश्वर के साथ शांति का आनंद नहीं ले रहा हूँ। हमारे हृदयों में असंतोष पनपने का कारण—जिससे शिकायतें और मनमुटाव पैदा होते हैं—यह है कि हमने अभी तक परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप प्राप्त नहीं किया है। जो शांति यीशु मसीह हमें प्रदान करते हैं, वह ऐसी चीज़ है जिसे यह संसार हमसे छीन नहीं सकता। बाइबल में यूहन्ना 14:27 पर विचार करें: "मैं तुम्हें शांति दिए जाता हूँ; अपनी शांति तुम्हें देता हूँ। जैसी शांति संसार देता है, वैसी मैं तुम्हें नहीं देता। तुम्हारा मन व्याकुल न हो और न ही तुम डरो।" यीशु इस संसार में—एक ऐसा संसार जो शांति से रहित था—विशेष रूप से हमें शांति प्रदान करने के लिए आए थे, और वे स्वयं भी उसी शांति में जिए। इसी प्रकार, हमारी शांति की भावना केवल अनुकूल परिस्थितियों, अच्छे स्वास्थ्य, या सब कुछ ठीक-ठाक चलने से ही उत्पन्न नहीं होनी चाहिए; बल्कि, हमें कठिनाइयों के बीच भी उस शांति का अनुभव करना चाहिए जो प्रभु प्रदान करते हैं। यद्यपि यह संसार चिंताओं, कठिनाइयों, पाप और मृत्यु से भरा हुआ है, फिर भी प्रभु द्वारा दी गई शांति के माध्यम से ही हम हृदय की सच्ची शांति का आनंद ले पाते हैं (New Hymnal 486, "Though This World Is Full of Care")। हम यह गा सकते हैं, "मैं कहीं भी रहूँ, मेरा हृदय सदैव शांत रहता है; यीशु द्वारा दी गई शांति मेरे भीतर उमड़ पड़ती है। मेरा हृदय सदैव शांति में रहता है—भले ही पाप की लहरें उठें, मेरा हृदय फिर भी शांत बना रहता है"—और यह पूरी तरह से उस शांति के कारण है जो प्रभु प्रदान करते हैं (New Hymnal 408, "Wherever I May Be")। यह ठीक वही शांति है जो मसीह हमें प्रदान करते हैं। हमें सबसे पहले परमेश्वर के साथ शांति (मेल-मिलाप) स्थापित करनी चाहिए, ताकि उस आंतरिक शांति का आनंद लेते हुए, हम अपने पड़ोसियों के साथ भी शांतिपूर्वक जीवन व्यतीत कर सकें। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम सभी शांति के दूत बनें और पूरी निष्ठा के साथ शांति की सेवा को पूरा करें।

शारीरिक मन

[रोमियों 8:5-8]

कृपया बाइबल में रोमियों 8:5-8 देखें: "क्योंकि जो लोग शरीर के अनुसार जीवन बिताते हैं, वे शरीर की बातों पर मन लगाते हैं; परन्तु जो लोग आत्मा के अनुसार जीवन बिताते हैं, वे आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं। क्योंकि शरीर पर मन लगाना मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है। क्योंकि शरीर पर मन लगाना परमेश्वर से बैर रखना है; क्योंकि वह न तो परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन है, और न हो ही सकता है। जो लोग शारीरिक दशा में हैं, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते।" इस अंश में, वाक्यांश "शारीरिक मन" (या "शरीर पर मन लगाना") तीन बार आया है: "जो लोग शरीर के अनुसार जीवन बिताते हैं, वे शरीर की बातों पर मन लगाते हैं" (पद 5), "शरीर पर मन लगाना मृत्यु है" (पद 6), और "शरीर पर मन लगाना परमेश्वर से बैर रखना है" (पद 7)। तो फिर, यहाँ "शारीरिक मन" का क्या अर्थ है?

सबसे पहले, "शरीर" क्या है?

"शरीर" का तात्पर्य मानवजाति के पतित स्वभाव से है। उत्पत्ति की पुस्तक में, पहले मनुष्य—आदम और उसकी पत्नी, हव्वा—ने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया और भले-बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खाकर पाप किया। परिणामस्वरूप, उस अपराध के कारण वे पतित हो गए। न केवल वे, बल्कि उसके बाद जन्मी समस्त मानवजाति पाप से दूषित हो गई और भ्रष्टता की स्थिति में गिर गई। कृपया रोमियों 5:12 देखें: "इसलिये, जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, क्योंकि सब ने पाप किया।" इस पतित मानवीय स्वभाव को "पुराना मनुष्यत्व" (Rom 6:6; Eph

4:22; Col 3:9) भी कहा जाता है। “शरीर” उस व्यक्ति का वर्णन करता है जो कोई यीशु पर विश्वास करने *से पहले* था। दूसरे शब्दों में, “शरीर” उस व्यक्ति का तात्पर्य है जो कोई “नया जन्म” पाने *से पहले*—अर्थात् आध्यात्मिक पुनरुत्थान का अनुभव करने से पहले—था। ऐसे व्यक्तियों को वे लोग कहा जाता है जो "शरीर" के हैं (1 कुरिन्थियों 3:3; तुलना करें इब्रानियों 7:16) या जो "शरीर" के अनुसार जीते हैं (2 कुरिन्थियों 5:16; 11:18)। अंततः, "शरीर" का तात्पर्य शैतान से है। रोमियों 8:5–8 में, प्रेरित पौलुस "शरीर" (यह शब्द चार बार आया है) की तुलना "आत्मा" (यह शब्द तीन बार आया है) से करते हैं; इस संदर्भ में, "आत्मा"—जो "शरीर" के विपरीत है—का अर्थ मानवीय आत्मा से नहीं, बल्कि विशेष रूप से पवित्र आत्मा से है। प्रेरित पौलुस "शरीर" और पवित्र आत्मा के बीच एक तुलना प्रस्तुत कर रहे हैं; यदि हम "शरीर" की व्याख्या केवल हमारे पतित मानवीय स्वभाव के रूप में, या यीशु में विश्वास के द्वारा पुनर्जन्म (या 'फिर से जन्म लेने') से पहले के हमारे "पुराने स्वरूप" के रूप में करें, तो पवित्र आत्मा के साथ इसकी तुलना पूरी तरह या उचित रूप से स्थापित नहीं हो पाएगी। इसलिए, "शरीर"—जो पवित्र आत्मा के विपरीत खड़ा है—अंततः शैतान का ही प्रतीक है। दूसरे शब्दों में, प्रेरित पौलुस "शरीर" की तुलना "आत्मा" से कर रहे हैं—अर्थात् शैतान की तुलना पवित्र आत्मा से। शैतान केवल एक ही है। परमेश्वर की एक सृष्टि के रूप में, शैतान परमेश्वर द्वारा बनाया गया एक स्वर्गदूत है, जो बाद में अपनी गरिमा से गिर गया। परिणामस्वरूप, जब हम यह कहते हैं कि शैतान अविश्वासियों—अर्थात् उन लोगों के भीतर वास करता है जो यीशु पर विश्वास नहीं करते और जिनका पुनर्जन्म नहीं हुआ है—तो हमारा तात्पर्य यह नहीं होता कि शैतान स्वयं परमेश्वर की तरह सर्वव्यापी (हर जगह उपस्थित) है; बल्कि, इसका अर्थ यह है कि वे दुष्ट स्वर्गदूत, जो उसके साथ मिले हुए हैं, उन्हीं लोगों के भीतर वास करते हैं। इसलिए, "जो शरीर के अनुसार जीते हैं" (रोमियों 8:5) का तात्पर्य उन लोगों से है जो शैतान का अनुसरण करते हैं। दूसरे शब्दों में, "शरीर के अनुसार जीने" का अर्थ है शैतान के प्रभुत्व के अधीन रहना—दुष्ट स्वर्गदूतों द्वारा नियंत्रित होना और उनके इशारों पर चलना। दूसरे शब्दों में, जो लोग "शरीर" का अनुसरण करते हैं, वे अंततः शैतान का ही अनुसरण करते हैं। यहाँ, हम "शरीर" का अनुसरण करने वालों पर दो अलग-अलग तरीकों से विचार कर सकते हैं:

(1) जो लोग "शरीर" का अनुसरण करते हैं, वे शैतान की आज्ञा मानते हैं और संसार के दुष्ट मार्गों पर चलते हैं। कृपया बाइबल में इफिसियों 2:2 देखें: "जिसमें तुम पहले इस संसार की रीति के अनुसार, और हवा के अधिकार के सरदार के अनुसार चलते थे, अर्थात् उस आत्मा के अनुसार जो अब भी आज्ञा न माननेवालों में काम करता है" [(मॉडर्न पीपल्स बाइबल) "पहले, तुम संसार के बुरे तरीकों का पालन करते हुए और शैतान की आज्ञा मानते हुए जीते थे, जो स्वर्ग के नीचे के क्षेत्र पर राज करता है। यह शैतान वह आत्मा है जो इस समय उन लोगों के बीच काम कर रही है जो आज्ञा न माननेवाले हैं"]। जो लोग शरीर का अनुसरण करते हैं, वे ऐसे व्यक्ति हैं जो शैतान और उसके दुष्ट दूतों के पीछे चलते हैं।

(2) जो लोग शरीर का अनुसरण करते हैं, वे "हमारे शरीर की अभिलाषाओं में जीवन बिताते थे, और शरीर तथा मन की इच्छाओं को पूरा करते थे।"

कृपया बाइबल में इफिसियों 2:3 देखें: "जिनमें हम सब भी पहले अपने शरीर की अभिलाषाओं में जीवन बिताते थे, और शरीर तथा मन की इच्छाओं को पूरा करते थे; और दूसरों की तरह स्वभाव ही से क्रोध की सन्तान थे" [(मॉडर्न पीपल्स बाइबल) "हम भी, पहले बिल्कुल उन्हीं की तरह जीते थे—अपने शरीर की अभिलाषाओं के अनुसार और जो कुछ हमारे शरीर और मन ने चाहा, वही करते हुए—और, बिल्कुल बाकी सब की तरह, हम भी स्वभाव से ऐसे लोग थे जिन्हें परमेश्वर के क्रोध का सामना करना ही था"]। इस प्रकार, जो लोग शरीर का अनुसरण करते हैं—जो लोग यीशु पर विश्वास नहीं करते और जिनका नया जन्म (पुनर्जन्म) नहीं हुआ है—वे शैतान के अधिकार क्षेत्र में ही रहते हैं, और शैतान तथा उसके दुष्ट दूतों के पीछे चलते हैं। आज कलीसिया के भीतर भी—उन लोगों के बीच भी जिन्होंने बपतिस्मा लिया है, और उन लोगों के बीच भी जो आधिकारिक पदों पर हैं और बड़े उत्साह के साथ सेवा करते हैं—ऐसे व्यक्ति हैं जो वास्तव में यीशु पर विश्वास नहीं करते, जिनका नया जन्म नहीं हुआ है, और जो लगातार शरीर का ही अनुसरण करते रहते हैं। इसके अलावा, कलीसिया के भीतर इस समय ऐसे लोग भी हैं जो इस बात से अनजान हैं कि उनका वास्तव में नया जन्म हुआ है या नहीं। ठीक वैसे ही जैसे एक नवजात शिशु को अपने जन्म के ठीक पल का पता नहीं होता, वैसे ही आज कलीसिया के भीतर कुछ सदस्य—जिन्हें हम एक तरह से 'आत्मिक शिशु' कह सकते

हैं—ऐसे हैं जिन्हें यह पता नहीं है कि उनका नया जन्म कब हुआ। यहाँ, हमें एक स्पष्ट अंतर समझना होगा: यह न जानना कि किसी का नया जन्म हुआ है या नहीं, इस बात से बिल्कुल अलग है कि किसी का नया जन्म हुआ ही नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि जो लोग बचपन से ही आस्था के माहौल में पले-बढ़े हैं—जिन्हें तथाकथित "क्रेडल क्रिश्चियन" कहा जाता है—अक्सर वही लोग इस बात को लेकर सबसे ज़्यादा अनिश्चित रहते हैं कि क्या उन्होंने वास्तव में आध्यात्मिक पुनर्जन्म का अनुभव किया है।

दूसरी बात, "शरीर के काम" (रोमियों 8:5) क्या हैं?

दूसरे शब्दों में, शैतान का काम क्या है? इसे एक और तरीके से कहें तो, वे कौन से काम हैं जो वे लोग करते हैं जो यीशु पर विश्वास नहीं करते और जिनका "नया जन्म" नहीं हुआ है—यानी, "पुराने स्वभाव" वाले लोग?

(1) यह मृत्यु लाने का काम है।

उत्पत्ति की किताब में, शैतान ने आदम और हव्वा के खिलाफ जो काम किया, वह उन्हें परमेश्वर की वाचा वाली आज्ञा का उल्लंघन करने के लिए उकसाना था—वह आज्ञा थी कि "भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष" का फल न खाएँ—जिसके परिणामस्वरूप अंततः उनकी मृत्यु हुई (विशेष रूप से, उनकी आत्मिक और अनंत मृत्यु हुई)। इसके परिणामस्वरूप, तब से शैतान उसके बाद पैदा होने वाले हर इंसान के लिए मृत्यु लाने के काम में लगा हुआ है। कृपया रोमियों 5:12 देखें: "इसलिए, जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, क्योंकि सब ने पाप किया।" यदि शैतान का काम मृत्यु लाना है, तो पवित्र आत्मा का काम जीवन लाना है। शरीर के कामों में शांति (मेल-जोल) को भंग करना शामिल है। उत्पत्ति में, शैतान ने आदम और हव्वा के बीच की शांति को भंग कर दिया, और उनके बीच फूट डाल दी। कृपया उत्पत्ति 3:9–12 देखें: "तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को पुकारा और उससे कहा, 'तू कहाँ है?' उसने कहा, 'मैंने बगीचे में तेरी आवाज़ सुनी, और मैं डर गया क्योंकि मैं नंगा था; इसलिए मैं छिप गया।' और उसने कहा, 'तुझे किसने बताया कि तू नंगा है? क्या तूने उस वृक्ष का फल खाया है जिसके बारे में मैंने तुझे आज्ञा दी थी कि उसे न खाना?' उस पुरुष ने कहा, 'जिस स्त्री को तूने मेरे साथ रहने के लिए

दिया था—उसी ने मुझे उस वृक्ष का फल दिया, और मैंने खा लिया।'" पाप करने से पहले, आदम ने अपनी पत्नी हव्वा के बारे में स्पष्ट रूप से कहा था, "अब यह मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस है" (2:23); हालाँकि, पाप करने के बाद, उसने परमेश्वर के सामने अपनी पत्नी पर दोष लगाया, और कहा, "जिस स्त्री को तूने मेरे साथ रहने के लिए दिया था—उसी ने मुझे उस वृक्ष का फल दिया, और मैंने खा लिया" (3:12)। आज भी, शैतान का काम घरेलू मेल-जोल (शांति) को तोड़ना और फूट डालना है, जिससे परिवारों का पतन होता है (यही बात कलीसियाओं और राष्ट्रों पर भी लागू होती है)। इसके विपरीत, पवित्र आत्मा का काम शांति (मेल-मिलाप) और एकता लाना है।

(2) शरीर के काम सभी प्रकार के पापों को जन्म देते हैं।

शैतान सक्रिय है, और वह न केवल आदम और हव्वा को, बल्कि उनके बाद पैदा हुए सभी लोगों को हर तरह का पाप करने के लिए उकसाता है। प्रेरित पौलुस ने शरीर के कामों के बारे में इस प्रकार कहा: "अब शरीर के काम स्पष्ट हैं, जो ये हैं: व्यभिचार, अशुद्धता, लुचपन, मूर्तिपूजा, टोना-टोटका, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध के आवेश, स्वार्थी महत्वाकांक्षाएँ, फूट, विधर्म, डाह, हत्याएँ, पियक्कड़पन, रंगरेलियाँ, और इसी तरह के अन्य काम; जिनके बारे में मैं आपको पहले से बता देता हूँ, जैसा कि मैंने अतीत में भी बताया था, कि जो लोग ऐसे काम करते हैं, वे परमेश्वर के राज्य के वारिस नहीं होंगे" (गलतियों 5:19–21)। हालाँकि, जो मसीही यीशु पर विश्वास करके नया जन्म पा चुके हैं—और जो आत्मा के अनुसार चलते हैं (पद 16)—वे पवित्र आत्मा का फल उत्पन्न करते हैं: "परन्तु आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शांति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वासयोग्यता, नम्रता, संयम है..." (पद 22–23)।

तीसरा, "शारीरिक मन" (रोमियों 8:6, 7) क्या है?

(1) शारीरिक मन "मृत्यु" है। बाइबल में रोमियों 8:6 को देखें: "क्योंकि शरीर पर मन लगाना मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शांति है।" पवित्र आत्मा की मानसिकता जीवन और शांति लाती है; इसके विपरीत, शरीर की मानसिकता—जो आत्मा के विपरीत खड़ी है—का परिणाम मृत्यु होता है। बाइबल में

फिलिप्पियों 3:19 को देखें: “उनका अंत विनाश है, उनका ईश्वर उनका पेट है, और वे अपनी लज्जा पर घमंड करते हैं, और उनका मन सांसारिक बातों पर लगा रहता है” [(समकालीन अंग्रेजी संस्करण): “उनका अंत विनाश है। वे अपनी शारीरिक इच्छाओं को अपना ईश्वर बना लेते हैं, वे अपनी लज्जा पर गर्व करते हैं, और वे केवल सांसारिक मामलों के बारे में सोचते हैं”]। शारीरिक सोच विनाश की ओर ले जाती है। इसका अर्थ है अनंत दंड, अनंत मृत्यु और अनंत विनाश।

(2) शारीरिक सोच इंसान को "परमेश्वर का शत्रु" बना देती है।

बाइबल में रोमियों 8:7 का पहला भाग देखिए: "क्योंकि शारीरिक सोच परमेश्वर की शत्रु है..." शारीरिक सोच परमेश्वर के साथ शांति की ओर नहीं ले जाती (जो कि पवित्र आत्मा की सोच का फल है); बल्कि, शैतान के प्रलोभनों के आगे झुककर और पाप करके, यह इंसान को परमेश्वर का शत्रु बना देती है। बाइबल में रोमियों 5:10 देखिए: "क्योंकि जब हम शत्रु थे, तब यदि उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा परमेश्वर के साथ मेल हो गया, तो अब मेल हो जाने पर उसके जीवन के द्वारा हम निश्चित रूप से बचाए जाएँगे।"

(3) शारीरिक मन "परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन नहीं होता।"

रोमियों 8:7 के पिछले भाग को देखें: "...क्योंकि वह परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन नहीं होता, और न हो ही सकता है।" शारीरिक मन न केवल परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करने, उसका अनुसरण करने, या उसके अधीन होने से इनकार करता है, बल्कि वह ऐसा करने में असमर्थ भी होता है। जो लोग शरीर के वश में हैं, वे परमेश्वर की व्यवस्था का पालन नहीं कर सकते। जो लोग शैतान के अधिकार में हैं—जो परमेश्वर के शत्रु हैं—वे परमेश्वर की व्यवस्था का पालन (आज्ञा मानना) कैसे कर सकते हैं? केवल वे ही लोग जो नया जन्म पा चुके हैं, और जिनके पास पवित्र आत्मा द्वारा दिया गया मन है, वे ही परमेश्वर की व्यवस्था का पालन और आज्ञा मान सकते हैं।

(4) शारीरिक मन "परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकता।"

रोमियों 8:8 को देखें: "जो लोग शरीर के वश में हैं, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते।" जो लोग शरीर के वश में हैं—यानी वे लोग जो अपना मन शरीर की बातों पर लगाते हैं और परमेश्वर के शत्रु हैं—वे परमेश्वर को प्रसन्न करने में असमर्थ हैं। केवल परमेश्वर के बच्चे ही, जो अपना मन आत्मा की बातों पर लगाते हैं, परमेश्वर को प्रसन्न कर सकते हैं। केवल विश्वास के द्वारा ही कोई परमेश्वर को प्रसन्न कर सकता है। इब्रानियों 11:6 को देखें: "और विश्वास बिना परमेश्वर को प्रसन्न करना असंभव है, क्योंकि जो कोई उसके पास आता है, उसे यह विश्वास करना चाहिए कि वह है, और जो लोग उसे यत्न से खोजते हैं, वह उन्हें प्रतिफल देता है।" हमें हनोक जैसा बनना चाहिए, जो विश्वास का एक पुरुष था। इब्रानियों 11:5 को देखें: "विश्वास ही से हनोक उठा लिया गया, ताकि वह मृत्यु का अनुभव न करे: 'वह कहीं न मिला, क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया था।' क्योंकि उसके उठाए जाने से पहले, उसकी यह गवाही दी गई थी कि उसने परमेश्वर को प्रसन्न किया।" हनोक एक ऐसा व्यक्ति था जिसने परमेश्वर को प्रसन्न किया। हनोक एक ऐसा व्यक्ति था जो परमेश्वर के साथ चलता था (उत्पत्ति 5:24)। *द मॉडर्न इंग्लिश वर्शन* इसका अनुवाद इस अर्थ में करता है कि हनोक एक ऐसा व्यक्ति था जो परमेश्वर के साथ गहरी संगति में रहता था। हनोक की तरह, हमें भी पवित्र आत्मा के साथ चलते हुए जीवन बिताना चाहिए—अर्थात्, उसके साथ गहरी संगति में सहभागी होकर। कृपया बाइबल में कुलुस्सियों 1:21 देखें: “और तुम, जो पहले अलग-थलग थे और अपने मन में बुरे कामों के कारण शत्रु थे, फिर भी अब उसने अपने शरीर के द्वारा मृत्यु सहकर तुम्हें अपने साथ मिला लिया है, ताकि तुम्हें अपनी दृष्टि में पवित्र, निर्दोष और बेदाग ठहरा सके—बशर्ते तुम विश्वास में दृढ़ और स्थिर बने रहो, और उस सुसमाचार की आशा से न डिगो जिसे तुमने सुना है; जिसका प्रचार स्वर्ग के नीचे हर प्राणी को किया गया था, और जिसका मैं, पौलुस, एक सेवक बना।” हम भी—"पहले," यानी, यीशु पर विश्वास करने से पहले और दोबारा जन्म लेने से पहले—परमेश्वर के शत्रु थे। हम शैतान के पीछे चलते थे और ऐसे काम करते थे जो उसे प्रसन्न करते थे। हालाँकि, "अब," हमने यीशु पर विश्वास कर लिया है और हम वे लोग बन गए हैं जिनका दोबारा जन्म हुआ है। यीशु मसीह की शारीरिक मृत्यु के द्वारा, हम अब परमेश्वर के साथ शत्रुता की स्थिति में नहीं हैं; बल्कि, हम उसके साथ मिल गए हैं और उसके बच्चे बन गए हैं। नए लोग होने के नाते, जिनका दोबारा जन्म हुआ है, हमें विश्वास में दृढ़ रहना चाहिए और उस सुसमाचार की आशा में अडिग रहना चाहिए जिसे हमने सुना है। हमें सुसमाचार की आशा में स्थिर रहना चाहिए। हनोक की तरह—विश्वास के उस पूर्वज की तरह जो परमेश्वर के साथ चलता था—हमें भी ऐसे लोग बनना चाहिए जो पवित्र आत्मा के साथ चलते हैं, और इस

प्रकार, हनोक की तरह ही परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले लोग बनते हैं। पवित्र आत्मा का अनुसरण करने वालों के रूप में, हमें आत्मा की सोच के अनुसार जीना चाहिए और आत्मा के कार्यों को पूरा करना चाहिए, जिससे हम जीवन और शांति के आशीषों का आनंद ले सकें। पवित्र आत्मा के कार्य में आत्मा का फल लाना शामिल है—विशेष रूप से, प्रेम का फल (गलतियों 5:22–23)—और, यीशु की दोहरी आज्ञा के अनुसार, अपने प्रभु परमेश्वर से अपने पूरे हृदय, आत्मा और मन से प्रेम करना, और साथ ही अपने पड़ोसियों से भी अपने समान प्रेम करना (मत्ती 22:37, 39)। ठीक यही स्वर्गीय जीवन जीने का अर्थ है—पृथ्वी पर रहते हुए भी, अनंत जीवन का एक पूर्वास्वाद अनुभव करना (New Hymnal, No. 438, Verse 3)। (इसके विपरीत, शरीर के काम शैतान का फल—यानी नफ़रत—पैदा करते हैं; जिसका नतीजा मनमुटाव और शांति भंग होना होता है, और अंततः यह मृत्यु और विनाश की ओर ले जाता है।) हमें पवित्र आत्मा से भरा हुआ और प्रेम से लबालब जीवन जीना चाहिए; आत्मा के मार्गदर्शन का पालन करते हुए और यीशु की दोहरी आज्ञा का पालन करते हुए, ताकि हम जीवन (अनंत जीवन) और शांति के आशीषों का आनंद ले सकें। काश हम सब आत्मा के लोग बन सकें—आत्मा के मार्गदर्शन में यीशु की प्रेम की दोहरी आज्ञा को जीने के लिए ज़रूरी जीवन-शक्ति से ओत-प्रोत हों—और काश हम सब उस शांति का अनुभव कर सकें जो प्रभु हमें प्रदान करते हैं, चाहे परिस्थितियाँ कैसी भी क्यों न हों (New Hymnal, No. 413)।

पवित्र आत्मा जो हमारे भीतर वास करती है

[रोमियों 8:9-11]

कृपया बाइबल में रोमियों 8:9-11 देखें: "परन्तु तुम शारीरिक दशा में नहीं, वरन् आत्मिक दशा में हो; यदि सचमुच परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है। परन्तु यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं, तो वह उसका नहीं। और यदि मसीह तुम में है, तो पाप के कारण तुम्हारी देह मरी हुई है, परन्तु धर्म के कारण आत्मा जीवित है। और यदि उसी का आत्मा, जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, तुम में वास करता है; तो जिसने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, वह तुम्हारी नश्वर देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में वास करता है, जिलाएगा।" जब हम इस अंश की जाँच करते हैं, तो हम देखते हैं कि विशिष्ट वाक्यांश "पवित्र आत्मा" इसमें दिखाई नहीं देता। हालाँकि, "आत्मा" शब्द छह बार आया है: पाँच बार यह पवित्र आत्मा को संदर्भित करता है (तीन बार पद 9 में और दो बार पद 11 में), और एक बार यह मानवीय आत्मा को संदर्भित करता है (पद 10 में)। आइए हम पद 9 और 11 को देखें, जो पवित्र आत्मा को संदर्भित करते हैं: "परन्तु तुम शारीरिक दशा में नहीं, वरन् आत्मिक दशा में हो [पवित्र आत्मा]; यदि सचमुच परमेश्वर का आत्मा [पवित्र आत्मा] तुम में वास करता है। परन्तु यदि किसी में मसीह का आत्मा [पवित्र आत्मा] नहीं, तो वह उसका नहीं" (पद 9); "और यदि उसी का आत्मा, जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया [पवित्र आत्मा], तुम में वास करता है... अपने आत्मा [पवित्र आत्मा] के द्वारा जो तुम में वास करता है..." (पद 11)। पवित्र आत्मा परमेश्वर का आत्मा है; परमेश्वर का आत्मा वही पवित्र आत्मा है जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया; और वह वही पवित्र आत्मा है जो हमारे भीतर वास करती है। इसलिए, "पवित्र आत्मा जो हमारे भीतर वास करती है" शीर्षक के अंतर्गत, मैं रोमियों 8:9-11 पर मनन करना चाहूँगा। कृपया रोमियों 8:9 को फिर से देखें: "यदि सचमुच परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है..." यहाँ, वाक्यांश "तुम में" में, "तुम" शब्द रोम के कलीसिया में विश्वासियों को संदर्भित करता है; हालाँकि, इसमें रोमियों के लेखक, प्रेरित पौलुस को शामिल नहीं किया गया था (क्योंकि

यदि उसने स्वयं को शामिल किया होता, तो वह "हम में" कहता)। लेकिन, इसका यह मतलब नहीं है कि पवित्र आत्मा प्रेरित पौलुस से दूर थी। पवित्र आत्मा सचमुच प्रेरित पौलुस के अंदर वास करती थी। हम यह बात 2 तीमुथियुस 1:14 को देखकर जान सकते हैं: "पवित्र आत्मा के द्वारा, जो हमारे अंदर वास करती है, उस खजाने की रक्षा करो जो तुम्हें सौंपा गया है।" यहाँ, "हम" का मतलब खुद प्रेरित पौलुस और तीमुथियुस से है, जिसे तीमुथियुस के नाम यह पत्र मिला था। पवित्र आत्मा कुरिन्थ की कलीसिया के विश्वासियों के अंदर भी वास करती थी। 1 कुरिन्थियों 3:16 को देखिए: "क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मंदिर हो और परमेश्वर की आत्मा तुम में वास करती है?" पवित्र आत्मा रोम की कलीसिया के विश्वासियों के अंदर भी वास करती थी। रोमियों 8:15 को देखिए: "क्योंकि तुम्हें फिर से डर पैदा करने वाली गुलामी की आत्मा नहीं मिली है, बल्कि तुम्हें गोद लिए हुए बेटों की आत्मा मिली है, जिसके द्वारा हम पुकारते हैं, 'अब्बा! पिता!'" यहाँ, "गोद लिए हुए बेटों की आत्मा" का मतलब पवित्र आत्मा से है। पवित्र आत्मा हमारे अंदर भी वास करती है—यानी उन लोगों के अंदर जो यीशु पर विश्वास करते हैं। रोमियों 5:5 को देखिए: "और आशा हमें शर्मिंदा नहीं करती, क्योंकि परमेश्वर का प्रेम हमारे दिलों में पवित्र आत्मा के द्वारा उंडेला गया है, जो हमें दी गई थी।" 1 यूहन्ना 3:24 को देखिए: "और जो उसकी आज्ञाओं का पालन करता है, वह उसमें बना रहता है, और वह उसमें। और इससे हम जानते हैं कि वह हम में बना रहता है—उस आत्मा के द्वारा जो उसने हमें दी है।" साथ ही, 1 यूहन्ना 4:13 को देखिए (*The Bible for Modern Man* से): "हम जानते हैं कि हम परमेश्वर में जीते हैं और परमेश्वर हम में जीता है, क्योंकि उसने हमें अपनी आत्मा दी है।"

रोमियों 8:9 को देखिए: "...तुम शरीर के वश में नहीं, बल्कि आत्मा के वश में हो...।" अगर पवित्र आत्मा—जो परमेश्वर की आत्मा है—हमारे अंदर वास करती है, तो हम शरीर के वश में नहीं, बल्कि आत्मा के वश में हैं। पवित्र आत्मा हमारे अंदर वास करती है, और हम पवित्र आत्मा में वास करने लगे हैं। यूहन्ना 15:4–5 पर ध्यान दें: "तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में। जिस तरह डाली अपने आप से फल नहीं दे सकती, जब तक वह बेल में बनी न रहे, उसी तरह तुम भी फल नहीं दे सकते, जब तक तुम मुझ में बने न रहो। मैं बेल हूँ, तुम डालियाँ हो। जो मुझ में बना रहता है, और मैं उस में, वह बहुत फल देता है; क्योंकि मेरे बिना तुम कुछ भी नहीं कर सकते।" यदि हम प्रभु में बने रहते हैं, तो प्रभु हम में बने रहते हैं। इस बात का अर्थ कि प्रभु हम में

बने रहते हैं, यह है कि पवित्र आत्मा हम में बनी रहती है। इसका तात्पर्य यह है कि हम पवित्र आत्मा में बने रहते हैं। दूसरे शब्दों में, हम पवित्र आत्मा के साथ एक हो जाते हैं। परिणामस्वरूप, हम बहुत फल देते हैं। यह फल पवित्र आत्मा के फल को दर्शाता है। गलातियों 5:22–23 पर ध्यान दें: "पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, संयम है...।" इसके अलावा, पवित्र आत्मा हमारे भीतर काम करती है, जिससे हम यीशु के और अधिक समान बन पाते हैं।

कृपया रोमियों 8:10 देखें: "और यदि मसीह आप में हैं, तो पाप के कारण शरीर तो मृत है..." यहाँ, वाक्यांश "यदि मसीह आप में हैं" का अर्थ है कि "पवित्र आत्मा आप में है।" इसके अलावा, जब हम इस कथन में "शरीर" शब्द पर विचार करते हैं कि "पाप के कारण शरीर मृत है," तो हम इस तथ्य को पहचानते हैं कि "शरीर" (भौतिक देह) और "आत्मा" (प्राण) की रचना एक साथ हुई थी। इस संदर्भ में, "शरीर" का तात्पर्य "बाहरी मनुष्य" से है; जैसा कि उत्पत्ति की पुस्तक में लिखा है, पहले मनुष्य—आदम और उसकी पत्नी, हव्वा—इसलिए मर गए क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया (उत्पत्ति 2:16–17) और भले-बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खाया (उत्पत्ति 3:1–7)। परिणामस्वरूप, पूरी मानवजाति—आदम के वंशज—भी मृत्यु के अधीन हो गई। कृपया रोमियों 5:12 और 17 देखें: "इसलिए, जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, क्योंकि सब ने पाप किया... क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध के कारण मृत्यु ने उस एक के द्वारा राज्य किया..." अब, फिर से रोमियों 8:10 देखें: "...परन्तु आत्मा धर्म के कारण जीवित है।" यहाँ, "आत्मा" का तात्पर्य मानवीय आत्मा से है। इसके अलावा, यह आत्मा "भीतरी मनुष्य" का संकेत है। आदम के अपराध के कारण, हमारे शरीर और हमारी आत्माएँ—दोनों ही मर गई थीं। हालाँकि, हमारे पापों का दोष यीशु पर डाला गया; क्योंकि उन्हें क्रूस पर चढ़ाया गया और वे मर गए—और तत्पश्चात् वे मृतकों में से फिर जीवित हो उठे—इसलिए यीशु का धर्म हमें प्रदान किया गया। अतः, पवित्र आत्मा ने हमारी आत्माओं को पुनर्जीवित किया, जो मृत हो चुकी थीं। दूसरे शब्दों में, पवित्र आत्मा ने हमारा पुनरुत्थान—हमारा आत्मिक पुनर्जन्म—किया। बाइबल में इफिसियों 2:1 देखें: "और उसने तुम्हें भी जीवित किया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मृत थे।"

बाइबल में रोमियों 8:11 देखें: "परन्तु यदि उसका आत्मा, जिसने यीशु को मृतकों में से जिलाया, तुम में बसा हुआ है, तो जिसने मसीह यीशु को मृतकों में से जिलाया..." वह जिसने यीशु को मृतकों में से जिलाया, परमेश्वर पिता है, और उसका आत्मा परमेश्वर पवित्र आत्मा का संकेत है। यह अंश दर्शाता है कि यीशु की मृत्यु हुई और उन्हें मृतकों में से जिलाया गया। यीशु को किसने मारा? यह परमेश्वर पिता ने किया। परमेश्वर पिता ने यीशु मसीह को एक प्रायश्चित बलिदान—एक शांति-बलि—के रूप में स्वीकार किया। हमें बचाने की अपनी इच्छा में—और यह चाहने में कि यीशु मसीह हमारे सभी पापों का बोझ उठाएँ—परमेश्वर पिता ने यीशु मसीह को, जो संसार के पापों को दूर करते हैं, क्रूस पर मरने दिया। परमेश्वर पिता ने परमेश्वर पुत्र, यीशु को मृत्यु के हवाले कर दिया। यीशु ने स्वेच्छा से स्वयं को मृत्यु के अधीन कर दिया। बाइबल में यूहन्ना 10:18 देखें: "कोई इसे मुझसे छीनता नहीं, बल्कि मैं इसे अपनी मर्ज़ी से त्याग देता हूँ। मेरे पास इसे त्यागने का अधिकार है, और इसे फिर से ग्रहण करने का भी अधिकार है। यह आज्ञा मुझे मेरे पिता से मिली है।" साथ ही, 1 यूहन्ना 3:16 (*The Bible for Modern People* से) देखें: "हम जान गए हैं कि प्रेम क्या है, क्योंकि यीशु ने स्वेच्छा से हमारे लिए अपने प्राण दे दिए...।" किसी ने यीशु से उनके प्राण नहीं छीने; यीशु ने उन्हें अपनी मर्ज़ी से त्याग दिया। इसका कारण हमें बचाना था। तो फिर, यीशु को मृतकों में से किसने जिलाया? यह परमेश्वर पिता ने किया। बाइबल में प्रेरितों के काम 2:24 देखें: "परन्तु परमेश्वर ने उसे मृत्यु के बंधनों से छुड़ाकर जिलाया, क्योंकि यह सम्भव न था कि वह मृत्यु के वश में रहे।" बाइबल में प्रेरितों के काम 3:15 देखें: "तुमने जीवन के कर्ता को मार डाला, जिसे परमेश्वर ने मृतकों में से जिलाया। हम इस बात के गवाह हैं।" रोमियों 8:11 का पहला भाग देखें: "वह जिसने यीशु को मृतकों में से जिलाया..." यीशु मसीह ने स्वयं भविष्यवाणी की थी कि वह फिर से उठेंगे (पुनर्जीवित होंगे)। मरकुस 8:31 देखें: "तब उसने उन्हें यह सिखाना आरम्भ किया कि मनुष्य के पुत्र को बहुत दुख उठाना होगा, और पुरनियों, महायाजकों और व्यवस्था के शिक्षकों द्वारा ठुकराया जाना होगा, और उसे मार डाला जाएगा, और तीन दिन बाद वह फिर से जीवित हो उठेगा" (तुलना करें: मत्ती 17:9; 20:19)। यीशु के शिष्यों ने उसके पुनरुत्थान की गवाही दी। प्रेरितों के काम 10:40–41 पर ध्यान दें: "परमेश्वर ने उसे तीसरे दिन जिलाया और उसे प्रकट होने दिया—न कि सब लोगों को, बल्कि उन गवाहों को जिन्हें परमेश्वर ने पहले से चुन लिया था: यानी हम लोगों को, जिन्होंने उसके मरे हुओं में से जी उठने के बाद

उसके साथ खाया-पिया था।" यदि पवित्र आत्मा—यानी परमेश्वर पिता की आत्मा, जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया—हमारे भीतर वास करती है, तो वह हमारे नश्वर शरीरों (हमारे "बाहरी मनुष्य") को भी जीवन देगी (रोमियों 8:11)। जिस प्रकार यीशु का शरीर क्रूस पर मर गया और फिर जी उठा (एक शारीरिक पुनरुत्थान), उसी प्रकार हमारे शरीर भी फिर से जी उठेंगे।

परमेश्वर पिता हमें फिर से जीवन देगा। 2 कुरिन्थियों 4:14 पर ध्यान दें: "हम जानते हैं कि जिसने प्रभु यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, वह हमें भी यीशु के साथ जिलाएगा और आप लोगों के साथ अपनी उपस्थिति में प्रस्तुत करेगा।" 1 कुरिन्थियों 6:14 पर ध्यान दें: "परमेश्वर ने प्रभु को मरे हुओं में से जिलाया और अपनी सामर्थ्य से हमें भी जिलाएगा।" परमेश्वर पुत्र हमें जीवन देगा। बाइबल में यूहन्ना 5:21 पर ध्यान दें: "क्योंकि जिस प्रकार पिता मरे हुओं को जिलाता और उन्हें जीवन देता है, उसी प्रकार पुत्र भी जिसे चाहता है, उसे जीवन देता है।" यूहन्ना 6:39–40 पर ध्यान दें: "जिसने मुझे भेजा है, उसकी इच्छा यह है कि जो कुछ उसने मुझे दिया है, उसमें से मैं कुछ भी न खोऊँ, बल्कि उसे अंतिम दिन जिला उठाऊँ। क्योंकि मेरे पिता की इच्छा यह है कि जो कोई पुत्र को देखता और उस पर विश्वास करता है, उसे अनंत जीवन मिले, और मैं स्वयं उसे अंतिम दिन जिला उठाऊँगा।" प्रभु हमें अंतिम दिन जिला उठाएगा और हमें अनंत जीवन में ले जाएगा।

चाहे हम जीवित रहें, यह अच्छा, धन्य और लाभदायक है; और चाहे हम मर जाएँ, यह भी अच्छा, धन्य और लाभदायक है। प्रकाशितवाक्य 14:13 पर ध्यान दें: "और मैंने स्वर्ग से एक वाणी सुनी, जो कह रही थी, 'लिख: धन्य हैं वे मरे हुए, जो अब से प्रभु में मरते हैं!' 'हाँ,' आत्मा कहती है, 'ताकि वे अपने परिश्रम से विश्राम पाएँ, क्योंकि उनके कर्म उनके साथ चलते हैं।'" यह ठीक उसी व्यक्ति का आशीष है जो पवित्र आत्मा में बना रहता है—यानी वह व्यक्ति जिसके भीतर पवित्र आत्मा वास करती है। यीशु मरे, फिर से जीवित हुए, और स्वर्ग चले गए; अब वे परमेश्वर के दाहिने हाथ हमारे लिए मध्यस्थता कर रहे हैं। यीशु निश्चित रूप से वापस आएंगे ताकि हमें स्वर्ग के राज्य में ले जा सकें। वहाँ, हम हमेशा-हमेशा के लिए राज करेंगे। प्रकाशितवाक्य 22:5 पर नज़र डालें: "वहाँ अब और रात नहीं होगी; और उन्हें न तो दीपक के प्रकाश की ज़रूरत होगी, न ही सूरज के प्रकाश की, क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें प्रकाशित करेगा; और वे हमेशा-हमेशा के लिए राज करेंगे।"

इसके अलावा, कृपया बाइबल (समकालीन अंग्रेज़ी संस्करण) में प्रकाशितवाक्य 3:21 देखें: "जो कोई विश्वास में जय पाता है, मैं उसे अपने सिंहासन पर मेरे साथ बैठने का विशेषाधिकार दूँगा, ठीक वैसे ही जैसे मैंने जय पाई और अपने पिता के साथ उनके सिंहासन पर बैठा।" इसलिए, अनेक कठिनाइयों और विपत्तियों के बीच, हमें सत्य के इस वचन को थामना और अपनाना चाहिए ताकि हम इसके आशीषों में भागीदार बन सकें। हमें अपने बहुमूल्य विश्वास की शक्ति से अपनी कठिनाइयों पर साहसपूर्वक विजय पानी चाहिए। काश यह वचन हमारे हृदयों की पट्टियों पर अंकित हो जाए, जिससे हम विश्वास के द्वारा विजयी हो सकें।

हम ऋणी हैं

[रोमियों 8:12–13]

कृपया बाइबल में रोमियों 8:12–13 देखें: "इसलिए, भाइयों, हम ऋणी हैं—शरीर के नहीं, कि शरीर के अनुसार जीवन जिएँ। क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार जीवन जिओगे तो मर जाओगे; परन्तु यदि आत्मा के द्वारा शरीर के कामों को मार डालोगे, तो जीवित रहोगे" [(आधुनिक लोगों की बाइबल) "भाइयों, यद्यपि हम ऋणी हैं, हमें शरीर का ऋणी नहीं होना चाहिए और शरीर के अनुसार जीवन नहीं जीना चाहिए। यदि तुम शरीर के अनुसार जीवन जिओगे, तो मर जाओगे; परन्तु यदि, पवित्र आत्मा के द्वारा, तुम शरीर के बुरे कामों को मार डालोगे, तो जीवित रहोगे"]।

बाइबल कहती है कि "हम ऋणी हैं" (पद 12)। समस्त मानवजाति ऋणियों से बनी है। अतीत के लोग, वर्तमान के लोग, और भविष्य में जन्म लेने वाले लोग—ये सभी ऋणी हैं। यहाँ दो ही विकल्प हैं: शरीर के ऋणी, या आत्मा के ऋणी। आदम के सभी वंशज शरीर के ऋणी हैं। हम भी—जब तक हम परमेश्वर से दोबारा जन्म नहीं पाए (जब तक हमारा पुनर्जन्म नहीं हुआ) (1 यूहन्ना 5:1, 4)—शरीर के ऋणी थे। जो लोग शरीर के ऋणी हैं, वे कैसे जीवन जीते हैं? कृपया बाइबल में इफिसियों 2:2–3 देखें: "जिसमें तुम पहले इस संसार की रीति के अनुसार, और आकाश के अधिकार के हाकिम (शैतान) के अनुसार चलते थे, अर्थात् उस आत्मा के अनुसार जो अब आज्ञा न मानने वालों में कार्य कर रहा है; जिनके बीच हम सब भी पहले अपने शरीर की अभिलाषाओं में जीवन बिताते थे, और शरीर तथा मन की इच्छाओं को पूरा करते थे, और स्वभाव से क्रोध की संतान थे, जैसे कि अन्य लोग" [(आधुनिक लोगों के लिए बाइबल) "पहले, तुम इस संसार के बुरे तरीकों का अनुसरण करते हुए और शैतान की आज्ञा मानते हुए जीवन जीते थे, जो स्वर्ग के नीचे के क्षेत्र पर राज

करता है। यह शैतान वह आत्मा है जो वर्तमान में उन लोगों के बीच कार्य कर रहा है जो आज्ञा न मानने वाले हैं। हम भी, एक समय उन्हीं की तरह जीवन जीते थे—अपने शरीर की अभिलाषाओं का अनुसरण करते हुए और जो कुछ हमारे शरीर और मन की इच्छा होती थी, वही करते थे—और, ठीक दूसरों की तरह, हम भी स्वभाव से परमेश्वर के क्रोध का सामना करने के लिए निर्धारित थे"]। जब हम शरीर के ऋणी थे, तो हम दुनिया के बुरे तरीकों पर चलकर और शैतान की आज्ञा मानकर जीते थे; हम अपनी शारीरिक इच्छाओं के अनुसार जीते थे और वही करते थे जो हमारे शरीर और मन को भाता था। इस प्रकार, जब हम शरीर के ऋणी के रूप में जी रहे थे, तो एक निश्चित क्षण में—चाहे हमें इसका एहसास हुआ हो या नहीं—हम आत्मा के ऋणी में बदल गए। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला आत्मा का ऋणी कब बना? कृपया बाइबल में लूका 1:15 देखें: "क्योंकि वह प्रभु की दृष्टि में महान होगा, और न तो दाखमधु पियेगा और न ही कोई तेज़ मदिरा। वह पवित्र आत्मा से भी परिपूर्ण होगा, यहाँ तक कि अपनी माता के गर्भ से ही।" यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला अपनी माता के गर्भ से ही पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था। दूसरे शब्दों में, इसका अर्थ यह है कि जिस क्षण वह गर्भ में था, उसी क्षण से वह आत्मा का ऋणी बन गया। इस प्रकार, बाइबल कहती है कि जब मरियम एलिज़ाबेथ से मिलने गई—जो पहले से ही यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के साथ छह महीने की गर्भवती थी (पद 36)—तो "बच्चा [यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला] उसके गर्भ में उछल पड़ा, और एलिज़ाबेथ पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गई" (पद 41)। हालाँकि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को खुद शायद ठीक-ठीक पता न हो कि वह पवित्र आत्मा से कब परिपूर्ण हुआ था, लेकिन जब वह बड़ा हुआ, तो उसकी माँ, एलिज़ाबेथ ने शायद उसे इसके बारे में बताया होगा। जो लोग विश्वास में पले-बढ़े हैं, उन्हें अक्सर ठीक-ठीक पता नहीं होता कि उनका नया जन्म कब हुआ या वे आत्मा के ऋणी कब बने। हालाँकि, ऐसे उदाहरण भी हैं जहाँ व्यक्तियों को ठीक-ठीक पता होता है कि वे आत्मा के ऋणी कब बने। ऐसा ही एक उदाहरण बाइबल के प्रेरितों के काम 10 में मिलता है: कुरनेलियुस, अपने रिश्तेदारों और करीबी दोस्तों के साथ (पद 24), जानता था; और पतरस, "योप्पा से आए कुछ भाइयों" के साथ (पद 23), भी पहचान गया था कि वे आत्मा के ऋणी बन गए हैं। कृपया प्रेरितों के काम 10:44–45 देखें: "जब पतरस अभी भी ये बातें कह ही रहा था, तो पवित्र आत्मा उन सभी पर उतर आया जिन्होंने संदेश सुना। खतना किए हुए विश्वासी जो पतरस के साथ आए थे, यह देखकर चकित रह गए कि पवित्र आत्मा का वरदान अन्यजातियों पर भी उंडेला गया है।"

आत्मा का ऋणी वह व्यक्ति है जो पवित्र आत्मा का ऋणी है। जब प्रेरित पौलुस रोमियों 8:12 की शुरुआत करते हैं, तो वे "इसलिए" (therefore) संयोजक शब्द का प्रयोग करते हैं। यह संयोजक शब्द इस अंश को उससे पहले के पदों से जोड़ने का काम करता है। इसलिए, जो लोग अब मसीह यीशु में हैं (पद 1)—क्योंकि जीवन के आत्मा के नियम ने उन्हें पाप और मृत्यु के नियम से मुक्त कर दिया है (पद 2)—हम अब शरीर के अनुसार नहीं, बल्कि पवित्र आत्मा के अनुसार जीते हैं (पद 4); और क्योंकि हम अपना मन आत्मा की बातों पर लगाते हैं (पद 5), इसलिए आत्मा द्वारा नियंत्रित मन जीवन और शांति का आनंद लेता है (पद 6)। अब जब पवित्र आत्मा हमारे भीतर वास करता है, तो हम उसके नियंत्रण में हैं (पद 9, *समकालीन कोरियाई संस्करण*)। वही पवित्र आत्मा—उसी परमेश्वर का आत्मा जिसने यीशु को मृतकों में से जिलाया—हमारे मरणशील शरीरों को भी जीवन देगा (पद 11, *समकालीन कोरियाई संस्करण*)। इसलिए, हम ऋणी हैं (पद 12)। रोमियों 8:12 में, प्रेरित पौलुस घोषणा करते हैं, "इसलिए, भाइयों"; यहाँ, "भाइयों" (रोम 8:12) शब्द रोम के कलीसिया (चर्च) के भीतर के विश्वासियों को संदर्भित करता है। स्नेह भरे इस आत्मीय शब्द—"भाइयों"—का उपयोग करके, पौलुस यह संदेश देते हैं कि, यीशु मसीह में विश्वास करने वालों के रूप में, वे सभी आत्मा के ऋणी हैं—अर्थात्, वे पुनर्जीवित लोग हैं, वे लोग हैं जो अपने अस्तित्व के लिए पवित्र आत्मा के ऋणी हैं। दूसरे शब्दों में, जो लोग आत्मा के ऋणी हैं—पवित्र आत्मा के ऋणी हैं—उनकी मानसिकता ठीक-ठीक जीवन और शांति ही है (पद 6)। इसके विपरीत, शरीर की मानसिकता मृत्यु की ओर ले जाती है (पद 6), व्यक्ति को परमेश्वर के प्रति शत्रुता की स्थिति में डाल देती है (पद 7), और उसे परमेश्वर को प्रसन्न करने में असमर्थ बना देती है (पद 8)। जो लोग आत्मा के ऋणी हैं, उनकी आत्मा जीवित है [(पद 10): "आत्मा धर्म के कारण जीवित है"]। दूसरे शब्दों में, आत्मा का ऋणी होने का अर्थ है पुनर्जीवित होना।

यीशु ने जयिरुस (एक आराधनालय के अधिकारी; लूका 8:41) की मृत बेटी (पद 49) को, उसका हाथ पकड़कर और यह कहकर, "बेटी, उठ जा!" (पद 54), फिर से जीवित कर दिया। पवित्रशास्त्र उसके फिर से जीवित होने का वर्णन इन शब्दों में करता है: "उसकी आत्मा लौट आई" (पद 55)। इसी तरह, जब यीशु मृत लाज़र (यूहन्ना 11:14) की कब्र पर गए—और यह आज्ञा दी, "पत्थर हटा दो" (पद 39), और फिर ऊँची आवाज़ में पुकारा, "लाज़र, बाहर आ जा!" (पद 43)—तो वह मृत व्यक्ति बाहर निकल आया, जिसके हाथ और पैर अभी भी कफ़न में लिपटे हुए थे (पद 44)। लाज़र भी जीवित होकर बाहर आया, क्योंकि उसकी

आत्मा उसके शरीर के साथ फिर से मिल गई थी। उसकी आत्मा का वापस लौटना और उसके भौतिक शरीर के साथ जुड़ना ही उसे फिर से जीवित कर पाया। पवित्र आत्मा ने हमारी आत्माओं को जीवन दिया है, जो कभी हमारे अपराधों और पापों के कारण मृत थीं (इफिसियों 2:1)। यह आत्मा शाश्वत है। पवित्र आत्मा का विचार ही जीवन है (रोमियों 8:6), और वह जीवन शाश्वत है। पवित्र आत्मा ने न केवल हमारी आत्माओं को—जो मृत थीं—जीवन दिया है, बल्कि वह हमारे नश्वर शरीरों को भी जीवन देगा—उन्हें ऐसे शरीरों में बदल देगा जो सदा जीवित रहेंगे (पद 13)। कब? यह ठीक उसी समय होगा जब अंतिम तुरही बजेगी (1 कुरिन्थियों 15:52)। उस क्षण—पलक झपकते ही—मृत लोग अविनाशी रूप में जिलाए जाएँगे, और हम सब बदल जाएँगे (पद 52)। पवित्र आत्मा हमारी आत्माओं और हमारे शरीरों, दोनों को जीवन देगा, जिससे वे सदा जीवित रहने में समर्थ हो सकें। यही तो शाश्वत जीवन की पूर्णता है!

इसलिए, प्रेरित पौलुस यह घोषणा करते हैं: "हम शरीर के ऋणी नहीं हैं कि शरीर के अनुसार जीवन बिताएँ" (रोमियों 8:12)। अब हम शरीर के ऋणी नहीं रहे। परिणामस्वरूप, हमें शरीर के आगे झुकना नहीं चाहिए और उसके तरीकों के अनुसार जीवन नहीं बिताना चाहिए। शरीर द्वारा पराजित जीवन जीने का—यानी, शरीर के अनुसार जीवन जीने का—क्या अर्थ है? गलातियों 5:19–21 पर नज़र डालें: “शरीर के काम तो प्रगट हैं, अर्थात् व्यभिचार, अशुद्धता, लुचपन; मूर्तिपूजा, टोना; बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म; डाह, मतवालापन, लीला-क्रीड़ा और इनके जैसे और काम। मैं तुम्हें पहले की तरह अब भी चेतावनी देता हूँ कि जो लोग ऐसे काम करते हैं, वे परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे।” कुलुस्सियों 3:5–6 पर भी नज़र डालें: “इसलिए अपने सांसारिक अंगों को मार डालो, अर्थात् व्यभिचार, अशुद्धता, कामवासना, बुरी इच्छाएँ और लोभ, जो कि मूर्तिपूजा है। इन्हीं बातों के कारण परमेश्वर का क्रोध आता है।” पवित्र आत्मा के ऋणी होने के नाते, हमें इस तरह से नहीं जीना चाहिए—कि हम शरीर से हार जाएँ और उसके अनुसार जिएँ। बल्कि, हमें पवित्र आत्मा के अनुसार चलना चाहिए। यदि हम ऐसा करते हैं, तो हम शरीर की इच्छाओं को पूरा नहीं करेंगे (गलातियों 5:16)। इसके अलावा, प्रेरित पौलुस हमें बताते हैं कि यदि हम पवित्र आत्मा की सहायता से शरीर के कुकर्मों को मार डालते हैं, तो हम जीवित रहेंगे (रोमियों 8:13)। हालाँकि यदि हम शरीर के ऋणी के रूप में जीते हैं, तो हमें निश्चित रूप से अनंत मृत्यु का सामना करना पड़ेगा; लेकिन यदि हम पवित्र आत्मा की

सहायता से शरीर के कुकर्मों को (यानी, शरीर के ऋणी के रूप में जीने के कार्य को) मार डालते हैं, तो हम निश्चित रूप से जीवित रहेंगे। पवित्र आत्मा के ऋणी के रूप में जीने का ठीक यही परिणाम है। इसका अर्थ है कि हम निश्चित रूप से जीवित रहेंगे—वास्तव में, हम अनंत काल तक जीवित रहेंगे। कब? यह तब होगा जब प्रभु स्वयं स्वर्ग से एक ज़ोरदार आज्ञा के साथ, प्रधान स्वर्गदूत की आवाज़ के साथ, और परमेश्वर की तुरही की आवाज़ के साथ नीचे उतरेंगे (1 थिस्सलोनिकियों 4:16)। उस समय, मसीह में मरे हुए लोग सबसे पहले जी उठेंगे (पद 16)। दूसरे शब्दों में, वे फिर से जीवित हो उठेंगे।

हम पवित्र आत्मा के ऋणी हैं। इसलिए, हमें पवित्र आत्मा के अनुसार ही जीना चाहिए। पवित्र आत्मा हमारे भीतर वास करता है (रोमियों 8:9) और हमें शैतान की शक्तियों से बचाता है। इसके अलावा, हमारे भीतर वास करने वाला पवित्र आत्मा हमें जीवन की शक्ति प्रदान करता है, बुद्धि देता है, हमें फल लाने में सक्षम बनाता है, और हमें विजय की ओर ले जाता है। पवित्र आत्मा हमें यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने की शक्ति प्रदान करती है, और इस प्रकार वह मृत आत्माओं को जीवन प्रदान करने का कार्य पूरा करती है। प्रभु के दूसरे आगमन पर, पवित्र आत्मा हमारे शरीर और हमारी आत्मा—दोनों को पुनर्जीवित करेगी, जिससे हम प्रभु के साथ अनंत काल तक जीवित रह सकेंगे।

पवित्र आत्मा द्वारा निर्देशित लोग (1)

[रोमियों 8:14-17]

कृपया बाइबल में रोमियों 8:14-17 खोलें: "क्योंकि जितने लोग परमेश्वर की आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं। क्योंकि तुम ने दासत्व की आत्मा नहीं पाई कि फिर डर लगे, परन्तु लेपालकपन की आत्मा पाई है, जिस से हम 'हे अब्बा, हे पिता' कहकर पुकारते हैं। आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं। और यदि सन्तान हैं, तो वारिस भी; वरन् परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं, यदि हम उसके साथ दुख उठाएं, ताकि उसके साथ महिमा भी पाएं।" इस अंश के आधार पर, मैं तीन बिंदुओं पर विचार करना चाहूंगा: (1) परमेश्वर के पुत्र (पद 14), (2) "हे अब्बा, हे पिता" कहकर पुकारना (पद 15), और (3) आत्मा का हमारी आत्मा के साथ गवाही देना कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं (पद 16)।

सबसे पहले, आइए विचार करें कि परमेश्वर का पुत्र होने का क्या अर्थ है।

कृपया रोमियों 8:14 देखें: "क्योंकि जितने लोग परमेश्वर की आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं।" यहाँ, शब्द "क्योंकि" (for) एक संयोजक के रूप में कार्य करता है, जो एक ऐसे वाक्य को प्रस्तुत करता है जो पद 13 के उत्तरार्ध में पाए जाने वाले वाक्यांश "तुम जीवित रहोगे" (अर्थात अनंत जीवन) की व्याख्या करता है। यह चार अलग-अलग तरीकों से उन लोगों की विशेषताओं का वर्णन करता है जो वास्तव में जीवित हैं। जो लोग जीवित हैं, वे हैं: (1) परमेश्वर के पुत्र (पद 14), (2) वे लोग जो परमेश्वर को "हे अब्बा, हे पिता" कहकर पुकारते हैं (पद 15), (3) परमेश्वर की सन्तान (पद 16), और (4) परमेश्वर के वारिस (पद 17)। प्रेरित

पौलुस यहाँ उन लोगों के बारे में बात कर रहे हैं जो "परमेश्वर की आत्मा के चलाए चलते हैं"; एक महत्वपूर्ण बात जो ध्यान में रखनी चाहिए, वह यह है कि पवित्र आत्मा—अर्थात परमेश्वर की आत्मा—जब हमारे पास आती है, तो वह जो विभिन्न कार्य करती है, उनमें से सबसे महत्वपूर्ण कार्य हमारा मार्गदर्शन करना है। पवित्र आत्मा हमें समस्त सत्य की ओर ले जाती है। बाइबल में यूहन्ना 16:13 देखें: "परन्तु जब सत्य का आत्मा आएगा, तो वह तुम्हें समस्त सत्य का मार्ग दिखाएगा...।" पवित्र आत्मा हमें केवल बड़ी घटनाओं या महत्वपूर्ण मामलों में ही मार्ग नहीं दिखाता; बल्कि, वह हमारे जीवन के हर पहलू में हमारा मार्गदर्शन करता है। जो लोग आत्मा के अनुसार चलते हैं (रोमियों 8:4), उन्हें दिन-प्रतिदिन उसका मार्गदर्शन प्राप्त होता है। हम अपने दैनिक जीवन के बीच में ही पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन का अनुभव करते हैं। कभी-कभी, हो सकता है कि हम उस क्षण में उसके मार्गदर्शन को पहचान न पाएं; फिर भी, अक्सर—जब वह क्षण बीत जाता है—तो हमें एहसास होता है कि वास्तव में पवित्र आत्मा ही हमारा नेतृत्व कर रहा था। पवित्र आत्मा हमें विशिष्ट निर्देश देता है। बाइबल में प्रेरितों के काम 8:29 देखें: "आत्मा ने फिलिप्पुस से कहा, 'उस रथ के पास जा और उसके निकट ही रह।'" पवित्र आत्मा ने फिलिप्पुस को उस रथ के पास जाने का निर्देश दिया, जिसमें "एक कूशी खोजा, जो कूशियों की रानी कंदाके का एक महत्वपूर्ण अधिकारी और उसके सारे खजाने का भंडारी था" (पद 27) सवार था (पद 29)। पवित्र आत्मा से यह निर्देश मिलने पर, फिलिप्पुस ने आज्ञा मानी और रथ की ओर दौड़ पड़ा (पद 30)। बाइबल में प्रेरितों के काम 10:20 देखें: "उठ, नीचे जा, और बिना किसी हिचकिचाहट के तुरंत उनके साथ हो ले; क्योंकि मैंने ही उन्हें भेजा है।" पवित्र आत्मा ने प्रेरित पतरस को—जो प्रार्थना करने के लिए छत पर गया था (पद 9) और उसके बाद उसने एक दर्शन देखा था (पद 10–16)—कुरनेलियुस द्वारा भेजे गए दो आदमियों के साथ जाने का निर्देश दिया (पद 17, 19) (पद 20)। पवित्र आत्मा से यह निर्देश मिलने पर, प्रेरित पतरस अगले दिन उठा और उनके साथ चला गया (पद 23)। बाइबल में प्रेरितों के काम 13:2 देखें: "जब वे प्रभु की उपासना कर रहे थे और उपवास रख रहे थे, तो पवित्र आत्मा ने कहा, 'बरनबास और शाऊल को मेरे लिए अलग करो, उस काम के लिए जिसके लिए मैंने उन्हें बुलाया है।'" पवित्र आत्मा ने अंतियोख की कलीसिया को बरनबास और शाऊल को एक विशेष काम के लिए अलग करने का निर्देश दिया। पवित्र आत्मा के निर्देश का पालन करते हुए, अंताकिया के चर्च ने उपवास रखा, प्रार्थना की, बरनबास और शाऊल (पौलुस) पर हाथ रखे, और उन्हें बाहर भेजा (पद 3)। प्रेरितों के काम 16:6–7 पर

विचार करें: "पवित्र आत्मा ने उन्हें एशिया में वचन सुनाने से मना किया था... यीशु की आत्मा ने उन्हें अनुमति नहीं दी।" पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान, पवित्र आत्मा ने उसे रोका, उसे एशिया माइनर में प्रवेश करने से मना किया और इसके बजाय उसे मकिदुनिया (यूरोप) की ओर निर्देशित किया। इस प्रकार, प्रेरित पौलुस ने पवित्र आत्मा की रोक और उसके मार्गदर्शन (अगुवाई) दोनों के प्रति समर्पण किया।

प्रेरित पौलुस घोषणा करता है, "क्योंकि जितने लोग परमेश्वर की आत्मा के द्वारा चलाए जाते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं।" जो व्यक्ति पवित्र आत्मा का मार्गदर्शन प्राप्त करता है, वह परमेश्वर का पुत्र है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर का पुत्र वह है जो पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में जीता है। परमेश्वर का पुत्र अपनी मनमर्ज़ी के अनुसार नहीं जीता, न ही वह अपनी स्वार्थी इच्छाओं पर कार्य करता है। इसके अलावा, परमेश्वर का पुत्र शैतान की आज्ञाओं का पालन नहीं करता। इसके बजाय, परमेश्वर का पुत्र पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन और निर्देशों का पालन करता है। विश्वासियों के बीच, एक बड़ी संख्या ऐसे लोगों की है जो अपने सांसारिक पिताओं द्वारा दिए गए ज़ख्मों के कारण संकट और पीड़ा से गुज़रते हैं। परिणामस्वरूप, वे अपने पिताओं के प्रति घृणा और रोष की भावनाएँ पाल लेते हैं। ऐसे विश्वासियों के लिए, इस सच्चाई को पूरी तरह से स्वीकार करना कठिन हो सकता है कि परमेश्वर स्वयं उनका पिता है—ठीक इसी कारण से कि उनके अपने सांसारिक पिताओं के साथ अनुभव कैसे रहे हैं। सांसारिक पिताओं को घर के भीतर पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में जीकर इस सच्चाई को प्रदर्शित करना चाहिए कि परमेश्वर ही पिता है; ऐसा करके वे अपने बच्चों को इस सच्चाई को आसानी से स्वीकार करने में सक्षम बनाते हैं। फिर भी, भले ही कोई सांसारिक पिता ऐसा करने में असफल रहे, पवित्र आत्मा धर्मशास्त्र के प्रकाशन के माध्यम से बच्चों को परमेश्वर-पिता का बोध कराने में पूरी तरह से सक्षम है। वास्तव में, यह तो और भी बड़ा अनुग्रह है।

बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर मेरा—और हमारा—पिता है। कृपया रोमियों 8:3 देखें: "क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर की कमज़ोरी के कारण न कर सकी, वह परमेश्वर ने किया; अर्थात् उसने अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में, पाप के कारण भेजकर, शरीर में पाप को दण्ड दिया।" हमें बचाने के लिए, परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र, यीशु मसीह को इस संसार में भेजा। उसे भेजते समय, परमेश्वर ने—पाप के कारण—अपने निष्पाप पुत्र को पापमय शरीर की समानता में भेजा, और इस प्रकार शरीर में पाप को दण्ड

दिया। परमेश्वर ने हमारे सारे पाप यीशु पर डाल दिए और हमारे सारे अधर्मों का दण्ड दिया। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र, यीशु मसीह को हमारे सारे पापों का पूरा दण्ड उठाने दिया। इसके परिणामस्वरूप, हमें उद्धार प्राप्त हुआ है और हम परमेश्वर के पुत्र (संतान) बन गए हैं। इस प्रकार, परमेश्वर ने हम पर उद्धार का महान प्रेम बरसाया है। प्रेम का परमेश्वर एक स्वर्गीय पिता है जो हमसे इतना गहरा प्रेम करता है कि उसने अपने एकलौते पुत्र को क्रूस पर दे दिया। कृपया रोमियों 8:32 देखें: "जिसने अपने निज पुत्र को भी न छोड़ा, परन्तु हम सब के लिए उसे दे दिया, वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्यों न देगा?"

पवित्र आत्मा हमारा मार्गदर्शन करने के लिए आया है। पवित्र आत्मा हमें समस्त सत्य की ओर ले जाता है। इसके अलावा, पवित्र आत्मा हमें यीशु मसीह और परमेश्वर की ओर ले जाता है। यदि हम पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन के अनुसार जीवन जीते हैं, तो हम परमेश्वर की संतान हैं। वास्तव में, कोई भी व्यक्ति जो पवित्र आत्मा द्वारा चलाया जाता है, वह परमेश्वर की संतान है। हमें पवित्र आत्मा का मार्गदर्शन ग्रहण करना चाहिए और परमेश्वर की संतान होने के योग्य जीवन जीना चाहिए।

पवित्र आत्मा द्वारा निर्देशित लोग (2)

[रोमियों 8:14-17]

कृपया रोमियों 8:15 देखें: "क्योंकि तुम्हें फिर से दासता की आत्मा नहीं मिली कि तुम फिर डर में रहो, बल्कि तुम्हें गोद लिए जाने की आत्मा मिली है, जिसके द्वारा हम पुकारते हैं, 'अब्बा, पिता।'" यहाँ जिस "दासता की आत्मा" और "गोद लिए जाने की आत्मा" का ज़िक्र है—खास तौर पर वे किस चीज़ या व्यक्ति को दर्शाते हैं—इस बारे में विद्वानों के अलग-अलग सिद्धांत हैं, लेकिन उन्हें तीन मुख्य विचारों में सारांशित किया जा सकता है: (1) यह सिद्धांत कि दासता की आत्मा और गोद लिए जाने की आत्मा, दोनों ही मानवीय आत्मा को संदर्भित करते हैं; (2) यह सिद्धांत कि दासता की आत्मा एक दुष्ट आत्मा है, जबकि गोद लिए जाने की आत्मा पवित्र आत्मा है; और (3) यह सिद्धांत कि दासता की आत्मा और गोद लिए जाने की आत्मा, दोनों ही पवित्र आत्मा को संदर्भित करते हैं। मैं तीसरे सिद्धांत का समर्थन करता हूँ—कि दासता की आत्मा और गोद लिए जाने की आत्मा, दोनों ही पवित्र आत्मा को संदर्भित करते हैं। इसका कारण यह है कि बाइबल में ऐसे कई अंश हैं जो इस तीसरे दृष्टिकोण का समर्थन करते हैं।

शास्त्रों के अनुसार, "दासता की आत्मा" (पद 15) भी पवित्र आत्मा को ही संदर्भित करती है। प्रेरितों के काम अध्याय 2 में, हम देखते हैं कि जब पवित्र आत्मा उतरी, तो यीशु के चेले आत्मा से भर गए और उन्होंने निडर होकर यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार किया। उनमें से, जब प्रेरित पतरस—जो पवित्र आत्मा से भरा हुआ था—ने सुसमाचार का प्रचार किया (प्रेरितों के काम 2:14-36), तो उसके संदेश को सुनने वाले श्रोताओं की प्रतिक्रिया यह थी: "जब उन्होंने यह सुना, तो उनके दिल पर गहरी चोट लगी और उन्होंने पतरस और दूसरे प्रेरितों से पूछा, 'भाइयो, हम क्या करें?'" (पद 37)। यह पवित्र आत्मा का ही काम है—वही "दासता की

आत्मा जो डर की ओर ले जाती है," जिसका ज़िक्र रोमियों 8:15 में किया गया है। जब पवित्र आत्मा ने प्रेरित पतरस को भर दिया और उसे यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने के लिए सामर्थ्य दी, तो उन 3,000 लोगों ने, जिन्होंने वह संदेश सुना (प्रेरितों के काम 2:41), अपने पाप की गंभीरता को महसूस किया—कि उन्होंने ही यीशु मसीह को क्रूस पर चढ़ाया था। डर से काँपते हुए और दिल पर गहरी चोट लगने के कारण, उन्होंने पतरस और दूसरे प्रेरितों से यह पूछकर जवाब दिया, "भाइयो, हम क्या करें?" (प्रेरितों के काम 2:37)। यह सुनकर, पतरस ने उन्हें जवाब दिया: "पश्चाताप करो और तुममें से हर कोई, अपने पापों की क्षमा के लिए, यीशु मसीह के नाम पर बपतिस्मा ले। और तुम्हें पवित्र आत्मा का वरदान मिलेगा। यह वादा तुम्हारे और तुम्हारे बच्चों के लिए, और उन सभी के लिए है जो दूर हैं—उन सभी के लिए जिन्हें हमारा प्रभु परमेश्वर बुलाएगा" (पद 38–39)। इसके परिणामस्वरूप, उन 3,000 लोगों ने पश्चाताप किया, यीशु पर अपना विश्वास रखा, बपतिस्मा लिया, और विश्वासी बन गए (पद 41)। इस प्रकार, पवित्र आत्मा—जो एक सेवक की आत्मा है—ने सबसे पहले उनके भीतर एक "भय की आत्मा" (या "दासता की आत्मा") के रूप में काम किया, ताकि उन्हें उनके पापों का एहसास कराया जा सके, उन्हें पश्चाताप की ओर ले जाया जा सके, और उन्हें यीशु पर विश्वास करने और उसे ग्रहण करने में सक्षम बनाया जा सके। प्रेरितों के काम 7:54 में, बाइबल उन श्रोताओं की प्रतिक्रिया दर्ज करती है जिन्होंने स्तेफनुस का उपदेश सुना था। उन्होंने भी स्तेफनुस के माध्यम से वचन सुना और उनके हृदय में भी चुभन महसूस हुई। हालाँकि, उन 3,000 विश्वासियों के विपरीत जिन्होंने पूछा था, "भाइयों, हम क्या करें?" (2:37), इस समूह ने इसके बजाय स्तेफनुस पर अपने दाँत पीसे (7:54)। क्योंकि पवित्र आत्मा ने उनके भीतर "दासता की आत्मा जो भय की ओर ले जाती है" (रोमियों 8:15) के रूप में काम नहीं किया, इसलिए उन्होंने इसके बजाय एक साथ स्तेफनुस पर धावा बोल दिया, उसे शहर के बाहर घसीट ले गए, और उसे पत्थरों से मार डालने का जघन्य पाप किया (प्रेरितों के काम 7:57–58)। उस समय, शाऊल—जिसने अभी तक यीशु पर विश्वास नहीं किया था (और जो बाद में विश्वास करने के बाद पौलुस बन गया)—ने भी स्तेफनुस की हत्या में उनके साथ भाग लिया (पद 58)। शाऊल (पौलुस) ने भी पवित्र आत्मा को ग्रहण करने से पहले कई पाप किए थे—वह आत्मा जो हमें दासता की उस आत्मा से मुक्त करती है जो भय की ओर ले जाती है। कृपया प्रेरितों के काम 8:1, 3 और 9:1–2 देखें: "शाऊल उसकी मृत्यु से सहमत था। उस दिन यरूशलेम में कलीसिया पर बड़ा सताव हुआ, और प्रेरितों को छोड़कर वे सब यहूदिया और सामरिया के क्षेत्रों में तितर-बितर हो गए... परन्तु शाऊल कलीसिया को उजाड़ रहा था; वह घर-घर घुसकर

पुरुषों और स्त्रियों को घसीट ले जाता और उन्हें जेल में डाल देता था... इस बीच, शाऊल, जो अभी भी प्रभु के चेलों के विरुद्ध धमकियाँ और हत्या की बातें कर रहा था, महायाजक के पास गया और उससे दमिश्क की आराधनालयों के लिए पत्र माँगे, ताकि यदि उसे 'इस मार्ग' (Way) के किसी भी व्यक्ति—चाहे पुरुष हो या स्त्री—मिलें, तो वह उन्हें बाँधकर यरूशलेम ले आए।" हमारी स्थिति कैसी है? क्या हमने सचमुच, पवित्र आत्मा के द्वारा—वह आत्मा जो हमें दासता की उस आत्मा से मुक्त करती है जो भय की ओर ले जाती है—अपने पिछले पापों को पहचाना है, पश्चाताप किया है, प्रभु को ग्रहण किया है, और क्या अब हम विश्वास में बने हुए हैं? यदि हमने अभी तक ऐसा नहीं किया है, तो मैं प्रार्थना करता हूँ कि पवित्र आत्मा हमारे पास आए, हमें अपने पापों को पहचानने में समर्थ करे, हमें पश्चाताप की ओर ले जाए, और हमें प्रभु को ग्रहण करने की शक्ति दे।

शास्त्रों के अनुसार, "गोद लेने की आत्मा" (रोमियों 8:15) का तात्पर्य भी पवित्र आत्मा से ही है। पवित्र आत्मा हमारे भीतर गोद लेने की आत्मा के रूप में कार्य करती है। हम—पापी लोग जो कभी परमेश्वर के शत्रु थे—पवित्र परमेश्वर के गोद लिए हुए बच्चे कैसे बन सकते हैं? परमेश्वर पिता इसे संभव बनाते हैं। कृपया रोमियों 8:3–4 देखें: "क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर की कमज़ोरी के कारण न कर सकी, वह परमेश्वर ने किया; उसने अपने ही पुत्र को पापमय शरीर के रूप में, पाप के कारण भेजा: उसने शरीर में पाप को दण्डित किया, ताकि व्यवस्था की धार्मिक माँग हममें पूरी हो सके, जो शरीर के अनुसार नहीं, बल्कि आत्मा के अनुसार चलते हैं।" परमेश्वर पिता ने न केवल हमें अपने गोद लिए हुए बच्चे बनने में समर्थ किया, बल्कि पवित्र आत्मा—गोद लेने की आत्मा—को भी भेजा ताकि हमारा आत्मिक पुनर्जन्म हो सके; यह हमें परमेश्वर पिता को "अब्बा, पिता" (पद 15) कहकर पुकारने में समर्थ बनाता है, और हमें परमेश्वर के वारिस तथा मसीह के साथ सह-वारिस के रूप में स्थापित करता है (पद 17)। कृपया गलातियों 4:6 देखें: "और क्योंकि तुम पुत्र हो, इसलिए परमेश्वर ने अपने पुत्र का आत्मा तुम्हारे हृदयों में भेजा है, जो पुकारता है, 'अब्बा, पिता!' इसलिए अब तुम दास नहीं, बल्कि पुत्र हो; और यदि पुत्र हो, तो मसीह के द्वारा परमेश्वर के वारिस भी हो।" पवित्र आत्मा—जो गोद लेने का आत्मा है—के मार्गदर्शन में चलकर, हम परमेश्वर की संतान बन गए हैं, जो परमेश्वर पिता को पुकारते हैं, "अब्बा, पिता।" इसलिए, पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन का पालन करते हुए, हमें भी परमेश्वर पिता

को पुकारना चाहिए, "अब्बा, पिता," ठीक वैसे ही जैसे पुत्र, यीशु ने किया था। कृपया मरकुस 14:36 देखें: "और उसने कहा, 'अब्बा, पिता, तेरे लिए सब कुछ संभव है। इस प्याले को मुझसे दूर कर दे; फिर भी, मेरी नहीं, बल्कि तेरी ही इच्छा पूरी हो।'" इसलिए, हमें भी—यीशु के उदाहरण का अनुसरण करते हुए—आज्ञाकारिता का ऐसा जीवन जीना चाहिए जो हमारे "अब्बा, पिता" की इच्छा को पूरा करे। ऐसा जीवन वास्तव में एक मसीही का आनंदमय जीवन होता है—एक ऐसा जीवन जो कृतज्ञता, आनंद, शांति और सामर्थ्य से लबालब भरा होता है।

पवित्र आत्मा द्वारा निर्देशित लोग (3)

[रोमियों 8:14-17]

कृपया रोमियों 8:16 देखें: "आत्मा स्वयं हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है कि हम परमेश्वर की संतान हैं।" प्रेरित पौलुस यहाँ पवित्र आत्मा के बारे में बात कर रहे हैं (पद 16)। पवित्र आत्मा कौन है? पवित्र आत्मा परमेश्वर है। इसके अलावा, पवित्र आत्मा में ऐसे गुण—विशेषताएँ—हैं जो केवल परमेश्वर में ही पाए जाते हैं। इन गुणों को तीन मुख्य बिंदुओं के तहत समझा जा सकता है: (1) परमेश्वर, जो पवित्र आत्मा है, सनातन है। कृपया इब्रानियों 9:14 देखें: "तो फिर, मसीह का लहू, जिसने सनातन आत्मा के द्वारा स्वयं को परमेश्वर के सामने निष्कलंक बलिदान के रूप में प्रस्तुत किया, हमारे विवेक को उन कार्यों से कितना अधिक शुद्ध करेगा जो मृत्यु की ओर ले जाते हैं, ताकि हम जीवित परमेश्वर की सेवा कर सकें!" यह अंश पवित्र आत्मा को "सनातन आत्मा" के रूप में संदर्भित करता है। (2) परमेश्वर, जो पवित्र आत्मा है, सर्वव्यापी है। कृपया भजन संहिता 139:7-8 देखें: "मैं तेरी आत्मा से कहाँ जा सकता हूँ? मैं तेरी उपस्थिति से कहाँ भाग सकता हूँ? यदि मैं स्वर्ग तक चढ़ जाऊँ, तो तू वहाँ है; यदि मैं पाताल में अपना बिछौना बिछाऊँ, तो तू वहाँ है।" क्योंकि पवित्र आत्मा ही परमेश्वर है, इसलिए वह हर जगह उपस्थित है। वह हमारे भीतर भी वास करता है—यानी उन लोगों के भीतर जो परमेश्वर की संतान हैं। हालाँकि, शैतान—जो एक सृजित प्राणी है—सर्वव्यापी नहीं है। शैतान हमारे भीतर वास नहीं करता, जो यीशु में विश्वास करते हैं। यद्यपि शैतान के चेले हमारे बीच घुसपैठ करने का प्रयास कर सकते हैं, लेकिन शैतान स्वयं हमारे भीतर निवास नहीं करता। (3) परमेश्वर, जो पवित्र आत्मा है, ऐसे कार्य करता है जिन्हें केवल परमेश्वर ही पूरा कर सकता है। वे कौन से कार्य हैं जिन्हें केवल परमेश्वर ही कर सकता है? (a) सृजन। कृपया बाइबल में उत्पत्ति 1:1–2 देखें: "आदि में परमेश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी की सृष्टि की। पृथ्वी बेडौल और सुनसान थी, और गहरे जल के ऊपर अंधकार छाया हुआ था। और परमेश्वर

की आत्मा जल के ऊपर मँडरा रही थी।" यहाँ, "परमेश्वर की आत्मा" का तात्पर्य पवित्र आत्मा से है। (b) पवित्र आत्मा जीवन प्रदान करता है। कृपया बाइबल में रोमियों 8:2 देखें: "क्योंकि मसीह यीशु में जीवन की आत्मा के नियम ने तुम्हें पाप और मृत्यु के नियम से स्वतंत्र कर दिया है।" पवित्र आत्मा जीवन का परमेश्वर है। पवित्र आत्मा वह परमेश्वर है जो जीवन की रचना करता है। पवित्र आत्मा वह परमेश्वर है जो हमें जीवन देता है। कृपया बाइबल में रोमियों 8:11 देखें: "यदि उसका आत्मा, जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, तुम में बसा हुआ है, तो जिसने मसीह यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, वह तुम्हारे मरणशील शरीरों को भी अपने उस आत्मा के द्वारा जिलाएगा जो तुम में बसा हुआ है।" जब यीशु लौटेंगे, तो पवित्र आत्मा जो हमारे भीतर बसा हुआ है, वह हमारे मरणशील शरीरों को भी जीवन देगा। हम पुनर्जीवित होंगे। हम फिर से जीवित होंगे।

रोमियों 8:16 में, प्रेरित पौलुस "परमेश्वर की संतानों" के बारे में बात करते हैं; यहाँ, हम "परमेश्वर" के संबंध में चार बिंदुओं पर विचार कर सकते हैं: (1) परमेश्वर हमारा "अब्बा, पिता" है (पद 15)। (2) परमेश्वर वह है जो स्वयं-अस्तित्ववान है। कृपया निर्गमन 3:14–15 देखें: "परमेश्वर ने मूसा से कहा, 'मैं जो हूँ, सो हूँ।' और उसने कहा, 'इस्राएलियों से यह कहना: "मैं जो हूँ, उसने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।"' परमेश्वर ने मूसा से यह भी कहा, 'इस्राएलियों से यह कहना: "प्रभु, तुम्हारे पूर्वजों का परमेश्वर—इब्राहीम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर—उसने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।" यह मेरा नाम सदा तक रहेगा, वह नाम जिसके द्वारा मुझे पीढ़ी-दर-पीढ़ी याद किया जाएगा।'" निर्गमन 3 वह अध्याय है जिसमें परमेश्वर मूसा को उसकी सेवा के लिए बुलाते हैं। इस अध्याय में, मूसा परमेश्वर से यह प्रश्न पूछता है: "मान लीजिए मैं इस्राएलियों के पास जाता हूँ और उनसे कहता हूँ, 'तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है,' और वे मुझसे पूछते हैं, 'उसका नाम क्या है?' तब मैं उन्हें क्या बताऊँ?" (पद 13)। परमेश्वर के उत्तर पर ध्यान दें: "परमेश्वर ने मूसा से कहा, 'मैं जो हूँ, सो हूँ।' और उसने कहा, 'इस्राएलियों से यह कहना: "मैं जो हूँ, उसने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।"'" (पद 14)। परमेश्वर वह है जो "स्वयं से है" (स्वयं-अस्तित्ववान)। परमेश्वर का अस्तित्व स्वयं-संपूर्ण है; वह स्वयं से अस्तित्व में है। (3) परमेश्वर वह सब कुछ प्रदान करता है जिसकी समस्त सृष्टि को आवश्यकता होती है। परमेश्वर कैसे जीवित रहता है? जबकि हम दूसरों से मदद लेकर जीते हैं, परमेश्वर पूरी

तरह से अपने आप से ही जीवित रहते हैं। कृपया प्रेरितों के काम 17:25 देखें: "न ही मनुष्यों के हाथों से उनकी सेवा की जाती है, मानो उन्हें किसी चीज़ की ज़रूरत हो; बल्कि, वे स्वयं ही सभी को जीवन, साँस और बाकी सब कुछ देते हैं।" परमेश्वर का अस्तित्व अपने आप से है; वास्तव में, वे ही हैं जो सारी सृष्टि की ज़रूरतों को पूरा करते हैं। परमेश्वर जीवन देते हैं, और वे साँस भी देते हैं। (4) परमेश्वर एक वाचा के परमेश्वर हैं। परमेश्वर ऐसे परमेश्वर हैं जो वाचाएँ स्थापित करते हैं। वे ऐसे परमेश्वर हैं जो वादे करते हैं और शपथ लेते हैं। बाइबल में निर्गमन 3:15 देखें: "परमेश्वर ने मूसा से यह भी कहा, 'इस्राएलियों से यह कहना: "यहोवा, तुम्हारे पूर्वजों का परमेश्वर—अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर—ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।" यही मेरा नाम सदा के लिए रहेगा, और इसी नाम से मुझे पीढ़ी-दर-पीढ़ी याद किया जाएगा।'" यहाँ, यह वाक्यांश— "यहोवा, तुम्हारे पूर्वजों का परमेश्वर—अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर"—यह घोषणा करता है कि परमेश्वर एक वाचा के परमेश्वर हैं। परमेश्वर ने अब्राहम के साथ एक वाचा स्थापित की थी। और उन्होंने यह वादा किया था: "यहोवा अब्राम को दिखाई दिए और कहा, 'मैं यह देश तेरे वंश को दूँगा'" (उत्पत्ति 12:7)। परमेश्वर ने अब्राहम के बेटे, इसहाक से भी एक वादा किया था: "इसी देश में रह, और मैं तेरे साथ रहूँगा और तुझे आशीष दूँगा। क्योंकि मैं तुझे और तेरे वंशजों को ये सारे देश दूँगा" (26:3)। परमेश्वर ने अब्राहम के पोते, याकूब से भी एक वादा किया था: "उसके ऊपर यहोवा खड़े थे, और उन्होंने कहा: 'मैं यहोवा हूँ, तेरे पिता अब्राहम का परमेश्वर और इसहाक का परमेश्वर। जिस भूमि पर तू लेटा है, वह मैं तुझे और तेरे वंशजों को दूँगा'" (28:13)।

परमेश्वर एक ऐसा परमेश्वर है जो वाचाएँ बाँधता है और उसने जो वादा किया है, उसे पूरी ईमानदारी से ठीक वैसा ही पूरा करता है। बाइबल में निर्गमन 3:16 को देखिए: "जाओ, इस्राएल के पुरनियों को इकट्ठा करो और उनसे कहो, 'यहोवा, तुम्हारे पूर्वजों का परमेश्वर—अब्राहम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर—मेरे सामने प्रकट हुआ है और उसने कहा है: मैंने तुम पर नज़र रखी है और देखा है कि मिस्र में तुम्हारे साथ क्या किया गया है।'" परमेश्वर ने मूसा को मिस्र भेजा ताकि वह लगभग बीस लाख इस्राएलियों को—जो लगभग 430 सालों से मिस्र में गुलामों की तरह रह रहे थे—उस देश से बाहर निकाले और उन्हें "एक सुंदर और विशाल

देश, दूध और शहद से बहने वाले देश—कनान देश" (पद 8) की ओर ले जाए। हालाँकि मूसा उन्हें यरदन नदी तक ले गया, इससे पहले कि परमेश्वर उसे अपने पास बुला लेता, परमेश्वर ने फिर यहोशू को खड़ा किया ताकि वह अंततः उन्हें कनान के उस 'वादा किए गए देश' में ले जाए। यहोशू 21:43 और 45 को देखिए: "इस प्रकार यहोवा ने इस्राएल को वह सारा देश दे दिया जिसके देने की उसने उनके पूर्वजों से शपथ खाई थी, और उन्होंने उस पर कब्ज़ा कर लिया और वहीं बस गए... इस्राएल के घराने से यहोवा के किए गए सभी अच्छे वादों में से एक भी वादा अधूरा नहीं रहा; हर एक वादा पूरा हुआ।"

परमेश्वर ने आदम के साथ एक वाचा बाँधी थी। बाइबल में उत्पत्ति 2:17 को देखिए: "परन्तु तुम भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल मत खाना, क्योंकि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे, उसी दिन तुम निश्चय मर जाओगे।" हालाँकि, आदम ने परमेश्वर के साथ बाँधी गई इस वाचा को—जिसे 'कर्मों की वाचा' (Covenant of Works) के नाम से जाना जाता है—तोड़ दिया; उसने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया और भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खा लिया। इसलिए, परमेश्वर ने आदम के साथ एक नई वाचा बाँधी: 'अनुग्रह की वाचा' (Covenant of Grace)। कृपया उत्पत्ति 3:15 को देखिए: "और मैं तेरे और स्त्री के बीच, और तेरे वंश और उसके वंश के बीच बैर उत्पन्न करूँगा; वह तेरे सिर को कुचलेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा।" परमेश्वर ने उत्पत्ति 3:15 की इस वाचा को यीशु मसीह के क्रूस पर पूरा किया [यह एक "पहले से ही" पूरी हो चुकी बात है]। कृपया यूहन्ना 19:30 को देखिए: "जब यीशु ने वह खट्टा दाखमधु ले लिया, तो उसने कहा, 'यह पूरा हुआ,' और उसने अपना सिर झुकाया और अपने प्राण त्याग दिए।" कृपया प्रकाशितवाक्य 21:6 देखें: "और उसने मुझसे कहा, 'यह पूरा हो गया! मैं ही अल्फा और ओमेगा हूँ, आदि और अंत। प्यासे को मैं जीवन के जल के सोते से बिना किसी कीमत के दूँगा'" [एक "अभी तक नहीं" पूरी हुई बात]। यहाँ, वाक्यांश "यह पूरा हो गया" का अनुवाद कॉमन ट्रांसलेशन, किंग जेम्स वर्शन और चीनी बाइबल अनुवाद में "यह समाप्त हो गया" के रूप में किया गया है। परमेश्वर ने वह सब कुछ पहले ही पूरी तरह से पूरा कर दिया है जिसका उसने यीशु मसीह के क्रूस पर वादा किया था ("पहले ही"), और वह भविष्य में यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर इसे पूरी तरह से पूरा करेगा ("अभी तक नहीं")। वह कौन सा वादा है जिसे परमेश्वर भविष्य में यीशु के दूसरे

आगमन पर पूरा करेगा? कृपया यूहन्ना 14:3 देखें: "और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूँ, तो मैं फिर आऊँगा और तुम्हें अपने पास ले जाऊँगा, ताकि जहाँ मैं हूँ, वहाँ तुम भी रहो।" इसके अलावा, 1 थिस्सलोनिकियों 4:16–17 पर विचार करें: "क्योंकि प्रभु स्वयं स्वर्ग से एक ललकार के साथ, एक प्रधान दूत की आवाज़ के साथ, और परमेश्वर की तुरही के साथ नीचे उतरेगा। और मसीह में मरे हुए लोग सबसे पहले जी उठेंगे। फिर हम जो जीवित हैं और बचे हुए हैं, उन्हें उनके साथ बादलों में ऊपर उठा लिया जाएगा, ताकि हवा में प्रभु से मिल सकें। और इस प्रकार हम हमेशा प्रभु के साथ रहेंगे।" साथ ही, प्रकाशितवाक्य 19:6–8 पर विचार करें: "और मैंने सुना, मानो एक बड़ी भीड़ की आवाज़ हो, जैसे बहुत से जल की आवाज़ हो और जैसे ज़ोरदार गर्जनाओं की आवाज़ हो, जो कह रही थी, 'हल्लेलूया! क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर राज्य करता है! आओ हम आनन्दित हों और मगन हों और उसे महिमा दें, क्योंकि मेम्ने का विवाह आ गया है, और उसकी पत्नी ने स्वयं को तैयार कर लिया है।' और उसे यह वरदान दिया गया कि वह महीन मलमल पहने, जो स्वच्छ और चमकीली हो, क्योंकि वह महीन मलमल संतों के धर्म के काम हैं।" इसलिए, वाचा के परमेश्वर पर अपना विश्वास रखते हुए, हम भजन 370 ("To Me, Who Am in the Lord") के चौथे पद और उसके टेक के बोलों के माध्यम से परमेश्वर की स्तुति करने में समर्थ होते हैं: "जो वाचा मैंने अपने प्रभु के साथ बांधी है, वह सदा अटल रहती है; जब तक मैं उसके राज्य में नहीं पहुँच जाता, वह सदैव मेरी रक्षा करता है। प्रभु की स्तुति हो—हल्लेलूया, हल्लेलूया! यद्यपि आगे का मार्ग लंबा और ऊबड़-खाबड़ है, फिर भी मैं केवल प्रभु का ही अनुसरण करूँगा।"

हमारे विश्वासयोग्य परमेश्वर की वाचा अटल है। परमेश्वर ने अपनी वाचा पूरी की है, वह अभी भी उसे पूरी कर रहा है, और अंततः वह उसे पूर्ण रूप से संपन्न करेगा। इसलिए, हमें केवल पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन का अनुसरण करते हुए अपना जीवन जीना है, और पूरी तरह से वाचा के परमेश्वर पर अपने विश्वास पर निर्भर रहना है। हमारे 'अब्बा' पिता—वह परमेश्वर जो स्वयं-अस्तित्ववान है—निश्चित रूप से उस वाचा को पूरा करेगा जो उसने हमारे साथ बांधी है। इसी विश्वास के द्वारा, जब हम पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में अपना जीवन जीते हैं, तो अंततः हम—आत्मा द्वारा अगुवाई पाते हुए—उसके राज्य में प्रवेश करेंगे, और 'मेम्ने के विवाह-भोज' में सम्मिलित होकर, अनंत जीवन के परम-आनंद का अनुभव करेंगे।

“यदि संतान हैं, तो वारिस भी हैं”

[रोमियों 8:14–17]

रोमियों 8:17 पर ध्यान दें: “और यदि संतान हैं, तो वारिस भी हैं—परमेश्वर के वारिस और मसीह के साथ सह-वारिस; यदि हम सचमुच उसके साथ दुख उठाते हैं, ताकि हम भी उसके साथ महिमा पाएं।” हम परमेश्वर की संतान हैं, और हम वारिस भी हैं। परमेश्वर की संतान कौन हैं? वे वे लोग हैं जो परमेश्वर के आत्मा—पवित्र आत्मा—द्वारा चलाए जाते हैं। रोमियों 8:14 पर ध्यान दें: “क्योंकि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा द्वारा चलाए जाते हैं, वे ही परमेश्वर की संतान हैं।” पवित्र आत्मा—गोद लेने के आत्मा—के द्वारा हम परमेश्वर को पुकारते हुए कहते हैं, “अब्बा, हे पिता।” रोमियों 8:15 पर ध्यान दें: “क्योंकि तुम्हें फिर से डरने के लिए दासता का आत्मा नहीं मिला, बल्कि तुम्हें गोद लेने का आत्मा मिला है, जिसके द्वारा हम पुकारते हैं, ‘अब्बा, हे पिता।’” पवित्र आत्मा स्वयं हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है कि हम परमेश्वर की संतान हैं। रोमियों 8:16 पर ध्यान दें: “आत्मा स्वयं हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है कि हम परमेश्वर की संतान हैं।” तो फिर, “वारिस” (पद 17) कौन है?

सबसे पहले, यीशु—एकलौता पुत्र—परमेश्वर पिता का वारिस है।

यदि आप मत्ती 21:33–39 पर ध्यान दें, तो आपको यीशु का दाख की बारी के किसानों (किरायेदारों) वाला दृष्टांत मिलेगा। इस दृष्टांत में, जैसे ही फसल काटने का समय निकट आया, घर के मालिक ने अपनी उपज लेने के लिए अपने सेवकों को किसानों के पास भेजा; बाद में, उसने अन्य सेवकों को भेजा—जो पहले समूह

से अधिक थे—और अंत में, उसने अपने स्वयं के पुत्र को भेजा, यह कहते हुए, "वे मेरे पुत्र का आदर करेंगे।" हालाँकि, जब किसानों ने पुत्र को देखा, तो उन्होंने आपस में कहा, "यह तो वारिस है। आओ, हम इसे मार डालें और इसकी विरासत पर कब्ज़ा कर लें।" और उन किसानों ने दाख की बारी के मालिक के पुत्र—वारिस—को दाख की बारी से बाहर निकाल दिया और उसे मार डाला। इस दृष्टांत में, घर का मालिक परमेश्वर पिता का प्रतिनिधित्व करता है, और पुत्र—वारिस—कोई और नहीं, बल्कि यीशु मसीह है।

दूसरे, परमेश्वर की संतान ही परमेश्वर के वारिस हैं। पवित्र आत्मा द्वारा निर्देशित परमेश्वर की संतान के रूप में, हम परमेश्वर के वारिस हैं, और हमें परमेश्वर का राज्य विरासत में मिलेगा। मत्ती 25:34 देखें: "तब राजा अपने दाहिने हाथ वालों से कहेगा, 'आओ, हे मेरे पिता के धन्य लोगों, उस राज्य को विरासत में लो जो जगत की नींव डालने के समय से तुम्हारे लिए तैयार किया गया है।'" जब प्रभु—मनुष्य का पुत्र—अपनी महिमा में सभी स्वर्गदूतों के साथ आएगा—यानी, जब प्रभु अपने दूसरे आगमन में लौटेगा—तो वह अपने महिमामय सिंहासन पर बैठेगा; वह सभी जातियों को अपने सामने इकट्ठा करेगा और उन्हें एक-दूसरे से अलग करेगा, ठीक वैसे ही जैसे एक चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग करता है, भेड़ों को अपने दाहिने ओर और बकरियों को अपने बाएं ओर रखता है (पद 31–33)। प्रभु अपने दाहिने ओर वालों (भेड़ों) से कहेगा—उन्हें "हे मेरे पिता के धन्य लोगों" कहकर संबोधित करते हुए—"उस राज्य को विरासत में लो जो जगत की नींव डालने के समय से तुम्हारे लिए तैयार किया गया है" (पद 34)।

तीसरा, परमेश्वर की संतान मसीह के साथ सह-वारिस हैं।

इसलिए, यीशु मसीह हमें अपना "भाई" कहने में लज्जित नहीं होता। इसका कारण यह है कि हम ऐसे भाई हैं जो यीशु मसीह के साथ मिलकर एक ही पिता—परमेश्वर—को साझा करते हैं। इब्रानियों 2:11–12 देखें: "क्योंकि वह जो पवित्र करता है और वे जो पवित्र किए जा रहे हैं, वे सब एक ही मूल के हैं; इसी कारण वह उन्हें भाई कहने में लज्जित नहीं होता, और कहता है: 'मैं अपने भाइयों को तेरा नाम बताऊंगा; सभा के बीच

मैं तेरी स्तुति गाऊंगा।'" यहाँ, "वह जो पवित्र करता है" यीशु है, और "वे जो पवित्र किए जा रहे हैं" हम हैं—वे विश्वासी जो उस पर अपना विश्वास रखते हैं। "एक मूल" इस तथ्य को संदर्भित करता है कि यीशु और हम विश्वासी, दोनों एक ही परमेश्वर पिता को साझा करते हैं। यीशु स्वभाव से परमेश्वर का पुत्र है—पिता का अपना पुत्र—जबकि हम विश्वासी गोद लिए जाने के द्वारा परमेश्वर की संतान हैं।

प्रेरित पौलुस कहते हैं, "यदि हम सचमुच उसके दुखों में सहभागी होते हैं, ताकि हम उसकी महिमा में भी सहभागी हो सकें" (रोम 8:17)। यहाँ, वाक्यांश "ताकि हम उसकी महिमा में भी सहभागी हो सकें" उस महिमा—हमारी विरासत—को संदर्भित करता है, जिसे हम विश्वासी होने के नाते प्राप्त करने के लिए निर्धारित हैं। यह महिमा एक पूर्ण और परिपूर्ण महिमा है जिसका आनंद हम आने वाले जीवन में लेंगे—एक ऐसी महिमा जिसका अनुभव ऐसा होगा मानो हम उसे आमने-सामने देख रहे हों। *न्यू हिमनल* (New Hymnal) के भजन 85 के पहले पद पर विचार करें: "यदि उद्धारकर्ता के बारे में सोचने मात्र से ही इतनी खुशी मिलती है, तो जब हम उसका चेहरा देखेंगे तब वह खुशी कितनी अधिक होगी?" इसके अलावा, यह महिमा एक ऐसी महिमा भी है जिसका आनंद हम इस वर्तमान जीवन में आंशिक रूप से लेते हैं—एक ऐसी महिमा जिसका अनुभव ऐसा होता है मानो हम किसी दर्पण में देख रहे हों। ठीक इसी कारण से कि हम पृथ्वी पर रहते हुए भी इस महिमा का आनंद लेते हैं, हम परमेश्वर की महिमा को प्रकट करने में सक्षम होते हैं। उसकी महिमा में सहभागी होने के लिए, हमें उसके दुखों में भी सहभागी होना चाहिए (रोम 8:17)। बाइबल में प्रेरितों के काम 14:22 देखें: "[उन्होंने] चेलों के हृदयों को दृढ़ किया और उन्हें विश्वास में बने रहने के लिए प्रोत्साहित किया, उनसे कहा, 'परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए हमें अनेक कष्टों से होकर गुज़रना होगा।'" वास्तव में, परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए, हमें अनेक कष्ट सहने होंगे। फिर भी, बाइबल हमें बताती है कि ये वही कष्ट जिन्हें हमें सहना है, वास्तव में परमेश्वर की ओर से एक अनुग्रह हैं [फिलिप्पियों 1:29: "क्योंकि मसीह की ओर से तुम्हें न केवल उस पर विश्वास करने का, वरन् उसके लिए दुख उठाने का भी अनुग्रह प्रदान किया गया है"]। यहाँ तक कि यीशु मसीह पर विश्वास करने का कार्य भी परमेश्वर की ओर से एक अनुग्रह है। बाइबल में इफिसियों 2:8–9 पर विचार करें (*द कंटेम्पररी बाइबल* से): "क्योंकि परमेश्वर के अनुग्रह से ही तुमने मसीह में विश्वास के द्वारा उद्धार पाया है। यह तुम्हारे अपने सामर्थ्य से पूरा नहीं हुआ,

वरन् परमेश्वर की ओर से एक उपहार है। यह हमारे अपने अच्छे कार्यों का परिणाम नहीं है; इसलिए, कोई भी घमंड नहीं कर सकता।" साथ ही, यूहन्ना 1:12 देखें: "फिर भी, जितने लोगों ने उसे ग्रहण किया, अर्थात् जिन्होंने उसके नाम पर विश्वास किया, उसने उन्हें परमेश्वर की संतान बनने का अधिकार दिया।" यहाँ तक कि यीशु मसीह के निमित्त सहे गए कष्ट भी परमेश्वर के अनुग्रह का ही एक कार्य हैं। भजन 310 के तीसरे पद पर विचार करें: "मैं यह नहीं बता सकता कि वह, परमेश्वर का पुत्र, स्वर्ग की महिमा छोड़कर दुखों से भरी इस दुनिया में क्यों आया; न ही यह कि उसने मुझ पर अपना अद्‌भुत प्रेम क्यों दिखाया, और मुझे क्यों खोजा—इसलिए नहीं कि मैंने उसे चुना था, बल्कि इसलिए कि मैं खोया हुआ और व्यर्थ था।" विश्वास के उन अग्रदूतों ने, जो हमसे पहले इस मार्ग पर चल चुके हैं, यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने के लिए कष्ट सहते हुए भी आनंद मनाया। प्रेरितों के काम 5:41–42 पर दृष्टि डालें: "प्रेरित लोग महासभा (Sanhedrin) से यह कहते हुए चले गए कि वे आनंदित हैं, क्योंकि उन्हें उस 'नाम' के लिए अपमान सहने के योग्य समझा गया था। दिन-प्रतिदिन, मंदिर के आंगनों में और घर-घर जाकर, उन्होंने यीशु के मसीहा होने का सुसमाचार सिखाना और प्रचार करना कभी बंद नहीं किया।" प्रेरितों के काम के चौथे अध्याय में भी, प्रेरितों को यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने के कारण जेल में डाल दिया गया था (पद 3); और यद्यपि उन्हें चेतावनियों और धमकियों का सामना करना पड़ा—उन्हें यह आदेश दिया गया कि वे "यीशु के नाम पर बिल्कुल भी न बोलें और न ही सिखाएँ" (पद 17, 18, 21)—फिर भी उन्होंने सुसमाचार का प्रचार करना बंद नहीं किया (पद 33; 5:42)। परंपरा के अनुसार, प्रेरित यूहन्ना को छोड़कर, बाकी सभी प्रेरितों ने शहादत की मृत्यु पाई। प्रेरित लोग सताहट और कष्टों से पीछे नहीं हटे; बल्कि, उन्होंने उनमें भी आनंद मनाया। पवित्र शास्त्र हमें बताता है कि जो लोग ईश्वरीय जीवन जीने की इच्छा रखते हैं, उन्हें सताहट का सामना करना पड़ेगा। 2 तीमुथियुस 3:12 पर दृष्टि डालें: "वास्तव में, जो कोई भी मसीह यीशु में ईश्वरीय जीवन जीना चाहता है, उसे सताया जाएगा।" इस सांसारिक जगत के नियम स्वर्ग के राज्य के नियमों से भिन्न हैं। स्वर्ग की नागरिकता रखने वालों के रूप में, इस दुनिया में हमारा स्वागत और सम्मान होने की अपेक्षा, हमें कठिनाइयों, सताहट और यहाँ तक कि मृत्यु का सामना करने की अधिक संभावना होती है। आध्यात्मिक रूप से परिपक्व विश्वासी न केवल ऐसी कठिनाइयों, सताहट और कष्टों के लिए स्वयं को तैयार करते हैं, बल्कि वे आनंद के साथ उनका सामना भी करते हैं; केवल प्रभु पर भरोसा रखते हुए, वे इन परीक्षाओं को सहते हैं और उन पर विजय प्राप्त करते

हैं, और—बिल्कुल प्रेरितों की तरह—बिना रुके यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करते रहते हैं। हम परमेश्वर की संतान हैं, परमेश्वर के वारिस हैं, और मसीह के साथ सह-वारिस हैं। इसलिए, मसीह की महिमा में सहभागी होने के लिए, हमें उसके कष्टों में भी सहभागी होना होगा। जब हम मसीह की खातिर दुख सहते हैं, तो हमें पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन का पालन करना चाहिए, परमेश्वर को "अब्बा, पिता" कहकर पुकारना चाहिए और अपनी विनतियाँ अर्पित करनी चाहिए। परमेश्वर पिता निश्चित रूप से हमारी सहायता करेंगे, हमारी रक्षा करेंगे, हमें छुड़ाएँगे, और अंततः हमें विजय प्रदान करेंगे। इसके अलावा, हमें मसीह की खातिर सहे गए दुख को एक अनुग्रह समझना चाहिए और उसमें आनंदित होना चाहिए। इसका कारण यह है कि, हमारे दुख के बाद, हम मसीह के साथ महिमा में सहभागी होंगे। इसी भावना के साथ—और हमसे पहले हुए प्रेरितों की तरह—हमें यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करना कभी नहीं छोड़ना चाहिए, चाहे हमें किसी भी प्रकार के उत्पीड़न का सामना क्यों न करना पड़े। इसलिए, मैं प्रार्थना करता हूँ कि जब प्रभु अपने दूसरे आगमन में लौटेंगे, तो हम सभी आने वाले जीवन में प्रवेश करें और यीशु मसीह के साथ साझा की गई पूर्ण और सिद्ध महिमा का पूरा आनंद लें।

(पद 1) जब सारा परिश्रम और मेहनत समाप्त हो जाएगी, और मैं स्वर्ग के उज्ज्वल लोकों में शांति से विश्राम करूँगा, प्रभु की उपस्थिति में निवास करूँगा—वह कितनी शाश्वत रूप से चमकने वाली महिमा होगी!
(पद 2) जब मैं उस घर में पहुँचूँगा जो प्रभु के असीम अनुग्रह द्वारा तैयार किया गया है, और वहाँ उनके मुख को देखूँगा—वह कितनी शाश्वत रूप से चमकने वाली महिमा होगी!
(पद 3) जब मैं उन मित्रों से मिलूँगा जो मुझसे पहले जा चुके हैं, तो मेरा हृदय निश्चित रूप से आनंद से भर जाएगा; फिर भी, जब प्रभु स्वयं मेरा स्वागत करेंगे—वह कितनी शाश्वत रूप से चमकने वाली महिमा होगी!

[कोरस] महिमा! महिमा! वह महिमा जिसका मैं आनंद लूँगा!
अनुग्रह द्वारा मैं प्रभु के मुख को देखूँगा; यह सर्वोच्च महिमा—यह मेरी अपनी होगी! आमीन।

[नया भजन संग्रह 610: "जब सारा परिश्रम और मेहनत समाप्त हो जाएगी"]

वर्तमान दुख और भविष्य की महिमा

[रोमियों 8:18]

कृपया बाइबल में रोमियों 8:18 खोलें: "क्योंकि मैं समझता हूँ कि इस वर्तमान समय के दुख उस महिमा के योग्य नहीं हैं जो हम में प्रकट होने वाली है।" इस वचन को केंद्र में रखते हुए, मैं दो बातों पर विचार करना चाहूँगा: (1) वर्तमान दुख और (2) भविष्य की महिमा।

सबसे पहले, आइए हम वर्तमान दुख पर विचार करें।

रोमियों 8:18 में, प्रेरित पौलुस "वर्तमान दुख" की बात करते हैं; यहाँ, "वर्तमान" शब्द इस संसार को संदर्भित करता है। इसलिए, "वर्तमान दुख" का अर्थ है इस संसार में अनुभव किया जाने वाला दुख। इस संसार में बहुत दुख है। यदि आप *न्यू हिमनल* (New Hymnal) में भजन 486 को देखें—जिसका शीर्षक है "यह संसार दुखों से भरा है"—तो उसमें कहा गया है कि यह संसार चिंताओं, कठिनाइयों और दुष्टता से भरा हुआ है, और मृत्यु के योग्य विपत्तियाँ ऊँची ढेरी के रूप में जमा हो गई हैं। प्रेरित पौलुस रोमियों 8:18 में जिस "दुख" की बात करते हैं, उसे हम मोटे तौर पर दो प्रकारों में वर्गीकृत कर सकते हैं: (1) मसीह *में* सहा गया दुख। यह उस दुख को संदर्भित करता है जिसे—यीशु के नाम की खातिर—उन लोगों द्वारा अनुभव किया जाता है जिन्होंने यीशु पर अपना विश्वास रखकर उन्हें ग्रहण किया है। (2) मसीह के *बाहर* सहा गया दुख। यह उस दुख को संदर्भित करता है जिसे उन लोगों द्वारा अनुभव किया जाता है जो यीशु मसीह पर विश्वास नहीं करते। रोमियों 8:18 में जिस "वर्तमान दुख" का उल्लेख है, वह विशेष रूप से उस दुख को संदर्भित करता है जिसे हम, विश्वासी होने के नाते, यीशु के नाम की खातिर सहते हैं, क्योंकि हम उन पर विश्वास करते

हैं। प्रिय मित्रों, यदि हम यीशु पर विश्वास करते हैं, तो क्या हमें आशीषें नहीं मिलनी चाहिए? फिर, हम दुख का अनुभव क्यों करते हैं? जब हम यीशु पर विश्वास करते हैं, तो हमें केवल आशीषें ही नहीं मिलतीं; हम दुख का अनुभव भी करते हैं। बाइबल स्पष्ट रूप से कहती है कि यदि हम यीशु पर विश्वास करते हैं, तो हमें वास्तव में दुख सहना ही पड़ेगा। कृपया बाइबल में Acts 14:22 देखें: "चेलों के मन को स्थिर करते हुए, उन्हें विश्वास में बने रहने के लिए प्रोत्साहित करते हुए, और यह कहते हुए, 'हमें बहुत सी मुसीबतों से गुज़रकर ही परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा।'" [(Modern People's Bible) "उन्होंने विश्वासियों के दिलों को मज़बूत किया, उन्हें हमेशा विश्वास में जीने के लिए प्रोत्साहित किया, और कहा, 'परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए हमें बहुत दुख उठाने होंगे।'"] बाइबल हमें बताती है कि यदि हमें परमेश्वर के राज्य—यानी स्वर्ग—में प्रवेश करना है, तो हमें बहुत सी मुसीबतों को सहना होगा। कृपया बाइबल में Matthew 16:24 देखें: "तब यीशु ने अपने चेलों से कहा, 'यदि कोई मेरे पीछे आना चाहता है, तो वह स्वयं का इनकार करे, अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे चले।'" बाइबल हमें निर्देश देती है कि हम स्वयं का इनकार करें, अपना क्रूस उठाएँ, और यीशु के पीछे चलें; फिर भी, स्वयं का इनकार करना और अपना क्रूस उठाना कितना अधिक कठिन, दुष्कर और पीड़ादायक होगा? यह निश्चित रूप से दुखों का एक अंतहीन सिलसिला होगा; वास्तव में, जिस तरह यीशु क्रूस पर मरे, उसी तरह हम भी यीशु मसीह के नाम की खातिर मृत्यु का सामना कर सकते हैं।

यदि आप बाइबल में Revelation 7:4–14 देखें, तो 144,000 लोगों का एक समूह दिखाई देता है (पद 4)। प्रेरित यूहन्ना ने इस भीड़ का वर्णन "एक ऐसी विशाल भीड़ के रूप में किया, जिसे कोई गिन नहीं सकता था" (पद 9)। सफ़ेद वस्त्र पहने और हाथों में खजूर की डालियाँ लिए हुए, वे सिंहासन के सामने और मेम्ने के सामने खड़े हैं (पद 9), और परमेश्वर की स्तुति कर रहे हैं: "उद्धार हमारे परमेश्वर का है, जो सिंहासन पर विराजमान है, और मेम्ने का है!" (पद 10)। जहाँ तक इस बात का सवाल है कि ये लोग कौन हैं, तो ये वे लोग हैं जिन्होंने भारी क्लेश सहे हैं और अपने वस्त्रों को मेम्ने के लहू में धोकर सफ़ेद किया है (पद 14; Modern People's Bible)। यह दुख भी, परमेश्वर के अनुग्रह का ही एक उपहार है। बाइबल में Philippians 1:29 देखें: "क्योंकि मसीह की खातिर तुम्हें यह वरदान दिया गया है कि तुम न केवल उस पर विश्वास करो, बल्कि उसके लिए दुख भी सहो।" निस्संदेह, विश्वास स्वयं भी परमेश्वर के अनुग्रह का ही एक उपहार है। किसी इंसान का दिल कितना भी कठोर क्यों न हो, अगर परमेश्वर अपनी कृपा से उसे विश्वास का वरदान देते हैं, तो वह यीशु पर

विश्वास करेगा और उद्धार पाएगा। इसके विपरीत, कोई इंसान कितना भी नेक क्यों न हो, अगर परमेश्वर अपनी कृपा से उसे विश्वास का वरदान नहीं देते, तो वह यीशु पर विश्वास नहीं कर सकता, भले ही वह ऐसा करना चाहता हो। हालाँकि, बाइबल हमें बताती है कि दुख भी परमेश्वर की कृपा का एक वरदान है (फिलिप्पियों 1:29)। यीशु मसीह की खातिर दुख सहना परमेश्वर की संतानों को मिला एक विशेष अधिकार है। प्रेरितों ने यीशु के नाम की खातिर सहे गए दुखों में आनंद मनाया। दुख हमें निखारता है—यह हमारे आध्यात्मिक विकास और परिपक्वता को बढ़ावा देता है। बाइबल में रोमियों 5:3–4 देखें: "न केवल इतना ही, बल्कि हम अपने दुखों में भी आनंद मनाते हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि दुख से धीरज उत्पन्न होता है; धीरज से चरित्र; और चरित्र से आशा।" हम दुख अकेले नहीं सहते; बल्कि, यीशु मसीह हमारे साथ दुख सहते हैं। बाइबल में रोमियों 8:17 देखें: "अब यदि हम संतान हैं, तो हम वारिस भी हैं—परमेश्वर के वारिस और मसीह के साथ सह-वारिस; यदि सचमुच हम उसके दुखों में सहभागी होते हैं, ताकि हम उसकी महिमा में भी सहभागी हो सकें।" क्योंकि जब भी हम कठिनाई से गुज़रते हैं, तो यीशु मसीह हमारे साथ दुख सहते हैं, इसलिए दुख वास्तव में एक धन्य चीज़ है। ठीक इसी कारण से, अपनी कमज़ोरी और अपर्याप्तता के बावजूद, हम दुख सहने और अंततः उस पर विजय पाने में सक्षम होते हैं।

दूसरी बात—और आख़िरी बात—हम उस महिमा की ओर मुड़ते हैं जो भविष्य में हमारा इंतज़ार कर रही है।

रोमियों 8:18 के पिछले हिस्से में, प्रेरित पौलुस "...उस महिमा" के बारे में बात करते हैं "जो हम पर प्रकट होने वाली है।" यहाँ, "भविष्य" (या "जो आने वाला है") शब्द इस वर्तमान दुनिया को नहीं, बल्कि आने वाली दुनिया—यानी परलोक—को दर्शाता है; विशेष रूप से स्वर्ग, या उस अनंत लोक को। तो फिर, यह "महिमा" क्या है?

(1) पवित्र आत्मा हमारे नश्वर शरीरों को भी जीवन देगा।

रोमियों 8:11 पर विचार करें: "यदि उसका आत्मा, जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, तुम में बसा हुआ है, तो जिसने मसीह यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, वह तुम्हारे नश्वर शरीरों को भी अपने आत्मा के द्वारा, जो तुम में बसा हुआ है, जीवन देगा।" हम मनुष्य आत्मा और शरीर दोनों से मिलकर बने हैं। जहाँ शरीर पाप के कारण मृत्यु के अधीन है, वहीं आत्मा—धर्म के कारण—स्वर्ग में अनंत काल तक जीवित रहेगी। यीशु के दूसरे आगमन के समय, पवित्र आत्मा हमारे मृत शरीरों को भी जीवित कर देगा। वह उन्हें महिमामय शरीरों के रूप में—सामर्थ्यवान और आत्मिक शरीरों के रूप में—पुनर्जीवित करेगा (1 कुरिन्थियों 15:43–44)। जब यीशु लौटेंगे, तो वह अपनी महान सामर्थ्य से, हमारे दीन-हीन शरीरों को बदलकर अपने महिमामय शरीर जैसा बना देंगे (फिलिप्पियों 3:21)। जब प्रभु एक ज़ोरदार ललकार के साथ, प्रधान स्वर्गदूत की आवाज़ के साथ, और परमेश्वर के तुरही की ध्वनि के साथ स्वर्ग से उतरेंगे, तो जो लोग मसीह में विश्वास रखते हुए मरे थे, वे सबसे पहले जी उठेंगे (1 थिस्सलोनिकियों 4:16); उनके पुनर्जीवित, महिमामय शरीर तब उनकी आत्माओं के साथ—जो स्वर्ग में निवास कर रही थीं—फिर से मिल जाएँगे, और वे सब मिलकर स्वर्ग के अनंत राज्य में प्रभु के साथ सदा जीवित रहेंगे।

(2) हम मसीह के साथ मिलकर एक विरासत प्राप्त करेंगे। बाइबल में रोमियों 8:17 पर नज़र डालें: "और यदि हम संतान हैं, तो वारिस भी हैं—परमेश्वर के वारिस और मसीह के साथ सह-वारिस; यदि हम सचमुच उसके साथ दुख उठाते हैं, ताकि हम उसके साथ महिमा भी पाएँ।" इसके अलावा, फिलिप्पियों 2:9–11 पर भी ध्यान दें: “इसलिए परमेश्वर ने भी उसे बहुत ऊँचा उठाया है और उसे वह नाम दिया है जो हर नाम से ऊपर है, ताकि यीशु के नाम पर हर घुटना झुके—चाहे वे स्वर्ग में हों, या पृथ्वी पर, या पृथ्वी के नीचे—और हर ज़बान यह स्वीकार करे कि यीशु मसीह ही प्रभु हैं, ताकि परमेश्वर पिता की महिमा हो।” मत्ती 25:34 पर ध्यान दें: “तब राजा अपने दाहिने हाथ वालों से कहेगा, ‘आओ, मेरे पिता के धन्य लोगों, उस राज्य के वारिस बनो जो दुनिया की नींव रखे जाने के समय से ही तुम्हारे लिए तैयार किया गया है।’”

(3) हमें एक इनाम मिलेगा।
2 तीमुथियुस 4:7–8 पर ध्यान दें: “मैंने अच्छी लड़ाई लड़ी है, मैंने दौड़ पूरी कर ली है, मैंने विश्वास बनाए रखा है। अंत में, मेरे लिए नेकी का ताज रखा हुआ है, जिसे प्रभु—जो एक नेक न्यायाधीश है—मुझे उस दिन देगा;

और न केवल मुझे, बल्कि उन सभी को भी, जिन्होंने उसके प्रकट होने से प्रेम किया है।" हमें नेकी का ताज मिलेगा और हम उसे पहनेंगे। यह कितना शानदार इनाम है!

(4) हम स्वर्ग में हमेशा-हमेशा के लिए राजाओं की तरह राज करेंगे।

प्रकाशितवाक्य 22:5 पर ध्यान दें: "वहाँ कोई रात नहीं होगी: उन्हें न तो दीपक की ज़रूरत होगी और न ही सूरज की रोशनी की, क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें रोशनी देगा। और वे हमेशा-हमेशा के लिए राज करेंगे।" इसीलिए प्रेरित पौलुस ने यह घोषणा की, "मेरा मानना है कि हमारे मौजूदा दुख उस महिमा के मुकाबले कुछ भी नहीं हैं जो हममें प्रकट होने वाली है" (रोमियों 8:18)।

कृपया 2 कुरिन्थियों 1:5 पर ध्यान दें: "क्योंकि जिस तरह हम मसीह के दुखों में भरपूर हिस्सा पाते हैं, उसी तरह मसीह के द्वारा हमें भरपूर सांत्वना भी मिलती है।" प्रेरित पौलुस ने बहुत ज़्यादा दुख सहे। उसने किस हद तक दुख सहे? उसने इतनी गंभीर कठिनाइयाँ सहीं—जो उसकी सहनशक्ति से भी परे थीं—कि उसने तो अपनी जान से भी उम्मीद छोड़ दी थी (पद 8)। फिर भी, उसने पूरे आत्मविश्वास के साथ यह स्वीकार किया, "हमारे मौजूदा दुख उस महिमा के मुकाबले कुछ भी नहीं हैं जो हममें प्रकट होने वाली है" (रोमियों 8:18)। कृपया 2 कुरिन्थियों 4:17 देखें: "क्योंकि हमारी हल्की और क्षणिक परेशानियाँ हमारे लिए एक ऐसी अनंत महिमा प्राप्त कर रही हैं जो उन सभी से कहीं अधिक भारी है" [(समकालीन अंग्रेजी संस्करण) "वह हल्का कष्ट जो हम थोड़े समय के लिए सहते हैं, हमारे लिए एक महान और विशाल अनंत महिमा लाएगा जिसकी तुलना किसी और चीज़ से नहीं की जा सकती"]। यहाँ, "क्षणिक" शब्द का अर्थ "केवल एक पल" भी है। प्रेरित पौलुस ने उन "परेशानियों" (कष्टों) का वर्णन किया जिन्हें उन्होंने "क्षणिक"—यानी, बहुत कम समय के लिए रहने वाला—बताया। इसके अलावा, उन्होंने अपने सामने आई परेशानियों को "हल्का" बताया—जिसका अर्थ था कि वे "वज़न में हल्की" या "कम महत्व की" थीं। इसके विपरीत, पौलुस ने आत्मविश्वास के साथ उस "महिमा" का वर्णन किया जो उन्हें भविष्य में मिलेगी; उन्होंने इसे न केवल "अनंत महिमा जो उन

सभी से कहीं अधिक भारी है" बताया, बल्कि इसे अत्यधिक "वज़न" या "भारीपन" वाली चीज़ भी कहा। यहाँ, "वज़न" का तात्पर्य एक अनंत भारीपन से है—एक ऐसी विशालता जिसकी वास्तविक भारीपन की हम कल्पना भी नहीं कर सकते। इस प्रकार, जो महिमा हमें मिलनी तय है, वह अनंत भी है और अत्यधिक भारी भी। इसलिए, प्रेरित पौलुस ने घोषणा की कि हमारे वर्तमान कष्ट उस महिमा की तुलना के योग्य नहीं हैं जो भविष्य में आने वाली है। उन्होंने यह स्वीकारोक्ति अटूट विश्वास के साथ की, क्योंकि वे उस भविष्य की महिमा को एक पूर्ण निश्चितता मानते थे—जैसा कि उन्होंने कहा, "मैं ऐसा मानता हूँ" (रोमियों 8:18)। प्रेरित पौलुस की तरह, हमें भी विश्वास और ऐसे ही भरोसे के साथ यह कहने में सक्षम होना चाहिए: "इस वर्तमान समय के कष्ट उस महिमा की तुलना के योग्य नहीं हैं जो हममें प्रकट होने वाली है।" ऐसा करते हुए, हमें इस संसार में अपने संक्षिप्त समय के दौरान आने वाली सभी कठिनाइयों को विश्वासपूर्वक सहना चाहिए और उन पर विजय प्राप्त करनी चाहिए।

“सृष्टि की अभिलाषा”

[रोमियों 8:19-22]

कृपया बाइबल में रोमियों 8:19-22 खोलें: “क्योंकि सृष्टि बड़ी आशा के साथ परमेश्वर के पुत्रों के प्रकट होने की बाट जोह रही है। क्योंकि सृष्टि अपनी इच्छा से नहीं, परन्तु उसके अधीन करनेवाले के कारण व्यर्थता के अधीन हो गई; इस आशा से कि सृष्टि भी विनाश के दासत्व से छुटकारा पाकर, परमेश्वर की सन्तानों की महिमा की स्वतंत्रता प्राप्त करेगी। क्योंकि हम जानते हैं कि सारी सृष्टि अब तक मिलकर कराहती और प्रसव-पीड़ा में पड़ी है।”

सबसे पहले, आइए हम उस “सृष्टि” पर विचार करें जिसका ज़िक्र प्रेरित पौलुस कर रहे हैं।

त्रिएक परमेश्वर को छोड़कर, बाकी सब कुछ सृष्टि है। त्रिएक परमेश्वर ने पूरे ब्रह्मांड और उसके भीतर मौजूद हर चीज़ को बनाया (उत्पत्ति 1–2)। परमेश्वर, जिसने आदि में आकाश और पृथ्वी को बनाया (उत्पत्ति 1:1), उसने अपनी बनाई हर चीज़ को “बहुत अच्छा” बनाया (पद 31)। तो, रोमियों 8:19 में किस विशेष प्रकार की “सृष्टि” का ज़िक्र किया जा रहा है? आकाश में स्वर्गदूत हैं—परमेश्वर द्वारा बनाए गए प्राणी; नभमंडल में सूर्य, चंद्रमा और तारे हैं—ये भी परमेश्वर द्वारा बनाए गए प्राणी हैं; और पृथ्वी पर हर तरह के पशु, पेड़ और मनुष्य हैं। इन सब में से, रोमियों 8:19 का यह अंश किस विशेष “सृष्टि” को संबोधित कर रहा है? इस “सृष्टि” में आकाश के स्वर्गदूत या पृथ्वी के मनुष्य शामिल नहीं हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो, वे प्राणी जो अपने विचारों और भावों को व्यक्त करने में सक्षम हैं, उन्हें “सृष्टि” की इस श्रेणी से बाहर रखा गया है। यहाँ जिस “सृष्टि” की

बात हो रही है, उसका तात्पर्य उन प्राणियों से है जो स्वयं सोचने या बोलने में असमर्थ हैं (उदाहरण के लिए, पेड़, मछलियाँ, आदि)। प्रेरित पौलुस कहते हैं कि "सृष्टि अपनी इच्छा से नहीं, परन्तु उसके अधीन करनेवाले के कारण व्यर्थता के अधीन हो गई" (पद 20)। तो फिर, यहाँ "अपनी इच्छा" से क्या तात्पर्य है? चूँकि सृजित वस्तुएँ—जो न तो सोच सकती हैं और न ही स्वयं को व्यक्त कर सकती हैं—उनमें न तो बुद्धि होती है और न ही अपनी मर्ज़ी, तो फिर किस अर्थ में यह कहा जा सकता है कि उनकी अपनी कोई "इच्छा" है? इस संदर्भ में, "अपनी मर्ज़ी से" का अर्थ यह है कि बनाई गई चीज़ों ने अपनी मर्ज़ी से—यानी, *इच्छापूर्वक*—व्यर्थता के आगे समर्पण नहीं किया। बल्कि, यह परमेश्वर ही था—वह जिसने उन्हें अधीन किया—जिसने इन बनाई गई चीज़ों को व्यर्थता के अधीन किया, जिसका उद्देश्य हमें वह महिमा दिखाना था जो भविष्य में प्रकट होने वाली है (पद 18)। "भविष्य में हम पर प्रकट होने वाली यह महिमा" किसी भी तरह से "वर्तमान समय के दुखों" से तुलनीय नहीं है (पद 18; तुलना करें 2 कुरि. 4:17)। अवधि के मामले में, इनकी कोई तुलना ही नहीं है। जहाँ हमारे वर्तमान दुख क्षणिक और अस्थायी हैं, वहीं भविष्य की महिमा एक अनंत महिमा है (2 कुरि. 4:17)। न ही उनकी तुलना भार या विशालता के मामले में की जा सकती है। जहाँ हमारे वर्तमान दुख हल्के हैं, वहीं अनंत महिमा असीम महानता और भार वाली है (पद 17)। हमें इस दुनिया में यीशु के नाम की खातिर सहे जाने वाले दुखों को न केवल परमेश्वर की ओर से एक अनुग्रहपूर्ण उपहार मानना चाहिए (फिलि. 1:29), बल्कि हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि हम वास्तव में धन्य लोग हैं (1 पतरस 4:14)। इसका कारण यह है कि परमेश्वर का पवित्र आत्मा—महिमा का आत्मा—हम पर विराजमान है (पद 14)। तो फिर, यह "अधीनता" क्या है जिसके बारे में प्रेरित पौलुस रोमियों 8:20 में बात करते हैं? ऐसा कैसे हुआ कि सृष्टि—जिसे परमेश्वर की दृष्टि में "बहुत अच्छी" होने के लिए बनाया गया था (उत्पत्ति 1:31)—व्यर्थता के अधीन हो गई (रोमियों 8:19)? (पद 20) इसका कारण उत्पत्ति 3:17–18 में मिलता है: "आदम से उसने कहा, 'क्योंकि तूने अपनी पत्नी की बात सुनी और उस पेड़ का फल खाया जिसके बारे में मैंने तुझे आज्ञा दी थी, "तू उसका फल मत खाना," इसलिए तेरे कारण ज़मीन पर श्राप पड़ा है; तुझे अपनी ज़िंदगी के सारे दिन बहुत मेहनत करके ही उससे खाना मिलेगा। उसमें तेरे लिए काँटे और ऊँटकटारे उगेंगे, और तू खेत के पौधे खाएगा।'" इसका कारण यह है कि आदम ने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया—"तू भले और बुरे के ज्ञान के पेड़ का फल मत खाना" (2:17)—और उसका फल खा लिया; नतीजतन, उसके कारण धरती पर श्राप पड़ा (3:17)।

प्रेरित पौलुस कहते हैं, “हम जानते हैं कि सारी सृष्टि अब तक प्रसव-पीड़ा की तरह कराह रही है” (रोम 8:22)। एक आदमी—आदम—के पाप के कारण, सारी सृष्टि आज तक एक साथ कराह रही है और दुख झेल रही है। इसलिए, सृष्टि जिस चीज़ का बेसब्री से इंतज़ार कर रही है, वह है परमेश्वर के पुत्रों का प्रकट होना (पद 19)। इसका मतलब यह है कि सृष्टि उस महिमा का इंतज़ार कर रही है जो अभी प्रकट होनी बाकी है (पद 18)। जिस तरह उसने आदम के पाप के कारण सृष्टि पर श्राप दिया था, उसी तरह परमेश्वर—वाचा के परमेश्वर—ने आशा भी दी। वह आशा है परमेश्वर के पुत्रों का भविष्य में प्रकट होना (पद 19)।

दूसरी बात—और आखिरी भी—उस बात पर विचार करें जिसे प्रेरित पौलुस "परमेश्वर के पुत्रों का प्रकट होना" कहते हैं।

एक बार फिर रोमियों 8:19 की ओर देखें: "क्योंकि सारी सृष्टि बड़ी आशा के साथ परमेश्वर के पुत्रों के प्रकट होने की बाट जोह रही है।" 1 थिस्सलोनिकियों 4:14–17 के अंश के आधार पर, यहाँ जिन "परमेश्वर के पुत्रों" का ज़िक्र है, उन्हें मोटे तौर पर दो समूहों में बाँटा जा सकता है: (1) पहले समूह में वे लोग शामिल हैं जो "यीशु में सो गए हैं" (1 थिस्स 4:14)। जो लोग "यीशु में सो गए हैं" (पद 14), उनका मतलब उन लोगों से है जो "मसीह में मर गए हैं" (पद 16)। ये वे विश्वासी हैं जो यीशु पर भरोसा रखते हुए इस दुनिया से चले गए; उनकी आत्माएँ पहले ही स्वर्ग में पहुँच चुकी हैं, जबकि उनके शरीर मिट्टी में मिल गए हैं। (2) दूसरे समूह में वे विश्वासी शामिल हैं जो अभी भी शरीर में जीवित हैं। दूसरे शब्दों में, हम—वे विश्वासी जो अभी भी शारीरिक रूप से जीवित हैं—ठीक यही "परमेश्वर के पुत्र" हैं। चूँकि हमारे भीतर एक नया जन्म पाई हुई आत्मा वास करती है, इसलिए जब अंततः हम इस दुनिया से चले जाएँगे, तो हमारी आत्माएँ भी वैसे ही स्वर्ग में पहुँच जाएँगी, ठीक वैसे ही जैसे वे लोग जो "यीशु में सो गए हैं" या जो "मसीह में मर गए हैं।" "परमेश्वर के पुत्रों" के इन दोनों समूहों के प्रकट होने का ही सारी सृष्टि बड़ी बेसब्री से इंतज़ार कर रही है—और इस इंतज़ार का कारण वह महिमा है जो अभी हममें प्रकट होनी बाकी है (रोम 8:18–19)। जब यीशु अपने दूसरे आगमन में वापस आएँगे, तो जो लोग "मसीह में मर गए हैं" (1 थिस्स 4:16)—या जो लोग "यीशु में सो गए हैं" (पद 14)—वे सबसे पहले फिर से जी उठेंगे (पद 16)। दूसरे शब्दों में, जब यीशु इस दुनिया में वापस आएँगे, तो जो लोग

मसीह में मरे थे, उनका पुनरुत्थान होगा; उनके शरीर—जो अभी धरती में सड़ रहे हैं—उनकी आत्माओं के साथ फिर से मिल जाएँगे (जो स्वर्ग में वास करती हैं), जिसके परिणामस्वरूप उन्हें ऐसे मज़बूत, आत्मिक और महिमामय शरीर मिलेंगे जो अब न तो सड़ेंगे और न ही उनका अनादर होगा (1 कुरिन्थियों 15:52-53)। इसके अलावा, जब यीशु अपने दूसरे आगमन में वापस आएँगे, तो हममें से जो लोग उस समय तक जीवित होंगे (1 थिस्सलोनिकियों 4:17), वे सभी अचानक बदल जाएँगे (1 कुरिन्थियों 15:51)। यह बदलाव तुरंत होगा—पलक झपकते ही—आखिरी तुरही की आवाज़ पर; इस नाशवान शरीर को अविनाशी शरीर धारण करना होगा, और इस मरणशील शरीर को अमरता धारण करनी होगी (पद 52-53)। फिलिप्पियों 3:20-21 में पाए जाने वाले बाइबल के इस अंश पर विचार करें: "पर हमारा स्वदेश तो स्वर्ग में है; और हम एक उद्धारकर्ता, अर्थात् प्रभु यीशु मसीह के आने की बाट जोहते हैं। वह अपनी उस शक्ति के द्वारा, जिससे वह सब वस्तुओं को अपने अधीन कर सकता है, हमारे इस दीन-हीन शरीर को अपने महिमामय शरीर के समान बना देगा।" जब यीशु इस दुनिया में लौटेंगे, तो हमारा "दीन-हीन शरीर" (या "नम्र शरीर")—यह नाशवान, अपमानजनक, कमज़ोर और शारीरिक शरीर—यीशु मसीह के पुनर्जीवित और महिमामय शरीर जैसा बन जाएगा। तब, उन लोगों के साथ जो मसीह में पहले ही मर चुके हैं और पहले पुनर्जीवित हुए हैं, हम बादलों में ऊपर उठा लिए जाएँगे ताकि हवा में प्रभु से मिल सकें, और इस प्रकार हम हमेशा स्वर्ग में प्रभु के साथ रहेंगे (1 थिस्सलोनिकियों 4:16-17)। उस समय, सृष्टि भी उस महिमा में प्रवेश करेगी जो अभी प्रकट होनी बाकी है (रोमियों 8:18-19)। कृपया प्रकाशितवाक्य 5:13–14 देखें: "फिर मैंने स्वर्ग में, और पृथ्वी पर, और पृथ्वी के नीचे, और समुद्र में, और उन सब में जो कुछ है, हर एक प्राणी को यह कहते सुना: 'जो सिंहासन पर बैठा है, और मेम्ने को स्तुति, और आदर, और महिमा, और सामर्थ सदा सर्वदा मिलती रहे!' और उन चारों प्राणियों ने 'आमीन' कहा, और प्राचीनों ने गिरकर दण्डवत् किया।" स्वर्गीय लोक में त्रिएक परमेश्वर निवास करते हैं, जो सिंहासन पर विराजमान हैं; उनके सामने चौबीस सिंहासनों पर चौबीस प्राचीन बैठे हैं, जिन्होंने श्वेत वस्त्र पहने हैं और सिर पर सोने के मुकुट धारण किए हैं (4:4); वहाँ चार जीवित प्राणी भी हैं (4:8; 5:8; 19:4), परमेश्वर के पुत्र, और वास्तव में पूरी सृष्टि। वे चार जीवित प्राणी और चौबीस प्राचीन—जिनमें से हर एक के हाथ में वीणा और धूप से भरा एक सोने का कटोरा है (जो संतों की प्रार्थनाएँ हैं)—मेम्ने के सामने (5:8) गिरकर उस परमेश्वर की आराधना करते हैं, जो सिंहासन पर विराजमान हैं, और घोषणा करते हैं, "आमीन! हल्लेलूयाह!" (19:4). इसके अलावा, परमेश्वर के पुत्र—वे परम विजेता जिन्होंने यीशु में विश्वास के द्वारा उस

पशु (शैतान के मसीह-विरोधी) पर विजय पाई है और जिन्होंने अंत तक सभी सताहटों और क्लेशों को सहा है—आग से मिले हुए काँच के समुद्र जैसी किसी चीज़ के पास खड़े होंगे; वहाँ, परमेश्वर की वीणाएँ (15:2) थामे हुए, वे "परमेश्वर के सेवक मूसा का गीत और मेम्ने का गीत" (पद 3) गाएँगे। परमेश्वर के ये पुत्र—जिनकी विजय निश्चित है—परमेश्वर के स्वर्गीय राज्य में उनके सिंहासन के सामने "मूसा का गीत और मेम्ने का गीत"—यानी, विजय का गीत और उद्धार का गीत—गाएँगे (पद 3)। और वे पुकार उठेंगे, "जो सिंहासन पर विराजमान है, और मेम्ने को, सदा और सर्वदा के लिए स्तुति, आदर, महिमा और सामर्थ्य प्राप्त हो!"—स्वर्ग में, पृथ्वी पर, पृथ्वी के नीचे, समुद्र में, और उन सब में जो कुछ भी है, हर एक प्राणी की ओर से (5:13)।

इसलिए, हमें उस महिमा की बेसब्री से प्रतीक्षा करनी चाहिए (पद 19) जो भविष्य में हम पर प्रकट होगी—एक ऐसी महिमा जिसकी तुलना इस वर्तमान समय के दुखों से नहीं की जा सकती (रोम 8:18)। जिस प्रकार एक हिरण पानी की धाराओं के लिए तरसता है (भजन 42:1), उसी प्रकार हमारी आत्माओं को भी उस महिमा के लिए सच्ची लालसा रखनी चाहिए जो अभी हम पर प्रकट होनी बाकी है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम सभी प्रभु के दूसरे आगमन की बेसब्री से प्रतीक्षा करें, और उनका स्वागत करने के लिए स्वयं को तैयार करें, ताकि हम उन्हें महिमा में देख सकें और स्वर्गीय लोकों में अनंत काल तक उनकी स्तुति और आराधना कर सकें।

हमारी आशा

[रोमियों 8:23-25]

कृपया बाइबल में रोमियों 8:23-25 देखें: "केवल यही नहीं, बल्कि हम स्वयं भी, जिन्हें पवित्र आत्मा का पहला फल मिला है, अपने मन में कराहते हैं, और अपनी गोद लिए जाने की—अर्थात् अपने शरीरों के छुटकारे की—बड़ी आतुरता से बाट जोहते हैं। क्योंकि इस आशा में हमारा उद्धार हुआ। परन्तु जिस आशा को देखा जाता है, वह आशा नहीं है; क्योंकि जो कोई देखता है, वह उसकी आशा क्यों करेगा? परन्तु यदि हम उस वस्तु की आशा करते हैं जिसे हम अभी नहीं देखते, तो हम धीरज से उसकी बाट जोहते हैं।" यहाँ जिस "हम" का ज़िक्र किया गया है, वे कौन हैं?

सबसे पहले, हम "वे लोग हैं जिन्हें पवित्र आत्मा का पहला फल मिला है।"

कृपया रोमियों 8:23 देखें: "केवल यही नहीं, बल्कि हम स्वयं भी, जिन्हें पवित्र आत्मा का पहला फल मिला है, अपने मन में कराहते हैं, और अपनी गोद लिए जाने की—अर्थात् अपने शरीरों के छुटकारे की—बड़ी आतुरता से बाट जोहते हैं।" हम वे लोग हैं जिन्हें पवित्र आत्मा "पहले फल" के रूप में मिला है (पद 23)। हमें पवित्र आत्मा "पहले फल" के रूप में कब मिला? यदि हम रोमियों के पहले अध्याय से देखना शुरू करें, तो उसमें कहा गया है कि हम सब (पूरी मानवजाति) पापी हैं (तुलना करें: उत्पत्ति 3)। ऐसे पापियों को बचाने के लिए, परमेश्वर ने अपने एकमात्र पुत्र, यीशु मसीह को इस संसार में भेजा; क्रूस पर उनके प्रायश्चित वाले बलिदान के द्वारा, हमें उद्धार मिला और हम परमेश्वर की संतान बन गए। इसी आधार पर, परमेश्वर ने हमें धर्मी ठहराया। और उसने हमारे पास पवित्र आत्मा को भेजा। पवित्र आत्मा ने हमारा नया जन्म (फिर से जन्म लेना) करवाया

(इफिसियों 2:1)। हमारा उद्धार परमेश्वर के अनुग्रह से हुआ (पद 5)। इस प्रकार, हमें पवित्र आत्मा "पहले फल" के रूप में मिला (अतीत का उद्धार)।

दूसरे, हम वे लोग हैं जिनका "इस आशा में उद्धार हुआ।"

कृपया रोमियों 8:24 देखें: "क्योंकि इस आशा में हमारा उद्धार हुआ। परन्तु जिस आशा को देखा जाता है, वह आशा नहीं है; क्योंकि जो कोई देखता है, वह उसकी आशा क्यों करेगा?" बाइबल के अनुसार, हमारा उद्धार विश्वास के द्वारा होता है। रोमियों 5:1 देखें: "इसलिए, जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें।" रोमियों 3:28 को देखें: "क्योंकि हम यह मानते हैं कि एक व्यक्ति को व्यवस्था के कामों के बिना, केवल विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया जाता है।" हालाँकि, रोमियों 8:24 कहता है कि हमारा उद्धार आशा में हुआ। *मॉडर्न इंग्लिश वर्शन* इसे इस तरह कहता है: "क्योंकि हमारा उद्धार इसी आशा में हुआ।" दूसरे शब्दों में, इसका मतलब यह नहीं है कि आशा वह *माध्यम* है जिसके द्वारा हमारा उद्धार होता है—क्योंकि हमारा उद्धार विश्वास के द्वारा होता है—बल्कि इसका मतलब यह है कि हमारा उद्धार आशा के *संदर्भ में* होता है। आशा उद्धार का साधन (या माध्यम) नहीं है; विश्वास उद्धार का साधन (या माध्यम) है।

तो फिर, वह क्या है जिसकी हम "आशा करते हैं" (रोमियों 8:24)?

सबसे पहले, जिसकी हम आशा करते हैं, वह है "पुत्र के रूप में हमारा गोद लिया जाना, और हमारे शरीरों का छुटकारा" (रोमियों 8:23)।

हमें *पहले ही* पुत्र के रूप में गोद लिया जा चुका है। रोमियों 8:15–16 को देखें: "क्योंकि तुम्हें दासता की ऐसी आत्मा नहीं मिली कि तुम फिर डर में रहो, परन्तु तुम्हें गोद लिए जाने की आत्मा मिली है, जिससे हम पुकारते हैं, 'अब्बा! हे पिता!' आत्मा स्वयं हमारी आत्मा के साथ गवाही देती है कि हम परमेश्वर की संतान

हैं।" भविष्य में भी हमें पुत्र के रूप में गोद लिया जाएगा ["अभी तक नहीं"]। रोमियों 8:23 को देखें: "केवल इतना ही नहीं, बल्कि हम स्वयं भी, जिन्हें आत्मा का पहला फल मिला है, अपने मन में कराहते हैं, और पुत्र के रूप में गोद लिए जाने—अर्थात् अपने शरीरों के छुटकारे—की बेसब्री से प्रतीक्षा करते हैं।" तो फिर, यहाँ "हमारे शरीरों के छुटकारे" से क्या तात्पर्य है? कृपया रोमियों 8:10 के पिछले भाग से लेकर पद 11 तक देखें: "...शरीर पाप के कारण मृत है, परन्तु आत्मा धार्मिकता के कारण जीवित है। और यदि जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, उसकी आत्मा तुम में बसती है, तो जिसने मसीह यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, वह अपनी आत्मा के द्वारा जो तुम में बसती है, तुम्हारे मरणशील शरीरों को भी जीवन देगा।" हालाँकि हमारे शरीर पाप के कारण मृत्यु के अधीन हैं, फिर भी हमारी आत्माएँ पवित्र आत्मा के द्वारा—जो हमारे भीतर बसती है—फिर से जन्मी हैं (पुनर्जीवित हुई हैं); इसलिए, वह हमारे मरणशील शरीरों को भी जीवन देगा। जब आखिरी तुरही की आवाज़ गूंजेगी (1 कुरिन्थियों 15:52), तो हम सब पलक झपकते ही अचानक बदल जाएँगे (पद 51), और मरे हुए लोग अमर शरीरों के साथ जी उठेंगे (पद 52)। कृपया 1 थिस्सलोनिकियों 4:16–17 देखें: "क्योंकि प्रभु खुद स्वर्ग से एक ज़ोरदार आवाज़ के साथ, एक महादूत की आवाज़ के साथ, और परमेश्वर की तुरही के साथ नीचे उतरेंगे। और मसीह में मरे हुए लोग सबसे पहले जी उठेंगे। फिर हम जो ज़िंदा हैं और बचे हुए हैं, उन्हें उनके साथ बादलों में ऊपर उठा लिया जाएगा ताकि हम हवा में प्रभु से मिल सकें। और इस तरह हम हमेशा प्रभु के साथ रहेंगे।" कृपया फिलिप्पियों 3:20–21 देखें: "क्योंकि हमारी नागरिकता स्वर्ग में है, जहाँ से हम उद्धारकर्ता, प्रभु यीशु मसीह का बेसब्री से इंतज़ार कर रहे हैं; जो हमारे इस तुच्छ शरीर को बदल देंगे ताकि यह उनके महिमामय शरीर जैसा बन जाए—उस शक्ति के अनुसार जिससे वह सब कुछ अपने अधीन करने में समर्थ हैं।" कृपया 1 यूहन्ना 3:2 देखें: "हे प्रियो, अब हम परमेश्वर की संतान हैं; और अभी यह प्रकट नहीं हुआ है कि हम क्या बनेंगे, लेकिन हम जानते हैं कि जब वह प्रकट होंगे, तो हम उनके जैसे होंगे, क्योंकि हम उन्हें वैसे ही देखेंगे जैसे वह हैं।" शरीर के उद्धार (रोमियों 8:23) का मतलब है प्रभु के दूसरी बार आने पर हमारे शरीर का महिमामय रूप में पुनरुत्थान—वह महिमा जो अभी तक हम पर प्रकट नहीं हुई है (पद 18)। मत्ती 13:43 देखें: "तब धर्मी लोग अपने पिता के राज्य में सूरज की तरह चमकेंगे। जिसके कान हों, वह सुने।" प्रकाशितवाक्य 22:5 देखें: "वहाँ अब और रात नहीं होगी। उन्हें दीपक की रोशनी

या सूरज की रोशनी की ज़रूरत नहीं होगी, क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें रोशनी देंगे। और वे हमेशा-हमेशा के लिए राज करेंगे।" हम उस भविष्य की महिमा का इंतज़ार कर रहे हैं जो अभी प्रकट होनी बाकी है—यानी हमारे शरीरों का उद्धार (रोमियों 8:23)।

दूसरी बात, हम जिस चीज़ की आशा करते हैं, वह कोई दिखाई देने वाली चीज़ नहीं, बल्कि कोई अदृश्य चीज़ है (रोमियों 8:24-25)।

जो चीज़ दिखाई देती है, वह आशा नहीं है (पद 24)। इस दुनिया में अनगिनत आशाएँ हैं जो हमारी शारीरिक आँखों से दिखाई देती हैं (जैसे, अमीर बनने की आशा, अच्छे स्वास्थ्य की आशा, शक्ति और प्रसिद्धि की आशा, आदि)। बाइबल हमें बताती है कि ये दिखाई देने वाली चीज़ें सच्ची आशा नहीं हैं (पद 24)। इसलिए, हमें अपनी आशा उन चीज़ों पर नहीं लगानी चाहिए जो दिखाई देती हैं। हमें दिखाई देने वाली चीज़ों की इच्छा, अदृश्य चीज़ों से ज़्यादा नहीं करनी चाहिए। सच्ची आशा अदृश्य में निहित है (पद 25)। चूँकि हम देखकर नहीं, बल्कि विश्वास से जीते हैं (2 कुरिन्थियों 5:7), इसलिए हमें दिखाई देने वाली चीज़ों के बजाय अदृश्य चीज़ों की आशा करनी चाहिए। आशा के लोगों के रूप में—वे लोग जो दिखाई देने वाली चीज़ों से परे, अदृश्य की ओर देखते हैं—हमें अपनी आशा उस महिमा पर और भी ज़्यादा लगानी चाहिए जो अभी प्रकट होनी बाकी है। क्योंकि हम पवित्र आत्मा के द्वारा इस महिमा का अनुभव पहले से ही, कुछ हद तक, कर रहे हैं, इसलिए हमें इसके लिए और भी ज़्यादा तरसना चाहिए और इसका और भी ज़्यादा पीछा करना चाहिए। इब्रानियों अध्याय 11 में वर्णित विश्वास के पूर्वजों की तरह, हमें भी विश्वास के द्वारा, एक बेहतर वतन—वह वतन जो स्वर्ग में है—के लिए तरसना चाहिए (इब्रानियों 11:16)।

तो फिर, हमें "आशा" कैसे करनी चाहिए?

पहली बात, हमें मन ही मन कराहते हुए आशा करनी चाहिए (रोमियों 8:23)।

प्रसव-पीड़ा से गुज़रती एक माँ—जब उसका गर्भकाल पूरा हो चुका होता है—बच्चे के जन्म के दर्द और परिश्रम के बीच कराहती और चिल्लाती है, क्योंकि वह जल्द ही जन्म लेने वाले बच्चे के अनमोल जीवन की आशा कर रही होती है। ठीक इसी तरह, हम—जो आने वाली महिमा पर सचमुच विश्वास करते हैं—जैसे-जैसे प्रभु का आगमन निकट आता जाता है, हमें और भी गहरी आंतरिक कराह और ललक के साथ आशा करनी चाहिए।

दूसरी बात, हमें "धैर्य" के साथ आशा करनी चाहिए (रोमियों 8:25)।

कृपया बाइबल (मॉडर्न पीपल्स बाइबल) में इब्रानियों 12:2 देखें: "और आइए, हम अपनी आँखें यीशु पर टिकाए रखें—जो हमारे विश्वास का स्रोत है और वही है जो इसे पूर्णता तक पहुँचाता है। अपने सामने रखी हुई खुशी के लिए, उसने क्रूस की शर्म और पीड़ा को सहा, और अब वह परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान है।" ठीक वैसे ही जैसे यीशु ने किया था, हम भी—उस भविष्य की खुशी के लिए जो हमें विरासत में मिलने वाली है—मसीह के साथ मिलकर किसी भी मौजूदा दुख को सहें और बर्दाश्त करें (रोमियों 8:18), और अंत तक डटे रहकर अपनी आशा को मज़बूती से थामे रहें। कृपया बाइबल में मत्ती 10:22 (मॉडर्न पीपल्स बाइबल) देखें: “और मेरे कारण तुम सबसे नफ़रत का सामना करोगे; लेकिन जो अंत तक डटा रहेगा, वही बचाया जाएगा।” कृपया मत्ती 24:13 देखें: “लेकिन जो अंत तक डटा रहेगा, वही बचाया जाएगा।” इसलिए, जब तक प्रभु वापस नहीं आ जाते, तब तक आशा के साथ अंत तक डटे रहकर, हम—प्रभु के साथ मिलकर—आशा और महिमा के राज्य में प्रवेश करेंगे, और वहाँ हमेशा के लिए अनंत महिमा का आनंद लेंगे।

पवित्र आत्मा की सहायता

[रोमियों 8:26-27]

कृपया बाइबल में रोमियों 8:26-27 देखें: "इसी तरह, आत्मा हमारी कमज़ोरी में हमारी मदद करता है। हमें नहीं पता कि हमें किस बात के लिए प्रार्थना करनी चाहिए, लेकिन आत्मा खुद ही हमारे लिए ऐसी आहों के द्वारा मध्यस्थता करता है जिन्हें शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। और जो हमारे दिलों को जाँचता है, वह आत्मा के मन को जानता है, क्योंकि आत्मा परमेश्वर के लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छा के अनुसार मध्यस्थता करता है।"

हमारी पवित्र आत्मा, परमेश्वर की पवित्र आत्मा है जो हमारी सहायता के लिए आती है। हमें कितना सचमुच आभारी और आनंदित होना चाहिए कि वह कृपालु आत्मा—सांत्वना देने वाली आत्मा, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान परमेश्वर की पवित्र आत्मा—ही वह है जो हमारी मदद करती है! क्योंकि पवित्र आत्मा हमारी मदद करती है, इसलिए हमें किसी चीज़ की कमी नहीं होती और हमें पूर्ण संतोष मिलता है।

सबसे पहले, पवित्र आत्मा किसकी मदद करती है?

पवित्र आत्मा *हमारी* मदद करती है—यानी उन लोगों की जिन्हें पहले ही गोद ले लिया गया है। हम, जिनकी पवित्र आत्मा सहायता करती है, हमें पहले ही गोद लिए जाने की आत्मा मिल चुकी है, जो हमें परमेश्वर को पुकारने में समर्थ बनाती है, "अब्बा, पिता" (रोमियों 8:15)। पवित्र आत्मा खुद ही हमारी आत्माओं के साथ गवाही देती है कि हम सचमुच परमेश्वर की संतान हैं (पद 16)। हम, जिन्हें पवित्र आत्मा की सहायता मिलती है, न केवल पहले ही गोद लिए जा चुके हैं, बल्कि परमेश्वर के वारिस और मसीह के साथ सह-वारिस भी हैं

(पद 17)। इसके अलावा, पवित्र आत्मा भविष्य में गोद लिए जाने की हमारी आशा में हमारी मदद करती है—यानी, जब हम अपने शरीरों के उद्धार की प्रतीक्षा कर रहे होते हैं। यहाँ, "हमारे शरीरों का उद्धार" (पद 23) उस भविष्य की घटना को दर्शाता है जब यीशु अपने दूसरे आगमन में लौटेंगे; उस समय, पवित्र आत्मा हमारे नश्वर शरीरों को भी जीवन देगी (पद 11)। पुनरुत्थान के इस कार्य में, जब अंतिम तुरही बजेगी, तो पवित्र आत्मा मरे हुओं को—पलक झपकते ही—अविनाशी प्राणियों के रूप में जिला देगी, और हम सब बदल जाएँगे (1 कुरिन्थियों 15:52)। जब प्रभु स्वर्ग से एक ज़ोरदार आज्ञा के साथ, महादूत की आवाज़ के साथ, और परमेश्वर के तुरही की आवाज़ के साथ नीचे उतरेंगे, तो वे लोग जो मसीह पर विश्वास करते हुए मरे थे, सबसे पहले जी उठेंगे (1 थिस्सलोनिकियों 4:16, *द मॉडर्न मैन'स बाइबल*)। यही ठीक हमारे शरीरों का उद्धार है। उसके बाद, हम जो अभी भी जीवित हैं, उनके साथ बादलों में ऊपर उठा लिए जाएँगे ताकि हवा में प्रभु से मिल सकें, और इस प्रकार हम अनंत काल तक प्रभु के साथ रहेंगे (पद 17, *द मॉडर्न मैन'स बाइबल*)।

दूसरा, पवित्र आत्मा किस तरह से हमारी मदद करता है?

पवित्र आत्मा हमारी कमज़ोरी में हमारी मदद करता है (रोमियों 8:26)। हम ऐसे लोग हैं जो शरीर और आत्मा, दोनों में कमज़ोर हैं। हालाँकि परमेश्वर ने मूल रूप से हमें मज़बूत बनाया था, लेकिन पहले आदम के पाप के कारण हम कमज़ोर हो गए। यहाँ तक कि यीशु भी शारीरिक रूप से कमज़ोर थे। जब यीशु अपने शिष्यों के साथ एक नाव में यात्रा कर रहे थे, तो अचानक एक ज़ोरदार तूफ़ान आ गया, और लहरें नाव पर टकराने लगीं, जिससे नाव के डूबने का खतरा पैदा हो गया (मरकुस 4:37)। फिर भी, क्योंकि वे बहुत थके हुए थे, यीशु नाव के पिछले हिस्से में सो रहे थे, उनका सिर एक तकिये पर टिका था (पद 38)। चालीस दिनों के उपवास के बाद यीशु को बहुत ज़ोर की भूख भी लगी थी (मत्ती 4:2)। ठीक उसी समय, जब यीशु शारीरिक कमज़ोरी की इस स्थिति में थे, शैतान ने उन्हें लुभाने की कोशिश की। उस क्षण, यीशु ने परमेश्वर के वचन की शक्ति से शैतान के प्रलोभनों पर विजय पाई। हमें अपनी कमज़ोरी का गहरा और पूरी तरह से एहसास होना चाहिए। हमें इस बात को अच्छी तरह समझना चाहिए कि न केवल हमारे शरीर कमज़ोर हैं, बल्कि हमारी आत्माएँ भी कमज़ोर हैं—और हमारा संकल्प वास्तव में कितना नाज़ुक है। यह *न्यू हिमनल* (New Hymnal) के

भजन 214 के तीसरे पद के बोलों की याद दिलाता है, "मैं प्रभु की मदद चाहता हूँ": "मेरी शक्ति और संकल्प कमज़ोर हैं, जो कभी भी टूट सकते हैं..." हमें अपनी कमज़ोरी का पूरी तरह से एहसास होना चाहिए, भले ही इसका मतलब दुख और कठिनाइयों के माध्यम से इसे सीखना हो। इसलिए, हमें यह पहचानना चाहिए कि हम वास्तव में कितने असमर्थ और शक्तिहीन हैं। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम अनुभव कर सकते हैं—ठीक वैसे ही जैसे प्रेरित पौलुस ने किया था—कि हमारी कमज़ोरी में परमेश्वर की शक्ति कैसे सिद्ध होती है (2 कुरिन्थियों 12:9)। ठीक उसी समय, जब हम कमज़ोर होते हैं, पवित्र आत्मा हमारे भीतर सबसे अधिक शक्तिशाली रूप से काम करती है। इसलिए, पौलुस की तरह, हम भी अपनी विभिन्न कमज़ोरियों के बारे में गर्व किए बिना नहीं रह सकते। इसका कारण यह है कि मसीह की सामर्थ्य हम पर बनी रहे (पद 9)। हमें इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि शैतान हमें ठीक उसी समय परीक्षा में डालने की कोशिश करता है, जब हम सबसे अधिक कमज़ोर होते हैं। हमें पवित्र आत्मा की सहायता से शैतान की इन परीक्षाओं पर विजय प्राप्त करनी चाहिए; वही हमारी कमज़ोरी के क्षणों में हमारी सहायता के लिए आती है। ऐसा करने के लिए, हमें प्रार्थना करनी चाहिए। मत्ती 26:41 पर विचार करें: "जागते रहो और प्रार्थना करते रहो, ताकि तुम परीक्षा में न पड़ो। आत्मा तो तैयार है, पर शरीर कमज़ोर है।" इसके अलावा, यीशु के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, हमें परमेश्वर के वचन का उपयोग करके शैतान की परीक्षाओं पर विजय प्राप्त करनी चाहिए (मत्ती 4:4, 7, 10)।

पवित्र आत्मा हमारी प्रार्थनाओं में हमारी सहायता करती है (रोमियों 8:26)। अक्सर यह कहा जाता है कि प्रार्थना साँस लेने जैसी है; यदि हम साँस लेना बंद कर दें, तो हम मर जाते हैं। इस हद तक, प्रार्थना—हमारी आत्मिक साँस—अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमारे पास प्रार्थना करने के लिए बहुत सी बातें होती हैं, फिर भी हम अक्सर उन सभी के लिए प्रार्थना करने में असफल रहते हैं। कई बार ऐसा होता है जब हम प्रार्थना कर ही नहीं पाते—ऐसे समय जब हम केवल निराशा में कराहते हैं। तब हमें क्या करना चाहिए? हमें पवित्र आत्मा की सहायता के लिए पूरी लगन से तरसना चाहिए। पवित्र आत्मा हमारी प्रार्थनाओं में हमारी सहायता करती है, हमारे लिए व्यक्तिगत रूप से ऐसी कराहों के साथ मध्यस्थता करती है जिन्हें शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता (पद 26)। अधिकांश समय, जब हम प्रार्थना करते हैं, तो हमारे पास यह समझने की समझ की कमी होती है कि क्या हमारे निवेदन परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप हैं। परिणामस्वरूप, हम अक्सर केवल

उसी के आधार पर प्रार्थना करते हैं जो हमारी आँखों को दिखाई देता है, और उसकी इच्छा के बजाय अपनी स्वयं की इच्छाओं के अनुसार प्रार्थना करते हैं। ऐसी प्रार्थना हवा में मुक्के मारने के समान है (1 कुरिन्थियों 9:26)। क्योंकि पवित्र आत्मा परमेश्वर की इच्छा को जानती है—और क्योंकि हम कमज़ोर हैं और अक्सर यह नहीं जानते कि हमें कैसे प्रार्थना करनी चाहिए—वह परमेश्वर की इच्छा के अनुसार हमारे लिए व्यक्तिगत रूप से मध्यस्थता करती है (रोमियों 8:26–27)। इसके अलावा, पवित्र आत्मा हमें परमेश्वर की इच्छा को समझने में सक्षम बनाती है, जिससे हमें उसके अनुरूप प्रार्थना करने में सहायता मिलती है। इसलिए, हमें हिम्मत नहीं हारनी चाहिए; बल्कि, पवित्र आत्मा की सहायता पर भरोसा करते हुए—जो हमारे लिए अवर्णनीय कराहों के साथ व्यक्तिगत रूप से मध्यस्थता करती है—हमें अपने निवेदन परमेश्वर, हमारे "अब्बा, पिता" के सामने प्रस्तुत करने चाहिए। हमें पवित्र आत्मा की सहायता से परमेश्वर पिता से प्रार्थना करते रहना चाहिए, और इस सत्य को दृढ़ता से थामे रहना चाहिए कि यीशु स्वयं अभी भी हमारे लिए मध्यस्थता कर रहे हैं (इब्रानियों 7:25)। बाइबल हमें "बिना रुके प्रार्थना करने" का आदेश देती है (1 थिस्सलोनिकियों 5:17)। इस आदेश का पालन करने के लिए, हम प्रार्थना के विभिन्न रूपों को अपना सकते हैं—जैसे कि नियमित प्रार्थना के लिए विशिष्ट समय निर्धारित करना, सुबह की सेवाओं में भाग लेना, सप्ताह के मध्य में होने वाली प्रार्थना सभाओं में शामिल होना, मध्यस्थता वाली प्रार्थना करना, या उपवास रखना—लेकिन मेरा व्यक्तिगत सुझाव यह है: प्रार्थना को अपने जीवन का एक तरीका बना लें। जिस प्रकार हम हर पल साँस लेकर जीवित रहते हैं, उसी प्रकार हमें प्रार्थना में लीन रहकर जीवित रहना चाहिए—जो हमारी आत्मिक साँस है। हमें यह सुनिश्चित करने का प्रयास करना चाहिए कि हमारे जीवन का हर एक पल परमेश्वर के लिए प्रार्थना का पल बन जाए। हमें अपने स्वर्गीय पिता से बातचीत करने के अनगिनत अवसर खोजने चाहिए। विशेष रूप से, मैं आपको आराधना गीतों के माध्यम से प्रार्थना करने की आदत डालने के लिए प्रोत्साहित करना चाहूँगा; मेरा मानना है कि यह एक बहुत ही अद्भुत अभ्यास है।

पवित्र आत्मा हमारी सहायता करते हैं! वे हमारी कमज़ोरियों में हमारी मदद करते हैं और हमारी प्रार्थनाओं में हमारा साथ देते हैं। पवित्र आत्मा स्वयं हमारे लिए ऐसी गहरी आहों के साथ मध्यस्थता करते हैं जिन्हें शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। वे हमारे लिए—अपने संतों के लिए—परमेश्वर की इच्छा के अनुसार

मध्यस्थता करते हैं। पवित्र आत्मा की सहायता पर भरोसा करके ही हम यहाँ तक पहुँच पाए हैं (एबेनेज़र)। अभी और भविष्य में भी—ठीक उस पल तक जब हम प्रभु से मिलेंगे—हमें पवित्र आत्मा की सहायता पर भरोसा करना जारी रखना चाहिए। अपनी कमज़ोरी के पलों में मध्यस्थता करते हुए उनके शक्तिशाली कार्य का अनुभव करके, हम विजय का जीवन जी पाएँगे।

मुक्ति का आश्वासन

[रोमियों 8:28-29]

कृपया बाइबल में रोमियों 8:28-29 खोलें: "और हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, और जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए गए हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही उत्पन्न करती हैं। क्योंकि जिन्हें उसने पहले से जान लिया है, उन्हें उसने पहले से ही ठहराया भी है कि वे उसके पुत्र के स्वरूप में बदल जाएं, ताकि वह बहुत से भाइयों और बहनों में पहलौठा ठहरे।" इस अंश में "मुक्ति" शब्द स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं देता है। हालाँकि, इसकी विषय-वस्तु की जाँच करने पर, यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रेरित पौलुस मुक्ति के विषय में ही बात कर रहे हैं। विशेष रूप से, यह अंश मुक्ति के आश्वासन से संबंधित है। इसलिए, मैंने इस मनन के शीर्षक के रूप में "मुक्ति का आश्वासन" को चुना है।

पहला, रोमियों 8:28-29 में जिस "मुक्ति" का उल्लेख किया गया है, वह क्या है?

रोमियों 8:28-29 में वर्णित मुक्ति उस महिमा को संदर्भित करती है जो भविष्य में हम पर प्रकट होगी (पद 18)—अर्थात्, अनंत जीवन। दूसरे शब्दों में, इस अंश में जिस मुक्ति की बात की गई है, वह हमारी मुक्ति की भविष्य की पूर्णता को संदर्भित करती है। कहने का तात्पर्य यह है कि यह उस समय की बात करता है जब यीशु लौटकर आएंगे, और हम पुनर्जीवित होकर स्वर्ग में प्रवेश करने के लिए रूपांतरित हो जाएंगे; जहाँ हम अनंत काल तक निवास करेंगे, और त्रिएक परमेश्वर की उपस्थिति में अनंत जीवन के आनंद का अनुभव करेंगे। यदि हमारे पास मुक्ति का यह आश्वासन है, तो हम अडिग बने रहेंगे; हम किसी भी कठिनाई या विपत्ति के बीच भी आनंदित हो सकते हैं और विजयी हो सकते हैं।

दूसरा, मुक्ति का यह आश्वासन कौन प्राप्त कर सकता है?

"जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं" (पद 28)—केवल वे ही लोग मुक्ति का आश्वासन प्राप्त कर सकते हैं। हर कोई परमेश्वर से प्रेम करने में सक्षम नहीं होता है। उदाहरण के लिए, जो लोग "परमेश्वर के बिना" (इफिसियों 2:12) जीवन व्यतीत करते हैं, वे उससे प्रेम नहीं कर सकते। "हे हमारे पिता, जो स्वर्ग में है" (प्रभु की प्रार्थना)—हम, जो परमेश्वर की संतान हैं और उसके अस्तित्व में विश्वास रखते हैं, सर्वप्रथम वे लोग हैं जिन्होंने परमेश्वर का प्रेम प्राप्त किया है (1 यूहन्ना 4:19); और इस प्रकार, हम ही वे लोग हैं जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं (रोमियों 8:28)। यही इस बात का पक्का प्रमाण है कि हमने मुक्ति प्राप्त कर ली है, और यही हमारी मुक्ति (अनंत जीवन) के आश्वासन का आधार भी है। तो फिर, हम परमेश्वर से प्रेम कैसे कर पाते हैं? हम परमेश्वर से प्रेम इसलिए कर पाते हैं, क्योंकि उन्होंने उस पवित्र आत्मा के द्वारा, जो उन्होंने हमें दी है, अपना प्रेम हमारे हृदयों में उंडेल दिया है (रोमियों 5:5)। बाइबल में मत्ती 10:37 पर दृष्टि डालें: "जो कोई अपने पिता या माता से मुझसे अधिक प्रेम करता है, वह मेरे योग्य नहीं; और जो कोई अपने बेटे या बेटी से मुझसे अधिक प्रेम करता है, वह मेरे योग्य नहीं।" बाइबल हमें बताती है कि हमें परमेश्वर से सबसे बढ़कर—यहाँ तक कि अपने माता-पिता या बच्चों से भी अधिक—प्रेम करना चाहिए। यदि हम परमेश्वर की अपेक्षा अपने माता-पिता या बच्चों से अधिक प्रेम करते हैं, तो यह मूर्तिपूजा के समान है। तथापि, यदि—पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में और परमेश्वर द्वारा हममें उंडेले गए प्रेम से सशक्त होकर—हम किसी भी अन्य व्यक्ति की अपेक्षा परमेश्वर से अधिक प्रेम करते हैं, तो यह इस बात का प्रमाण है कि हमने उद्धार प्राप्त कर लिया है। मत्ती 22:37 पर दृष्टि डालें: "यीशु ने उत्तर दिया: 'तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से, और अपनी सारी आत्मा से, और अपनी सारी बुद्धि से प्रेम रख।'" यदि हम प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन, आत्मा और बुद्धि से प्रेम करते हैं—ठीक वैसे ही जैसा यीशु ने आज्ञा दी थी—तो हम ऐसे लोग हैं जिनके पास उद्धार का आश्वासन है। फिर भी, अनगिनत अवसर ऐसे आते हैं जब हम इस मापदंड पर खरे नहीं उतर पाते। ठीक इसी कारण से, हमारे उद्धार का आश्वासन अक्सर डगमगा जाता है।

"जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं," वे वे लोग हैं जिन्हें परमेश्वर पिता की इच्छा के अनुसार बुलाया गया है—विशेष रूप से, "वे जिन्हें उसके उद्देश्य के अनुसार बुलाया गया है" (रोमियों 8:28)—और उन्हें उद्धार का आश्वासन प्राप्त है। यहाँ, "बुलावा" (या "आह्वान") शब्द दो अलग-अलग प्रकारों को संदर्भित करता है: (1) सामान्य बुलावा। परमेश्वर ने सभी लोगों को एक बुलावा दिया है। (2) प्रभावशाली बुलावा (एक प्रभावी, शक्तिशाली, या विशेष बुलावा)। "प्रभावशाली बुलावा परमेश्वर के आत्मा का कार्य है, जिसके द्वारा, हमें हमारे पाप और दुर्दशा का बोध कराते हुए, मसीह के ज्ञान में हमारे मनों को प्रकाशित करते हुए, और हमारी इच्छाओं को नया करते हुए, वह हमें यीशु मसीह को ग्रहण करने के लिए मनाता है और समर्थ बनाता है—जिन्हें सुसमाचार में हमें स्वतंत्र रूप से भेंट किया गया है" (वेस्टमिंस्टर शॉर्टर कैटेकिज़्म, प्रश्न 31)। वेस्टमिंस्टर कन्फेशन ऑफ़ फेथ, अध्याय 10, 'प्रभावी बुलाहट' (Of Effectual Calling) देखें: "1. वे सभी लोग जिन्हें परमेश्वर ने जीवन के लिए पहले से चुन लिया है, वह अपने तय और स्वीकार्य समय पर उन्हें प्रभावी ढंग से बुलाने में प्रसन्न होता है (रोम 8:30, 11:7; इफिसियों 1:10,11)। वह यह कार्य अपने वचन और आत्मा के द्वारा करता है (2 थिस्सलोनिकियों 2:13; 2 कुरिन्थियों 3:3,6), और उन्हें पाप तथा मृत्यु की उस अवस्था से बाहर निकालता है जिसमें वे स्वभावतः होते हैं, और यीशु मसीह के द्वारा उन्हें अनुग्रह और उद्धार की ओर ले जाता है (2 तीमुथियुस 1:9,10; रोम 8:2; इफिसियों 2:1-5)। वह उनके मनों को भी आध्यात्मिक रूप से प्रकाशित करता है ताकि वे अपने उद्धार के लिए परमेश्वर की बातों को समझ सकें (1 कुरिन्थियों 2:10,12; प्रेरितों के काम 26:18; इफिसियों 1:17,18), उनके पत्थर जैसे हृदय को निकाल लेता है, और उन्हें मांस का हृदय प्रदान करता है (यहेजकेल 36:26)। वह उनकी इच्छाओं को नया करता है, और अपनी सर्वशक्तिमान सामर्थ्य से उन्हें उस ओर प्रेरित करता है जो भला है (फिलिप्पियों 2:13; व्यवस्थाविवरण 30:6; यहेजकेल 11:19, 36:27), और उन्हें प्रभावी ढंग से यीशु मसीह की ओर खींचता है (यूहन्ना 6:44,45; इफिसियों 1:9)। फिर भी वे पूरी स्वतंत्रता से आते हैं, क्योंकि उसके अनुग्रह द्वारा उन्हें आने के लिए इच्छुक बना दिया जाता है (भजन संहिता 110:3; श्रेष्ठगीत 1:4; यूहन्ना 6:37; रोम 6:16-18)। 2. यह प्रभावी बुलाहट केवल परमेश्वर के स्वतंत्र और विशेष अनुग्रह से होती है, न कि मनुष्य में पहले से देखे गए किसी भी गुण या बात के कारण (2 तीमुथियुस 1:9; रोम 9:11; इफिसियों 2:4, 5, 8, 9; तीतुस 3:4, 5)। एक बार जब मनुष्य पवित्र आत्मा के द्वारा पुनर्जीवित और नया कर दिया जाता है (1 कुरिन्थियों 2:14; रोम 8:7; इफिसियों 2:5), तो वे उस बुलाहट

का प्रत्युत्तर देते हैं (यहेजकेल 36:27; यूहन्ना 5:25, 6:37) और उस अनुग्रह को ग्रहण करने में सक्षम हो जाते हैं जो उन्हें प्रदान किया गया है। इस संबंध में, इंसान पूरी तरह से निष्क्रिय रहते हैं।"

बाइबल के मत्ती 22 में पाए जाने वाले यीशु के 'शादी के भोज' के दृष्टांत पर विचार करें। एक राजा था जिसने अपने बेटे के लिए शादी का भोज तैयार किया (पद 2) और अपने सेवकों को उन लोगों को बुलाने के लिए भेजा जिन्हें भोज में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया गया था, लेकिन वे आने को तैयार नहीं थे (पद 3)। उसने एक बार फिर दूसरे सेवकों को भेजा, और उन्हें यह कहने का निर्देश दिया, "शादी के भोज में आओ" (पद 4); फिर भी, कोई ध्यान न देते हुए, वे सब अपने-अपने कामों में लग गए (पद 5)। उन्होंने तो सेवकों के साथ बुरा बर्ताव भी किया और उन्हें मार डाला (पद 6)। ये लोग उन लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो 'सामान्य बुलाहट' की श्रेणी में आते हैं। राजा ने अपने सेवकों से कहा कि शादी का भोज तैयार है, लेकिन जिन लोगों को आमंत्रित किया गया था, वे इसके योग्य नहीं थे; तब उसने उन्हें निर्देश दिया, "चौराहों पर जाओ और जिस किसी से भी मिलो, उसे शादी के भोज के लिए आमंत्रित करो" (पद 8–9)। परिणामस्वरूप, सेवक सड़कों पर निकल गए और जिस किसी से भी उनका सामना हुआ—दुष्ट और भले, दोनों को—इकट्ठा कर लिया (पद 10)। जब राजा मेहमानों को देखने के लिए अंदर आया, तो उसने एक आदमी को देखा जिसने शादी के कपड़े नहीं पहने थे (पद 11) और अपने सेवकों से कहा, "इसके हाथ-पैर बांधकर इसे बाहर के अंधेरे में फेंक दो; वहाँ यह रोएगा और अपने दाँत पीसेगा" (पद 13)। "क्योंकि बहुत से बुलाए गए हैं, पर चुने हुए थोड़े हैं" (पद 14)। दूसरे शब्दों में, जहाँ बहुत से लोग 'सामान्य बुलाहट' पाते हैं, वहीं बहुत कम लोग ही 'प्रभावी'—या 'विशेष'—बुलाहट पाते हैं (वे लोग जो "चुने हुए" हैं)। जो लोग "परमेश्वर से प्रेम करते हैं," वे वे लोग हैं जिन्हें परमेश्वर पिता की इच्छा के अनुसार बुलाया गया है (रोम 8:28); वे "वे लोग भी हैं जिन्हें परमेश्वर ने पहले से जान लिया था" (पद 29) और "वे लोग जिन्हें उसने पहले से ही ठहरा दिया था" (पद 30)।

परमेश्वर पिता ने हमें—जिन्हें उसने पहले से जान लिया था—अपने पुत्र, यीशु के स्वरूप के अनुरूप बनने के लिए पहले से ही ठहरा दिया था (पद 29)। इसके अलावा, जिन्हें उसने पहले से ठहराया था, उन्हें उसने बुलाया भी; और जिन्हें उसने बुलाया था, उन्हें उसने धर्मी भी ठहराया (पद 30)—यही 'धर्मी ठहराया जाना' (Justification) है। और जिन्हें उसने धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी (पद 30)। यह अनंत जीवन—यानी

उद्धार की पूर्णता—को दर्शाता है; यह वह महिमा है जो भविष्य में हम पर प्रकट होगी। इस प्रकार, बाइबल यह घोषणा करती है कि जिन्हें परमेश्वर की इच्छा के अनुसार बुलाया गया है, वे निश्चित रूप से उद्धार प्राप्त करेंगे (पद 28)। वाक्यांश "उसके उद्देश्य के अनुसार" (रोमियों 8:28) का अर्थ है "परमेश्वर की इच्छा के अनुसार"; और, सीधे शब्दों में कहें तो, परमेश्वर की इच्छा ही उद्धार है। यह वही उद्धार है जो हमें—जो आध्यात्मिक रूप से मृत थे (इफिसियों 2:1) और अनंत दंड के अधीन थे—स्वर्ग के अनंत राज्य में ले आता है। क्योंकि परमेश्वर ने हमें इसी उद्धार के लिए बुलाया है, इसलिए हम अपने उद्धार के प्रति पूर्ण निश्चितता रख सकते हैं। इसलिए, हम इस विश्वास के साथ जी सकते हैं कि यदि आज हमारी मृत्यु भी हो जाए, तो भी हम स्वर्ग जाएँगे। उस पद में जहाँ यह कहा गया है कि "सब बातों में परमेश्वर भलाई के लिए काम करता है" (रोमियों 8:28), वाक्यांश "सब बातें" उन सभी घटनाओं को संदर्भित करता है जो हमारे पूरे जीवनकाल में घटित होती हैं (और इसमें हमारे पाप भी शामिल हैं)। जब हम पाप करते हैं, तो परमेश्वर को दुख होता है। यदि हम परमेश्वर के वचन पर ध्यान नहीं देते, तो वह हमें चेतावनी देता है। यदि उसके बाद भी हम पाप में बने रहते हैं, तो परमेश्वर हमें अनुशासित (या ताड़ना) करता है। इसका कारण यह है कि हम उसके प्रिय बच्चे हैं—उसके अपने ही बेटे और बेटियाँ (इब्रानियों 12:5–8)। हमें ताड़ना मिलने से पहले ही पश्चाताप कर लेना चाहिए। वाक्यांश "मिलकर काम करना" (work together) "संयोजित होने" की क्रिया को दर्शाता है। वैकल्पिक रूप से, इसका अर्थ है "एक-दूसरे में घुल-मिल जाना" (fusing together)—जिसे शब्दकोश में इस प्रकार परिभाषित किया गया है: "विभिन्न तत्वों के एक-दूसरे में इस प्रकार घुल-मिल जाने की प्रक्रिया कि उनके व्यक्तिगत भेद समाप्त हो जाएँ और वे मिलकर एक पूर्ण इकाई का निर्माण करें; अथवा ऐसी स्थिति उत्पन्न करने की क्रिया।" कथन "भलाई के लिए मिलकर काम करना" में, शब्द "भलाई" परम परमार्थ—अर्थात् उद्धार—को संदर्भित करता है। दूसरे शब्दों में, इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर सब बातों को—यहाँ तक कि हमारे पापों को भी—आपस में मिलकर (संयोजित होकर और घुल-मिलकर) काम करने का माध्यम बनाता है, ताकि अंततः हमारा उद्धार हो सके, जो कि परम परमार्थ है।

इसलिए, हमारे पास उद्धार की निश्चितता अवश्य होनी चाहिए! जिन लोगों के पास यह भरोसा है, उन्हें अपनी बुलाहट और चुनाव को पक्का करने के लिए और भी ज़्यादा कोशिश करनी चाहिए, ताकि हम कभी ठोकर न खाएँ (2 पतरस 1:10)। इसके अलावा, हमें मज़बूती से और बिना हिले-डुले खड़े रहना चाहिए, और हमेशा

पूरे दिल से प्रभु के काम में लगे रहना चाहिए। क्योंकि प्रभु में हमारी मेहनत कभी बेकार नहीं जाएगी (1 कुरिन्थियों 15:58)।

परमेश्वर का उद्धार (1)

[रोमियों 8:29-30]

कृपया बाइबल में रोमियों 8:29-30 देखें: "क्योंकि जिन्हें उसने पहले से जान लिया, उन्हें उसने पहले से ही ठहराया कि वे उसके पुत्र के स्वरूप में बदल जाएँ, ताकि वह बहुत से भाइयों में पहिलौठा ठहरे। और जिन्हें उसने पहले से ठहराया, उन्हें उसने बुलाया भी; और जिन्हें उसने बुलाया, उन्हें उसने धर्मी भी ठहराया; और जिन्हें उसने धर्मी ठहराया, उन्हें उसने महिमा भी दी।"

सबसे पहले, "परमेश्वर के उद्धार" के संदर्भ में, "परमेश्वर" किस प्रकार का अस्तित्व है?

परमेश्वर उद्धार का परमेश्वर है। कृपया बाइबल में रोमियों 8:3-4 देखें: "क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर की कमज़ोरी के कारण न कर सकी, वह परमेश्वर ने किया: उसने अपने ही पुत्र को पापमय शरीर के रूप में, पाप के कारण भेजकर, शरीर में पाप को दण्ड दिया; ताकि व्यवस्था की धार्मिक माँग हममें पूरी हो जाए, जो शरीर के अनुसार नहीं, बल्कि आत्मा के अनुसार चलते हैं।" इसमें कहा गया है कि जिस उद्धार को "व्यवस्था" पूरा नहीं कर सकी—उसे "परमेश्वर ने किया" (पद 3)। दूसरे शब्दों में, इसका अर्थ है कि परमेश्वर उद्धार करता है। इसलिए, परमेश्वर उद्धार का परमेश्वर है। तो फिर, परमेश्वर ने हमारा उद्धार कैसे किया? उसने अपने ही पुत्र को—अपने एकलौते पुत्र (पुत्र परमेश्वर) को—पापमय शरीर के रूप में भेजकर हमारा उद्धार किया, और इस प्रकार शरीर में पाप को दण्ड दिया (पद 3)। बाइबल यह नहीं कहती कि उसने "अपने ही पुत्र को *पापमय शरीर के रूप में*" भेजा, बल्कि यह कहती है कि उसने उसे "पापमय शरीर की *समानता* में" भेजा। इसका कारण यह है कि यीशु—परमेश्वर का एकलौता पुत्र—निष्पाप है। यीशु, वह एकलौता पुत्र

जो 'वचन' है, परमेश्वर है (यूहन्ना 1:1)। वह 'वचन'—पुत्र परमेश्वर—देहधारी हुआ (पद 14)। वह एक मनुष्य बन गया। कैसे? यीशु, वह एकलौता पुत्र जो पुत्र परमेश्वर है, कुँवारी मरियम से जन्मा—जो दाऊद की वंशज (कुल) से थी (रोमियों 1:3)—और जिसका गर्भ पवित्र आत्मा द्वारा ठहरा था (मत्ती 1:18)। परिणामस्वरूप, यीशु निष्पाप है। वाक्यांश "पापी शरीर की समानता में" (रोमियों 8:3) का अर्थ है कि, यद्यपि उनमें स्वयं कोई पाप नहीं था, फिर भी वे ऐसे व्यक्ति के *रूप* में आए जिसमें पाप था; और अधिक स्पष्ट रूप से कहें तो, इसका अर्थ है कि वे एक कमज़ोर इंसान के वेश में आए। इस प्रकार, जब यीशु बिना सोए रहे, तो वे थक गए (मरकुस 4:38); जब वे बिना पानी पिए रहे, तो उन्हें प्यास लगी; जब वे बिना भोजन किए रहे, तो उन्हें भूख लगी; और जब उन्हें क्रूस पर चढ़ाया गया, तो उन्होंने असहनीय पीड़ा सहन की। शैतान ने इस अवसर को हाथ से जाने नहीं दिया; उसने यीशु को लुभाने का प्रयास किया। उदाहरण के लिए, जब यीशु ने चालीस दिनों तक उपवास किया, तो शैतान ने उन्हें लुभाया (मत्ती 4:1–11)। इस घटना के अलावा, यीशु को शैतान की ओर से अनेक अन्य प्रलोभनों का सामना करना पड़ा, फिर भी वे हर बार विजयी हुए। इब्रानियों 4:15 पर विचार करें: "क्योंकि हमारा महायाजक ऐसा नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके; वरन् वह सब बातों में हमारी ही नाईं परखा तो गया, तौभी निष्पाप रहा।" हमारे उद्धार के कार्य में, परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को पापी शरीर की समानता में भेजा; फिर भी, क्योंकि यीशु ने ऐसी हर परीक्षा पर विजय प्राप्त की, वे पूरी तरह से निष्पाप बने रहे। हम भी अक्सर कमज़ोरी के क्षणों का अनुभव करते हैं। ऐसे समय में, शैतान—जो प्रलोभन देने वाला है—हमारी परीक्षा लेने का प्रयास करता है। उन क्षणों में, यीशु द्वारा स्थापित विजय के भरोसे पर निर्भर रहते हुए, हमें परमेश्वर के वचन के द्वारा शैतान के प्रलोभनों (या लालचों) का सामना करना चाहिए और उन पर विजय प्राप्त करनी चाहिए।

दूसरे, "परमेश्वर के उद्धार" के संदर्भ में "उद्धार" का वास्तव में क्या अर्थ है?

"उद्धार" शब्द, जैसा कि रोमियों 8:29–30 में आया है, अपने सबसे व्यापक और विस्तृत अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। परमेश्वर ने पहले आदम को अपने ही स्वरूप में बनाया (उत्पत्ति 1:27)। इसके अतिरिक्त, परमेश्वर ने एदेन में, पूर्व की ओर एक वाटिका लगाई और आदम को वहाँ रखा (2:8)। तब, परमेश्वर ने आदम को आज्ञा दी: "तू वाटिका के हर पेड़ का फल बेखटके खा सकता है; परन्तु भले और बुरे के ज्ञान के पेड़ का फल तू न खाना" (पद 16–17)। उन्होंने घोषणा की, "क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा, उसी दिन तू निश्चय मर

जाएगा" (पद 17)। लेकिन, आदम ने इस ईश्वरीय आज्ञा का उल्लंघन किया और पाप किया। इसके परिणामस्वरूप, मृत्यु आ गई। यहाँ, मृत्यु तीन रूप लेती है: (1) आध्यात्मिक मृत्यु: परमेश्वर के साथ संगति का टूट जाना। आदम की परमेश्वर के साथ संगति सचमुच टूट गई थी। इसके फलस्वरूप, आदम—हव्वा के साथ—अदन की वाटिका से निकाल दिया गया (3:23)। (2) शारीरिक मृत्यु: आदम की मृत्यु 930 वर्ष की आयु में हुई (5:5)। (3) अनंत मृत्यु: जब आदम की मृत्यु 930 वर्ष की आयु में हुई, तो उसके शरीर को कब्र में दफना दिया गया, जबकि उसकी आत्मा को नरक में अनंत काल तक कष्ट भोगना था। इसके बाद, यीशु के दूसरे आगमन पर, उसके शरीर को कब्र से पुनर्जीवित किया जाएगा; उसकी आत्मा और शरीर फिर से एक हो जाएँगे, और उसे नरक में अनंत दंड भोगना होगा। ठीक इसी मोड़ पर उद्धार—"परमेश्वर का उद्धार"—हस्तक्षेप करता है!

परमेश्वर ने आदम को बचाया। सबसे पहले और सबसे ज़रूरी बात यह है कि उसका उद्धार एक आत्मिक उद्धार था। बाइबल में उत्पत्ति 3:21 देखें: “परमेश्वर यहोवा ने आदम और उसकी पत्नी के लिए चमड़े के वस्त्र बनाए और उन्हें पहनाए।” परमेश्वर ने आदम और उसकी पत्नी के लिए चमड़े के वस्त्र बनाए; ऐसा करने के लिए, उसे एक जानवर को मारना पड़ा—उसका खून बहाना पड़ा—और उसकी खाल को तैयार करके ऐसे वस्त्र बनाने पड़े जिनसे उसने आदम और हव्वा को ढका। इस कार्य ने आदम (और हव्वा) की हर अशुद्धता और मलिनता को ढक दिया। "धर्मी ठहराए जाने" (justification) का ठीक यही अर्थ है। वह जानवर यीशु मसीह का प्रतीक है। चमड़े के वस्त्र बनाने के लिए जानवर को मारकर और उन वस्त्रों से आदम (और हव्वा) को पहनाकर, परमेश्वर ने आदम को अपनी दृष्टि में धर्मी ठहराया। इसलिए, हालाँकि आदम का भौतिक शरीर अंततः कब्र में चला गया, उसकी आत्मा स्वर्ग में चली गई। जब यीशु अपने दूसरे आगमन में लौटेंगे, तो आदम की आत्मा—जो अभी स्वर्ग में है—और उसका शरीर—जो अभी कब्र में है—पुनर्जीवित होकर फिर से एक हो जाएँगे, जिससे वह स्वर्ग में अनंत आनंद का अनुभव कर सकेगा। यही परमेश्वर के उद्धार का मूल सार है!

परमेश्वर ने हमें बचाया है। जिस तरह पाप एक मनुष्य—आदम—के द्वारा संसार में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, उसी तरह मृत्यु सभी मनुष्यों में फैल गई क्योंकि सभी ने पाप किया है (रोमियों 5:12)। आदम की संतान

होने के नाते, हम अपने अपराधों और पापों में आत्मिक रूप से मृत थे (इफिसियों 2:1)—और अनंत दंड भोगने तथा हमेशा नरक में रहने के लिए निर्धारित थे। हालाँकि, परमेश्वर के एकमात्र पुत्र—यीशु मसीह, जो फसह का मेम्ना है—की क्रूस पर मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा, हमारे सभी पाप क्षमा कर दिए गए हैं, और हमें धर्मी ठहराया गया है (रोमियों 4:25)। हमारे उद्धार के कार्य में, परमेश्वर ने उन्हें बुलाया जिन्हें वह पहले से जानता था और जिनके लिए उसने पहले से योजना बनाई थी; जिन्हें उसने बुलाया, उन्हें उसने धर्मी भी ठहराया; और जिन्हें उसने धर्मी ठहराया, उन्हें उसने महिमान्वित भी किया (8:29–30)। यहाँ, "महिमान्वित होने" का अर्थ है उद्धार की पूर्णता। हालाँकि हमें अभी तक महिमान्वित नहीं किया गया है, फिर भी बाइबल भूतकाल का प्रयोग करके यह घोषणा करती है कि उसने *हमें* महिमान्वित *कर दिया है*। कृपया इफिसियों 2:4–6 देखें: “परन्तु हमारे प्रति अपने महान प्रेम के कारण, परमेश्वर, जो दया में धनी है, ने हमें मसीह के साथ जीवित किया, तब भी जब हम अपने अपराधों में मरे हुए थे—यह अनुग्रह से ही है कि आप बचाए गए हैं। और परमेश्वर ने हमें मसीह के साथ उठाया और हमें मसीह यीशु में स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बिठाया।” यहाँ, वाक्यांश “हमें स्वर्गीय स्थानों में बिठाया” भी एक पिछली घटना को संदर्भित करता है।

रोमियों 8:29 में, प्रेरित पौलुस “उन लोगों” की बात करते हैं जिन्हें “परमेश्वर ने पहले से जान लिया था।” यहाँ, “जानना” शब्द का एक विशेष महत्व है जो केवल बौद्धिक ज्ञान से कहीं आगे है। कृपया मत्ती 7:21–23 देखें: “हर कोई जो मुझसे कहता है, ‘हे प्रभु, हे प्रभु,’ स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा, बल्कि केवल वही प्रवेश करेगा जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पूरी करता है। उस दिन बहुत से लोग मुझसे कहेंगे, ‘हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हमने तेरे नाम से भविष्यवाणी नहीं की, और तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला, और तेरे नाम से बहुत से चमत्कार नहीं किए?’ तब मैं उनसे साफ-साफ कहूँगा, ‘मैं तुम्हें कभी नहीं जानता था। मुझसे दूर हो जाओ, हे कुकर्मियों!’” यद्यपि यीशु सर्वज्ञ हैं—सब कुछ जानने वाले—फिर भी उन्होंने झूठे भविष्यवक्ताओं (जिनका उल्लेख पद 15 में है)—उन लोगों को जो संतों को गुमराह करते और सताते हैं, तथा अधर्म का आचरण करते हैं—यह घोषित किया कि वह उन्हें “कभी नहीं जानते थे।” इस कथन का अर्थ यह है कि यीशु इन झूठे भविष्यवक्ताओं से प्रेम नहीं करते। परिणामस्वरूप, इन झूठे भविष्यवक्ताओं को यीशु से दूर फेंक दिया जाएगा (पद 23)। दूसरे शब्दों में, वे विनाश के लिए निर्धारित हैं और नरक में अनंत दंड भोगेंगे। कृपया आमोस 3:2 देखें: “पृथ्वी के समस्त कुलों

में से केवल तुम्हें ही मैंने जाना है; इसलिए मैं तुम्हारे समस्त पापों के लिए तुम्हें दंड दूँगा।" ...कि वह प्रतिफल देगा।" यह कथन कि परमेश्वर ने अनेक राष्ट्रों में से केवल इस्राएल के लोगों को ही "जाना" था, इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर ने केवल इस्राएल के लोगों से ही प्रेम किया। परमेश्वर ने घोषणा की कि वे उनके द्वारा किए गए हर पाप से पूरी तरह अवगत थे—मिस्र से उनके निकलने के समय से लेकर भविष्यवक्ता आमोस के युग तक—और वे उसी के अनुसार उन्हें "बदला देंगे" (अर्थात्, उन्हें दंड देंगे)। इसका तात्पर्य यह है कि जब वे पश्चाताप करने में असफल रहे, तो परमेश्वर ने उन्हें अनुशासित किया, ठीक *इसलिए* क्योंकि वे उनसे प्रेम करते थे (इब्रानियों 12:5–6)। जिन्हें परमेश्वर ने "पहले से जाना" (रोमियों 8:29) है, वे ही वे लोग हैं जिनसे परमेश्वर प्रेम करते हैं। परमेश्वर अपने बच्चों से प्रेम करते हैं। इसलिए, जब हम—परमेश्वर के बच्चों के रूप में—कमज़ोर पड़ते हैं और शैतान (जो प्रलोभन देने वाला है) के प्रलोभनों के आगे झुक जाते हैं, पाप करते हैं और उसके बाद पश्चाताप करने में असफल रहते हैं, तो परमेश्वर अपने प्रेम के कारण हमें अनुशासित करते हैं (इब्रानियों 12:5–6)।

हमें परमेश्वर द्वारा किए गए इस उद्धार की और भी गहरी समझ प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि पवित्र आत्मा—जो सत्य की आत्मा है—हमारा शिक्षक बने, और हमें सत्य के इस वचन के प्रत्येक पद का अर्थ समझने में समर्थ करे। विशेष रूप से, जैसे-जैसे हम परमेश्वर के उद्धार के स्वरूप की खोज करते हैं, हमें स्वयं "उद्धार के परमेश्वर" को जानना चाहिए, और साथ ही उनके द्वारा प्रदान किए गए उद्धार के प्रति अपनी समझ को भी गहरा करना चाहिए। विशेष रूप से, जैसे-जैसे हम इस ईश्वरीय उद्धार के व्यापक विस्तार को समझने लगते हैं, हमें व्यक्तिगत रूप से यह अनुभव करना चाहिए कि परमेश्वर का बचाने वाला प्रेम और अनुग्रह वास्तव में कितना विशाल, अद्‌भुत और महिमामय है। जब ऐसा होगा, तो उद्धार के इस धन्य समाचार के साथ हमारा जुड़ाव अब केवल धर्मशास्त्रों से इसे सीखने और सुनने तक ही सीमित नहीं रहेगा; बल्कि, हम स्वयं को विवश पाएँगे—कि हम इसके अलावा कुछ और कर ही न सकें—कि हम आगे बढ़ें और उद्धार के इस सुसमाचार की घोषणा करें। प्रभु हमारे द्वारा सुसमाचार की घोषणा को एक ऐसे साधन के रूप में उपयोग करें, जिसके द्वारा एक-एक आत्मा का उद्धार हो सके।

ईश्वर का उद्धार (2)

[रोमियों 8:29-30]

कृपया रोमियों 8:29 देखें: “क्योंकि जिन्हें ईश्वर ने पहले से जान लिया, उन्हें उसने पहले से ही ठहराया कि वे उसके पुत्र के स्वरूप के अनुसार हों, ताकि वह बहुत से भाइयों में पहिलौठा ठहरे” [(समकालीन कोरियाई बाइबल) “ईश्वर ने जिन्हें पहले से जान लिया, उन्हें उसने पहले से ही ठहराया कि वे उसके पुत्र के स्वरूप के समान हों, ताकि मसीह बहुत से संतों में पहिलौठा ठहरे”]। यहाँ, जहाँ कोरियाई बाइबल का अनुवाद पद 29 की शुरुआत इस वाक्यांश से करता है, “जिन्हें ईश्वर ने पहले से जान लिया...,” वहीं यदि हम मूल यूनानी पाठ को देखें, तो संयोजक शब्द “क्योंकि” (ὅτι) पद की बिल्कुल शुरुआत में आता है। यह संयोजक शब्द वर्तमान पद को पिछले पद—पद 28—से जोड़ने का काम करता है; मेरी राय में, यह पद 29 को एक ऐसे अंश के रूप में प्रस्तुत करता है जो पद 28 में दिए गए संदेश की अधिक विशिष्ट व्याख्या प्रदान करता है। दूसरे शब्दों में, प्रेरित पौलुस पद 29 में किस बात की अधिक विस्तार से व्याख्या कर रहा है? वह पद 28 में बताए गए सत्य को विस्तार से समझा रहा है: कि “हम जानते हैं कि सब बातों में ईश्वर उनके भले के लिए काम करता है जो उससे प्रेम करते हैं—जिन्हें उसके उद्देश्य के अनुसार बुलाया गया है।” इसे दूसरे तरीके से कहें तो, पद 29 में, पौलुस पद 28 के संदेश की अधिक विशिष्ट व्याख्या प्रदान करता है—एक ऐसा सत्य जिसे प्रेरित पौलुस और रोम की कलीसिया के विश्वासी पूर्ण निश्चितता के साथ मानते थे: कि जो लोग ईश्वर से प्रेम करते हैं—विशेष रूप से, जिन्हें ईश्वर ने “पहले” प्रेम किया (1 यूहन्ना 4:19) और जिन्हें उसकी इच्छा के अनुसार बुलाया गया है—उनके लिए सब बातें मिलकर ईश्वर के निश्चित उद्धार (परम “भलाई”) को लाने का काम करती हैं। प्रेरित पौलुस “उन लोगों” की बात करता है “जिन्हें ईश्वर ने पहले से जान लिया” (रोमियों 8:29); यहाँ, “उन लोगों जिन्हें ईश्वर ने पहले से जान लिया”

का तात्पर्य है “वे लोग जो ईश्वर से प्रेम करते हैं”—वे जिन्हें उसके उद्देश्य के अनुसार बुलाया गया है (पद 28)—विशेष रूप से उन लोगों को इंगित करता है जिन्हें ईश्वर ने पहले से ही प्रेम किया था (तुलना करें आमोस 3:2)। ईश्वर प्रेम है (1 यूहन्ना 4:8, 16)। प्रेम के ईश्वर के रूप में, वह अपनी बनाई हुई सभी चीज़ों से प्रेम करता है (एक सामान्य प्रेम)। हालाँकि, रोमियों 8:29 में, जिन लोगों से परमेश्वर ने पहले से प्रेम किया था, उनके बारे में इस सामान्य प्रेम के संदर्भ में नहीं, बल्कि एक विशेष प्रेम के संदर्भ में बात की गई है। परमेश्वर का यह विशेष प्रेम, उनके बचाने वाले प्रेम को दर्शाता है। इसके अलावा, परमेश्वर का यह विशेष, बचाने वाला प्रेम इतना गहरा है कि उन्होंने अपना एकमात्र पुत्र दे दिया—यह एक ऐसा प्रेम था जिसका उद्देश्य हमारे अनंत जीवन को सुरक्षित करना था (यूहन्ना 3:16)। इसके अतिरिक्त, परमेश्वर का यह बचाने वाला प्रेम, जो हमारी ओर निर्देशित है, एक ऐसा प्रेम है जो न केवल हमारे जन्म से पहले मौजूद था, बल्कि इससे भी पहले, जब उन्होंने सभी चीज़ों की सृष्टि की थी—अर्थात् "जगत की नींव पड़ने से पहले" (इफिसियों 1:4)। "जगत की नींव पड़ने से पहले" मौजूद यह ईश्वरीय प्रेम, परमेश्वर के चुने हुए प्रेम (elective love) का निर्माण करता है; रोमियों 8:30 में, प्रेरित पौलुस उन लोगों को, जिन्होंने यह चुना हुआ प्रेम प्राप्त किया है, "वे जिन्हें उसने पहले से ठहराया" [या, जैसा कि *मॉडर्न मैन बाइबल* में अनुवादित है, "वे जिन्हें परमेश्वर ने 'पहले से निर्धारित किया'"] कहकर संबोधित करते हैं। प्रेरित पौलुस कहते हैं कि परमेश्वर ने उन लोगों को, जिन्हें वह पहले से जानता था, "अपने पुत्र के स्वरूप के अनुसार होने के लिए" पहले से ठहराया (रोमियों 8:29)। यहाँ, "स्वरूप" (image) शब्द बाहरी रूप या समानता को दर्शाता है; मूल यूनानी भाषा में, इसका अर्थ किसी चीज़ के "समान होना," "सदृश होना," या "रूप धारण करना" होता है। मत्ती 22:15–21 में, हम पाते हैं कि फरीसी, यीशु को जाल में फँसाने की कोशिश में, अपने शिष्यों को—हेरोदियों के साथ—उनके पास यह प्रश्न पूछने के लिए भेजते हैं (पद 15–16): "..." “तो हमें बताओ, तुम्हारी क्या राय है? क्या कैसर को कर देना उचित है या नहीं?” (पद 17)। उन्हें परखने के उनके कपटपूर्ण इरादे को जानते हुए, यीशु ने उत्तर दिया, “मुझे वह सिक्का दिखाओ जिसका उपयोग कर चुकाने के लिए किया जाता है” (पद 18–19)। तब वे उनके पास एक दीनार लाए, और यीशु ने उनसे पूछा, “इस पर किसका स्वरूप और किसका लेख है?” (पद 19–20)। उनका उत्तर था, “कैसर का”—अर्थात्, उन्होंने इसे कैसर, जो रोमन सम्राट था, के स्वरूप (समानता) के रूप में पहचाना (पद 21)। रोमियों 8:29 में, यह वाक्यांश "उसके पुत्र की समानता" यीशु मसीह—परमेश्वर के पुत्र, जो एक ही समय में परमेश्वर और मनुष्य दोनों थे, और जो इस पृथ्वी पर तैंतीस

वर्षों तक कमज़ोरी की अवस्था में रहे—की छवि (समानता) को नहीं दर्शाता, बल्कि यह उस महिमामयी प्रभु की छवि को दर्शाता है, जो पुनरुत्थित होकर और स्वर्गारोहण करके, अब परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान हैं। संसार की सृष्टि से पहले परमेश्वर द्वारा हमारे प्रेमपूर्ण चुनाव और पूर्व-निर्धारण का उद्देश्य ["जिन्हें परमेश्वर ने पहले से जाना" (रोमियों 8:29); "उन्हें उसने पहले से ठहराया भी" (पद 29); तुलना करें इफिसियों 1:4–5] यह है कि हम उस प्रभु—परमेश्वर के पुत्र—की छवि के अनुरूप बन जाएँ, जो स्वर्गीय सिंहासन पर विराजमान हैं (रोमियों 8:29)। तो, हम ठीक किस समय प्रभु की छवि के अनुरूप बनते हैं? यह यीशु के दूसरे आगमन के समय होगा जब हम उस प्रभु की छवि के पूरी तरह अनुरूप बन जाएँगे, जो स्वर्गीय सिंहासन पर विराजमान हैं [(महिमामंडन) "उन्हें उसने महिमा भी दी" (पद 30)]। वर्तमान युग में, पवित्र आत्मा हमें प्रभु की उस छवि के अनुरूप आंशिक रूप से और धीरे-धीरे बनने में समर्थ बना रहा है (पवित्रीकरण)।

प्रेरित पौलुस कहते हैं, "क्योंकि जिन्हें परमेश्वर ने पहले से जान लिया, उन्हें उसने अपने पुत्र के स्वरूप में बदलने के लिए पहले से ही ठहरा दिया, ताकि वह बहुत से भाइयों में पहलौठा ठहरे" (रोमियों 8:29)। जिस उद्देश्य के लिए परमेश्वर—जो प्रेम स्वरूप है—ने संसार की नींव पड़ने से पहले ही हमसे प्रेम किया, हमें चुना और हमारे भाग्य को पहले से ही निर्धारित कर दिया, ताकि हम प्रभु के स्वरूप में बदल सकें (पद 29)—जो परमेश्वर का पुत्र है और स्वर्गीय सिंहासन पर विराजमान है—वह उद्देश्य ठीक यही है: कि यीशु मसीह, जो परमेश्वर का पुत्र है, बहुत से भाइयों में पहलौठा ठहरे (पद 29)। यहाँ, हमें "बहुत से भाइयों" वाक्यांश पर थोड़ा विचार करना चाहिए। जब यीशु पृथ्वी पर थे, तब उन्होंने अपने शिष्यों को कभी भी "भाई" कहकर संबोधित नहीं किया। हालाँकि, जब यीशु कब्र से जी उठे, तब उन्होंने उन्हें "भाई" कहकर संबोधित किया। कृपया बाइबल में यूहन्ना 20:17 देखें: "यीशु ने उससे कहा, 'मुझे मत छू, क्योंकि मैं अभी तक अपने पिता के पास ऊपर नहीं गया हूँ; परन्तु मेरे भाइयों के पास जा और उनसे कह, "मैं अपने पिता और तुम्हारे पिता के पास, और अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जा रहा हूँ।"'" "शिष्य" शब्द एक शिक्षक (गुरु) के संदर्भ में एक विद्यार्थी को दर्शाता है, जबकि "भाई" शब्द परिवार के किसी सदस्य को दर्शाता है। हालाँकि यीशु और हमारे—उनके शिष्यों—के बीच का संबंध, पृथ्वी पर रहते हुए, वर्तमान में शिष्य और भाई दोनों का है, परन्तु जब यीशु लौटकर आएंगे और हम पुनर्जीवित होकर स्वर्ग में प्रवेश करने के लिए रूपांतरित हो जाएंगे, तब वह संबंध पूर्ण भाईचारे का संबंध बन

जाएगा। दूसरे शब्दों में, यीशु मसीह—जो परमेश्वर का पुत्र है—और हमारे बीच का भाईचारे का संबंध, मृत्यु के बाद के जीवन में, स्वर्ग में (हमारे उद्धार की पूर्णता के साथ-साथ) पूरी तरह से साकार होगा। अंततः, प्रेरित पौलुस हमें यह सिखाते हैं कि हम सभी महिमान्वित होंगे (पद 30)—अर्थात्, हम स्वर्ग जाएंगे। एक और बिंदु जिस पर हमें विचार करना चाहिए, वह है "पहलौठा" शब्द (रोमियों 8:29)। यह शब्द "सर्वोच्चता" या "प्रधानता" को दर्शाता है। यीशु ही वह हैं, जो इस सर्वोच्च पद को धारण करते हैं। बाइबल, फिलिप्पियों 2:9–11 में, यीशु मसीह के बारे में बताती है कि वह सबसे महान हैं: "इसलिए परमेश्वर ने उन्हें सबसे ऊँचे स्थान पर पहुँचाया और उन्हें वह नाम दिया जो हर नाम से ऊपर है, ताकि यीशु के नाम पर स्वर्ग में, पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हर घुटना झुके, और हर ज़बान यह स्वीकार करे कि यीशु मसीह ही प्रभु हैं, परमेश्वर पिता की महिमा के लिए।" अपनी असीम कृपा से, परमेश्वर ने न केवल हमें मसीह के साथ जीवित किया—हम जो अपने अपराधों में मरे हुए थे [या, "पाप के कारण आत्मिक रूप से मरे हुए थे" (मॉडर्न पीपल्स बाइबल)]—बल्कि उन्होंने हमें उनके साथ उठाया और मसीह यीशु में स्वर्गीय लोकों में उनके साथ बिठाया (इफिसियों 2:5–6)। पवित्र शास्त्र यह घोषणा करते हैं कि, अभी भी, हम मसीह यीशु में स्वर्गीय लोकों में उनके साथ बैठे हुए हैं। इस प्रकार, हमारा उद्धार सुनिश्चित है।

परमेश्वर, जो प्रेम स्वरूप हैं, उन्होंने दुनिया की रचना से भी पहले से हमसे प्रेम किया है। इसलिए, परमेश्वर ने हमें पहले से ही चुन लिया और हमें उद्धार की कृपा प्रदान की। हम ऐसे लोग हैं जिन्होंने केवल परमेश्वर की कृपा से ही उद्धार प्राप्त किया है। परिणामस्वरूप, हमें परमेश्वर की उद्धार करने वाली कृपा के लिए धन्यवाद देना चाहिए और उनकी स्तुति तथा आराधना करनी चाहिए। इसके अलावा, अपने उद्धार के आश्वासन को मज़बूती से थामे हुए और विश्वास के साथ उस महिमा की प्रतीक्षा करते हुए जो हमें अभी मिलनी बाकी है, हमें आगे बढ़ते रहना चाहिए, और इस वर्तमान जीवन की हर परीक्षा और कष्ट पर विजय प्राप्त करनी चाहिए। विशेष रूप से, यीशु मसीह के सुसमाचार द्वारा सशक्त होकर, हमें परमेश्वर की उद्धार करने वाली कृपा को पूरी तरह से अपनाना चाहिए—जिससे हम यहीं पृथ्वी पर रहते हुए भी स्वर्गीय जीवन का एक पूर्वाभास प्राप्त कर सकें—और दूसरों तक यीशु मसीह के सुसमाचार को पहुँचाने के लिए पूरी लगन से प्रयास करना चाहिए।

परमेश्वर का बचाने वाला प्रेम (3)

[रोमियों 8:29–30]

बाइबल में रोमियों 8:29–30 के अनुसार, परमेश्वर के उद्धार के कार्य में पाँच चरण शामिल हैं: (1) परमेश्वर ने पहले से जाना, (2) परमेश्वर ने पहले से ठहराया, (3) परमेश्वर ने बुलाया, (4) परमेश्वर ने धर्मी ठहराया, और (5) परमेश्वर ने महिमा दी।

पहला चरण है "परमेश्वर ने पहले से जाना" (रोम 8:29)।

यहाँ, वाक्यांश "परमेश्वर ने पहले से जाना" (पद 29) का यह अर्थ नहीं है कि परमेश्वर को केवल पहले से यह पता था कि कोई व्यक्ति यीशु पर विश्वास करेगा; बल्कि, इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर ने उस व्यक्ति से पहले से ही प्रेम किया था (मत्ती 7:15ff.; आमोस 3:2; इब्रानियों 12:7)। संसार की नींव डालने से पहले ही परमेश्वर ने हमसे प्रेम किया। कृपया बाइबल में यूहन्ना 17:24 देखें: "हे पिता, मैं चाहता हूँ कि जिन्हें तू ने मुझे दिया है, वे भी जहाँ मैं हूँ, वहाँ मेरे साथ हों, ताकि वे मेरी उस महिमा को देखें जो तू ने मुझे दी है; क्योंकि संसार की नींव डालने से पहले ही तू ने मुझसे प्रेम किया।" परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र (यीशु), और परमेश्वर पवित्र आत्मा एक-दूसरे से प्रेम करते हैं। त्रिएक परमेश्वर—पवित्र त्रिएक—हमसे ठीक उसी प्रेम से प्रेम करता है, जिस प्रेम से त्रिएक के तीनों स्वरूप एक-दूसरे से प्रेम करते हैं।

दूसरा चरण है "परमेश्वर ने पहले से ठहराया" (रोम 8:29, 30)।

परमेश्वर ने हमें पहले से क्यों ठहराया? संसार की नींव डालने से पहले ही मसीह में हमें चुनने का परमेश्वर का क्या उद्देश्य था? (इफिसियों 1:4)। यह था "उसके पुत्र के स्वरूप के अनुसार होना" (रोम 8:29)। यहाँ,

"उसका पुत्र" परमेश्वर के एकलौते पुत्र, यीशु मसीह को संदर्भित करता है। इसके अलावा, "उसके पुत्र का स्वरूप" यीशु के उस कमज़ोर, देहधारी रूप को संदर्भित नहीं करता जो इस दीन-हीन संसार में आया था; बल्कि, यह प्रभु—परमेश्वर के पुत्र—के उस स्वरूप की बात करता है, जो अब परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठा है। पुनरुत्थित यीशु मसीह ही वह है जो परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठा है और हमारी ओर से मध्यस्थता करता है (पद 34)। परमेश्वर ने हमें पहले से ही चुन लिया था (रोमियों 8:29) ताकि हम उसके पुत्र—हमारे प्रभु यीशु मसीह—के स्वरूप के अनुरूप बन सकें। यीशु मसीह ने क्रूस पर हमारे उद्धार के लिए पूरी सज़ा भुगती, मृत्यु को गले लगाया, तीन दिन बाद कब्र से जी उठे, स्वर्गारोहण किया, और अब परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान हैं (इब्रानियों 1:3; 8:1; 10:12; 12:2), और हमारे लिए मध्यस्थता कर रहे हैं। तो फिर, हम परमेश्वर के पुत्र के स्वरूप के अनुरूप कब बनेंगे? ऐसा तब होगा जब अंतिम तुरही बजेगी (1 कुरिन्थियों 15:52)—यानी, जब प्रभु स्वयं एक ज़ोरदार आज्ञा के साथ, महादूत की आवाज़ के साथ, और परमेश्वर की तुरही की पुकार के साथ स्वर्ग से नीचे उतरेंगे (1 थिस्सलोनिकियों 4:16)। उस क्षण, जो लोग मसीह में मर चुके हैं, वे सबसे पहले जी उठेंगे (पद 16), और एक अविनाशी शरीर के साथ उठाए जाएँगे (1 कुरिन्थियों 15:52); उसके बाद, जो लोग उस समय भी जीवित होंगे (1 थिस्सलोनिकियों 4:17), वे तुरंत और अचानक रूपांतरित हो जाएँगे (1 कुरिन्थियों 15:51), और इस प्रकार वे पूरी तरह से परमेश्वर के पुत्र के स्वरूप के अनुरूप बन जाएँगे। तब, हम सब मिलकर बादलों में ऊपर उठा लिए जाएँगे ताकि हवा में प्रभु से मिल सकें, और इस प्रकार हम सदैव प्रभु के साथ रहेंगे (1 थिस्सलोनिकियों 4:17)। महिमामंडित होकर—जो हमारे उद्धार की पूर्णता और अनंत जीवन की प्राप्ति का प्रतीक है—हम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करेंगे: वह पवित्र नगर, नया यरूशलेम (पद 2), जो नए स्वर्ग और नई पृथ्वी के भीतर स्थित है (प्रकाशितवाक्य 21:1)। वहाँ, हम मेम्ने के विवाह भोज में शामिल होंगे (प्रकाशितवाक्य 19:9) और अनंत काल तक जीवित रहेंगे, तथा अनंत जीवन के परम-सुख का आनंद लेंगे।

याकूब पर विचार करें—एक ऐसा व्यक्ति जिसे परमेश्वर ने पहले से जान लिया था (प्यार किया था) और पहले से ही चुन लिया था (नियुक्त किया था)। बाइबल में रोमियों 9:11–13 पर नज़र डालें: “क्योंकि यद्यपि जुड़वाँ बच्चे अभी पैदा भी नहीं हुए थे और उन्होंने न तो कोई अच्छा काम किया था और न ही कोई बुरा—ताकि परमेश्वर का चुनाव के अनुसार उद्देश्य बना रहे, जो कामों के कारण नहीं, बल्कि उसके बुलावे के कारण है—उससे कहा

गया, ‘बड़ा भाई छोटे भाई की सेवा करेगा।’ जैसा कि लिखा है, ‘मैंने याकूब से प्यार किया, लेकिन एसाव से नफ़रत की।’” यहाँ, “जुड़वाँ बच्चे” एसाव और याकूब को दर्शाते हैं—वे बच्चे जिन्हें इसहाक की पत्नी, रिबका ने हमारे पूर्वज इसहाक से ही गर्भ में धारण किया था (पद 10)। इसहाक ने 40 साल की उम्र में रिबका से शादी की, और 20 साल तक वे निःसंतान रहे। परिणामस्वरूप, उसने 20 साल तक परमेश्वर से विनती की (उत्पत्ति 25:21); अंततः, 60 साल की उम्र में, उसे अपनी प्रार्थनाओं के उत्तर के रूप में जुड़वाँ बच्चे—एसाव (पद 25) और याकूब (पद 26)—मिले (पद 24)। एसाव और याकूब के पैदा होने से भी पहले, और उनके कोई भी अच्छा या बुरा काम करने से भी पहले (रोमियों 9:11), परमेश्वर ने याकूब से प्यार किया—विशेष रूप से एक उद्धार करने वाले प्रेम के साथ—लेकिन उसने एसाव से उस विशेष उद्धार करने वाले प्रेम के साथ प्यार नहीं किया (उसने उससे “नफ़रत” की) (पद 13)। रोमियों 9:13 में यह कथन प्रेरित पौलुस द्वारा मलाकी 1:2 से लिया गया एक उद्धरण है: “यहोवा कहता है, ‘मैंने तुमसे प्यार किया है।’ लेकिन तुम पूछते हो, ‘तूने हमसे कैसे प्यार किया है?’ ‘क्या एसाव याकूब का भाई नहीं है?’ यहोवा घोषणा करता है। ‘फिर भी मैंने याकूब से प्यार किया है।’” याकूब के बारे में परमेश्वर का पूर्वज्ञान (और प्रेम), और उसके बारे में उसका पूर्व-निर्धारण (और चुनाव), याकूब के पैदा होने से *पहले* ही हो गया था—वास्तव में, “उसके कोई भी अच्छे या बुरे काम करने से पहले।” इसका उद्देश्य यह दिखाना था कि चुनाव का मापदंड मानवीय कामों में (विशेष रूप से याकूब के कामों में) नहीं, बल्कि पूरी तरह से उसकी (परमेश्वर की) अपनी इच्छा में निहित है (रोमियों 9:11)। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर का इरादा था कि उसकी इच्छा—जो उसके चुने हुए लोगों के अनुसार काम करती है—केवल परमेश्वर के द्वारा ही स्थापित और कायम रहे; वही परमेश्वर जो बुलाता है (पद 11)। यहाँ, "स्थापित होना" वाक्यांश का अर्थ है "जारी रहना, बना रहना, या अटल रहना।" उद्धार के लिए परमेश्वर की इच्छा—उसकी सबसे बड़ी चाहत और मकसद—यह नहीं है कि उद्धार इंसानी कोशिशों, काबिलियत, या अच्छे कामों से मिले; बल्कि, उसकी इच्छा यह है कि उद्धार केवल उन्हीं लोगों को मिले जिन्हें परमेश्वर ने पहले से प्यार किया है, पहले से ठहराया है (चुना है), बुलाया है, धर्मी ठहराया है, और महिमा दी है। यही परमेश्वर की इच्छा है, और ठीक यही ईश्वरीय इच्छा अटल और हमेशा बनी रहने वाली है। क्योंकि परमेश्वर इस तरह से उद्धार करता है, इसलिए उसका उद्धार बिल्कुल पक्का है। इसलिए,

हम न केवल परमेश्वर के उद्धार की निश्चितता पर विश्वास करने के लिए मजबूर हैं, बल्कि हमें उस उद्धार के बारे में खुद भी एक पक्का भरोसा होना चाहिए।

उद्धार के लिए परमेश्वर की इच्छा निश्चित रूप से पूरी होगी! परमेश्वर, जो प्रेम है, वह उद्धार का परमेश्वर भी है। हमसे प्रेम करके—और सच तो यह है कि दुनिया की नींव रखे जाने *से पहले* ही हमसे प्रेम करके—परमेश्वर ने हमें पहले से ठहराया (चुना) ताकि हम उसके इकलौते बेटे, यीशु के स्वरूप में ढल सकें, जो अब परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठा है (रोमियों 8:29)। इस प्रकार, जिन्हें परमेश्वर ने पहले से ठहराया, उन्हें उसने बुलाया भी; जिन्हें उसने बुलाया, उन्हें उसने धर्मी भी ठहराया; और जिन्हें उसने धर्मी ठहराया, उन्हें उसने महिमा भी दी (पद 30)। हम प्रभु द्वारा सिखाई गई प्रार्थना करते हैं, और पिता परमेश्वर से विनती करते हैं कि उद्धार के लिए उसकी इच्छा—जो स्वर्ग में पहले ही पूरी हो चुकी है—वैसे ही पृथ्वी पर भी पूरी हो (मत्ती 6:10)। दूसरे शब्दों में, उद्धार के लिए पिता परमेश्वर की इच्छा स्वर्ग में *पहले ही* पूरी हो चुकी है, फिर भी इस पृथ्वी पर, यह *अभी तक* पूरी तरह से पूरी नहीं हुई है। इस पृथ्वी पर, यह तब पूरी होगी जब हमारा प्रभु खुद "स्वर्ग से एक ज़ोरदार हुक्म के साथ, महादूत की आवाज़ के साथ और परमेश्वर की तुरही की आवाज़ के साथ नीचे आएगा" (1 थिस्सलोनिकियों 4:16)। उस समय, हमें महिमा मिलेगी। हम महिमा को प्राप्त करेंगे—यानी, अनंत जीवन को। मुक्ति के इस भरोसे को मज़बूती से थामे हुए, हम पूरी निष्ठा और लगन के साथ उस कार्य को पूरा करेंगे जो प्रभु ने हममें से हर एक को सौंपा है; और फिर, जब प्रभु हमें अपने स्वर्गीय राज्य में बुलाएँगे, तो हम उनकी बाहों में समा जाएँगे और स्वर्ग में अनंत जीवन के परम-सुख का आनंद लेंगे।

“परमेश्वर का उद्धार” (4)

[रोमियों 8:29–30]

कृपया बाइबल में रोमियों 8:29–30 खोलें: “क्योंकि जिन्हें उसने पहले से जान लिया था, उन्हें उसने पहले से ही ठहराया भी कि वे उसके पुत्र के स्वरूप में बदल जाएँ, ताकि वह बहुत से भाइयों में पहिलौठा ठहरे। और जिन्हें उसने पहले से ठहराया, उन्हें उसने बुलाया भी; और जिन्हें उसने बुलाया, उन्हें उसने धर्मी भी ठहराया; और जिन्हें उसने धर्मी ठहराया, उन्हें उसने महिमा भी दी।”

आइए, इस अनुच्छेद में सिखाए गए उद्धार के पाँच चरणों की एक बार फिर समीक्षा करें: (1) पहला चरण: परमेश्वर उन लोगों का उद्धार करता है जिन्हें उसने पहले से जान लिया था—यानी, जिन्हें उसने प्रेम किया था। (2) दूसरा चरण: परमेश्वर उन लोगों का उद्धार करता है जिन्हें उसने पहले से ठहराया था—यानी, जिन्हें उसने जगत की नींव पड़ने से पहले ही चुन लिया था। (3) तीसरा चरण: परमेश्वर उन लोगों का उद्धार करता है जिन्हें उसने बुलाया था—यानी, जिन्हें उसने प्रभावी रूप से (effectually) बुलाया था। (4) चौथा चरण: परमेश्वर उन लोगों का उद्धार करता है जिन्हें उसने धर्मी ठहराया था। (5) पाँचवाँ चरण: परमेश्वर उन लोगों का उद्धार करता है जिन्हें उसने महिमा दी थी। आज, हम तीसरे चरण पर विचार करना चाहेंगे: परमेश्वर उन लोगों का उद्धार करता है जिन्हें उसने बुलाया था—विशेष रूप से, उन लोगों का जिन्हें उसने प्रभावी रूप से बुलाया था।

जब हम ‘वेस्टमिंस्टर कन्फेशन ऑफ़ फेथ’ [अध्याय 10: प्रभावी बुलाहट] की जाँच करते हैं, तो कई महत्वपूर्ण मुख्य शिक्षाएँ हैं जिन पर हमें विचार करने की आवश्यकता है: (1) “वे सभी लोग जिन्हें परमेश्वर ने जीवन के लिए पहले से ठहराया है—और केवल वे ही—उसे अपने नियुक्त और स्वीकृत समय पर, प्रभावी रूप से बुलाना

(Rom 8:30, 11:7; Eph 1:10, 11) प्रसन्न करता है।" परमेश्वर ने उन लोगों को पहले से ठहराया जिन्हें उसने पहले से जान लिया था—यानी, जिन्हें उसने पहले से प्रेम किया था—कि वे उसके पुत्र के स्वरूप में बदल जाएँ (Rom 8:29–30); यहाँ, "पहले से ठहराया" (predestined) वाक्यांश का अर्थ है कि उसने उन्हें जगत की नींव पड़ने से पहले (या सभी युगों से पहले) ही चुन लिया था। इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर इन व्यक्तियों को उस समय प्रभावी रूप से बुलाता है जो उसने स्वयं नियुक्त किया है। (2) यह बुलावा उसके वचन और पवित्र आत्मा के द्वारा पूरा होता है (2 थिस्स 2:13; 2 कुरि 3:3, 6), जिसका उद्देश्य उन्हें पाप और मृत्यु की उस स्थिति से मुक्त करना है जिसमें वे जन्म से ही रहे हैं, और उन्हें यीशु मसीह में पाए जाने वाले अनुग्रह और उद्धार तक पहुँचाना है (2 तीमु 1:9–10; रोम 8:2; इफि 2:1–5)।

तो फिर, परमेश्वर किस माध्यम से प्रभावी रूप से बुलाता है? यह ठीक "उसके वचन और पवित्र आत्मा के द्वारा" होता है। जिन लोगों को उसने पहले से ही प्रेम किया है और उद्धार के लिए पहले से ही चुन लिया है, उन्हें प्रभावी रूप से बुलाते समय, परमेश्वर उन्हें अपने वचन—अर्थात्, यीशु मसीह के सुसमाचार—के द्वारा बुलाता है। इसके अलावा, परमेश्वर पवित्र आत्मा के द्वारा बुलाता है; पवित्र आत्मा उन्हें वचन (सुसमाचार) सुनने, उसे समझने, उसे ग्रहण करने और यीशु मसीह पर अपना विश्वास रखने में समर्थ बनाता है। पवित्र आत्मा के प्रबुद्ध करने वाले कार्य के संबंध में बाइबल के कुछ अंश यहाँ दिए गए हैं: (प्रेरितों के काम 26:18) "कि तुम उनकी आँखें खोल दो, ताकि वे अंधकार से ज्योति की ओर और शैतान के अधिकार से परमेश्वर की ओर फिरें, और पापों की क्षमा तथा उन लोगों के बीच स्थान पाएँ जो मुझ पर विश्वास करने के द्वारा पवित्र किए गए हैं," (1 कुरिंथियों 2:10, 12) "परन्तु परमेश्वर ने इसे आत्मा के द्वारा हम पर प्रकट किया है। क्योंकि आत्मा सब बातों को, हाँ, परमेश्वर की गहरी बातों को भी खोजता है... अब हमने संसार की आत्मा नहीं, परन्तु वह आत्मा पाया है जो परमेश्वर की ओर से है, ताकि हम उन बातों को जान सकें जो परमेश्वर ने हमें मुफ़्त में दी हैं," (इफिसियों 1:17-18) "कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर, जो महिमा का पिता है, तुम्हें उसके ज्ञान में बुद्धि और प्रकाशन का आत्मा दे; और तुम्हारी समझ की आँखें ज्योतिर्मय हों; ताकि तुम जान सको कि उसके बुलावे की आशा क्या है, और पवित्र लोगों में उसके मीरास की महिमा का धन क्या है।" यहाँ बाइबल के कुछ अंश दिए गए हैं, जो बताते हैं कि पवित्र आत्मा हमारे दिलों को कैसे नरम करती है, ताकि हम परमेश्वर के वचन (सुसमाचार) को ग्रहण कर सकें: (यहेजकेल 11:19) "मैं उन्हें एक एकाग्र मन दूँगा और उनके भीतर एक नई आत्मा डालूँगा; मैं उनसे उनका पत्थर का हृदय निकाल

लूँगा और उन्हें मांस का हृदय दूँगा," (यहेजकेल 36:26-27) "मैं तुम्हें एक नया हृदय दूँगा और तुम्हारे भीतर एक नई आत्मा डालूँगा; मैं तुमसे तुम्हारा पत्थर का हृदय निकाल लूँगा और तुम्हें मांस का हृदय दूँगा। और मैं अपनी आत्मा तुममें डालूँगा और तुम्हें अपने आदेशों का पालन करने और मेरे नियमों को सावधानी से मानने के लिए प्रेरित करूँगा," (व्यवस्थाविवरण 30:6) "तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे हृदयों और तुम्हारे वंशजों के हृदयों का खतना करेगा, ताकि तुम अपने पूरे हृदय और अपनी पूरी आत्मा से उससे प्रेम कर सको, और जीवित रह सको," (फिलिप्पियों 2:13) "क्योंकि परमेश्वर ही है जो तुममें कार्य करता है, ताकि तुम उसकी भली इच्छा को पूरा करने के लिए चाहो और कार्य करो।" पवित्र आत्मा हमारे भीतर कार्य करती है, ताकि हम परमेश्वर के वचन (सुसमाचार) को सुन सकें, उसे समझ सकें, उसे ग्रहण कर सकें, और यीशु मसीह पर विश्वास कर सकें।

तो फिर, परमेश्वर अपने वचन (सुसमाचार) और पवित्र आत्मा के द्वारा हमें किस अवस्था से बुलाते हैं? वह हमें "पाप और मृत्यु की उस अवस्था" से बुलाते हैं, "जिसमें हम जन्म से ही मौजूद थे।" "वह पाप जिसमें हम जन्म से ही मौजूद थे," इस सच्चाई की ओर इशारा करता है कि "मैं अधर्म में जन्मा, और पाप ही में मेरी माता ने मुझे गर्भ में धारण किया" [(मॉडर्न पीपल्स बाइबल) "मैं जन्म लेते ही एक पापी था, और जिस पल मेरी माँ ने मुझे गर्भ में धारण किया, उसी पल से मेरा स्वभाव पापी था"] (भजन संहिता 51:5)। यह कहना कि हम "मृत्यु की अवस्था" में थे, उस स्थिति को दर्शाता है जिसमें हम आज्ञा-उल्लंघन और पाप के कारण आत्मिक रूप से मृत थे (इफिसियों 2:1, मॉडर्न पीपल्स बाइबल)। बाइबल में इफिसियों 2:1–3 पर ध्यान दें: "उसने तुम्हें भी जीवित किया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मृत थे; जिनमें तुम पहले इस संसार की रीति के अनुसार, और आकाश के अधिकार के हाकिम (हवा के राज्य के शासक) के अनुसार चलते थे, अर्थात् उस आत्मा के अनुसार जो अब भी आज्ञा न माननेवालों में कार्य करता है; जिनके बीच हम सब भी पहले अपने शरीर की अभिलाषाओं में दिन बिताते थे, और शरीर तथा मन की इच्छाओं को पूरा करते थे, और स्वभाव ही से अन्य लोगों के समान क्रोध की सन्तान थे।" उस समय, हम इस संसार के तरीकों और हवा के राज्य के शासक का अनुसरण करते थे; इसके अलावा, हम अपने शरीर की अभिलाषाओं के अनुसार जीते थे, और वही करते थे जिसकी हमारे शरीर और मन को चाह होती थी। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर ने हमें ठीक उसी समय बुलाया, जब हम स्वभाव ही से क्रोध की सन्तान थे। उस क्षण, पवित्र आत्मा ने हमें प्रेरित और प्रभावित किया, और हममें से जो लोग अपने अपराधों और पापों में मृत थे, उन्हें जीवन प्रदान किया (पुनर्जन्म)—[(तीतुस 3:5) "उसने हमें बचाया—हमारे द्वारा किए गए किसी भी धार्मिक कार्य के कारण नहीं, बल्कि अपनी दया के अनुसार—पवित्र आत्मा द्वारा किए गए पुनर्जन्म

और नवीनीकरण के स्नान के द्वारा"]—हमें पश्चाताप की ओर ले जाते हुए, यीशु पर विश्वास करने में सक्षम बनाते हुए, हमें धर्मी ठहराते हुए, और हमें परमेश्वर की सन्तान के रूप में अपनाते हुए; ताकि हम उसे "अब्बा, पिता" कहकर पुकार सकें (रोमियों 8:15)। इसके अतिरिक्त, पवित्र आत्मा वर्तमान में हमें पवित्र कर रहा है (पवित्रीकरण), और हमें यीशु के स्वरूप में बढ़ने में सक्षम बना रहा है। फिर, प्रभु के आगमन (दूसरा आगमन) के समय, वह हमें पुनर्जीवित करेगा या बदल देगा, और हमें नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में ले जाएगा ताकि हम अनंत जीवन के आशीर्वाद का आनंद ले सकें। यह सब हमारे महिमामंडन में परिणत होता है, जो परमेश्वर की प्रभावी (या फलदायी) बुलाहट के द्वारा संभव होता है (पद 30)।

परमेश्वर की बुलाहट के संबंध में इन बाइबिल वचनों पर विचार करें: कृपया 2 थिस्सलोनिकियों 2:13–14 खोलें: “परन्तु हे भाइयों, तुम जो प्रभु के प्यारे हो, हमें तुम्हारे विषय में सदा परमेश्वर का धन्यवाद करना उचित है; क्योंकि परमेश्वर ने आदि से ही तुम्हें पवित्र करने वाले आत्मा के द्वारा और सत्य पर विश्वास करने के द्वारा उद्धार के लिये चुन लिया। उसने तुम्हें हमारे सुसमाचार के द्वारा इसी के लिये बुलाया, कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा के भागी हो सको।” परमेश्वर ने हमसे प्रेम किया और हमें चुना। इसके अलावा, परमेश्वर ने सुसमाचार के द्वारा हमें बुलाया। उस क्षण, पवित्र आत्मा ने हमारे भीतर कार्य किया, और हमें यीशु मसीह पर—जो कि सत्य है—विश्वास करके उद्धार प्राप्त करने में समर्थ बनाया। कृपया 2 तीमुथियुस 1:9–10 देखें: “उसी ने हमारा उद्धार किया, और पवित्र बुलाहट से बुलाया—यह हमारे कामों के अनुसार नहीं, परन्तु अपनी ही इच्छा और उस अनुग्रह के अनुसार हुआ, जो आदि काल से मसीह यीशु में हमारे लिये ठहराया गया था। परन्तु अब हमारे उद्धारकर्ता मसीह यीशु के प्रगट होने के द्वारा वह भेद खोल दिया गया है; जिसने मृत्यु को मिटा डाला, और सुसमाचार के द्वारा जीवन और अमरता को प्रकाश में ला दिया है।” परमेश्वर का हमें एक पवित्र बुलाहट के लिए बुलाने और हमारा उद्धार करने का कार्य किसी भी तरह से हमारे कर्मों (या अच्छे कामों) पर आधारित नहीं था। बल्कि, उसने पूरी तरह से अपने स्वयं के उद्धार के उद्देश्य और उस अनुग्रह के अनुसार कार्य किया जो उसने समय की शुरुआत से पहले ही मसीह यीशु में हम पर प्रदान किया था। हमारे उद्धारकर्ता, मसीह यीशु ने मृत्यु को समाप्त कर दिया और, सुसमाचार (Good News) के द्वारा, अनंत जीवन का मार्ग प्रकट किया—एक ऐसा जीवन जो कभी समाप्त नहीं होता (पद 10)। कृपया इफिसियों 2:4–5 देखें: “परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है, अपने उस बड़े प्रेम के कारण, जिससे उसने हमसे प्रेम किया, जब हम अपने अपराधों के कारण मरे हुए थे,

तो हमें मसीह के साथ जिलाया—अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है।" यह पूरी तरह से परमेश्वर के महान प्रेम के कारण है कि हम—जो कभी अपने अपराधों और पापों में मरे हुए थे (पद 1)—मसीह के साथ जीवित किए गए (पुनर्जन्म पाए) और पूरी तरह से परमेश्वर के अनुग्रह से उद्धार प्राप्त किया। कृपया यूहन्ना 6:37 देखें: "जितने लोग पिता मुझे देता है, वे सब मेरे पास आएंगे, और जो कोई मेरे पास आएगा, उसे मैं कभी नहीं निकालूंगा।" जिन्हें परमेश्वर ने पहले से जाना (प्रेम किया), जिन्हें उसने पहले से ठहराया, और जिन्हें उसने बुलाया—वे सब यीशु के पास आएंगे। बाइबल में यूहन्ना 5:25 देखें: "मैं तुम से सच सच कहता हूं, वह समय आता है, और अब भी है, जब मरे हुए परमेश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे, और जो सुनेंगे, वे जीवित होंगे।" हम—जो अपने अपराधों और पापों में मरे हुए थे, आत्मिक रूप से मृत थे, और अनिवार्य रूप से अनंत मृत्यु के लिए ठहराए गए थे—तब जीवित होंगे, जब परमेश्वर के प्रभावशाली बुलावे के द्वारा, हम परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह की आवाज़ सुनेंगे। पवित्र आत्मा हमारा पुनर्जन्म (नया जन्म) कराता है, हमें पश्चाताप की ओर ले जाता है, हमें यीशु मसीह पर विश्वास करने में समर्थ बनाता है, और हमें परमेश्वर के वचन का पालन करने की शक्ति देता है; इस प्रकार, जैसे-जैसे हम आत्मिक रूप से बढ़ते हैं, हम धीरे-धीरे यीशु के स्वरूप के अनुरूप बनते जाते हैं। फिर, यीशु के दूसरे आगमन के समय, हम पुनर्जीवित होंगे—या अचानक रूपांतरित हो जाएंगे—और स्वर्ग में प्रवेश करके अनंत जीवन के आनंद का अनुभव करेंगे।

परमेश्वर से यह प्रभावशाली बुलावा पाकर और उद्धार प्राप्त करके, अब हमें पूरी लगन से प्रभु के कार्य के लिए स्वयं को समर्पित कर देना चाहिए। पवित्र आत्मा के कार्य के लिए प्रार्थना करते हुए, हमें परमेश्वर के वचन—यीशु मसीह के सुसमाचार—की घोषणा करनी चाहिए। किसी भी विपरीत परिस्थिति या क्लेश के बीच, हमें पवित्र आत्मा के आनंद के साथ वचन को ग्रहण करना चाहिए और प्रभु के अनुकरणकर्ता बनने का प्रयास करना चाहिए (1 थिस्सलोनिकियों 1:6)। जब हम परमेश्वर के वचन को ग्रहण करते हैं, तो हमें इसे केवल मनुष्यों के वचन के रूप में स्वीकार नहीं करना चाहिए, बल्कि जैसा यह वास्तव में है—परमेश्वर के वचन के रूप में—स्वीकार करना चाहिए (1 थिस्सलोनिकियों 2:13)। यही वचन हम विश्वास करने वालों में सक्रिय रूप से कार्य भी कर रहा है (पद 13)। हमें परमेश्वर के इस वचन का पालन करना चाहिए, और एक पवित्र जीवन जीना चाहिए—एक ऐसा जीवन जो यीशु की समानता को दर्शाता हो [एक ऐसा जीवन जो सुसमाचार के योग्य हो (फिलिप्पियों

1:27)]—और ऐसे जीवन के संदर्भ में ही, हमें यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करना चाहिए। चूँकि अभी भी ऐसी अन्य भेड़ें हैं जो अभी तक यीशु मसीह के झुंड में शामिल नहीं हुई हैं, इसलिए हमें उनके सुसमाचार का प्रचार करना चाहिए ताकि पवित्र आत्मा उन भेड़ों को—जिन्हें परमेश्वर ने पहले से ही प्रेम किया है और चुना है—यीशु की आवाज़ सुनने और एक ही चरवाहे के अधीन एक ही झुंड बनने में समर्थ कर सके (यूहन्ना 10:16)। इस प्रकार, जब यीशु लौटेंगे (अपने दूसरे आगमन पर), तो हम सभी महिमान्वित होंगे, स्वर्ग में प्रवेश करेंगे, और मिलकर अनंत जीवन के आशीष का आनंद लेंगे।

“परमेश्वर का उद्धार” (5)

[रोमियों 8:29-30]

कृपया बाइबल में रोमियों 8:29-30 देखें: “क्योंकि जिन्हें उसने पहले से जान लिया, उन्हें उसने पहले से ही ठहराया कि वे उसके पुत्र के स्वरूप में बदल जाएँ, ताकि वह बहुत से भाइयों में पहिलौठा ठहरे; और जिन्हें उसने पहले से ठहराया, उन्हें उसने बुलाया भी; और जिन्हें उसने बुलाया, उन्हें उसने धर्मी भी ठहराया; और जिन्हें उसने धर्मी ठहराया, उन्हें उसने महिमा भी दी।”

आज, मैं उद्धार के पाँच चरणों में से चौथे चरण पर विचार करना चाहूँगा: परमेश्वर द्वारा उन लोगों का उद्धार, जिन्हें उसने धर्मी ठहराया है [“उन्हें उसने धर्मी भी ठहराया” (पद 30)]। यह वेस्टमिंस्टर शॉर्टर कैटेकिज़्म (Westminster Shorter Catechism) के प्रश्न 33 के अनुरूप है: “धर्मी ठहराया जाना क्या है?” इसका “उत्तर” यह है: “धर्मी ठहराया जाना परमेश्वर के अनुग्रह का एक कार्य है, जिसमें वह हमारे सभी पापों को क्षमा कर देता है, और अपनी दृष्टि में हमें धर्मी के रूप में स्वीकार करता है; यह केवल मसीह की उस धार्मिकता के कारण होता है जो हमें प्रदान की जाती है, और जिसे केवल विश्वास द्वारा ग्रहण किया जाता है।” धर्मी ठहराया जाना परमेश्वर के अनुग्रह का एक कार्य है। उदाहरण के तौर पर, उद्धार स्वयं परमेश्वर के अनुग्रह का एक कार्य है—कुछ ऐसा जो वह हमें बिना किसी कीमत के (एक मुफ़्त उपहार के रूप में) प्रदान करता है। कृपया बाइबल में इफिसियों 2:5 देखें: “जब हम अपने अपराधों के कारण मरे हुए थे, तब भी [उसने] हमें मसीह के साथ जीवित किया (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है)।” परमेश्वर द्वारा हमारे सभी पापों को क्षमा करना भी उसके अनुग्रह का एक कार्य है। हम सभी पापी हैं, और हम सभी पाप के बोझ को ढोते हैं। कृपया बाइबल में रोमियों 3:23 देखें: “क्योंकि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।” इसके अलावा, परमेश्वर द्वारा अपनी दृष्टि में हमें धर्मी के रूप में स्वीकार करना भी उसके अनुग्रह का एक कार्य है। ऐसा इसलिए है क्योंकि यीशु मसीह की

धार्मिकता हमें प्रदान की जाती है, जिसके कारण हमें धर्मी (न्यायसंगत) माना जाता है। यह केवल यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से प्राप्त होता है (केवल विश्वास द्वारा)। ईसाई धर्म में, "दोषारोपण" (imputation) तीन प्रकार के होते हैं:

(1) आदम के पाप का दोषारोपण:

वेस्टमिंस्टर कन्फेशन ऑफ़ फेथ (अध्याय 6, अनुभाग 3) कहता है: "चूँकि वे (आदम और हव्वा) समस्त मानवजाति की जड़ थे, इसलिए इस पाप का दोष उन पर लगाया गया, और पाप के कारण होने वाली मृत्यु, तथा भ्रष्ट स्वभाव, साधारण जन्म प्रक्रिया द्वारा उनसे उत्पन्न होने वाली उनकी समस्त संतान तक पहुँचा।" क्योंकि पहले आदम ने वाचा (Covenant) के अंतर्गत परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करने का पाप किया था, इसलिए वह पाप हम सभी पर आरोपित किया गया। रोमियों 5:12 देखें: "इसलिए, जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, क्योंकि सब ने पाप किया।" एक मनुष्य—आदम—के द्वारा पाप मानव जगत में आया, और उस पाप के द्वारा मृत्यु आई। सभी लोगों ने पाप किया है, और मृत्यु हर किसी तक पहुँच गई है। इस प्रकार, पहले आदम का मूल पाप सभी लोगों पर आरोपित किया गया। परिणामस्वरूप, हर कोई पाप से दूषित और भ्रष्ट हो गया है (पूर्ण भ्रष्टता/Total Depravity)। भजन संहिता 51:5 (मॉडर्न पीपल्स बाइबिल) देखें: "मैं अपने जन्म के क्षण से ही पापी रहा हूँ; जिस क्षण मेरी माँ ने मुझे गर्भ में धारण किया, उसी क्षण से मेरा स्वभाव पापमय था।"

(2) परमेश्वर ने हमारे सभी मानवीय पापों का दोषारोपण निष्पाप यीशु मसीह पर किया।

यशायाह 53:6 देखें: "...यहोवा ने हम सब का अधर्म उसी पर लाद दिया।" यहाँ, "उसी पर लाद दिया" वाक्यांश का अर्थ यह है कि परमेश्वर ने हमारे पापों का दोषारोपण "उसी पर" किया। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर ने हमारे समस्त अधर्म को निष्पाप यीशु मसीह पर लाद दिया—या उन पर आरोपित कर दिया। कृपया बाइबिल में 1 पतरस 2:24 देखें: "वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह में क्रूस पर ले गया, जिससे हम पापों के लिए मरकर, धार्मिकता के लिए जीवित रहें—जिसके कोड़े खाने से तुम चंगे हो गए।" यीशु मसीह, जो परमेश्वर का मेम्ना है, उसने हमारे समस्त पापों को अपने ऊपर ले लिया और क्रूस पर अपने प्राण दे दिए। इसका उद्देश्य हमें धार्मिकता

के लिए जीने में समर्थ बनाना था। कृपया बाइबल में 2 कुरिन्थियों 5:21 देखें: “क्योंकि उसने उसे, जो पाप से अनजान था, हमारे लिए पाप ठहराया, ताकि हम उसमें परमेश्वर की धार्मिकता बन सकें” [(मॉडर्न पीपल्स बाइबल) “परमेश्वर ने हमारे पापों को मसीह पर डाल दिया—जो पाप से अनजान था—ताकि मसीह के द्वारा हमें परमेश्वर के सामने धर्मी माना जा सके”]। परमेश्वर का उद्देश्य “उसे [यीशु मसीह को] हमारे लिए पाप ठहराना”—भले ही वह पाप से अनजान था, और न ही उसने कभी इसका अनुभव किया था—यह था “कि हम उसमें परमेश्वर की धार्मिकता बन सकें।” परमेश्वर पिता ने हमारे सभी पापों को यीशु मसीह पर स्थानांतरित (आरोपित) कर दिया, जिसके कारण उसे हमारी जगह क्रूस पर मरना पड़ा। कृपया बाइबल में रोमियों 4:25 देखें: “यीशु हमारे अपराधों के कारण हमारे हवाले किया गया, और हमारे धर्मी ठहराए जाने के कारण जिलाया गया।”

(3) मसीह की धार्मिकता का आरोपण:

वेस्टमिंस्टर कन्फेशन ऑफ़ फेथ (अध्याय 11, अनुच्छेद 1): “जिन लोगों को परमेश्वर प्रभावी रूप से बुलाता है, उन्हें वह मुफ़्त में धर्मी भी ठहराता है; यह उनमें धार्मिकता भर देने से नहीं होता, बल्कि उनके पापों को क्षमा करने से, और उनके व्यक्तियों को धर्मी मानकर और स्वीकार करके होता है; यह उनमें किए गए किसी काम के लिए, या उनके द्वारा किए गए किसी काम के लिए नहीं, बल्कि केवल मसीह के खातिर होता है; न ही यह विश्वास को ही, या विश्वास करने के कार्य को, या किसी अन्य सुसमाचार-संबंधी आज्ञाकारिता को, उनकी धार्मिकता के रूप में उन पर आरोपित करने से होता है; बल्कि यह मसीह की आज्ञाकारिता और संतुष्टि को उन पर आरोपित करने से होता है, जबकि वे विश्वास के द्वारा उसे और उसकी धार्मिकता को ग्रहण करते हैं और उस पर भरोसा रखते हैं; यह विश्वास उन्हें अपनी ओर से प्राप्त नहीं होता, बल्कि यह परमेश्वर का वरदान है।” बाइबल देखें, रोमियों 3:21–22: “पर अब व्यवस्था के बिना परमेश्वर की वह धार्मिकता प्रगट हुई है, जिसकी गवाही व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता देते हैं। यह परमेश्वर की धार्मिकता यीशु मसीह पर विश्वास करने से सब विश्वास करने वालों के लिये है; क्योंकि कोई भेद नहीं” [(समकालीन अंग्रेज़ी संस्करण) “तथापि, अब परमेश्वर द्वारा धर्मी माने जाने का एक मार्ग खुल गया है, जो व्यवस्था से अलग है। यह वह बात है जिसकी गवाही व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता देते हैं। जो कोई भी यीशु मसीह में विश्वास करता है, उसे परमेश्वर बिना किसी भेदभाव के

धर्मी मानता है"]। बाइबल देखें, गलतियों 2:16: "हम जानते हैं कि मनुष्य व्यवस्था के कामों से नहीं, पर यीशु मसीह पर विश्वास करने से धर्मी ठहरता है; इसलिये हम ने भी मसीह यीशु पर विश्वास किया है कि हम व्यवस्था के कामों से नहीं, पर मसीह पर विश्वास करने से धर्मी ठहरें; क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई भी प्राणी धर्मी न ठहरेगा।" कोई भी व्यक्ति व्यवस्था के कामों से धर्मी नहीं ठहर सकता। केवल यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा ही हम धर्मी ठहरते हैं। यीशु मसीह ने परमेश्वर की इच्छा—उसके वचन—का पूरी तरह पालन किया, यहाँ तक कि क्रूस पर मृत्यु को भी स्वीकार कर लिया। हम, जो परमेश्वर के अनुग्रह से इस यीशु मसीह में विश्वास करते हैं, परमेश्वर द्वारा धर्मी घोषित किए जाते हैं, क्योंकि यीशु मसीह की धार्मिकता हम पर आरोपित की जाती है। कृपया रोमियों 5:18 देखें: "इसलिये जैसा एक अपराध के कारण सब मनुष्यों के लिये दण्ड की आज्ञा हुई, वैसा ही एक धार्मिक काम के कारण सब मनुष्यों के लिये जीवन दिलाने वाला धर्मी ठहरना हुआ।" [(समकालीन अंग्रेज़ी संस्करण) "तो, ठीक जैसे एक आदमी के पाप के कारण हर किसी के लिए 'पापी' होने का फ़ैसला आया, वैसे ही एक आदमी के नेक काम के कारण हर किसी के लिए 'नेक' होने का फ़ैसला आया, जिससे उन्हें जीवन का अधिकार मिला।"]

रोमियों 8:30 में पाया जाने वाला वाक्यांश "धर्मी ठहराया गया" (8:30) एक कानूनी शब्द है। "धर्मी ठहराया जाना" उस काम को कहते हैं जिसके द्वारा परमेश्वर—जो मुख्य न्यायाधीश हैं—यीशु मसीह के कामों की जाँच और मूल्यांकन करते हैं—खास तौर पर उनकी आज्ञाकारिता की, यहाँ तक कि परमेश्वर की इच्छा के अनुसार हमारे सारे पापों को अपने ऊपर लेकर क्रूस पर मृत्यु तक सहने की—और उसके बाद हमें पाप-मुक्त घोषित करते हैं। कृपया रोमियों 8:1 देखें: "इसलिए, अब जो लोग मसीह यीशु में हैं, उनके लिए कोई दंड नहीं है।" यहाँ, "दंड" शब्द "धर्मी ठहराया जाना" का विलोम है। क्योंकि मसीह अपनी नेकी (धार्मिकता) हमें देते हैं (हमारे नाम करते हैं), इसलिए परमेश्वर हमें धर्मी घोषित करते हैं; इसके अलावा, वह हमें धर्मी लोगों के रूप में देखते हैं और वैसा ही व्यवहार करते हैं।

इस प्रकार धर्मी ठहराए जाने के बाद, परमेश्वर ने हमें अपने "बच्चों" के रूप में अपना लिया है (गोद लेना)। *Ordo salutis* (मुक्ति का क्रम) पर ध्यान दें: (1) बुलाहट, (2) नया जन्म, (3) मन-फिराव, (4) विश्वास, (5) धर्मी ठहराया जाना, (6) गोद लेना, (7) पवित्र किया जाना, (8) दृढ़ता, (9) महिमा। वेस्टमिंस्टर शॉर्टर कैटेकिज़्म, प्रश्न 34: "गोद लेना क्या है?" उत्तर: "गोद लेना परमेश्वर के मुक्त अनुग्रह का एक कार्य है, जिसके द्वारा हमें परमेश्वर के पुत्रों की श्रेणी में शामिल किया जाता है, और हमें उनके सभी अधिकारों और विशेषाधिकारों का हकदार बनाया जाता है।" 1 यूहन्ना 3:1 देखें: "देखो, पिता ने हम पर कैसा प्रेम दिखाया है, कि हम परमेश्वर के बच्चे कहलाएँ; और हम सचमुच वैसे ही हैं। दुनिया हमें इसलिए नहीं पहचानती, क्योंकि उसने उसे नहीं पहचाना" [(समकालीन अंग्रेज़ी संस्करण): "ज़रा सोचिए कि परमेश्वर पिता ने हम पर कितना महान प्रेम बरसाया है। उस महान प्रेम के द्वारा, हम परमेश्वर के बच्चे बन गए हैं। हालाँकि, दुनिया हमें इसलिए नहीं पहचानती, क्योंकि वे पिता को नहीं जानते"]। यह परमपिता परमेश्वर के महान प्रेम के कारण ही है कि हमें परमेश्वर की संतानों में शामिल किया गया है। देखें यूहन्ना 1:12: "परन्तु जितने लोगों ने उसे ग्रहण किया, जिन्होंने उसके नाम पर विश्वास किया, उसने उन्हें परमेश्वर की संतान बनने का अधिकार दिया" [(समकालीन अंग्रेज़ी संस्करण): "तथापि, जिन्होंने उसे ग्रहण किया और उस पर विश्वास किया, उसने उन्हें परमेश्वर की संतान बनने का विशेषाधिकार दिया"]। परमेश्वर की संतान होने का विशेषाधिकार, परमपिता परमेश्वर के पास जाने और परमेश्वर को "अब्बा! पिता!" कहकर पुकारने की क्षमता है (रोमियों 8:15; गलातियों 4:6)।

देखें रोमियों 8:17 (समकालीन अंग्रेज़ी संस्करण): "यदि हम परमेश्वर की संतान हैं, तो हम परमेश्वर के वारिस हैं और मसीह के साथ सह-वारिस हैं..." परमपिता परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र, यीशु मसीह के द्वारा हमें अपनी संतान के रूप में गोद लिया है, और उसे "बहुत से भाइयों में पहलौठा" होने के लिए नियुक्त किया है (पद 29)। कृपया इब्रानियों 2:11 (समकालीन अंग्रेज़ी संस्करण) देखें: "क्योंकि जो पवित्र करता है और जो पवित्र किए जा रहे हैं, वे सब एक ही परमेश्वर से आते हैं। इसलिए, यीशु उन्हें भाई कहने में लज्जित नहीं होता।" हम सब परमेश्वर के परिवार के सदस्य हैं। चूंकि हम परमेश्वर की संतान (गोद लिए हुए पुत्र और पुत्रियां) बन गए हैं, इसलिए यीशु हमारे सबसे बड़े भाई हैं, और हम उनके छोटे भाई-बहन हैं। यीशु हमें "भाई" कहने में ज़रा भी लज्जित नहीं होते। यह एक ऐसा उपहार है जो परमेश्वर ने हमें मुफ्त में दिया है, और यह शाश्वत है। क्योंकि हमें गोद लेने का

परमेश्वर का कार्य शाश्वत है, इसलिए इसे रद्द नहीं किया जा सकता, और न ही कोई इसे हमसे छीन सकता है। कृपया यूहन्ना 10:29 देखें: “मेरे पिता, जिन्होंने उन्हें मुझे दिया है, सबसे महान हैं; और कोई भी उन्हें मेरे पिता के हाथ से छीन नहीं सकता।” क्योंकि परमेश्वर का उद्धार इतना निश्चित है, इसलिए हम अपने उद्धार के प्रति निश्चितता रख सकते हैं।

चूंकि परमेश्वर ही हमारा उद्धार करता है, इसलिए हमें अपने उद्धार की निश्चितता को दृढ़ता से थामे रखना चाहिए, अविचलित रहना चाहिए, और अपने विश्वास में दृढ़ रहना चाहिए; हमें हर उस प्रलोभन के विरुद्ध लड़ना चाहिए—और उस पर विजय प्राप्त करनी चाहिए—जिसके द्वारा शैतान हमें हमारे उद्धार की निश्चितता पर प्रश्न उठाने या संदेह करने के लिए उकसाने का प्रयास करता है, अथवा हमें अविश्वास की ओर ले जाने की कोशिश करता है।

परमेश्वर का उद्धार (6)

[रोमियों 8:29-30]

कृपया बाइबल में रोमियों 8:29-30 देखें: "क्योंकि जिन्हें परमेश्वर ने पहले से जान लिया, उन्हें उसने पहले से ही ठहराया कि वे उसके पुत्र के स्वरूप में बदल जाएँ, ताकि वह बहुत से भाइयों और बहनों में पहलौठा ठहरे। और जिन्हें उसने पहले से ठहराया, उन्हें उसने बुलाया भी; जिन्हें उसने बुलाया, उन्हें उसने धर्मी भी ठहराया; और जिन्हें उसने धर्मी ठहराया, उन्हें उसने महिमा भी दी।" आज, मैं उद्धार के पाँच चरणों में से पाँचवें और अंतिम चरण पर विचार करना चाहूँगा: परमेश्वर द्वारा उन लोगों को महिमा देने का कार्य जिन्हें उसने चुना है। यहाँ, क्रिया "महिमा दी" (glorified) भूतकाल में है (जो किसी ऐसी चीज़ को संदर्भित करती है जो पहले ही घटित हो चुकी है)। हालाँकि, हमें अभी तक महिमा नहीं मिली है। तो फिर, परमेश्वर ने ऐसा क्यों कहा कि उसने हमें *पहले ही* महिमा दे दी है? क्योंकि परमेश्वर 100% निश्चित रूप से हमें महिमा देगा, इसलिए प्रेरित पौलुस—जो रोमियों की पुस्तक के लेखक हैं—को उद्धार का ऐसा पूर्ण भरोसा था कि उन्होंने भूतकाल का प्रयोग किया, मानो परमेश्वर ने यह महिमा देने का कार्य पहले ही पूरा कर लिया हो। चूँकि परमेश्वर निश्चित रूप से और बहुतायत से उद्धार के सभी पाँचों चरणों को पूरा करेगा, इसलिए प्रेरित पौलुस ने, उस उद्धार पर पूर्ण विश्वास रखते हुए, उन पाँचों चरणों में से प्रत्येक के लिए भूतकाल की क्रियाओं का प्रयोग किया (जिन्हें उसने पहले से जाना, जिन्हें उसने पहले से ठहराया, जिन्हें उसने बुलाया, जिन्हें उसने धर्मी ठहराया, और जिन्हें उसने महिमा दी)।

तो फिर, महिमा देना (glorification) वास्तव में है क्या? जब हम सब स्वर्ग में प्रवेश करेंगे, तो हम सबको महिमा दी जाएगी। मुख्य रूप से रोमियों की पुस्तक से संदर्भ लेते हुए, मैं चार मुख्य बिंदुओं के माध्यम से महिमा देने की प्रकृति पर विचार करना चाहूँगा:

पहला, महिमा देना स्वयं उद्धार को ही संदर्भित करता है।

कृपया रोमियों 5:10 देखें: “क्योंकि जब हम परमेश्वर के शत्रु थे, तब यदि उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा उसके साथ मेल हो गया, तो मेल हो जाने पर उसके जीवन के द्वारा हम कितना अधिक उद्धार पाएँगे!” इससे पहले कि हम यीशु पर विश्वास करते, हम परमेश्वर के शत्रु थे; फिर भी, परमेश्वर पिता ने अपने एकलौते पुत्र, यीशु को इस संसार में भेजा और उसे प्रायश्चित के रूप में मृत्यु के लिए सौंप दिया। इसके परिणामस्वरूप, हमारा परमेश्वर के साथ मेल हो गया है। जिनका मेल-मिलाप हो चुका है—यानी, जिन्हें धर्मी ठहराया गया है—हम भविष्य में यीशु मसीह के पुनरुत्थान के द्वारा उद्धार पाएँगे। दूसरे शब्दों में, भविष्य में हमारा महिमामंडन होगा। यहाँ, यह कथन कि भविष्य में हमारा महिमामंडन होगा, हमारे अपने पुनरुत्थान की ओर संकेत करता है, ठीक वैसे ही जैसे मसीह स्वयं मृतकों में से जी उठे थे। कृपया 1 कुरिन्थियों 15:20 देखें: “परन्तु अब मसीह मृतकों में से जी उठे हैं, और जो सो गए हैं, उनके लिए पहले फल बन गए हैं।” चूँकि मसीह उन लोगों के लिए पहले फल बन गए हैं जो सो गए हैं—यानी, वे संत जो प्रभु में मरे हैं (जिन्हें धर्मी ठहराया गया है)—इसलिए वे सभी जो प्रभु में सो गए हैं, वे भी उसी प्रकार फिर से जी उठेंगे (उनका पुनरुत्थान होगा)।

दूसरे, महिमामंडन का अर्थ है स्वर्ग में एक विरासत पाना।

कृपया रोमियों 8:17 देखें: “और यदि हम संतान हैं, तो वारिस भी हैं—परमेश्वर के वारिस और मसीह के साथ सह-वारिस; यदि हम सचमुच उसके साथ दुख उठाते हैं, ताकि हम भी उसके साथ महिमामंडित हों।” जिन्हें धर्मी ठहराया जाता है, वे “परमेश्वर के वारिस और मसीह के साथ सह-वारिस” होते हैं। महिमामंडित होने का अर्थ है वारिस बनना। यह एक गौरवशाली अवस्था है, क्योंकि हम इस पृथ्वी की चीज़ों के वारिस नहीं बनेंगे, बल्कि स्वर्ग के राज्य की चीज़ों (विरासत) के वारिस बनेंगे।

तीसरे, महिमामंडन का अर्थ है शरीर का पुनरुत्थान।

कृपया रोमियों 8:10–11 देखें: “और यदि मसीह तुम में हैं, तो पाप के कारण शरीर तो मृत है, परन्तु धर्म के कारण आत्मा जीवित है। यदि उसका आत्मा, जिसने यीशु को मृतकों में से जिलाया, तुम में वास करता है, तो

जिसने मसीह यीशु को मृतकों में से जिलाया, वह अपने उस आत्मा के द्वारा जो तुम में वास करता है, तुम्हारे मरणशील शरीरों को भी जीवन देगा।" हमारी आत्माएँ, जो अपराधों और पापों के कारण मृत थीं (इफिसियों 2:1), उन्हें पवित्र आत्मा—परमेश्वर के उस आत्मा ने जिसने यीशु को मृतकों में से जिलाया—पहले ही जीवन दे दिया है (पहला पुनरुत्थान)। वही वास करने वाला पवित्र आत्मा हमारे मरणशील शरीरों को भी जीवन देगा। जब यीशु लौटकर आएँगे, तो हमारे सभी मृत शरीर फिर से जी उठेंगे (दूसरा पुनरुत्थान)। हमारा महिमामंडन शरीर के इसी पुनरुत्थान (भौतिक देह) की ओर संकेत करता है। अंत में, चौथी बात यह है कि 'महिमामंडन' (Glorification) का मतलब यह है कि हम मसीह यीशु के साथ स्वर्गीय लोकों में एक साथ बैठेंगे।

कृपया इफिसियों 2:5–6 देखें: "जब हम अपने अपराधों के कारण मरे हुए थे, तब भी [उसने] हमें मसीह के साथ जीवित किया (तुम्हें अनुग्रह से ही उद्धार मिला है), और हमें उसके साथ उठाया, और मसीह यीशु में स्वर्गीय लोकों में उसके साथ बैठाया।" उसने हमें मसीह के साथ जीवित किया—हम जो अपराधों और पापों के कारण आत्मिक रूप से मरे हुए थे [उसने हमारे शरीरों को नहीं, बल्कि हमारी आत्माओं को पुनर्जीवित किया (पुनर्जन्म)]—और हमें उसके साथ उठाया (जो हमारे शरीरों के भविष्य के पुनरुत्थान की ओर संकेत करता है), और हमें मसीह यीशु में स्वर्गीय लोकों में उसके साथ बैठाया (परमेश्वर के दृष्टिकोण से, यह एक पूरी हो चुकी बात है; हालाँकि, हमारे दृष्टिकोण से, यह यीशु के दूसरे आगमन के समय होगा)। कृपया रोमियों 8:34 देखें: "वह कौन है जो दोषी ठहराता है? मसीह यीशु ही वह है जो मर गया—और उससे भी बढ़कर, जो फिर से जीवित हुआ—जो परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठा है, और जो वास्तव में हमारे लिए मध्यस्थता कर रहा है।" पुनर्जीवित मसीह यीशु ही वह है जो परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठा है। हम भी, मसीह यीशु में, स्वर्गीय लोकों में एक साथ बैठेंगे (इफिसियों 2:6)। तो फिर, स्वर्ग में हम कहाँ बैठेंगे? बाइबल में प्रकाशितवाक्य 3:21 देखें: "जो जय पाता है, मैं उसे अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठने का अधिकार दूँगा, जैसा कि मैंने भी जय पाई और अपने पिता के साथ उनके सिंहासन पर बैठ गया।" मसीह यीशु में, हम स्वर्ग में प्रभु के साथ उसके सिंहासन पर एक साथ बैठेंगे। यह कितना महिमामय सम्मान है!

ईश्वर के उद्धार के पाँच चरण पूरी तरह से ईश्वर की कृपा से ही पूरे होते हैं।

पहले चरण पर विचार करें: ईश्वर द्वारा उन लोगों का उद्धार जिन्हें उसने पहले से जान लिया था (रोमियों 8:29)—यानी, वे लोग जिनसे उसने प्रेम किया—ईश्वर की शुद्ध कृपा का ही एक कार्य है। ऐसा बिल्कुल नहीं है कि ईश्वर ने हमसे प्रेम किया और हमारा उद्धार किया क्योंकि हमने ऐसे अच्छे कर्म किए थे जो उसके प्रेम के योग्य थे। दूसरे शब्दों में, भले ही ईश्वर की दृष्टि में हमारे पास ऐसी कोई भी योग्यता या शर्त नहीं थी जो हमें उसके प्रेम के योग्य बनाती, फिर भी ईश्वर ने—क्योंकि वह प्रेम स्वरूप है (1 यूहन्ना 4:8, 16)—हमसे पहले प्रेम किया (पद 19) और इस प्रकार हमारा उद्धार किया; अतः, यह ईश्वर की शुद्ध कृपा के अलावा और कुछ नहीं हो सकता।

दूसरे चरण पर विचार करें: ईश्वर द्वारा उन लोगों का उद्धार जिन्हें उसने पहले से ही नियुक्त कर लिया था—यानी, वे लोग जिन्हें उसने संसार की नींव पड़ने से पहले ही चुन लिया था—यह भी ईश्वर की शुद्ध कृपा का ही एक कार्य है। संसार की नींव पड़ने से पहले मसीह में हमें चुनने का ईश्वर का कार्य (इफिसियों 1:4) किसी भी तरह से हमारे भीतर मौजूद किसी ऐसी चीज़ पर आधारित नहीं था (जैसे कि विश्वास, अच्छे कर्म, आदि) जो हमें ईश्वर द्वारा चुने जाने के योग्य बनाती। बल्कि, क्योंकि ईश्वर—जो प्रेम स्वरूप है—ने हमसे पहले प्रेम किया और हमें बचाने के उद्देश्य से चुना, इसलिए हमें चुना गया और हमने उद्धार प्राप्त किया; अतः, यह भी ईश्वर की शुद्ध कृपा का ही एक कार्य है।

तीसरे चरण पर विचार करें: ईश्वर द्वारा उन लोगों का उद्धार जिन्हें उसने बुलाया—यानी, वे लोग जिन्हें उसने प्रभावी ढंग से बुलाया—यह भी ईश्वर की शुद्ध कृपा का ही एक कार्य है। 2 तीमुथियुस 1:9 पर दृष्टि डालें: "ईश्वर ने हमारा उद्धार किया है और हमें एक पवित्र बुलाहट के लिए बुलाया है—हमारे कर्मों के कारण नहीं, बल्कि अपने स्वयं के उद्देश्य और कृपा के कारण, जो उसने युगों के आरंभ होने से पहले मसीह यीशु में हमें प्रदान की थी।" ईश्वर की बुलाहट किसी भी तरह से हमारे कर्मों पर आधारित नहीं है (यह हमारे अच्छे कर्मों या योग्यताओं पर आधारित नहीं है)। बल्कि, यह ईश्वर के अपने उद्देश्य और उस कृपा के अनुसार पूरी होती है जो उसने युगों के आरंभ होने से पहले मसीह यीशु में हमें प्रदान की थी।

चौथे चरण पर विचार करें: ईश्वर द्वारा उन लोगों का उद्धार जिन्हें उसने धर्मी ठहराया, यह भी ईश्वर की शुद्ध कृपा का ही एक कार्य है। बाइबल में रोमियों 3:24 को देखें: "और उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत-मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं।" हमें "उसके अनुग्रह से सेंत-मेंत धर्मी ठहराया जाना" (धर्मीकरण) प्राप्त हुआ है।

पाँचवें चरण को देखें: परमेश्वर का उन लोगों को बचाने का कार्य, जिन्हें उसने महिमा दी है, वह भी पूरी तरह से उसके अनुग्रह से ही होता है। हम परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा बचाए गए हैं (इफिसियों 2:5)। स्वर्गीय विरासत का हमारा अधिकार भी परमेश्वर के अनुग्रह का ही परिणाम है (रोमियों 4:16)। प्रभु के सिंहासन पर मसीह के साथ बैठने का हमारा सौभाग्य भी, परमेश्वर के असीम अनुग्रह के कारण ही है (इफिसियों 2:6–7)। हमें अपनी उत्कृष्ट रचनाएँ (पद 10) बनाकर, परमेश्वर का उद्देश्य आने वाली पीढ़ियों को अपने अनुग्रह के असीम धन को दिखाना था (पद 7)।

तो फिर, परमेश्वर अपने अनुग्रह के द्वारा हमें महिमा क्यों देता है? बाइबल में इफिसियों 2:9 को देखें: "कर्मों के कारण नहीं, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।" इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि कोई भी घमण्ड न कर सके। चूँकि हमने अपनी स्वयं की कोशिशों, अच्छे कामों या कर्मों के द्वारा महिमा प्राप्त नहीं की—बल्कि केवल परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा ही प्राप्त की—इसलिए हमारे भीतर घमण्ड करने लायक कुछ भी नहीं है; हम केवल यीशु मसीह में ही घमण्ड कर सकते हैं। इसलिए, हमें प्रसिद्धि या पहचान की चाह किए बिना, कृतज्ञता के साथ प्रभु की सेवा करनी चाहिए। बाइबल में 1 कुरिन्थियों 15:57 को देखें: "परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जय देता है।"

“यदि परमेश्वर हमारे पक्ष में है” (1)

[रोमियों 8:31-34]

कृपया रोमियों 8:31 पर ध्यान दें: “तो फिर हम इन बातों के विषय में क्या कहें? यदि परमेश्वर हमारे पक्ष में है, तो कौन हमारे विरुद्ध हो सकता है?” यहाँ, संयोजक शब्द “तो फिर” (then) पिछले कथन को उसके बाद आने वाले कथन से जोड़ने का काम करता है। यहाँ “पिछला कथन” किसे माना जाए, इस विषय पर विद्वानों के अलग-अलग मत हैं: (1) रोमियों 3:21–8:30, (2) रोमियों 5:1–8:30, (3) रोमियों 8:1–30, या (4) रोमियों 8:26–30। मेरा अपना विचार यह है कि शब्द “तो फिर” विशेष रूप से रोमियों 8:29–30 में पाए जाने वाले अंश से जुड़ा है। रोमियों 8:29–30 में परमेश्वर के उद्धार के पाँच चरणों की रूपरेखा दी गई है। विशेष रूप से, इसमें कहा गया है कि परमेश्वर ने: (1) उन्हें पहले से जान लिया (प्रेम किया) जिन्हें उसने (2) पहले से ही ठहराया (चुना); फिर उसने (3) उन्हें यीशु पर विश्वास करने (उसे ग्रहण करने) के लिए बुलाया; (4) उसने उन्हें धर्मी ठहराया (उन्हें निष्कलंक घोषित किया); और (5) उसने उन्हें महिमा दी। प्रेरित पौलुस पूछते हैं, “तो फिर हम इन बातों के विषय में क्या कहें?” (पद 31)। यद्यपि कोरियाई बाइबल में यहाँ एकवचन वाक्यांश “यह बात” (this matter) का प्रयोग किया गया है, लेकिन मूल यूनानी पाठ को देखने पर पता चलता है कि वह शब्द वास्तव में बहुवचन है: “ये बातें” (these things)। ये “बातें” परमेश्वर के उद्धार के उन पाँच चरणों को संदर्भित करती हैं जिनका वर्णन रोमियों 8:29–30 में किया गया है। दूसरे शब्दों में, “ये बातें” उन विशिष्ट कार्यों को संदर्भित करती हैं जिनके द्वारा परमेश्वर ने कुछ व्यक्तियों को पहले से जान लिया (प्रेम किया) और पहले से ही ठहराया (चुना), फिर उन्हें बुलाया, धर्मी ठहराया, और महिमा दी। यह प्रश्न—कि “तो फिर हम इन बातों के विषय में क्या कहें”—जो परमेश्वर के उद्धार के इन पाँच चरणों को संदर्भित करता है—यह संकेत देता है कि ऐसे कार्यों के सामने, हमारे पास कहने

के लिए अब बिल्कुल कुछ भी शेष नहीं है। इसका कारण यह है कि, चूँकि परमेश्वर ने उद्धार के इन पाँचों चरणों को पहले ही पूरा कर दिया है, इसलिए परमेश्वर के उद्धार के इस कार्य के विषय में हमारे पास कहने के लिए अब कुछ भी नहीं बचा है। रोमियों 8:31 में, प्रेरित पौलुस ने "यदि" (if) शब्द का प्रयोग किया। उन्होंने इस शब्द का प्रयोग इसलिए नहीं किया क्योंकि उनके मन में कोई संदेह था, बल्कि इसलिए किया क्योंकि उन्हें एक गहरी निश्चितता थी। उन्हें जो गहरी निश्चितता थी, वह यह दृढ़ विश्वास था कि परमेश्वर—जो उद्धार के रचयिता हैं—उद्धार के इन पाँच चरणों को निश्चित रूप से पूरा करेंगे। दूसरे शब्दों में, प्रेरित पौलुस को 100% विश्वास था कि परमेश्वर उन लोगों को बुलाएँगे, धर्मी ठहराएँगे और महिमा देंगे, जिन्हें उन्होंने जगत की नींव डालने से पहले ही प्रेम किया था और चुन लिया था। इस प्रकार, इफिसियों 1:4 में, उन्होंने घोषणा की: "क्योंकि उसने जगत की सृष्टि से पहले ही हमें उसमें चुन लिया, कि हम प्रेम में उसके सामने पवित्र और निर्दोष हों।" इसके अलावा, जब रोमियों 8:29–30 में परमेश्वर के उद्धार के पाँच चरणों का वर्णन करते हुए, प्रेरित पौलुस ने क्रियाओं का प्रयोग भूतकाल (past tense) में किया; ऐसा उन्होंने ठीक इसलिए किया क्योंकि उन्हें परमेश्वर के उद्धार के कार्य पर पूर्ण विश्वास था। यद्यपि उनके भौतिक शरीर को अभी तक महिमा नहीं मिली थी—वास्तव में, वह शरीर बुढ़ापे की ओर बढ़ रहा था और उसमें "शरीर में एक काँटा" (2 कुरिन्थियों 12:7) था—फिर भी उन्हें यह दृढ़ विश्वास बना रहा कि परमेश्वर, जिन्होंने उन्हें पहले से ही प्रेम किया था और चुन लिया था, और तत्पश्चात् उन्हें बुलाया और धर्मी ठहराया था, वे निश्चित रूप से उन्हें महिमा तक पहुँचाएँगे। एक मसीही के रूप में, जो "पहले ही" (मसीह के प्रथम आगमन पर उद्धार की पूर्णता) और "अभी तक नहीं" (मसीह के द्वितीय आगमन पर उद्धार की अंतिम पूर्णता) के बीच जी रहा था, प्रेरित पौलुस को पूरा भरोसा था कि जिस प्रकार परमेश्वर की उद्धार की इच्छा स्वर्ग में पहले ही पूरी हो चुकी है, उसी प्रकार वह भविष्य में इस पृथ्वी पर भी पूरी होगी—विशेष रूप से, यीशु मसीह के पुनरागमन पर। संदर्भ के लिए, यदि हम उस प्रार्थना को देखें जो प्रभु ने हमें सिखाई थी, तो उसमें कहा गया है: "...तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसी ही पृथ्वी पर भी हो" (मत्ती 6:10, *द बाइबल फॉर मॉडर्न पीपल*)। प्रेरित पौलुस के उद्धार के भरोसे का आधार परमेश्वर हैं—वही एक, जिन्होंने उनके भीतर उद्धार का कार्य आरंभ किया था। कृपया फिलिप्पियों 1:6 देखें: “हमें पूरा भरोसा है कि जिसने आप में एक अच्छा काम शुरू किया है, वह उसे मसीह यीशु के दिन तक पूरा करेगा” [(आधुनिक लोगों के लिए बाइबल) “मुझे पूरा भरोसा है कि परमेश्वर, जिसने आप के बीच एक अच्छा काम शुरू किया है, वह उस काम को तब तक पूरा करेगा जब तक मसीह यीशु वापस नहीं आ जाते”]। इस प्रकार, जैसा कि प्रेरित पौलुस ने फिलिप्पी कलीसिया के विश्वासियों

को लिखा, उसने खुद को दो स्थितियों के बीच फंसा हुआ पाया: इस धरती पर शरीर में जीवित रहना बनाम मर जाना। हालाँकि उसे लगा कि इस दुनिया को छोड़कर मसीह के साथ होना कहीं ज़्यादा बेहतर होगा—और वास्तव में, यही उसकी इच्छा भी थी—फिर भी उसने फिलिप्पी के विश्वासियों की विश्वास में उन्नति और उनकी खुशी के लिए इस दुनिया में ही रहने का चुनाव किया (पद 21–25)। प्रेरित पौलुस की इच्छा थी कि उसके शरीर में मसीह की महिमा हो, चाहे जीवन के द्वारा या मृत्यु के द्वारा (पद 20)। हालाँकि उसे अभी तक महिमा नहीं मिली थी, फिर भी प्रेरित पौलुस ने वैसा ही जीवन जिया, क्योंकि उसे पूरा भरोसा था कि उसे निश्चित रूप से महिमा मिलेगी।

बाइबल के रोमियों 8:31 में, प्रेरित पौलुस ने घोषणा की, "यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो कौन हमारे विरुद्ध हो सकता है?" इस अंश में, वाक्यांश "यदि परमेश्वर हमारी ओर है" को *द मॉडर्न इंग्लिश वर्शन* में "यदि परमेश्वर हमारे पक्ष में है" के रूप में प्रस्तुत किया गया है। परमेश्वर हमारी ओर है; परमेश्वर हमारे पक्ष में है। इसलिए, प्रेरित पौलुस को पूरा विश्वास था कि परमेश्वर का "हमारी ओर होना" इस तथ्य से सिद्ध होता है कि—संसार की नींव पड़ने से पहले ही—उसने हमसे प्रेम किया, हमें चुना, हमें बुलाया, हमें धर्मी ठहराया, और हमें महिमा दी। इसी विश्वास के साथ उसने निर्भीकता से पूछा, "कौन हमारे विरुद्ध हो सकता है?" (पद 31)। हालाँकि, वास्तविकता में, दुष्ट शक्तियाँ *वास्तव में* हमारा विरोध कर रही हैं—वे लोग जिनसे परमेश्वर ने संसार की नींव पड़ने से पहले प्रेम किया, जिन्हें चुना, बुलाया, धर्मी ठहराया और महिमा दी। ये दुष्ट शक्तियाँ लगातार हम पर आक्रमण करती रहती हैं। शैतान अपने गुर्गों को हम पर बार-बार हमला करने के लिए भेजता है, और हम पर विभिन्न तरीकों से वार करता है—चाहे वह संसार के प्रलोभनों के माध्यम से हो, हमारे अपने अंतर्मन के माध्यम से हो, पाप के माध्यम से हो, या अन्य साधनों से हो। मत्ती 24:24 पर विचार करें: "क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे और धोखा देने के लिए बड़े-बड़े चिन्ह और चमत्कार दिखाएँगे—यदि संभव हो, तो चुने हुए लोगों को भी।" हम पर आक्रमण करने वाली ये दुष्ट शक्तियाँ—अर्थात् झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता—यहाँ तक चले जाते हैं कि वे बड़े-बड़े चिन्ह और चमत्कार ["महान चमत्कार और अद्भुत कार्य" (*द मॉडर्न इंग्लिश वर्शन*)] दिखाते हैं, ताकि यदि संभव हो, तो वे हमें भी—जो चुने हुए लोग हैं—धोखा दे सकें।

वास्तव में, शैतान पूरी पृथ्वी पर घूमता रहता है, और हमें धोखा देने, हमारी परीक्षा लेने और हम पर आक्रमण करने के अपने अथक प्रयासों में यहाँ-वहाँ भटकता रहता है (अय्यूब 1:7)। शैतान एक गरजते हुए सिंह की तरह इधर-उधर घूमता रहता है, और किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश में रहता है जिसे वह फाड़ खाए (1 पतरस 5:8)। हर कोने में पहुँचकर, शैतान हमें—जिनसे परमेश्वर ने प्रेम किया है और जिन्हें चुना है—गुमराह करने का प्रयास करके हमें फाड़ खाने की कोशिश करता है। हालाँकि, क्योंकि परमेश्वर हमारी ओर है, इसलिए शैतान—दुष्ट—भी हमारे विरुद्ध खड़े होने का साहस नहीं कर पाता (रोमियों 8:31)। बाइबल में ज़कर्याह 1:8 देखें: "मैंने रात में देखा, और देखो, एक पुरुष लाल घोड़े पर सवार था, और वह घाटी में मेंहदी के पेड़ों के बीच खड़ा था; और उसके पीछे लाल, भूरे और सफ़ेद घोड़े थे।" ज़कर्याह की किताब में—जिसे अक्सर "पुराने नियम का प्रकाशन" कहा जाता है—पैगंबर ज़कर्याह ने जो दर्शन देखा, वह था "एक पुरुष का, जो लाल घोड़े पर सवार होकर घाटी में मेंहदी के पेड़ों के बीच खड़ा था।" यहाँ, वह "पुरुष" परमेश्वर के इकलौते पुत्र, यीशु मसीह को दर्शाता है। यह कथन कि इकलौता पुत्र, यीशु मसीह, "खड़ा था," यह दर्शाता है कि यीशु मसीह सीधे खड़े हैं। बाइबल में प्रेरितों के काम 7:55 देखें: "परन्तु वह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर स्वर्ग की ओर टकटकी लगाए रहा, और परमेश्वर की महिमा और यीशु को परमेश्वर के दाहिने हाथ खड़े देखा।" यह अंश बताता है कि अपनी शहादत से ठीक पहले, स्तेफ़नुस ने यीशु को परमेश्वर के दाहिने हाथ खड़े देखा; फिर भी, बाकी पूरी बाइबल में, यीशु मसीह को मुख्य रूप से परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठे हुए दिखाया गया है (मरकुस 16:19; लूका 22:69; कुलुस्सियों 3:1; इब्रानियों 1:3; 10:12; 12:2)। तो फिर, स्तेफ़नुस की मृत्यु से ठीक पहले, यीशु परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठे होने के बजाय खड़े क्यों थे? इसका कारण यह है कि वह इसलिए खड़े हुए, क्योंकि उनके प्रिय स्तेफ़नुस संकट का सामना कर रहे थे। यह तथ्य कि पैगंबर ज़कर्याह ने अपने दर्शन में इकलौते पुत्र, यीशु मसीह को खड़े हुए देखा, यह दर्शाता है कि वह हमारे खातिर खड़े हुए—यानी, वह हमारा उद्धार करने के लिए खड़े हुए। पैगंबर ज़कर्याह ने जो दर्शन देखा, उसमें उस एक पुरुष—इकलौते पुत्र, यीशु मसीह—के पीछे लाल, भूरे और सफ़ेद घोड़े थे (ज़कर्याह 1:8); इन घोड़ों पर सवार लोग वे हैं, जिन्हें प्रभु ने पूरी पृथ्वी पर गश्त करने के लिए भेजा है (पद 10)। परमेश्वर हमारे साथ हैं; वास्तव में, उन्होंने इन दूतों—अपने स्वर्गदूतों—को पूरी पृथ्वी पर घूमने के लिए भेजा है, ताकि वे हमारी निगरानी करें और हमारे हर कदम पर पैनी नज़र रखें। इसलिए, शैतान चाहे हमारा कितना भी विरोध करने की कोशिश करे, क्योंकि परमेश्वर उन लोगों के पक्ष में है जिन्हें उसने प्यार किया, चुना, बुलाया,

धर्मी ठहराया और पहले से ही महिमामंडित किया है, वह निश्चित रूप से हमारा उद्धार और महिमामंडन करेगा, यह सुनिश्चित करते हुए कि हम अंततः स्वर्ग में प्रवेश करें और उसकी अनंत महिमा में भागीदार बनें।

परिणामस्वरूप, हमें अपना जीवन विश्वास के साथ जीना चाहिए, जो हमारे उद्धार के पूर्ण आश्वासन पर आधारित हो। चूंकि परमेश्वर—हमारे उद्धार का रचयिता—ने दुनिया की नींव रखे जाने से भी पहले हमें प्यार किया, चुना, बुलाया, धर्मी ठहराया और महिमामंडित किया, इसलिए हमें पूरी तरह से आश्वस्त रहना चाहिए कि हम 100% महिमामंडन के लिए निर्धारित हैं और हम अनंत काल तक स्वर्ग में निवास करेंगे। इसके अलावा, हमें सभी प्रकार के भय को त्याग देना चाहिए। इब्रानियों 13:6 पर विचार करें: "इसलिए हम आत्मविश्वास के साथ कहते हैं, 'प्रभु मेरा सहायक है; मैं नहीं डरूंगा। नश्वर मनुष्य मेरा क्या बिगाड़ सकते हैं?'" इसके अतिरिक्त, हमें स्पष्ट-विचार वाला, आत्म-नियंत्रित, सतर्क और प्रार्थना के प्रति समर्पित रहना चाहिए। 1 पतरस 4:7 और 5:8 पर विचार करें: "सभी चीजों का अंत निकट है। इसलिए स्पष्ट-विचार वाले और आत्म-नियंत्रित बनें ताकि आप प्रार्थना कर सकें... सतर्क और शांत-चित्त रहें। आपका शत्रु शैतान एक गरजते हुए शेर की तरह घूमता रहता है, और किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश में रहता है जिसे वह निगल सके।" हमें दृढ़ और अडिग रहना चाहिए, और हमेशा प्रभु के कार्य में बढ़ते हुए उत्साह के साथ प्रयास करते रहना चाहिए। 1 कुरिन्थियों 15:58 पर विचार करें: "इसलिए, मेरे प्यारे भाइयों और बहनों, दृढ़ रहो। किसी भी चीज़ को तुम्हें डिगाने मत दो। हमेशा अपने आप को पूरी तरह से प्रभु के कार्य में समर्पित करो, क्योंकि तुम जानते हो कि प्रभु में तुम्हारा परिश्रम व्यर्थ नहीं है।" इसलिए, मैं प्रार्थना करता हूं कि जब हम सब प्रभु के सामने खड़े हों, तो हमें उनकी यह सराहना प्राप्त हो: "शाबाश, अच्छे और विश्वासयोग्य सेवक! तुम थोड़ी सी बातों में विश्वासयोग्य रहे, और मैं तुम्हें बहुत सी बातों का अधिकारी बनाऊंगा। अपने प्रभु के आनंद में प्रवेश करो" (मत्ती 25:21)।

“यदि परमेश्वर हमारे पक्ष में है” (2)

[रोमियों 8:31–34]

कृपया रोमियों 8:32 पर ध्यान दें: “जिसने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु हम सब के लिये उसे दे दिया, वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्यों न देगा?” यहाँ, “अपने निज पुत्र” का तात्पर्य परमेश्वर के एकलौते पुत्र—यानी परमेश्वर-पुत्र से है। परमेश्वर-पिता ने अपने एकलौते पुत्र को इस पृथ्वी पर भेजा, और उनके एकलौते पुत्र, यीशु, परमेश्वर-पिता की इच्छा का पालन करते हुए इस पृथ्वी पर आए। भविष्यद्वक्ता जकर्याह द्वारा देखे गए आठ दर्शनों में से, पहला दर्शन यीशु मसीह—यानी परमेश्वर-पुत्र—के मानवीय जगत में आगमन का था (जकर्याह 1:8)। उन्होंने जो दर्शन देखा, उसमें परमेश्वर के एकलौते पुत्र, यीशु मसीह, को सीधे खड़े हुए दर्शाया गया था [यह कथन कि एकलौता पुत्र खड़ा था, तीन बार आता है (पद 8, 10, और 11)]। यद्यपि बाइबल में आमतौर पर यीशु मसीह को परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान दिखाया गया है (मरकुस 16:19; लूका 22:69; कुलुस्सियों 3:1; इब्रानियों 1:3; 10:12; 12:2), तथापि स्तेफानुस ने—अपनी शहादत से ठीक पहले—यीशु को परमेश्वर के दाहिने हाथ खड़े हुए देखा (प्रेरितों के काम 7:55)। यीशु अपने प्रिय स्तेफानुस की सहायता के लिए खड़े हो गए, क्योंकि स्तेफानुस उस समय घोर क्लेश से गुज़र रहा था। आज भी, यीशु उन विश्वासियों की सहायता के लिए तत्पर खड़े रहते हैं, जो कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं। अतः, क्योंकि परमेश्वर इस रीति से हमारे पक्ष में हैं, इसलिए शैतान और उसके वे चेले, जो हमारा विरोध करते हैं, निश्चित रूप से असफल होंगे।

यदि हम रोमियों 8:32 के प्रथम भाग पर दृष्टि डालें, तो उसमें यह कहा गया है: “जिसने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु हम सब के लिये उसे दे दिया...” पवित्रशास्त्र में ऐसे भी दृष्टांत मिलते हैं, जहाँ परमेश्वर-पिता ने अपने निज पुत्र के अतिरिक्त किसी अन्य को सौंप दिया (और चूँकि अपने स्वयं के बच्चे के बजाय किसी और के

बच्चे को सौंपना—बलिदान जैसा प्रतीत नहीं होगा, इसलिए इसे अपने स्वयं के बच्चे को "बचा लेने" के रूप में नहीं माना जाएगा)। कृपया बाइबल में यशायाह 43:3 देखें: "क्योंकि मैं ही तुम्हारा परमेश्वर यहोवा, इस्राएल का पवित्र और तुम्हारा उद्धारकर्ता हूँ; मैं तुम्हारे बदले में मिस्र को, और तुम्हारे स्थान पर कूश और सबा को देता हूँ" [(समकालीन अंग्रेज़ी संस्करण) "मैं ही तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ, वह पवित्र जो तुम्हें बचाता है, हे इस्राएल। मैंने तुम्हें आज़ाद कराने के लिए मिस्र, इथियोपिया और सबा को फिरौती के तौर पर दिया"]। इस्राएल को बचाने के कार्य में, पवित्र परमेश्वर ने इस्राएल के लिए फिरौती के तौर पर मिस्र, कूश (इथियोपिया), और सबा (जो मोटे तौर पर कूश वाले ही क्षेत्र को दर्शाता है) को अर्पित कर दिया। यहाँ, "फिरौती" का अर्थ किसी ऐसे मुआवज़े या भुगतान से है जो किसी बचाए जाने वाले व्यक्ति के जीवन के बदले में—और उसे बचाने के लिए—दिया जाता है। जब परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों को बचाया—जो अन्यथा लाल सागर में डूबकर नष्ट होने वाले थे—तो उन्होंने यह कार्य मिस्रियों को लाल सागर में डुबोकर (इस प्रकार उन्हें पूरी तरह नष्ट करके) किया, जो इस्राएलियों के बदले में एक विकल्प के तौर पर था। कृपया यशायाह 43:4 देखें: "क्योंकि मेरी दृष्टि में तू अनमोल और सम्मानित है, और क्योंकि मैं तुझसे प्रेम करता हूँ, इसलिए मैं तेरे बदले में अन्य लोगों को, और तेरे जीवन के बदले में अन्य राष्ट्रों को दे दूँगा" [(समकालीन अंग्रेज़ी संस्करण) "क्योंकि मैं तुझे अनमोल और सम्मानित मानता हूँ, और क्योंकि मैं तुझसे प्रेम करता हूँ, इसलिए मैं तेरे जीवन को बचाऊँगा, भले ही इसके लिए मुझे अन्य राष्ट्रों का बलिदान ही क्यों न देना पड़े"]। जिस कारण से परमेश्वर ने इस्राएलियों के जीवन को उनके स्थान पर अन्य लोगों (मिस्रियों, और कूश तथा सबा के लोगों) को अर्पित करके—यानी उनका बलिदान देकर—बचाया, वह यह था कि परमेश्वर की दृष्टि में इस्राएली अनमोल और सम्मानित थे, और परमेश्वर उनसे प्रेम करते थे। तथापि, परमेश्वर पिता... अपने प्रिय इकलौते पुत्र... उन्हें इतना अधिक स्नेह देने के बावजूद, परमेश्वर ने हमसे प्रेम किया और, हमें बचाने की अपनी इच्छा में, उन्हें हमारे बदले में क्रूस पर मरने के लिए सौंप दिया। तो फिर, हम परमेश्वर पिता के अपने पुत्र, यीशु के प्रति प्रेम और स्नेह की गहराई को कैसे समझ सकते हैं? हम उन शब्दों पर गौर करके कुछ अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं जो परमेश्वर पिता ने विशेष रूप से अपने इकलौते पुत्र से कहे थे—ऐसे शब्द जो उन्होंने किसी और से कभी नहीं कहे: "और स्वर्ग से एक वाणी आई, 'यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यंत प्रसन्न हूँ'" (मत्ती 3:17); और, "जब वह अभी बोल ही रहा था, तो एक चमकीले बादल ने उन्हें ढक लिया, और बादल में से एक

आवाज़ आई, 'यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं बहुत प्रसन्न हूँ; इसकी सुनो'" (मत्ती 17:5)। परमेश्वर पिता अपने इकलौते पुत्र, यीशु मसीह से इतना प्रेम करते हैं और उसे इतना सँजोकर रखते हैं कि उन्होंने उसे "मेरा प्रिय पुत्र, जिससे मैं बहुत प्रसन्न हूँ" कहकर संबोधित किया। फिर भी, जब हम आज के वचन—रोमियों 8:32—को देखते हैं, तो पवित्रशास्त्र कहता है कि परमेश्वर पिता ने अपने ही पुत्र को *नहीं* बख्शा, बल्कि हम सब की खातिर उसे सौंप दिया। यह कैसे कहा जा सकता है कि परमेश्वर पिता—जो अपने इकलौते पुत्र, यीशु मसीह से प्रेम करते हैं, उसमें आनंद पाते हैं, और उसे बहुत गहराई से सँजोकर रखते हैं—ने अपने ही पुत्र को *नहीं* बख्शा? इस संदर्भ में, "नहीं बख्शा" वाक्यांश का अर्थ है "त्याग देना," "सौंप देना," या "छोड़ देना"; इसका तात्पर्य यह है कि परमेश्वर पिता ने परमेश्वर पुत्र, यीशु को—त्याग दिया, सौंप दिया, या छोड़ दिया—ताकि वह क्रूस पर एक लहूलुहान मृत्यु सहे। क्योंकि परमेश्वर पिता *हमारे पक्ष में हैं* (पद 31), और हमारे उद्धार की खातिर, उन्होंने अपने इकलौते पुत्र को—जिससे वह प्रेम करते हैं, जिसमें वह आनंद पाते हैं, और जिसे वह सब से बढ़कर सँजोकर रखते हैं—क्रूस पर एक लहूलुहान मृत्यु मरने के लिए सौंप दिया; और उन्होंने ऐसा बिना किसी देरी के, बिना किसी भी हिचकिचाहट के किया। क्योंकि उनके इकलौते पुत्र, यीशु मसीह को परमेश्वर पिता ने त्याग दिया था... (परमेश्वर द्वारा त्यागा गया) और इस प्रकार हमें परमेश्वर द्वारा क्षमा कर दिया गया है।

पुराने नियम के उत्पत्ति (Genesis) अध्याय 22 में, हमें एक ऐसा दृश्य देखने को मिलता है जिसमें परमेश्वर अब्राहम की परीक्षा लेते हैं। परमेश्वर की परीक्षा यह थी: "अपने पुत्र को, अपने एकलौते पुत्र को—जिससे तुम प्रेम करते हो—अर्थात् इसहाक को ले, और मोरिय्याह देश को चला जा; और वहां जिस पहाड़ को मैं तुझे बताऊं, उस पर उसे होमबलि के लिये चढ़ा" (उत्पत्ति 22:1–2)। उसी क्षण, बिना किसी हिचकिचाहट के, अब्राहम अगली सुबह तड़के उठे और तुरंत परमेश्वर के वचन का पालन किया (पद 3–10)। यदि उस समय अब्राहम ज़रा भी डगमगाते या अपनी पत्नी, साराह से सलाह-मशविरा करते, तो वे परमेश्वर की आज्ञा का इतनी तत्परता से पालन नहीं कर पाते। वास्तव में, जिस स्थान को परमेश्वर ने बताया था, वहां पहुंचने पर अब्राहम ने एक वेदी बनाई, लकड़ियां सजाईं, अपने पुत्र इसहाक को बांधा, उसे वेदी पर रखी लकड़ियों के ऊपर लिटाया, चाकू उठाने के लिए अपना हाथ बढ़ाया, और अपने पुत्र की बलि देने की तैयारी कर ली (पद 9–10)। उस अत्यंत निर्णायक क्षण में, प्रभु के एक दूत ने स्वर्ग से अब्राहम को पुकारा और उसे अपने पुत्र का जीवन लेने से रोक दिया (पद 11)।

तब उस दूत ने घोषणा की: “इस लड़के पर हाथ मत बढ़ा, और न ही उसके साथ कुछ कर। अब मैं जान गया हूं कि तू परमेश्वर का भय मानता है, क्योंकि तूने अपने एकलौते पुत्र को भी मुझसे नहीं रोका” (पद 12)। यद्यपि अब्राहम यह जानते थे कि उनका एकलौता पुत्र, इसहाक, परमेश्वर के वादे की संतान था—वह प्रतिज्ञा की हुई संतान (रोमियों 9:8)—और यद्यपि वे इस विश्वास पर दृढ़ थे कि इसहाक के द्वारा ही परमेश्वर अपनी उस प्रतिज्ञा को पूरा करेंगे कि उनके वंशज आकाश के तारों के समान अनगिनत होंगे—“तेरा वंश भी ऐसा ही होगा” (उत्पत्ति 15:5)—और यद्यपि परिस्थितियां असंभव सी प्रतीत होती थीं (रोमियों 4:18), फिर भी उन्होंने परमेश्वर के वचन का पालन किया (उत्पत्ति 22:2); उन्होंने कुछ भी नहीं रोका (पद 12), चाकू उठाने के लिए अपना हाथ बढ़ाया और अपने पुत्र की बलि देने की तैयारी कर ली (पद 10)। क्योंकि परमेश्वर पिता हमसे प्रेम करते थे और हमें बचाना चाहते थे, इसलिए उन्होंने अपने एकलौते पुत्र, यीशु मसीह को भी नहीं बख्शा, बल्कि उन्हें क्रूस पर बलिदान होने के लिए सौंप दिया। हालाँकि, यीशु के विरोधियों ने शुरू में उन्हें सूली पर चढ़ाने की *नहीं* सोची थी। इन विरोधियों में यहूदी नेता भी शामिल थे। मरकुस 14:1–2 पर गौर करें: “अब फसह और बिना खमीर वाली रोटी का त्योहार आने में सिर्फ़ दो दिन बाकी थे, और मुख्य याजक और व्यवस्था के शिक्षक यीशु को गिरफ़्तार करके मारने का कोई चालाक तरीका ढूँढ़ रहे थे। उन्होंने कहा, ‘लेकिन त्योहार के दौरान नहीं, वरना लोगों के बीच दंगा भड़क सकता है।’” यहूदी धार्मिक नेताओं—मुख्य याजकों और व्यवस्था के शिक्षकों—ने यीशु को गिरफ़्तार करने और मारने का काम फसह के त्योहार के बाद तक के लिए टालने का फ़ैसला किया, इस डर से कि कहीं दंगा न भड़क जाए। इसका कारण यह था कि वे “लोगों से डरते थे” (लूका 22:1–2)। लूका 22:3–5 पर गौर करें: “तब शैतान यहूदा में समा गया, जिसे इस्करियोती कहा जाता था, जो उन बारह शिष्यों में से एक था। और यहूदा मुख्य याजकों और मंदिर के रक्षकों के अधिकारियों के पास गया और उनसे इस बारे में बात की कि वह यीशु को कैसे पकड़वा सकता है। वे बहुत खुश हुए और उसे पैसे देने के लिए राज़ी हो गए।” फिर भी, शैतान ने दखल दिया; उसने यहूदा इस्करियोती का इस्तेमाल करके धार्मिक नेताओं से संपर्क किया और पैसों के बदले यीशु को उनके हवाले करने का इंतज़ाम किया। नतीजतन, यीशु को आखिरकार फसह के त्योहार के दौरान ही सूली पर चढ़ाया गया और मार डाला गया। विरोधियों का एक और समूह खुद यहूदी लोगों का था। जब यीशु अपनी पीड़ा सहने और सूली पर मरने के लिए यरूशलेम में दाखिल हुए, तो यहूदी भीड़ ने ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाया: “दाऊद के पुत्र को होसन्ना! धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है! स्वर्ग में सबसे ऊँचे स्थान पर होसन्ना!” (मत्ती 21:9)। उस समय, उनका यीशु को सूली पर चढ़ाने का कोई इरादा नहीं था। रोमन

गवर्नर, पोंटियस पीलातुस भी एक विरोधी था। उसकी भी यीशु को मारने की कोई इच्छा नहीं थी; इसके विपरीत, उसने उन्हें आज़ाद करने की पूरी कोशिश की। इसका कारण यह था कि पीलातुस ने खुद यीशु से पूछताछ की थी और, तीन अलग-अलग मौकों पर, उसे यीशु में ऐसा कोई अपराध नहीं मिला जिसकी सज़ा मौत हो (लूका 23:22)। इसके अलावा, यह जानते हुए कि मुख्य याजकों ने यीशु को ईर्ष्या के कारण उनके हवाले किया था (मरकुस 15:10), पीलातुस ने निर्दोष यीशु को रिहा करने का प्रयास किया। उसने एक रीति-रिवाज का हवाला देकर यीशु को आज़ाद करने की कोशिश की (पद 6), जिसके तहत त्योहार के दौरान, लोगों की गुज़ारिश पर किसी एक कैदी को रिहा कर दिया जाता था—वह, अगर ज़रूरी हो, तो लोगों की हमदर्दी जगाकर यीशु को रिहा करना चाहता था। लेकिन, क्योंकि मुख्य पुजारियों ने भीड़ को भड़काकर यीशु के बजाय बरब्बास को रिहा करने की मांग करवाई (पद 11), तो पीलातुस ने—भीड़ को खुश करने के लिए—बरब्बास को रिहा कर दिया, लेकिन यीशु को कोड़े लगवाए और उन्हें सूली पर चढ़ाने के लिए सौंप दिया (पद 15)। लूका 23:23 पर ध्यान दें: "लेकिन वे और भी ज़ोर से चिल्लाए, और मांग की कि उसे सूली पर चढ़ाया जाए। और उनकी आवाज़ें भारी पड़ गईं।" रोमन गवर्नर, पोंटियस पीलातुस की पत्नी भी नहीं चाहती थी कि यीशु को सूली पर चढ़ाकर मार डाला जाए। मत्ती 27:19 पर ध्यान दें: "जब वह न्याय की गद्दी पर बैठा था, तो उसकी पत्नी ने उसे यह संदेश भेजा: 'उस बेकसूर आदमी से तुम्हारा कोई लेना-देना नहीं होना चाहिए, क्योंकि आज सपने में उसकी वजह से मुझे बहुत दुख उठाना पड़ा है।'"

यह शैतान ही था जिसने, परमेश्वर की अनुमति के दायरे में रहते हुए, अपने प्यादों का इस्तेमाल करके यीशु की मौत करवाई। किसी भी हाल में, शैतान परमेश्वर की अनुमति के बिना यीशु को नहीं मार सकता था। कृपया यूहन्ना 10:17–18 देखें: "मेरे पिता मुझसे इसलिए प्यार करते हैं क्योंकि मैं अपनी जान दे देता हूँ—ताकि उसे फिर से पा सकूँ। कोई मेरी जान मुझसे छीनता नहीं, बल्कि मैं उसे अपनी मर्ज़ी से दे देता हूँ। मेरे पास उसे देने का भी अधिकार है और उसे फिर से पाने का भी अधिकार है। यह आज्ञा मुझे मेरे पिता से मिली है।" क्योंकि यीशु के पास अपनी मर्ज़ी से अपनी जान देने और उसे फिर से पाने का अधिकार था, तो शैतान उन्हें कैसे मार सकता था? यह बिल्कुल नामुमकिन था। शैतान ने अपनी पूरी ताकत लगाकर चाहे कितनी भी ज़ोरदार हमला क्यों न किया हो, वह यीशु को नहीं मार सका। इसकी अनुमति केवल परमेश्वर की संप्रभु इच्छा के दायरे में ही थी, और यह केवल परमेश्वर द्वारा तय की गई सीमाओं के भीतर ही संभव था। वह ईश्वरीय सीमा ठीक-ठीक उत्पत्ति 3:15

(जिसे *Protoevangelium* कहते हैं) में मिलती है: "और मैं तेरे और स्त्री के बीच, और तेरी संतान और उसकी संतान के बीच बैर डालूँगा; वह तेरा सिर कुचल देगा, और तू उसकी एड़ी पर वार करेगा।" यह घोषणा की गई थी कि परमेश्वर का एकलौता पुत्र, यीशु मसीह, शैतान का सिर कुचल देगा, जबकि शैतान यीशु मसीह की एड़ी पर वार करेगा; इस प्रकार, परमेश्वर ने शैतान पर जो सीमा लगाई थी, वह केवल अपने एकलौते पुत्र, यीशु मसीह की एड़ी पर वार करने तक ही सीमित थी। शैतान के इस हमले की परिणति यूहन्ना 19:30 में दर्ज है: "जब उसने वह पेय ले लिया, तो यीशु ने कहा, 'यह पूरा हुआ।' इसके साथ ही, उसने अपना सिर झुकाया और अपने प्राण त्याग दिए।" यीशु मसीह—परमेश्वर का पुत्र—ने परमेश्वर पिता की इच्छा को पूरी तरह से पूरा किया, जैसा कि उत्पत्ति 3:15 में भविष्यवाणी की गई थी। दूसरे शब्दों में, शैतान का सिर कुचलकर, परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह ने उद्धार के कार्य को पूर्णता तक पहुँचाया। चूँकि परमेश्वर ने हमारे उद्धार के कार्य के संबंध में हमारे लिए इतनी गहरी परवाह दिखाई है, तो भला कौन हमारे विरुद्ध खड़ा हो सकता है? (रोमियों 8:31)। यहाँ तक कि उस विरोधी के हमले भी, अंततः, परमेश्वर की मुक्ति की इच्छा को पूरा करने के साधनों के रूप में उपयोग किए गए। बाइबल में प्रेरितों के काम 2:23 पर दृष्टि डालें: "इसी यीशु को, जो परमेश्वर की निश्चित योजना और पूर्वज्ञान के अनुसार सौंप दिया गया था, तुमने अधर्मी लोगों के हाथों क्रूस पर चढ़ाकर मार डाला" [(समकालीन अंग्रेजी संस्करण) "इस यीशु को परमेश्वर की पूर्व-निर्धारित योजना और पूर्वज्ञान के अनुसार तुम्हारे हाथों में सौंप दिया गया था, फिर भी तुमने दुष्ट लोगों के हाथों का उपयोग करके उसे क्रूस पर कीलों से जड़ दिया और मार डाला"]। परमेश्वर की पूर्व-निर्धारित इच्छा और पूर्वज्ञान के अनुरूप, उसके एकलौते पुत्र, यीशु को क्रूस पर मृत्यु का कष्ट सहने के लिए सौंप दिया गया। इस प्रकार, हमारे उद्धार की खातिर—हम जो कभी अपने अपराधों और पापों में मृत थे (इफिसियों 2:1)—परमेश्वर के एकलौते पुत्र, यीशु मसीह को क्रूस पर एक फिरौती के रूप में सौंप दिया गया।

इसलिए, हमारा उद्धार निश्चित है। परिणामस्वरूप, हमारे पास अपने उद्धार का आश्वासन होने के सिवा कोई चारा नहीं है। इसलिए, परमेश्वर को धन्यवाद देते हुए—जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें विजय प्रदान करता है—हमें फलदायक होना चाहिए, दृढ़ और अडिग रहना चाहिए, और प्रभु के कार्य में सदैव और भी अधिक लगन से प्रयास करना चाहिए (1 कुरिन्थियों 15:57–58)। इसलिए, मैं प्रार्थना करता हूँ कि जब हम सब

प्रभु के सामने खड़े हों, तो हमें उनकी यह सराहना मिले: “शाबाश, अच्छे और विश्वासयोग्य सेवक! तुम थोड़ी सी बातों में विश्वासयोग्य रहे; मैं तुम्हें बहुत सी बातों का अधिकारी बनाऊँगा। अपने प्रभु के आनन्द में प्रवेश करो” (मत्ती 25:21)।

“यदि परमेश्वर हमारे पक्ष में है” (3)

[रोमियों 8:31–34]

कृपया रोमियों 8:32 पर ध्यान दें: “जिसने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु हम सब के लिये उसे दे दिया, वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्यों न देगा?” यहाँ, “जिसने उसे दे दिया” का तात्पर्य परमेश्वर से है—वह जिसने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, बल्कि हम सब की खातिर उसे दे दिया। यह वही परमेश्वर है जो हमारे पक्ष में है (पद 31)। इसके अतिरिक्त, जो परमेश्वर हमारे पक्ष में है, वह सनातन परमेश्वर है (व्यवस्थाविवरण 33:27; यशायाह 40:28; रोमियों 16:26), वह सर्वव्यापी परमेश्वर है जो हर जगह विद्यमान है (यशायाह 57:15; यिर्मयाह 23:24), वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर है (उत्पत्ति 28:3; यहोशू 22:22; अय्यूब 8:3, 5; भजन संहिता 50:1; यशायाह 9:6; यहेजकेल 10:5; प्रकाशितवाक्य 11:17; 15:3; 16:7, 14; 19:6, 15; 21:22), और वह प्रेम का परमेश्वर है (1 यूहन्ना 4:8, 16)। हमारे प्रति अपने प्रेम के कारण—और हमारे उद्धार की खातिर—इस प्रेममय परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र, यीशु मसीह को भी न रख छोड़ा, बल्कि हमारे स्थान पर क्रूस पर मरने के लिए उसे सौंप दिया।

रोमियों 8:32 में, प्रेरित पौलुस द्वारा प्रयुक्त वाक्यांश “वह पुत्र” का तात्पर्य यीशु मसीह से है—परमेश्वर का एकलौता पुत्र, जो परमेश्वर के ही समान है। जो परमेश्वर हमसे प्रेम करता है और हमारे पक्ष में है, उसने उस पुत्र (“अपने निज पुत्र”) को भी न रख छोड़ा, बल्कि हमारे उद्धार की खातिर उसे क्रूस पर मरने के लिए सौंप दिया। उत्पत्ति अध्याय 22 में—जिस पर हमने पिछले हफ़्ते मनन किया था—जब परमेश्वर ने अब्राहम की परीक्षा ली, तो उसने उसे आज्ञा दी: “अपने पुत्र को, अपने एकलौते पुत्र को—जिससे तू प्रेम करता है—अर्थात् इसहाक को ले, और मोरिय्याह देश को चला जा। वहाँ उसे होमबलि के रूप में उन पहाड़ों में से किसी एक पर चढ़ा देना,

जिसके विषय में मैं तुझे बताऊँगा" (उत्पत्ति 22:1-2)। फिर भी, वास्तव में, अब्राहम का एक और पुत्र था: इश्माएल (16:16)। इसके बावजूद, परमेश्वर ने इसहाक को उसका "एकलौता पुत्र" कहकर संबोधित किया (22:1)। यदि हम *संशोधित कोरियाई संस्करण* (1956) में इब्रानियों 11:17 को देखें, तो उसका अनुवाद इस प्रकार किया गया है: "विश्वास के द्वारा अब्राहम ने, जब परमेश्वर ने उसकी परीक्षा ली, तो इसहाक को बलि के रूप में चढ़ाया। जिस व्यक्ति को प्रतिज्ञाएँ मिली थीं, वह अपने *एकलौते पुत्र* की बलि चढ़ाने वाला था।" हालाँकि, *संशोधित नवीन कोरियाई संस्करण* (1998) में, इस वाक्यांश का अनुवाद केवल "उसका एकलौता पुत्र" के रूप में नहीं, बल्कि "उसका *एकलौता जन्मा पुत्र*" के रूप में किया गया है। अब्राहम के लिए, इसहाक वास्तव में उसका एकलौता जन्मा पुत्र था। फिर भी, परमेश्वर के वचन की आज्ञा मानकर—और उस पुत्र को भी न बख्शते हुए जिससे वह सबसे अधिक प्रेम और स्नेह करता था—अब्राहम ने इसहाक को बाँधा, उसे वेदी की लकड़ियों पर लिटाया, चाकू पकड़ने के लिए अपना हाथ बढ़ाया, और अपने पुत्र को मारने की तैयारी की (उत्पत्ति 22:9-10)। परमेश्वर, जो हमसे प्रेम करता है और हमारी परवाह करता है, उसने हमारे उद्धार की खातिर अपने स्वयं के एकलौते जन्मे पुत्र—यीशु मसीह—को भी नहीं बख्शा; बल्कि, उसने उसे हमारे लिए क्रूस पर मरने हेतु सौंप दिया।

चूँकि परमेश्वर ने अपने एकलौते जन्मे पुत्र, यीशु मसीह को भी नहीं बख्शा, बल्कि हमारे खातिर उसे क्रूस पर मरने हेतु सौंप दिया, तो वह उसके साथ-साथ हमें बाकी सब कुछ भी अनुग्रहपूर्वक क्यों नहीं देगा? (रोमियों 8:32)। परमेश्वर ने हमें—और लगातार देता आ रहा है—सब कुछ दिया है, अपने एकलौते जन्मे पुत्र, यीशु मसीह के साथ। यहाँ, वाक्यांश "यीशु मसीह के साथ" को "मसीह में," "यीशु में," या "उसमें" के रूप में भी व्यक्त किया जा सकता है। चूँकि शब्द "साथ" की व्याख्या "द्वारा" के रूप में भी की जा सकती है, इसलिए वाक्यांश "यीशु मसीह के साथ" को इसी प्रकार "यीशु मसीह के द्वारा" के रूप में भी कहा जा सकता है। दूसरे शब्दों में, इसका मतलब यह है कि परमेश्वर ने हमें अपने इकलौते बेटे, यीशु मसीह के ज़रिए और उसमें "सब कुछ" दिया है—और देता आ रहा है। तो फिर, यहाँ "सब कुछ" का क्या मतलब है? दूसरे शब्दों में कहें तो, यह "सब कुछ" क्या है जो परमेश्वर ने हमें यीशु मसीह के साथ, उसमें और उसके ज़रिए दिया है—और देता आ रहा है? कृपया

बाइबल में इफिसियों 1:3 देखें: "हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता की स्तुति हो, जिसने मसीह में हमें स्वर्गीय स्थानों में हर तरह की आत्मिक आशीष दी है।" "वे सब चीज़ें" जो परमेश्वर ने हमें यीशु मसीह के साथ दी हैं, वे "हर तरह की आत्मिक आशीष" [("सभी आत्मिक आशीषें" (मॉडर्न इंग्लिश वर्शन))] हैं; इस बारे में, प्रेरित पौलुस ने इफिसियों 1:4 से शुरू करते हुए, इफिसुस की कलीसिया को इनमें से कई आत्मिक आशीषों के बारे में बताया। उदाहरण के लिए, पद 4 में, पौलुस कहता है: "जैसा उसने जगत की नींव डालने से पहले ही हमें उसमें चुन लिया, कि हम उसके सामने प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों।" रोमियों 8:29 के संदर्भ में, इसका वही मतलब है जो इस घोषणा का है कि परमेश्वर ने उन्हें "पहले से ही ठहराया" (या चुना) जिन्हें वह "पहले से जानता था"—यानी, जिन्हें उसने पहले से ही प्रेम किया था। यह बात कि परमेश्वर ने जगत की नींव डालने से पहले ही हमें पहले से ठहराया—या चुना—उद्धार के उन पाँच चरणों में से दूसरा चरण है जिन पर हमने पहले विचार किया है। संक्षेप में दोहराएँ तो: रोमियों 8:32 में बताई गई "वे सब चीज़ें" "हर तरह की आत्मिक आशीष" (इफिसियों 1:3) को दर्शाती हैं, और इन आत्मिक आशीषों में उद्धार के पाँचों चरण पूरी तरह से शामिल हैं। यहाँ, उद्धार के पाँच चरणों को इस तरह परिभाषित किया गया है: (1) परमेश्वर का पहले से जानना/पहले से प्रेम करना, (2) परमेश्वर का पहले से ठहराना/चुनना, (3) परमेश्वर का बुलाना, (4) परमेश्वर का धर्मी ठहराना, और (5) परमेश्वर का महिमा देना (रोमियों 8:29–30)। जब हम परमेश्वर के हमें बुलाने पर विचार करते हैं, तो 2 तीमुथियुस 1:9 में यह कहा गया है: “परमेश्वर ने हमें बचाया है और एक पवित्र बुलाहट के साथ बुलाया है—हमारे कामों के अनुसार नहीं, बल्कि अपने ही उद्देश्य और अनुग्रह के अनुसार, जो समय के शुरू होने से पहले ही मसीह यीशु में हमें दिया गया था।” परमेश्वर ने हमें बचाया और हमें बुलाया—यह एक ऐसी बुलाहट थी जो समय के शुरू होने से भी पहले, मसीह यीशु में अनुग्रह द्वारा दी गई थी। यहाँ, “समय के शुरू होने से भी पहले” वाक्यांश का अर्थ यह है कि परमेश्वर ने अनंत अतीत में ही हमारे उद्धार के लिए अपनी योजना पूरी तरह से बना ली थी। उद्धार के पाँच चरणों में, परमेश्वर ने—अनंतकाल से पहले या संसार की नींव रखे जाने से पहले—हमें पहले से जान लिया था, हमसे प्रेम किया था, और हमें पहले से ही नियुक्त या चुन लिया था। इसके बाद, जब हमारा जन्म हुआ, तो परमेश्वर ने हमें अपनी बुलाहट दी। यूहन्ना 10:3 पर विचार करें: “द्वारपाल उसके लिए द्वार खोलता है, और भेड़ें उसकी आवाज़ सुनती हैं। वह अपनी भेड़ों को नाम लेकर बुलाता है और उन्हें बाहर ले जाता है।” परमेश्वर ने हममें से हर एक को व्यक्तिगत रूप से बुलाया। इसके अलावा—केवल हमें बुलाने से भी बढ़कर—संसार की नींव रखे जाने से पहले परमेश्वर द्वारा हमें पहले से जानने, हमसे प्रेम करने, हमें पहले से नियुक्त करने और हमें

चुनने के कार्य भी हममें से हर एक के लिए व्यक्तिगत रूप से ही किए गए थे। और तो और, मसीह यीशु में, परमेश्वर ने हममें से हर एक को व्यक्तिगत रूप से धर्मी ठहराया। उसने हममें से हर एक को व्यक्तिगत रूप से महिमा भी दी। चूँकि परमेश्वर—जो हमसे प्रेम करता है और हमारे पक्ष में है—ने हममें से हर एक से व्यक्तिगत रूप से प्रेम करके, हमें चुनकर, बुलाकर, धर्मी ठहराकर और महिमा देकर हमारा उद्धार पूरा किया है, तो फिर हमारे विरुद्ध कौन खड़ा हो सकता है? (रोमियों 8:31)। इसलिए, हमारे पास अपने उद्धार का पक्का भरोसा होना ही चाहिए।

अगर हम रोमियों 8:32 के पिछले हिस्से को देखें, तो प्रेरित पौलुस पूछते हैं, "क्या वह उसके साथ-साथ हमें सब कुछ मुफ़्त में नहीं देगा?"—लेकिन यहाँ जिस "हमें" की बात हो रही है, वे असल में कौन हैं? बाइबल रोमियों 5:6, 8, और 10 में इसका वर्णन तीन तरीकों से करती है: (1) हम "कमज़ोर लोग" थे। रोमियों 5:6 देखें: "क्योंकि जब हम अभी भी शक्तिहीन थे, तो सही समय पर मसीह अधर्मियों के लिए मर गया।" हमारी कमज़ोरी के कारण, हम अपनी मुक्ति पाने, स्वर्ग में प्रवेश करने, या प्रभु के साथ उसके स्वर्गीय सिंहासन पर बैठने के लिए कुछ भी करने में पूरी तरह से असमर्थ थे—और आज भी असमर्थ हैं। मुक्ति किसी भी तरह से "विश्वास (अनुग्रह) + कर्म (अच्छे काम)" का कोई फ़ॉर्मूला नहीं है। यह शानदार मुक्ति पूरी तरह से परमेश्वर का काम है; यह ऐसी चीज़ नहीं है जिसे हम खुद हासिल कर सकें। यह हमारे—कमज़ोर और अधर्मी लोगों—की खातिर ही था कि परमेश्वर ने अपने इकलौते बेटे, यीशु मसीह को क्रूस पर चढ़ा दिया। (2) हम "पापी" थे। रोमियों 5:8 देखें: "लेकिन परमेश्वर हमारे प्रति अपने प्रेम को इस तरह दिखाता है कि जब हम अभी भी पापी थे, तब मसीह हमारे लिए मर गया।" परमेश्वर ने अपने इकलौते बेटे, यीशु मसीह को क्रूस पर ठीक उसी समय चढ़ाया जब हम पापी थे—कभी भी तब नहीं जब हम धर्मी थे। हमारे पास अपनी कोई भी धार्मिकता नहीं है। पूरी तरह से पतित पापियों के तौर पर, हम कोई भी ऐसा पुण्य का काम करने में असमर्थ थे जिससे हम खुद को बचा सकें। हमारी मुक्ति की खातिर, परमेश्वर ने अपने इकलौते बेटे को नहीं बख्शा, बल्कि उसे क्रूस पर चढ़ा दिया; ऐसा करके, परमेश्वर की धार्मिकता हमें प्रदान की गई। (3) हम परमेश्वर के "दुश्मन" थे। कृपया रोमियों 5:10 देखें: "क्योंकि अगर, जब हम परमेश्वर के दुश्मन थे, तब उसके बेटे की मृत्यु के द्वारा हमारा उससे मेल हो गया, तो अब जब हमारा मेल हो चुका है, तो हम उसके जीवन के द्वारा और भी ज़्यादा

कैसे बचाए जाएँगे!" परमेश्वर ने हमें अपने साथ मिला लिया—तब भी जब हम उसके दुश्मन थे—अपने इकलौते बेटे, यीशु मसीह को क्रूस पर मरने के लिए सौंपकर। परमेश्वर और हमारे बीच जो शत्रुतापूर्ण रिश्ता था, उसका मेल हमारे अपने प्रयासों या कर्मों (अच्छे कामों) के द्वारा कभी नहीं हो सकता था। उस शत्रुतापूर्ण रिश्ते को केवल परमेश्वर ही सुलझा सकते थे। उस समाधान का मार्ग उन्होंने अपने इकलौते पुत्र को क्रूस पर प्रायश्चित के बलिदान के रूप में मरने देकर संभव बनाया।

यदि हमारा उद्धार किसी भी तरह से हमारे अपने कार्यों पर निर्भर होता—भले ही वह कितना भी कम क्यों न हो—तो हमें उद्धार का आश्वासन कभी नहीं मिल पाता। शायद अभी हमारे पास उद्धार का आश्वासन न होने का यही कारण है कि हम अपने ही कार्यों पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं—यह मानते हुए कि हमें प्रयास करना चाहिए, अच्छे कर्म करने चाहिए, और इसी तरह की अन्य बातें। हालाँकि, क्योंकि उद्धार परमेश्वर ही प्रदान करते हैं, इसलिए हमें उद्धार का आश्वासन मिलना निश्चित है। चूंकि परमेश्वर ने संसार की नींव रखने से पहले ही हमें—अपने प्रियजनों को—बचाने का निर्णय और योजना बना ली थी, और वे उस उद्धार के पाँच चरणों को सक्रिय रूप से पूरा कर रहे हैं, इसलिए हमें उद्धार का आश्वासन मिलना अनिवार्य है। इस संदर्भ में, "क्या वह हमें... अनुग्रहपूर्वक नहीं देगा?" (रोमियों 8:32) वाक्यांश के संबंध में: जहाँ *संशोधित कोरियाई संस्करण* (1998) इसका अनुवाद केवल "क्या वह हमें नहीं देगा?" के रूप में करता है, वहीं *संशोधित हांगुल संस्करण* (1956) इसका अनुवाद "क्या वह इसे हमें एक उपहार के रूप में नहीं देगा?" के रूप में करता है। दूसरे शब्दों में, अंतर "एक उपहार के रूप में" वाक्यांश में निहित है, जो *संशोधित हांगुल संस्करण* में तो दिखाई देता है, लेकिन *संशोधित कोरियाई संस्करण* में अनुपस्थित है। मूल यूनानी पाठ की जाँच करने पर *charizomai* शब्द सामने आता है, जिसका कोरियाई भाषा में अर्थ "एक उपहार के रूप में देना" होता है। दूसरे शब्दों में, *संशोधित कोरियाई संस्करण* ने मूल यूनानी शब्द का सटीक अनुवाद "एक उपहार के रूप में" किया है। हमें यही यूनानी शब्द—जिसका अनुवाद यहाँ "उपहार" के रूप में किया गया है—रोमियों 6:23 में एक बार फिर मिलता है: "...परमेश्वर का उपहार (यूनानी में, *charisma*) हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनंत जीवन है।" इफिसियों 2:4–5, 8–9 के इन वचनों पर विचार करें: "परन्तु हमारे प्रति अपने महान प्रेम के कारण, परमेश्वर, जो दया में धनी है, ने हमें मसीह के साथ जीवित किया, तब भी जब हम अपने अपराधों में मरे हुए थे—यह अनुग्रह से ही है कि तुम बचाए गए हो—... क्योंकि अनुग्रह से ही तुम

विश्वास के द्वारा बचाए गए हो—और यह तुम्हारी ओर से नहीं है, यह परमेश्वर का दान है—कर्मों के द्वारा नहीं, ताकि कोई घमंड न कर सके।" इन वचनों से जो अत्यंत महत्वपूर्ण शिक्षा मिलती है, वह यह है कि हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनंत जीवन (मुक्ति) पूरी तरह से परमेश्वर के अनुग्रह (इफिसियों 2:5, 8) और उसके दान (रोमियों 6:23; 8:32) का परिणाम है; यह निश्चित रूप से हमारी ओर से उत्पन्न नहीं होता (इफिसियों 2:8), न ही यह हमारे अपने कर्मों से आता है (पद 9)। यह परमेश्वर के अनुग्रह का एक दान है (पद 8)।

मुक्ति के पाँच चरण—जिनके द्वारा परमेश्वर, जिसने जगत की नींव डालने से पहले ही हमसे प्रेम किया और हमें चुन लिया, हमें बुलाता है, हमें धर्मी ठहराता है, और हमें महिमा देता है—एक ऐसी मुक्ति का निर्माण करते हैं जो पूरी तरह से परमेश्वर के अनुग्रह का कार्य है। दूसरे शब्दों में कहें तो, मुक्ति मसीह में परमेश्वर के अनुग्रह की एक अभिव्यक्ति है, जिसमें हमारी अपनी योग्यता का कोई भी योगदान नहीं है। यह परमेश्वर ही है जो हमें उसके वचन—विशेष रूप से, यीशु मसीह के सुसमाचार—को सुनने और यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा मुक्ति पाने में समर्थ बनाता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि उस वचन की शक्ति—सुसमाचार की शक्ति—हमारे भीतर कार्य कर रही होती है, जिसके कारण हम यीशु पर अपना विश्वास रख पाते हैं। इसके अलावा, वह विश्वास भी स्वयं परमेश्वर के अनुग्रह का ही एक दान है, और किसी भी तरह से हमारे अपने कर्मों का परिणाम नहीं है (इफिसियों 2:8, 9)। ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर, अपने अनुग्रह में, हमें विश्वास प्रदान करता है, जिसके कारण हम यीशु मसीह पर विश्वास कर पाते हैं। परिणामस्वरूप, हम मुक्ति का आश्वासन प्राप्त कर सकते हैं।

परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र, यीशु मसीह को भी नहीं छोड़ा; बल्कि, हमारी मुक्ति की खातिर, उसने उसे क्रूस पर मरने के लिए सौंप दिया। क्या परमेश्वर, जो हमसे इतनी अधिक सीमा तक प्रेम करता है, अपने पुत्र के साथ-साथ हमें सब कुछ मुक्त रूप से नहीं देगा (रोमियों 8:32)? चूँकि परमेश्वर ने हमसे इस तरह प्रेम किया—कि उसने अपने इकलौते पुत्र (यूहन्ना 3:16), यीशु मसीह को भी नहीं बख्शा, बल्कि उसे क्रूस पर चढ़ा दिया—तो वह हमें उद्धार का वरदान देने से कैसे चूक सकता है (रोमियों 8:32)? परमेश्वर, जिसने जगत की नींव पड़ने से पहले ही हमसे प्रेम किया और हमें चुन लिया, वह निश्चित रूप से उद्धार के इस कार्य को पूरा करेगा—हमें बुलाकर, हमें धर्मी ठहराकर, और हमें महिमा देकर। इसलिए, हमें विश्वास के साथ परमेश्वर

की ओर देखना चाहिए—उस परमेश्वर की ओर जो हमारा उद्धारकर्ता है, जो हमसे प्रेम करता है और हमारे पक्ष में है—और अपने उद्धार के इस भरोसे को मज़बूती से थामे रखना चाहिए। इसके अलावा, परमेश्वर के उद्धारकारी अनुग्रह के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए, हमें प्रभु के कार्य में और भी अधिक लगन से प्रयास करना चाहिए, ताकि हम उसे प्रसन्न कर सकें (1 कुरिन्थियों 15:57–58)।

“यदि परमेश्वर हमारे पक्ष में है” (4)

[रोमियों 8:31–34]

कृपया रोमियों 8:33 देखें: “परमेश्वर के चुने हुओं पर दोष कौन लगाएगा? ...” जब हम यहाँ “परमेश्वर के चुने हुओं” पर विचार करते हैं—तो सवाल उठता है कि परमेश्वर ने उन्हें ठीक कब चुना था? यदि हम रोमियों 8:29 देखें, तो उसमें कहा गया है कि परमेश्वर ने उन्हें “पहले से ही ठहराया” था। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर ने उन्हें संसार की सृष्टि से पहले—यानी किसी भी चीज़ के अस्तित्व में आने से पहले ही चुन लिया था। कृपया इफिसियों 1:4 देखें: “...जैसा कि उसने संसार की नींव डालने से पहले ही हमें उसमें चुन लिया था...” तो फिर, वे कौन लोग हैं जिन्हें परमेश्वर ने चुना है? वे वे लोग हैं जो उसके पुत्र—उसके एकलौते पुत्र, यीशु मसीह—की छवि के अनुरूप ढाले गए हैं (रोमियों 8:29)। यहाँ, यीशु मसीह—परमेश्वर का एकलौता पुत्र—वह है जो न केवल मरा, बल्कि फिर से जीवित भी हो उठा (पद 34)। इसके अलावा, स्वर्ग में आरोहण करने के बाद, वह परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान है (मरकुस 16:19; इब्रानियों 10:12) और हमारे लिए मध्यस्थता करता है (रोमियों 8:34)।

परमेश्वर द्वारा चुने हुए लोगों के रूप में, हमें यीशु का अनुकरण करना चाहिए। हमारी सभी प्रार्थनाओं की एकमात्र इच्छा और विषय यीशु जैसा बनना होना चाहिए [न्यू हिमनल 452, “मेरी हर इच्छा और प्रार्थना का विषय”]। हमें केवल यीशु की मृत्यु का ही अनुकरण नहीं करना चाहिए; हमें उसके पुनरुत्थान का भी अनुकरण करना चाहिए। इसके अतिरिक्त, चुने हुए लोगों के रूप में, हमें यीशु के स्वर्गारोहण का, परमेश्वर के दाहिने हाथ उसके विराजमान होने का, और हमारी ओर से उसकी मध्यस्थता का भी अनुकरण करना

चाहिए। ठीक यही उन लोगों का जीवन है जिन्हें परमेश्वर ने चुना है। इस समय हमारा जीवन कैसा है? क्या हम वर्तमान में उस रीति से जी रहे हैं जो परमेश्वर द्वारा चुने हुए लोगों के योग्य है? *न्यू हिमनल* संख्या 463 के चौथे पद के बोल—गीत "मैं एक मसीही बनना चाहता हूँ"—हमारी सच्ची प्रार्थना का विषय बनने चाहिए: "मैं यीशु जैसा बनना चाहता हूँ, सचमुच, सचमुच; मैं यीशु जैसा बनना चाहता हूँ, सचमुच, सचमुच; सचमुच, मैं यीशु जैसा बनना चाहता हूँ, सचमुच। आमीन।"

वह कौन सा उद्देश्य है जिसके लिए परमेश्वर ने हमें पहले से ही—यहाँ तक कि संसार की सृष्टि से भी पहले—चुन लिया था? उसका मकसद यह पक्का करना है कि यीशु मसीह सबसे पहले पैदा हुए बेटे बनें। रोमियों 8:29 पर गौर करें: "क्योंकि जिन्हें परमेश्वर ने पहले से जान लिया था, उन्हें उसने पहले से ही यह भी तय कर दिया कि वे उसके बेटे के जैसे बनें, ताकि वह बहुत से भाइयों और बहनों में सबसे पहले पैदा हुआ बेटा हो।" यीशु मसीह के सबसे पहले पैदा हुए बेटे होने के लिए, उनके छोटे भाई-बहन होने ज़रूरी हैं। ठीक वही लोग जिन्हें परमेश्वर ने पहले से चुन लिया था, यीशु के छोटे भाई-बहन हैं। हम सब यीशु के छोटे भाई-बहन हैं। जब हम सब स्वर्ग पहुँचेंगे, तो हम यीशु मसीह के साथ संगति करेंगे, और उन्हें अपना "बड़ा भाई" कहकर पुकारेंगे। इसलिए, यीशु के छोटे भाई-बहनों पर इल्ज़ाम लगाने की हिम्मत कौन करेगा? (पद 33)। यह बिल्कुल नामुमकिन है। परमेश्वर ने उन्हें पहले से ही तय कर दिया था; परमेश्वर ने दुनिया बनाने से पहले ही उन्हें चुन लिया था ताकि वे यीशु जैसे बनें और उनके भाई-बहन बनें—तो फिर, उन पर इल्ज़ाम लगाने की हिम्मत कौन करेगा? यह बिल्कुल नामुमकिन है।

फिर भी, शैतान उन लोगों का विरोध करता है जिन्हें परमेश्वर ने चुना है; वह उन पर इल्ज़ाम लगाता है, उन पर दोष लगाता है, और उन पर मुकदमा चलाता है। अगर आप जकर्याह अध्याय 3 देखें, तो आपको भविष्यवक्ता जकर्याह को दिए गए आठ दर्शनों में से चौथा दर्शन मिलेगा। इस चौथे दर्शन में, हम एक ऐसा दृश्य देखते हैं जिसमें शैतान महायाजक यहोशू के विरोध में खड़ा होता है और उस पर इल्ज़ाम लगाता है (पद 1)। शैतान ने महायाजक यहोशू पर इसलिए इल्ज़ाम लगाया क्योंकि, महायाजक होने के बावजूद, यहोशू स्वर्गदूत के सामने गंदे कपड़े पहने खड़ा था—एक ऐसे इंसान की तरह दिख रहा था जिसकी कोई उम्मीद

न हो, जैसे आग से निकाला गया कोई जला हुआ लट्ठा हो (पद 2)। इसलिए, प्रभु ने, जिसने यरूशलेम को चुना था, शैतान को सख्ती से डांटा (पद 2) और "अपने सामने खड़े लोगों को आज्ञा दी, 'इसके गंदे कपड़े उतार दो।' फिर उसने यहोशू से कहा, 'देखो, मैंने तुम्हारा पाप दूर कर दिया है, और मैं तुम्हें बढ़िया कपड़े पहनाऊँगा'" (पद 4)। क्योंकि परमेश्वर ने इस तरह यहोशू के सारे पाप माफ कर दिए थे, तो शैतान उस पर कोई इल्ज़ाम या दोष कैसे लगा सकता था? वह ऐसा बिल्कुल नहीं कर सकता था—ज़रा भी नहीं। बाइबल के लूका अध्याय 23 में, हमें एक ऐसा दृश्य मिलता है जहाँ पूरी भीड़ उठ खड़ी होती है, यीशु को खींचकर पीलातुस के सामने ले जाती है, और उन पर इल्ज़ाम लगाती है (पद 1–2)। उनके आरोप का सार यह था कि यीशु "हमारे राष्ट्र को गुमराह कर रहे हैं, हमें सीज़र को कर देने से मना कर रहे हैं, और खुद को मसीह, एक राजा होने का दावा कर रहे हैं" (पद 2)। परिणामस्वरूप, रोमन गवर्नर पीलातुस ने व्यक्तिगत रूप से यीशु से पूछताछ की, लेकिन घोषणा की, "मुझे उन पर लगाए गए आरोप का कोई आधार नहीं मिला" (पद 4); उन्होंने कहा, "मुझे इस व्यक्ति के खिलाफ आपके आरोपों का कोई आधार नहीं मिला" (पद 14), और फिर, "मुझे उनमें मृत्युदंड का कोई आधार नहीं मिला" (पद 22)—[हेरोदेस ने भी इसी तरह घोषणा की थी कि यीशु ने ऐसा कुछ भी नहीं किया था जिसके लिए "मृत्युदंड" दिया जाए (पद 15)]। फिर भी, वे ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते रहे, यह मांग करते हुए कि उन्हें क्रूस पर चढ़ाया जाए, और उनकी आवाज़ें भारी पड़ गईं (पद 23)। परिणामस्वरूप—यीशु, जो न केवल पाप-रहित थे, बल्कि "पाप को जानते भी नहीं थे" (2 कुरिन्थियों 5:21)—उन्हें उन लोगों की ओर से पाप बना दिया गया जिन्हें परमेश्वर ने पहले से जान लिया था (हम, जिनसे उन्होंने पहले से प्रेम किया था) (रोमियों 8:29) और जिन्हें उन्होंने पहले से ही ठहराया था (हम, जिन्हें उन्होंने दुनिया की रचना से पहले ही चुन लिया था) (पद 30); इस प्रकार, हमारे स्थान पर हमारे सभी पापों का बोझ उठाते हुए, उन्हें क्रूस पर चढ़ाया गया और उनकी मृत्यु हो गई। इसलिए, अपने एकलौते पुत्र, यीशु मसीह (प्रकाशितवाक्य 19:13) के रक्त-रंजित वस्त्रों—या "खून से सने हुए वस्त्रों" (समकालीन कोरियाई संस्करण)—के माध्यम से, परमेश्वर ने हमारे गंदे वस्त्रों को उतार दिया है (जकर्याह 3:3–4) और हमें श्वेत वस्त्रों (प्रकाशितवाक्य 7:13) में, या महीन मलमल में, जो श्वेत और स्वच्छ है (प्रकाशितवाक्य 19:8, 14), पहनाया है।

चूँकि परमेश्वर—जिन्होंने अपने खुद के बेटे को भी नहीं बख्शा, बल्कि हम सबके भले के लिए उसे सौंप दिया (रोम 8:32)—ने हमें पहले से जान लिया था (और हमसे प्रेम किया) (पद 29), और हमारे भाग्य को पहले से तय कर दिया था (और हमें चुन लिया था), और हमें बुलाया, और हमें धर्मी ठहराया, और हमें महिमा दी (पद 30); तो भला कौन हम पर कोई आरोप लगाने की हिम्मत कर सकता है? (पद 33)। बिल्कुल कोई नहीं! शैतान भला हम पर आरोप लगाने की हिम्मत कैसे कर सकता है, जबकि यीशु—जिन्होंने कोई पाप नहीं किया था—पर हमारी जगह आरोप लगाए गए, और वे हमारे सभी अपराधों का प्रायश्चित करने के लिए क्रूस पर मर गए; जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि हमारे सभी पाप क्षमा हो जाएँ, कि हमें उद्धार मिले, कि हम यीशु के समान बन जाएँ, और कि हम उनके भाई-बहन बन जाएँ? बिल्कुल कोई नहीं!

“यदि परमेश्वर हमारे पक्ष में है” (5)

[रोमियों 8:31-34]

कृपया रोमियों 8:33-34 के पहले भाग पर ध्यान दें: “परमेश्वर के चुने हुओं पर दोष कौन लगाएगा? परमेश्वर ही है जो उन्हें धर्मी ठहराता है। वह कौन है जो उन्हें दोषी ठहराएगा? ...” जिस उद्देश्य के लिए परमेश्वर ने हमें चुना, वह यह है कि हम उसके एकलौते पुत्र, यीशु मसीह के स्वरूप के अनुरूप बन जाएँ। कृपया रोमियों 8:29 पर ध्यान दें: “क्योंकि जिन्हें उसने पहले से जान लिया, उन्हें उसने पहले से ही ठहराया कि वे उसके पुत्र के स्वरूप के अनुरूप हों, ताकि वह बहुत से भाइयों में पहलौठा ठहरे।” उसका एकलौता पुत्र, यीशु मसीह, इस पृथ्वी पर आया, उसने अपना लहू बहाया और क्रूस पर अपने प्राण दिए; तीन दिन बाद वह फिर से जीवित हो उठा, स्वर्ग में आरोहण कर गया, और अब परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान होकर हमारे लिए मध्यस्थता कर रहा है। इस प्रकार, परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र, यीशु मसीह को महिमान्वित किया है। अतः, उसका एकलौता पुत्र, यीशु मसीह, महिमा के क्षेत्र—अर्थात् स्वर्ग के राज्य—में परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान होकर हमारी ओर से प्रार्थना कर रहा है। परमेश्वर ने हमें इस विशिष्ट उद्देश्य के साथ चुना कि हम उसके इस एकलौते पुत्र, यीशु मसीह के समान बन जाएँ। इसलिए, हम पर दोष लगाने का साहस कौन कर सकता है? बिल्कुल कोई नहीं। इसके अतिरिक्त, जिस एक और उद्देश्य के लिए परमेश्वर ने हमें चुना, वह यह सुनिश्चित करना था कि यीशु मसीह “पहलौठा” ठहरे (पद 29)। उसका एकलौता पुत्र, यीशु मसीह, पहलौठा है; और हम सब, जिन्हें उद्धार प्राप्त हुआ है, उसके छोटे भाई-बहन हैं। इसलिए, कोई भी व्यक्ति हम पर—जो यीशु मसीह के छोटे भाई-बहन हैं—दोष कैसे लगा सकता है? यह सर्वथा असंभव है। पवित्रशास्त्र हमें बताता है कि यीशु मसीह हमें अपना भाई (या छोटे भाई-बहन) कहने में तनिक भी लज्जित नहीं होता (इब्रानियों 2:10-13)। इसलिए, ऐसे लोगों पर दोष लगाने का साहस कौन कर सकता है? उन पर कभी भी दोष नहीं लगाया

जा सकता। तथापि, जैसा कि हम जकर्याह अध्याय 3 में देखते हैं, शैतान ने महायाजक यहोशू पर दोष लगाए थे। चूँकि एक महायाजक के लिए स्वच्छ वस्त्र पहनना अनिवार्य होता है, परंतु यहोशू तो मैले-कुचैले चिथड़ों में लिपटा हुआ था (पद 3), इसलिए शैतान ने उस पर दोष लगाया। उस पल, प्रभु—जिन्होंने यरूशलेम को चुना था—ने शैतान को बार-बार और सख्ती से डांटा (पद 2)। इसका कारण यह था कि, चूंकि परमेश्वर ने खुद यहोशू को चुना था, इसलिए शैतान की हिम्मत नहीं हुई कि वह उस पर आरोप लगाए; इस प्रकार, परमेश्वर ने शैतान को डांटा। तो फिर, परमेश्वर ने शैतान को इतनी सख्ती से क्यों डांटा? ऐसा इसलिए था क्योंकि परमेश्वर ने उन लोगों के पापों को पहले ही पूरी तरह से क्षमा कर दिया था जिन्हें उन्होंने चुना था। कृपया जकर्याह 3:4 देखें: "तब प्रभु ने अपने सामने खड़े लोगों से कहा, 'इसके गंदे कपड़े उतार दो।' और यहोशू से उन्होंने कहा, 'देखो, मैंने तुम्हारा पाप दूर कर दिया है, और मैं तुम्हें सुंदर वस्त्र पहनाऊंगा।'" चूंकि परमेश्वर ने उन लोगों के सभी पापों को दूर कर दिया था जिन्हें उन्होंने चुना था, तो शैतान उन पर आरोप कैसे लगा सकता था? यह बिल्कुल असंभव है। इसीलिए परमेश्वर ने शैतान को सख्ती से डांटा, और शैतान के पास पीछे हटने के अलावा कोई चारा नहीं बचा।

उत्पत्ति 2:17 में, बाइबल स्पष्ट रूप से दर्ज करती है कि परमेश्वर ने आदम को आज्ञा दी: "तुम भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल मत खाना," और आगे कहा, "क्योंकि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे, तुम निश्चित रूप से मर जाओगे" (2:17)। फिर भी, आदम और हव्वा शैतान के प्रलोभन के आगे झुक गए, परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया, और भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खा लिया। कृपया उत्पत्ति 3:6 देखें: "जब स्त्री ने देखा कि वह वृक्ष भोजन के लिए अच्छा है, कि वह देखने में मनभावन है, और बुद्धि पाने के लिए भी वांछनीय है, तो उसने उसका कुछ फल लिया और खा लिया। उसने अपने पति को भी कुछ फल दिया, जो उसके साथ था, और उसने भी उसे खा लिया।" परिणामस्वरूप, आदम और हव्वा परमेश्वर के शत्रु बन गए (रोम 5:10)। फिर भी, जब आदम और हव्वा ने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया और उनके शत्रु बन गए, तो परमेश्वर ने उन पर अपनी दया दिखाई। परमेश्वर ने आदम और हव्वा को ढूंढा (उत्पत्ति 3:8–9)। यह परमेश्वर के असीम अनुग्रह का कार्य था। उस सुसमाचार में कितना अनमोल सत्य छिपा है कि परमेश्वर उन्हें ढूंढते हुए आए और पूछा, "तुम कहाँ हो?" (पद 9)। उत्पत्ति 3:15 में, हम देखते हैं कि परमेश्वर ने अनुग्रह की एक वाचा की घोषणा की, और आदम और हव्वा को बचाने के अपने इरादे को प्रकट किया। आखिरकार,

उन्होंने यहाँ वादा किया कि यीशु मसीह उनका उद्धार करेंगे। इसीलिए यीशु ने, सलीब पर रहते हुए, घोषणा की, "यह पूरा हो गया" (यूहन्ना 19:30)। यह कितनी असीम कृपा है! इसके अलावा, उत्पत्ति 3:21 में यह दर्ज है कि परमेश्वर ने आदम और हव्वा के लिए चमड़े के वस्त्र बनाए और उन्हें पहनाए। चमड़े के वस्त्र बनाने के लिए, एक जानवर को मारना पड़ा—संभवतः एक भेड़ को। उस समय, परमेश्वर ने अभी तक जानवरों को मनुष्यों के भोजन के रूप में निर्धारित नहीं किया था, बल्कि उनके भरण-पोषण के लिए वनस्पति प्रदान की थी। इसलिए, उन्हें कपड़े प्रदान करने के लिए एक भेड़ को मारकर, परमेश्वर ने यह दिखाया कि जिस तरह इस भेड़ को मरना पड़ा, उसी तरह उन्हें भी मृत्यु का सामना करना पड़ेगा। परिणामस्वरूप, आदम अपनी मृत्यु से पहले 930 वर्षों तक जीवित रहे (उत्पत्ति 5:5)। इसके अलावा, जानवर को मारने का कार्य बलिदान चढ़ाने के उद्देश्य को पूरा करता था। इस प्रकार, वे बलिदान चढ़ाने के लिए एक भेड़ को मारते थे, और फिर उसकी खाल से कपड़े बनाकर पहनते थे। यह कार्य यीशु मसीह का प्रतीक है, जो हमारे प्रायश्चित बलिदान और हमारे मेल-मिलाप के बलिदान—दोनों के रूप में कार्य करते हैं। यह उस सच्चाई की भी झलक देता है कि परमेश्वर अपने चुने हुए लोगों को यीशु मसीह की धार्मिकता का वस्त्र पहनाएँगे। रोमियों 3:25–26 पर नज़र डालें: "परमेश्वर ने उसे उसके लहू पर विश्वास करनेवालों के लिए प्रायश्चित ठहराया, ताकि वह अपनी धार्मिकता प्रकट करे; क्योंकि उसने अपनी सहनशीलता से उन पापों को जो पहले किए गए थे, अनदेखा किया—मैं कहता हूँ, ताकि वह वर्तमान समय में अपनी धार्मिकता प्रकट करे, जिससे वह स्वयं धर्मी ठहरे, और जो यीशु पर विश्वास करता है, उसे भी धर्मी ठहरानेवाला हो।" इस तरह, परमेश्वर ने उन्हें धर्मी ठहराया जिन्हें उसने चुना—वे लोग जो यीशु मसीह में विश्वास करते हैं। रोमियों 8:30 पर नज़र डालें: "और जिन्हें उसने पहले से ठहराया, उन्हें बुलाया भी; और जिन्हें बुलाया, उन्हें धर्मी भी ठहराया; और जिन्हें धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी।" इस प्रकार परमेश्वर ने उन्हें बुलाया जिन्हें उसने पहले से ठहराया था, और उन्हें धर्मी ठहराया जिन्हें उसने बुलाया था; इस संबंध में, बाइबल पूछती है, "परमेश्वर के चुने हुओं पर कौन दोष लगाएगा?" (पद 33b–34a)। चूँकि परमेश्वर ने अपने पूर्व-प्रेम के कारण, उन लोगों को बुलाया और धर्मी ठहराया है जिन्हें उसने पहले से ही चुन लिया था (रोमियों 3:25–26; 8:30), तो भला कौन उन्हें पापी कहकर दोषी ठहराने का साहस कर सकता है? बिल्कुल कोई नहीं!

बाइबल में रोमियों 8:1 को देखें: “इसलिए अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर कोई दण्ड की आज्ञा नहीं है।” जो लोग यीशु मसीह के साथ एक हो गए हैं—जो यीशु मसीह जैसे दिखते हैं, जो उनके भाई-बहन हैं—उन्हें बिल्कुल भी किसी दण्ड का सामना नहीं करना पड़ता। रोमियों 8:2 को देखें: “क्योंकि मसीह यीशु में जीवन के आत्मा की व्यवस्था ने तुझे पाप और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया है।” क्योंकि पवित्र आत्मा ने हमें पाप और मृत्यु की व्यवस्था से मुक्त कर दिया है, तो भला हमें कौन दोषी ठहरा सकता है? बिल्कुल कोई नहीं! रोमियों 8:4 को देखें: “ताकि व्यवस्था की धार्मिक आवश्यकताएँ हममें पूरी हों, जो शरीर के अनुसार नहीं, बल्कि आत्मा के अनुसार चलते हैं।” जिनके लिए परमेश्वर ने चुनाव किया है—जिन्हें परमेश्वर ने धर्मी ठहराया है—उनके लिए व्यवस्था की सभी आवश्यकताएँ पूरी हो चुकी हैं; तो फिर, हमें कौन दोषी ठहरा सकता है? बिल्कुल कोई नहीं! रोमियों 8:14 को देखें: “क्योंकि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के सन्तान हैं।” यदि हम परमेश्वर के सन्तान हैं, तो भला हमें कैसे दोषी ठहराया जा सकता है? बिल्कुल कोई नहीं! रोमियों 8:15 को देखें: “क्योंकि तुम ने दासत्व की आत्मा नहीं पाई कि फिर डर के मारे रहो, परन्तु तुम ने लेपालकपन की आत्मा पाई है, जिससे हम ‘हे अब्बा! हे पिता!’ कहकर पुकारते हैं।” कौन हिम्मत करेगा हमें—परमेश्वर के सन्तानों को—दोषी ठहराने की, जब हम उसे पुकारते हैं, “हे अब्बा! हे पिता!”? बिल्कुल कोई नहीं! रोमियों 8:17 को देखें: “और यदि हम सन्तान हैं, तो वारिस भी हैं—अर्थात् परमेश्वर के वारिस, और मसीह के संगी-वारिस; यदि सचमुच हम उसके दुखों में सहभागी हों, ताकि हम उसकी महिमा में भी सहभागी हों।” कौन हिम्मत करेगा परमेश्वर के वारिसों को—मसीह के संगी-वारिसों को—दोषी ठहराने की? बिल्कुल कोई नहीं! रोमियों 8:30 को देखें: “और जिन्हें उसने पहले से ठहराया, उन्हें बुलाया भी; और जिन्हें बुलाया, उन्हें धर्मी भी ठहराया; और जिन्हें धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी।” क्योंकि परमेश्वर ने हमें धर्मी ठहराया है, तो कौन हिम्मत करेगा हमें दोषी ठहराने की? बिल्कुल कोई नहीं! रोमियों 8:33 के पिछले हिस्से से लेकर पद 34 के पहले हिस्से तक देखें: “...परमेश्वर ही है जो निर्दोष ठहराता है। वह कौन है जो दोषी ठहराएगा?...” परमेश्वर ही है जो निर्दोष ठहराता है। तो फिर, कौन दोषी ठहरा सकता है? बिल्कुल कोई नहीं! परमेश्वर ने न केवल हमें निर्दोष ठहराया है, बल्कि हमें महिमान्वित भी किया है (पद 30)। जकर्याह 3:5 देखें: “तब मैंने कहा, ‘इनके सिर पर एक स्वच्छ पगड़ी बाँधो।’ सो उन्होंने उसके सिर पर एक स्वच्छ पगड़ी बाँधी और उसे वस्त्र पहनाए, जबकि यहोवा का दूत वहीं खड़ा था।” भविष्यवक्ता जकर्याह ने विनती की, और यह माँगा कि महायाजक यहोशू के सिर पर एक स्वच्छ पगड़ी—एक पवित्र पगड़ी, एक महिमामयी पगड़ी—बाँधी जाए। ठीक उसी क्षण, उसके सिर पर एक स्वच्छ पगड़ी बाँधी गई, और उसे स्वच्छ वस्त्र पहनाए गए—पवित्र, महिमामयी वस्त्र। परमेश्वर ने उन्हें महिमान्वित

किया है जिन्हें उसने निर्दोष ठहराया है। इफिसियों 2:5–6 देखें: “जब हम अपने अपराधों के कारण मरे हुए थे, तब भी उसने हमें मसीह के साथ जीवित किया (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है), और हमें उसके साथ उठाया, और मसीह यीशु में स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया।” चूँकि परमेश्वर ने हमें इस प्रकार महिमान्वित किया है, तो कौन हमें दोषी ठहराने का साहस कर सकता है? बिल्कुल कोई नहीं! यह परमेश्वर का कार्य है। परमेश्वर ने यीशु मसीह को मृत्यु की शक्ति पर पूरी तरह से विजय पाने में समर्थ किया—उसे मरे हुओं में से जिलाया, उसे स्वर्ग में ऊँचा उठाया, और उसे अपने दाहिने हाथ बैठाया—ताकि हर कोई उसके सामने घुटने टेकने और उसकी आराधना करने के लिए विवश हो जाए। क्योंकि परमेश्वर ने इस रीति से कार्य किया है, इसलिए हमारे उद्धार की निश्चितता सुनिश्चित है। इसलिए, मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम सभी उद्धार का आश्वासन प्राप्त करें, दृढ़ और अडिग खड़े रहें, और प्रभु के कार्य के प्रति स्वयं को और भी अधिक लगन से समर्पित करके, जब हम अंततः उसके सामने खड़े हों, तो हम सभी उसकी सराहना प्राप्त करें।

“यदि परमेश्वर हमारे पक्ष में है” (6)

[रोमियों 8:31–34]

पिछले सप्ताह, हमने रोमियों 8:33 के पिछले भाग से लेकर पद 34 के पहले भाग तक मनन किया: “परमेश्वर ही है जो निर्दोष ठहराता है। फिर कौन है जो दोषी ठहराएगा?” कोई नहीं—बिल्कुल कोई नहीं—उस व्यक्ति को दोषी ठहरा सकता है जिसे परमेश्वर ने निर्दोष ठहराया है। यदि हम बाइबल में यूहन्ना 8:3–11 को देखें, तो हम पाते हैं कि शास्त्री और फरीसी एक ऐसी स्त्री को घसीटकर लाए जो व्यभिचार करते हुए पकड़ी गई थी; उन्होंने उसे बीच में खड़ा किया (पद 3), और यीशु से कहा: “हे गुरु, यह स्त्री व्यभिचार करते हुए रंगे हाथों पकड़ी गई है। मूसा ने व्यवस्था में हमें आज्ञा दी है कि ऐसी स्त्रियों को पत्थरवाह किया जाए। अब आप क्या कहते हैं?” (पद 4–5)। उन्होंने यह प्रश्न यीशु को परखने के लिए और उन पर दोष लगाने का कोई बहाना ढूँढ़ने के लिए पूछा था (पद 6)। अंत में, यीशु ने उस स्त्री से कहा: “हे स्त्री, वे कहाँ हैं? क्या किसी ने तुझे दोषी नहीं ठहराया? ... मैं भी तुझे दोषी नहीं ठहराता; जा, और अब से फिर पाप न करना” (पद 10–11)। चूँकि यीशु ने स्वयं उसे दोषी नहीं ठहराया, तो फिर कौन उस स्त्री पर दोष लगाने और उसे दोषी ठहराने का साहस करेगा? बिल्कुल कोई नहीं! “परमेश्वर ही है जो निर्दोष ठहराता है—फिर कौन है जो दोषी ठहराएगा?” (रोमियों 8:33b–34a)। बिल्कुल कोई नहीं!

रोमियों 8:34 को देखिए: “... मसीह यीशु ही है जो मर गया—और उससे भी बढ़कर, जो फिर से जीवित किया गया ...।” ये शब्द यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के विषय में बताते हैं। यह सुसमाचारों का सुसमाचार है—सुसमाचार के संदेश का मूल-तत्व। केवल इसी सुसमाचार पर विश्वास करना उद्धार पाने के लिए पर्याप्त से भी अधिक है। आज, हम विशेष रूप से यीशु की मृत्यु पर मनन करेंगे; अगले सप्ताह, हम अपना मनन उनके पुनरुत्थान की ओर मोड़ेंगे। कृपया बाइबल में 1 कुरिन्थियों 15:2–4 निकालिए: “इसी सुसमाचार के

द्वारा तुम्हारा उद्धार होता है, यदि तुम उस वचन पर दृढ़ता से बने रहते हो जो मैंने तुम्हें सुनाया था—ऐसा न हो कि तुमने व्यर्थ ही विश्वास किया हो। क्योंकि जो मैंने ग्रहण किया था, वही मैंने तुम्हें सबसे अधिक महत्व की बात के रूप में सौंप दिया: कि मसीह हमारे पापों के लिए पवित्रशास्त्र के अनुसार मर गया, कि वह गाड़ा गया, और कि वह पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन फिर से जीवित किया गया।" यहाँ, "वह वचन जिसका मैंने प्रचार किया" का अर्थ है यीशु मसीह का सुसमाचार, जैसा कि प्रेरित पौलुस ने घोषित किया था। केवल यीशु मसीह के इस सुसमाचार में विश्वास ही उद्धार दिलाता है (पद 2)। प्रेरित पौलुस ने इस सुसमाचार को पद 3 और 4 में इस प्रकार व्यक्त किया है: "कि मसीह हमारे पापों के लिए शास्त्रों के अनुसार मर गया, कि उसे दफनाया गया, और कि वह शास्त्रों के अनुसार तीसरे दिन फिर जी उठा।" 1 कुरिन्थियों 15:3–4 का यह अंश—जो यीशु मसीह के बारे में बताता है, जो *शास्त्रों के अनुसार* मरा और फिर जी उठा—आज के पाठ, रोमियों 8:34 से मेल खाता है; यह पाठ मसीह यीशु को उस हस्ती के रूप में संदर्भित करता है, जो न केवल मरा, बल्कि फिर जी भी उठा। यहाँ, वाक्यांश "शास्त्रों के अनुसार" (जो दो बार आया है) का संदर्भ पुराने नियम से है। दूसरे शब्दों में, इसका अर्थ यह है कि यीशु मसीह नए नियम के युग में ठीक उसी तरह मरा और फिर जी उठा, जैसा कि पुराने नियम के शास्त्रों में उसके विषय में भविष्यवाणी की गई थी।

सबसे पहले, मैं यीशु मसीह की मृत्यु के संबंध में पुराने नियम में पाई जाने वाली भविष्यवाणियों पर विचार करना चाहूँगा।

कृपया व्यवस्थाविवरण 21:23 देखें: "तुम उसकी लाश को रात भर पेड़ पर लटकी न रहने देना; बल्कि उसी दिन उसे दफना देना, ताकि तुम उस देश को अशुद्ध न करो जिसे तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें विरासत के रूप में दे रहा है, क्योंकि जो कोई पेड़ पर लटकाया जाता है, वह परमेश्वर का शापित होता है।" यह भविष्यसूचक अंश यह भविष्यवाणी करता है कि यीशु मसीह को एक पेड़ पर—अर्थात्, क्रूस पर—लटकाया जाएगा। इस भविष्यवाणी का एक विशेष रूप से महत्वपूर्ण बिंदु यह तथ्य है कि जो कोई भी पेड़ (क्रूस) पर लटकाया जाता है, वह परमेश्वर का शापित होता है। कृपया मत्ती 27:35 और 38 देखें: "उसे क्रूस पर चढ़ाने के बाद, उन्होंने उसके कपड़े आपस में बाँटने के लिए चिट्ठियाँ डालीं... उस समय, यीशु के साथ दो डाकुओं को भी क्रूस पर चढ़ाया गया—एक उसके दाहिनी ओर और दूसरा उसके बाईं ओर।" यह अंश पुराने नियम

के व्यवस्थाविवरण 21:23 में पाई गई भविष्यवाणी की पूर्ति को दर्शाता है—कि यीशु मसीह (मसीहा) एक पेड़ पर, विशेष रूप से क्रूस पर, अपनी जान देगा। व्यवस्थाविवरण 21:23 के संबंध में यहूदी लोगों के दृष्टिकोण से, यह तथ्य कि यीशु मसीह एक लकड़ी के क्रूस पर मरा, इस बात का संकेत था कि वह परमेश्वर का शापित था। दूसरे शब्दों में, यीशु के समय के यहूदियों ने जिस कारण से ज़ोर-शोर से यह माँग की थी कि उन्हें क्रूस पर चढ़ाया जाए (यूहन्ना 19:6), वह यह था कि उन्होंने उन पर ईशनिंदा (मत्ती 26:65; तुलना करें यूहन्ना 10:33, 36) और मंदिर को अपवित्र करने के पाप का आरोप लगाया था (यूहन्ना 2:19)। गलातियों 3:13 पर विचार करें: "मसीह ने हमारे लिए श्राप बनकर हमें व्यवस्था के श्राप से छुड़ाया, क्योंकि यह लिखा है: 'श्रापित है हर वह व्यक्ति जो पेड़ पर लटकाया जाता है।'"

भजन संहिता 22:16 पर विचार करें: "कुत्ते मुझे घेरे हुए हैं, दुष्टों का एक झुंड मुझे घेरे हुए है; वे मेरे हाथों और पैरों को छेदते हैं।" इस भविष्यवाणी में यह पहले ही बता दिया गया था कि क्रूस पर रहते हुए यीशु मसीह के हाथों और पैरों में कीलें ठोकी जाएँगी। मरकुस 15:24–25 पर विचार करें: "और उन्होंने उन्हें क्रूस पर चढ़ाया। उनके कपड़े आपस में बाँटते हुए, उन्होंने यह देखने के लिए पर्चियाँ डालीं कि किसे क्या मिलेगा। यह तीसरा पहर था जब उन्होंने उन्हें क्रूस पर चढ़ाया।" यीशु को वास्तव में क्रूस पर चढ़ाया गया था, ठीक वैसे ही जैसा कि भजन संहिता 22:16 में भविष्यवाणी की गई थी। हमारे अपराधों के कारण यीशु को छेदा गया था (यशायाह 53:5)।

बाइबल में ज़कर्याह 12:10 देखें: "और मैं दाऊद के घराने और यरूशलेम के निवासियों पर अनुग्रह और दया की आत्मा उंडेलूँगा, ताकि जब वे उसे देखें जिसे उन्होंने बेधा है, तो वे उसके लिए शोक मनाएँ, जैसा कोई अपने इकलौते बेटे के लिए शोक मनाता है, और उसके लिए फूट-फूटकर रोएँ, जैसा कोई अपने पहलौठे बेटे के लिए रोता है।" इस भविष्यसूचक अंश ने पहले ही बता दिया था कि यीशु मसीह के पहलू में बेधा जाएगा। बाइबल में यूहन्ना 19:34 देखें: "परन्तु सैनिकों में से एक ने भाले से उसके पहलू में बेधा, और तुरन्त ही उसमें से लहू और पानी निकला।" यह वचन बताता है कि, ज़कर्याह 12:10 की भविष्यवाणी को पूरा करते हुए, एक सैनिक ने भाले से यीशु के पहलू में बेधा।

बाइबल में भजन संहिता 22:7 देखें: “जितने मुझे देखते हैं, वे मेरा ठट्ठा करते हैं; वे मुझ पर होंठ बिचकाते हैं; वे सिर हिलाते हैं।” इस भविष्यसूचक अंश ने पहले ही बता दिया था कि लोग यीशु मसीह का अपमान करेंगे, तिरस्कार से अपने होंठ बिचकाएँगे, और जब वह क्रूस पर होंगे, तब वे उनके सामने सिर हिलाएँगे। बाइबल में मत्ती 27:39–42 देखें: “और जो लोग वहाँ से गुज़र रहे थे, उन्होंने उसका उपहास किया, और सिर हिलाते हुए कहा, ‘हे मन्दिर को ढाने और तीन दिन में फिर से बनाने वाले, अपने आप को बचा! यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो क्रूस पर से नीचे उतर आ।’ इसी तरह प्रधान याजकों ने भी शास्त्रियों और पुरनियों के साथ मिलकर उसका ठट्ठा किया, और कहा, ‘इसने दूसरों को बचाया; पर अपने आप को नहीं बचा सकता। यह इस्राएल का राजा है; अब यह क्रूस पर से नीचे उतर आए, तो हम इस पर विश्वास करेंगे।’” यह अंश इस बात की पुष्टि करता है कि भजन संहिता 22:7 में पाई जाने वाली भविष्यवाणी पूरी हुई। बाइबल में भजन संहिता 22:1 देखें: “हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया? तू मेरी सहायता करने से और मेरी कराहट के शब्दों से इतनी दूर क्यों है?” इस भविष्यसूचक अंश ने पहले ही बता दिया था कि यीशु मसीह को छोड़ दिया जाएगा। बाइबल में मत्ती 27:46 को देखें: “और लगभग नौवें घंटे यीशु ने ऊँची आवाज़ में पुकारा, ‘एली, एली, लामा सबक्तनी?’ यानी, ‘हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?’” यह वचन बताता है कि यीशु मसीह—परमेश्वर के इकलौते पुत्र—को सचमुच परमेश्वर पिता ने छोड़ दिया था, ठीक वैसे ही जैसा भजन संहिता 22:1 में भविष्यवाणी की गई थी।

बाइबल में यशायाह 53:8 को देखें: “उसे कैद और न्याय से ले जाया गया, और उसकी पीढ़ी के बारे में कौन बताएगा? क्योंकि उसे जीवितों की भूमि से काट डाला गया; मेरे लोगों के पापों के कारण उसे मारा गया।” यहाँ, “जीवितों की भूमि से काट डाला गया” वाक्यांश उसकी मृत्यु को दर्शाता है। इस भविष्यवाणी वाले अंश ने पहले ही बता दिया था कि यीशु मसीह (मसीहा) की मृत्यु होगी। बाइबल में यूहन्ना 19:30 को देखें: “इसलिए जब यीशु ने वह खट्टी दाखमधु पी ली, तो उसने कहा, ‘पूरा हुआ!’ और अपना सिर झुकाकर उसने अपने प्राण त्याग दिए।” यह वचन इस बात की पुष्टि करता है कि यीशु मसीह क्रूस पर मर गए, जो यशायाह 53:8 में पाई गई भविष्यवाणी की पूर्ति थी।

बाइबल में भजन संहिता 34:20 को देखें: “वह उसकी सारी हड्डियों की रक्षा करता है; उनमें से एक भी नहीं टूटती।” इस भविष्यवाणी वाले अंश ने पहले ही बता दिया था कि जब यीशु मसीह क्रूस पर मरेंगे, तो उनकी कोई भी हड्डी नहीं टूटेगी। कृपया बाइबल में यूहन्ना 19:36 को देखें: “क्योंकि ये बातें इसलिए हुईं ताकि पवित्रशास्त्र का यह वचन पूरा हो: ‘उसकी कोई भी हड्डी नहीं टूटेगी।’” यह वचन संकेत देता है कि भजन संहिता 34:20 में पाया गया भविष्यवाणी वाला वचन पूरा हो गया है।

इसके बाद, मैं पुराने नियम में यीशु मसीह की मृत्यु के संबंध में की गई भविष्यवाणियों पर विचार करना चाहूँगा—विशेष रूप से, उन भविष्यवाणियों पर जिन्होंने पहले ही बता दिया था कि वह हमारे पापों के लिए मरेंगे और उन्हें दफनाया जाएगा। (1) यह वह भविष्यवाणी है जो बताती है कि यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मरेंगे (1 कुरिन्थियों 15:3):

कृपया बाइबल में यशायाह 53:5–6 देखें: “परन्तु वह हमारे अपराधों के कारण छेदा गया, और हमारे अधर्मों के कारण कुचला गया; हमारी शान्ति के लिए ताड़ना उस पर पड़ी, और उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो गए। हम सब भेड़ों के समान भटक गए थे; हम में से हर एक अपने-अपने मार्ग पर चला गया था; और यहोवा ने हम सब का अधर्म उसी पर लाद दिया।” यह भविष्यवाणी घोषित करती है कि यीशु को छेदे जाने, कुचले जाने और कोड़े मारे जाने का कारण “हमारे अधर्म” थे। इसके अलावा, यह भविष्यवाणी यह भी बताती है कि परमेश्वर ने हम सब का अधर्म यीशु मसीह पर लाद दिया।

(2) यह उस भविष्यवाणी वाले वचन को दर्शाता है कि यीशु मसीह को दफनाया जाएगा (1 कुरिन्थियों 15:4):

कृपया बाइबल में यशायाह 53:9 देखें: “और उन्होंने उसकी कब्र दुष्टों के साथ बनाई—लेकिन उसकी मृत्यु के समय वह धनवानों के साथ था, क्योंकि उसने कोई हिंसा नहीं की थी, और न ही उसके मुँह में कोई छल था।” इस भविष्यवाणी वाले अंश ने पहले ही बता दिया था कि, यीशु मसीह की मृत्यु के बाद, उसकी कब्र धनवानों के साथ होगी। कृपया बाइबल में मत्ती 27:57–60 देखें: “अब जब शाम हो गई थी, तो अरिमतिया से यूसुफ नाम का एक धनवान व्यक्ति आया, जो स्वयं भी यीशु का शिष्य बन गया था। यह व्यक्ति पीलातुस के पास गया और यीशु

का शरीर माँगा। तब पीलातुस ने आज्ञा दी कि शरीर उसे दे दिया जाए। जब यूसुफ ने शरीर ले लिया, तो उसने उसे एक साफ मलमल के कपड़े में लपेटा, और उसे अपनी ही नई कब्र में रख दिया, जिसे उसने चट्टान में से खुदवाकर बनवाया था; और उसने कब्र के द्वार पर एक बड़ा पत्थर लुढ़का दिया, और चला गया।" यह अंश प्रकट करता है कि, यशायाह 53:9 की भविष्यवाणी के अनुसार, यीशु का शरीर धनवान व्यक्ति यूसुफ की नई कब्र में रखा गया था, और इस प्रकार उसे धनवानों के साथ विश्राम दिया गया।

इस प्रकार, यीशु मसीह हमारे लिए मरा और उसे दफनाया गया, ठीक जैसा कि पवित्रशास्त्र ने पहले ही बता दिया था। यीशु की मृत्यु हमारी ओर से एक प्रतिस्थापनी मृत्यु थी, और हम भी, यीशु के साथ ही मर गए। कृपया बाइबल में 2 कुरिन्थियों 5:14 देखें: "क्योंकि मसीह का प्रेम हमें विवश करता है, क्योंकि हम इस प्रकार विचार करते हैं: कि यदि एक सब के लिए मरा, तो सब मर गए।" चूंकि वह एक—अर्थात् यीशु मसीह—सब लोगों की ओर से मरा, इसलिए यह निष्कर्ष निकलता है कि सब लोग मर गए हैं। कृपया बाइबल में रोमियों 6:6 देखें: "यह जानते हुए कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर नष्ट हो जाए, और हम अब पाप के दास न रहें।" कृपया बाइबल में गलातियों 2:20 देखें: "मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ; अब मैं जीवित नहीं रहा, बल्कि मसीह मुझ में जीवित है; और अब जो जीवन मैं शरीर में जीता हूँ, वह परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास द्वारा जीता हूँ, जिसने मुझसे प्रेम किया और मेरे लिए अपने आप को दे दिया।" क्योंकि यीशु मसीह पवित्रशास्त्र के अनुसार हमारे पापों के लिए मर गए (1 कुरिन्थियों 15:3), इसलिए हमें पापों की क्षमा और छुटकारा प्राप्त हुआ है।

“अगर परमेश्वर हमारे साथ है” (7)

[रोमियों 8:31–34]

कृपया रोमियों 8:34 के पिछले हिस्से को देखें: “...मसीह यीशु, जो मर गए—और उससे भी बढ़कर, जो फिर से जीवित हो उठे...।” यह अंश यीशु के पुनरुत्थान के बारे में बताता है। 1 कुरिन्थियों 15:4 का पिछला हिस्सा भी यीशु के पुनरुत्थान के बारे में बताता है: “...कि वह पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन फिर से जीवित हो उठे।” बाइबल में यीशु के पुनरुत्थान के बारे में विस्तार से बताया गया है। कृपया भजन संहिता 16:10–11 को देखें (*The Bible in Modern English* से): “क्योंकि तू मुझे कब्र में नहीं छोड़ेगा, न ही तू अपने पवित्र जन को सड़ते हुए देखने देगा। तूने मुझे जीवन का मार्ग दिखाया है; तेरी उपस्थिति में आनंद की पूर्णता है, और तेरे दाहिने हाथ में अनंत सुख हैं!” यह अंश यीशु मसीह के पुनरुत्थान के बारे में एक भविष्यवाणी है; सचमुच, परमेश्वर ने यीशु मसीह को कब्र में नहीं छोड़ा। जबकि 1 कुरिन्थियों 15:4 का पिछला हिस्सा कहता है कि यीशु मसीह “पवित्रशास्त्र के अनुसार” तीसरे दिन फिर से जीवित हो उठे, बाइबल में कोई ऐसा विशिष्ट भविष्यसूचक अंश ढूँढ़ना जो स्पष्ट रूप से यीशु मसीह के “तीसरे दिन” पुनरुत्थान की भविष्यवाणी करता हो, कोई आसान काम नहीं है। मुख्य रूप से उत्पत्ति 22:4 के इस वचन के आधार पर—“तीसरे दिन अब्राहम ने ऊपर देखा और दूर से उस जगह को देखा”—पास्टर आर्थर पिंक ने उस भविष्यवाणी को पहचानने की कोशिश की, जिसके अनुसार यीशु मसीह मरे, दफनाए गए, और पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन फिर से जीवित हो उठे (1 कुरि. 15:3–4)। उन्होंने इस भविष्यवाणी को उस वृत्तांत के भीतर ढूँढ़ा, जहाँ परमेश्वर ने अब्राहम को बुलाकर और यह आज्ञा देकर उसकी परीक्षा ली: “अपने बेटे को, अपने इकलौते बेटे को—जिससे तू प्यार करता है—इसहाक को ले, और मोरिय्याह देश में जा। वहाँ उसे एक पहाड़ पर होमबलि के रूप में चढ़ा दे, जो मैं तुझे दिखाऊँगा” (वचन

2)। कृपया इब्रानियों 11:19 को देखें: “उसने (अब्राहम ने) यह तर्क किया कि परमेश्वर मरे हुओं को भी जीवित कर सकता है, और एक लाक्षणिक अर्थ में, उसने उसे मृत्यु से वापस पा लिया।” कृपया मत्ती 12:38–40 देखें: “तब कुछ शास्त्री और फरीसियों ने उससे कहा, ‘हे गुरु, हम तुझसे एक चिन्ह देखना चाहते हैं।’ उसने उत्तर दिया, ‘एक दुष्ट और व्यभिचारी पीढ़ी चिन्ह की मांग करती है! लेकिन उसे भविष्यवक्ता योना के चिन्ह के अलावा कोई चिन्ह नहीं दिया जाएगा। क्योंकि जैसे योना तीन दिन और तीन रात एक विशाल मछली के पेट में रहा, वैसे ही मनुष्य का पुत्र भी तीन दिन और तीन रात पृथ्वी के हृदय में रहेगा।’” उन शास्त्रियों और फरीसियों से, जो एक चिन्ह देखने की मांग कर रहे थे, यीशु ने कहा कि उन्हें भविष्यवक्ता योना के चिन्ह के अलावा कोई अन्य चिन्ह नहीं दिया जाएगा; उसने घोषणा की, “ठीक वैसे ही जैसे योना तीन दिन और तीन रात एक विशाल मछली के पेट में रहा, वैसे ही मैं स्वयं—मनुष्य का पुत्र—तीन दिन और तीन रात पृथ्वी के हृदय में रहूंगा।” कृपया योना 1:17 और 2:10 देखें: “अब प्रभु ने योना को निगलने के लिए एक विशाल मछली का प्रबंध किया, और योना तीन दिन और तीन रात मछली के भीतर रहा... और प्रभु ने मछली को आज्ञा दी, और उसने योना को सूखी भूमि पर उगल दिया।”

अनेक अवसरों पर, यीशु ने भविष्यवाणी की (घोषणा की) कि वह दुख उठाएगा, मरेगा, और तीसरे दिन फिर से जीवित हो उठेगा। कृपया मत्ती 16:21 देखें: “उस समय से यीशु ने अपने शिष्यों को समझाना शुरू किया कि उसे यरूशलेम जाना होगा और प्राचीनों, मुख्य याजकों और व्यवस्था के शिक्षकों के हाथों बहुत सी बातें सहनी होंगी, और यह कि उसे मार डाला जाएगा और तीसरे दिन फिर से जीवित किया जाएगा।” बाइबल में मत्ती 17:23 देखें: “उसे मार डाला जाएगा, और तीसरे दिन उसे फिर से जीवित किया जाएगा।” शिष्य शोक से भर गए। मत्ती 20:19 देखें: “वे उसे अन्यजातियों के हाथों सौंप देंगे ताकि उसका उपहास किया जाए, उसे कोड़े मारे जाएं और उसे क्रूस पर चढ़ाया जाए। तीसरे दिन उसे फिर से जीवित किया जाएगा।” इस भविष्यसूचक वचन के अनुसार, यीशु क्रूस पर मरा और गुड फ्राइडे को दफनाया गया; वह शनिवार को कब्र में रहा और रविवार की भोर में—तीसरे दिन—फिर से जीवित हो उठा। तीन दिन बाद जी उठने के बाद, यीशु एम्माउस जा रहे दो शिष्यों के साथ-साथ चले, फिर भी उन दोनों शिष्यों को यह एहसास नहीं हुआ कि उनके साथ चलने वाला व्यक्ति जी उठा हुआ यीशु ही है (लूका 24:13–16)। उन दोनों शिष्यों ने यीशु से कहा: “हमारे मुख्य याजकों और शासकों ने उसे

मृत्युदंड देने के लिए सौंप दिया, और उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ा दिया। लेकिन हमें आशा थी कि वही वह व्यक्ति है जो इस्राएल का उद्धार करने वाला था। और तो और, यह सब हुए आज तीसरा दिन है। इसके अलावा, हमारी कुछ स्त्रियों ने हमें चकित कर दिया। वे भोर के समय कब्र पर गईं, लेकिन उन्हें उसका शरीर नहीं मिला। वे आईं और हमें बताया कि उन्होंने स्वर्गदूतों का एक दर्शन देखा, जिन्होंने कहा कि वह जीवित है" (पद 20–23)। इस बात से अनजान कि उनके साथ चलने वाला व्यक्ति जी उठा हुआ यीशु ही है, उन्होंने इस तथ्य की गवाही दी कि यीशु तीन दिन बाद कब्र से जीवित लौट आए थे—यानी, जी उठे थे। फिर, मूसा और सभी भविष्यवक्ताओं से शुरू करते हुए, यीशु ने उन्हें विस्तार से समझाया कि सभी धर्मग्रंथों में उनके बारे में क्या लिखा गया था (पद 27)। दूसरे शब्दों में, यीशु ने उन दोनों शिष्यों को—मूसा की व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं से शुरू करते हुए—धर्मग्रंथों में पाई जाने वाली हर वह बात समझाई जो उनसे संबंधित थी (विशेष रूप से, उनके दुख, मृत्यु और पुनरुत्थान)। हालाँकि, किसी ने भी वास्तव में यीशु को कब्र से जी उठते हुए नहीं देखा। इसके अलावा, आदम के समय से लेकर आज तक, कोई भी इंसान इस तरह से कभी भी पुनर्जीवित नहीं हुआ है (लाज़र का मृतकों में से जी उठना यीशु के पुनरुत्थान से मौलिक रूप से भिन्न है; जहाँ यीशु कब्र से जी उठे, स्वर्गारोहण किया, और अब परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान हैं, वहीं लाज़र को केवल कुछ समय के लिए जीवित किया गया था और अंततः वह फिर से मर गया)। धर्मग्रंथों में ऐसे व्यक्तियों के स्वर्गारोहण के उदाहरण मिलते हैं (जैसे हनोक और एलिय्याह); फिर भी, किसी ने भी—बिल्कुल किसी ने भी नहीं—कभी भी उस तरह से मृतकों में से पुनरुत्थान नहीं पाया जैसा यीशु ने पाया।

जी उठे यीशु ने अपने पुनरुत्थान के अनेक प्रमाण दिए। कृपया बाइबल में प्रेरितों के काम 1:3 देखें: "अपने दुख उठाने के बाद, उन्होंने उन्हें अनेक ठोस प्रमाणों के साथ स्वयं को जीवित दिखाया। वे चालीस दिनों तक उन्हें दिखाई देते रहे और परमेश्वर के राज्य के विषय में बातें करते रहे।" कृपया 1 कुरिन्थियों 15:5–8 देखें: "वे कैफ़ा को दिखाई दिए, और फिर उन बारह को। उसके बाद, वे एक ही समय में पाँच सौ से अधिक भाइयों को दिखाई दिए—जिनमें से अधिकांश अभी भी जीवित हैं, यद्यपि कुछ सो गए हैं। फिर वे याकूब को दिखाई दिए, फिर सभी प्रेरितों को, और सबसे अंत में वे मुझे भी दिखाई दिए, मानो मैं कोई असमय जन्मा हुआ शिशु हूँ।" उन चालीस दिनों के दौरान जब जी उठे यीशु पृथ्वी पर रहे, उन्होंने अनेक बार दर्शन दिए (उदाहरण के लिए, वे सबसे पहले मरियम मगदलीनी को दिखाई दिए, हालाँकि इसका उल्लेख 1 कुरिन्थियों 15:5–8 में नहीं है), जिनमें से केवल

छह का विशेष रूप से उल्लेख किया गया है: (1) वे "कैफ़ा" (पतरस) को दिखाई दिए। पतरस ने जी उठे यीशु को अपनी इन्हीं आँखों से पृथ्वी पर कम से कम पाँच बार देखा। इसलिए, यीशु का पुनरुत्थान केवल एक भ्रम मात्र नहीं था। (2) वे उन बारह शिष्यों को दिखाई दिए। (3) वे पाँच सौ भाइयों को दिखाई दिए। (4) वे याकूब को दिखाई दिए, जो यीशु के अपने भाई थे; याकूब ने यीशु पर तभी विश्वास किया जब वे पुनरुत्थान के बाद उन्हें दिखाई दिए, और बाद में वे यरूशलेम की कलीसिया में एक एल्डर (प्राचीन) बन गए। (5) वे सभी प्रेरितों को दिखाई दिए। (6) वे प्रेरित पौलुस को दिखाई दिए। दमिश्क के मार्ग पर, प्रेरित पौलुस ने जी उठे यीशु के दर्शन किए—वही यीशु जो स्वर्ग पर चढ़ गए थे और परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान थे।

यीशु फिर से जीवित हो उठे! यीशु जी उठे हैं! यदि हम यीशु पर विश्वास करते हैं—जो पवित्रशास्त्र के अनुसार मरे, दफनाए गए, और पवित्रशास्त्र के अनुसार ही तीसरे दिन फिर से जी उठे—तो हमें अपने समस्त पापों की क्षमा प्राप्त होती है, हम धर्मी ठहराए जाते हैं, और यीशु के पुनरागमन के दिन हम भी शारीरिक पुनरुत्थान का अनुभव करेंगे। कृपया 1 कुरिन्थियों 15:20 और 23 देखें: "परन्तु अब मसीह मरे हुओं में से जी उठा है, और जो सो गए हैं, उनके लिए पहला फल बन गया है... परन्तु हर एक अपनी-अपनी बारी से: मसीह, पहला फल; उसके बाद वे जो उसके आगमन पर मसीह के हैं।" जो लोग यीशु मसीह के हैं—जो सो गए लोगों के लिए पहला फल बने—वे सब तब जी उठेंगे जब यीशु वापस आएंगे। कृपया 1 कुरिन्थियों 15:52 देखें: "क्योंकि तुरही बजेगी, और मरे हुए अविनाशी होकर जी उठेंगे, और हम बदल जाएंगे।" जब आखिरी तुरही बजेगी, तो मरे हुए विश्वासी अविनाशी शरीरों के साथ जी उठेंगे, और जो विश्वासी उस समय भी जीवित होंगे, वे अचानक बदल जाएंगे। कृपया 1 थिस्सलोनिकियों 4:14 (मॉडर्न पीपल्स बाइबल) देखें: "हम विश्वास करते हैं कि यीशु मरा और फिर जी उठा। इसलिए, हम यह भी विश्वास करते हैं कि परमेश्वर उन लोगों को अपने साथ लाएगा जो यीशु पर विश्वास करते हुए मरे हैं।" परमेश्वर उन विश्वासियों की आत्माओं को अपने साथ लाएगा जो विश्वास में मरे। जो लोग मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे; फिर हम जो जीवित हैं और बचे हुए हैं, उनके साथ बादलों में उठा लिए जाएंगे ताकि हवा में प्रभु से मिल सकें, और इस प्रकार हम हमेशा प्रभु के साथ रहेंगे। इसलिए, इस भरोसे को मज़बूती से थामे हुए, हमें स्थिर और अडिग रहना चाहिए, और हमेशा प्रभु के काम में बढ़ते रहना चाहिए (1 कुरिन्थियों 15:58)।

“यदि परमेश्वर हमारे पक्ष में है” (8)

[रोमियों 8:31–34]

कृपया रोमियों 8:34 देखें: “...मसीह यीशु ही वह है जो मर गया—और उससे भी बढ़कर, जो फिर से जीवित हो उठा—जो परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठा है और जो हमारे लिए मध्यस्थता भी कर रहा है।” यहाँ, वाक्यांश “जो मर गया” यीशु मसीह की मृत्यु को संदर्भित करता है (पद 34)। शास्त्रों के अनुसार, यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मर गया (1 कुरिन्थियों 15:3)। इसके अलावा, वाक्यांश “जो फिर से जीवित हो उठा” यीशु मसीह के पुनरुत्थान को संदर्भित करता है (रोमियों 8:34)। शास्त्रों के अनुसार, यीशु मसीह तीसरे दिन फिर से जीवित हो उठा (1 कुरिन्थियों 15:4)। यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान एक सिक्के के दो पहलुओं की तरह हैं। दूसरे शब्दों में, यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान अविभाज्य हैं। यीशु की मृत्यु के बिना, कोई पुनरुत्थान नहीं है; और यीशु के पुनरुत्थान के बिना, कोई मृत्यु नहीं है। जिस तरह हम यीशु मसीह की मृत्यु पर विश्वास करते हैं, उसके लिए धन्यवाद देते हैं, उसकी स्तुति करते हैं, और उसकी गवाही देते हैं, उसी तरह हमें उसके पुनरुत्थान पर भी विश्वास करना चाहिए, उसके लिए धन्यवाद देना चाहिए, उसकी स्तुति करनी चाहिए, और उसकी गवाही देनी चाहिए। इसका कारण यह है कि यीशु मसीह न केवल मरा, बल्कि वह फिर से जीवित भी हो उठा। वास्तव में, यही सुसमाचार का मूल-तत्व है।

मसीह यीशु—जो शास्त्रों के अनुसार मरा और शास्त्रों के अनुसार फिर से जीवित हो उठा (रोमियों 8:34)—परमेश्वर का पुत्र भी है और मनुष्य का पुत्र भी। दूसरे शब्दों में, यीशु मसीह पूरी तरह से परमेश्वर भी है और पूरी तरह से मनुष्य भी। इसलिए, यीशु मसीह परमेश्वर और मानवता के बीच मध्यस्थ बन गया। 1 तीमुथियुस 2:5 देखें: “क्योंकि एक ही परमेश्वर है, और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच एक ही मध्यस्थ है, अर्थात् मनुष्य

मसीह यीशु।" यीशु मसीह के द्वारा, जो हमारा मध्यस्थ बना, परमेश्वर ने हमें अपने साथ मिला लिया है (2 कुरिन्थियों 5:18)। इसलिए, हमें उद्धार केवल यीशु मसीह के द्वारा ही प्राप्त होता है। प्रेरितों के काम 4:12 देखें: "उद्धार किसी और में नहीं है, क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों को कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया है जिसके द्वारा हमारा उद्धार हो सके।" हम परमेश्वर पिता के पास केवल यीशु मसीह के द्वारा ही पहुँच सकते हैं। यूहन्ना 14:6 पर ध्यान दें: "यीशु ने उत्तर दिया, 'मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ। मेरे द्वारा ही कोई पिता के पास पहुँच सकता है, अन्यथा नहीं।'"

यीशु मसीह—जो पवित्रशास्त्र के अनुसार मरे और फिर जी उठे—स्वर्ग में उठाए जाने (वे स्वर्गारोहण कर गए) से पहले, अपने पुनरुत्थान की गवाही देते हुए, चालीस दिनों तक इस पृथ्वी पर रहे (प्रेरितों के काम 1:3, 9)। इसके अलावा, यीशु मसीह परमेश्वर के दाहिने हाथ पर—या दाहिने हाथ की ओर—विराजमान हैं। इस प्रकार, रोमियों 8:34 में, प्रेरित पौलुस घोषणा करते हैं, "वही है जो परमेश्वर के दाहिने हाथ पर है।" पवित्रशास्त्र इस तथ्य की गवाही देते हैं कि यीशु मसीह परमेश्वर के दाहिने हाथ पर—या दाहिने हाथ की ओर—विराजमान हैं। इब्रानियों 1:3 पर ध्यान दें: "पुत्र परमेश्वर की महिमा का तेज और उसके स्वरूप का ठीक-ठीक प्रतिरूप है, और अपने सामर्थ्य भरे वचन से सब वस्तुओं को सम्भाले रहता है। पापों के शुद्धिकरण का प्रबन्ध करने के बाद, वह स्वर्ग में परम-महिमामय के दाहिने हाथ जा बैठा।" इब्रानियों 8:1 पर ध्यान दें: "अब हमारी कही हुई बातों का सारांश यह है: हमारा एक ऐसा महायाजक है, जो स्वर्गों में परम-महिमामय के सिंहासन के दाहिने हाथ विराजमान है।" कुलुस्सियों 3:1 पर ध्यान दें: "अतः यदि तुम मसीह के साथ जिलाए गए हो, तो ऊपर की वस्तुओं की खोज में रहो, जहाँ मसीह है, और परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान है।" यहाँ, "परमेश्वर के दाहिने हाथ" वाक्यांश एक लाक्षणिक भाषा है; इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर का दाहिना हाथ—या परमेश्वर का दाहिना पक्ष—अधिकार या सामर्थ्य का प्रतिनिधित्व करता है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर ने यीशु मसीह को अधिकार और सामर्थ्य प्रदान किया है—उसे जो पवित्रशास्त्र के अनुसार मरा, पवित्रशास्त्र के अनुसार फिर जी उठा, स्वर्गारोहण कर गया, और अब परमेश्वर के दाहिने हाथ पर निवास करता है या विराजमान है। मत्ती 28:18 पर ध्यान दें: "और यीशु ने पास आकर उनसे कहा, 'स्वर्ग और पृथ्वी का सारा

अधिकार मुझे दिया गया है।'" यह कथन कि वह दाहिने हाथ पर विराजमान है, एक रूपक के रूप में कार्य करता है, जिसका अर्थ है कि उसके पास समस्त अधिकार है—पूर्ण और निरपेक्ष अधिकार। 1 पतरस 3:22 को देखें: "जो स्वर्ग में चला गया है और परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान है, और जिसके अधीन स्वर्गदूत, अधिकार और सामर्थ्य कर दिए गए हैं।" पवित्र शास्त्र यह घोषणा करता है कि स्वर्ग में रहने वाले सभी आत्मिक प्राणी यीशु मसीह के अधीन हैं—वह जो स्वर्ग में आरोहण कर गया और परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान है। इफिसियों 1:20–21 को देखें: "उसकी सामर्थ्य मसीह में तब काम कर रही थी जब उसने उसे मरे हुओं में से जिलाया और स्वर्गीय स्थानों में अपने दाहिने हाथ बैठाया, जो समस्त शासन, अधिकार, सामर्थ्य और प्रभुता से कहीं ऊपर है, और हर उस नाम से भी ऊपर है जिसका नाम लिया जाता है—न केवल इस युग में, बल्कि आने वाले युग में भी।" परमेश्वर की सामर्थ्य मसीह में काम कर रही थी, जिसने उसे मरे हुओं में से जिलाया, स्वर्गीय स्थानों में परमेश्वर के अपने दाहिने हाथ बैठाया, और उसे हर नाम से ऊपर उठा दिया। बाइबल में प्रेरितों के काम 2:33 को देखें: "परमेश्वर के दाहिने हाथ ऊँचा उठाकर, उसने पिता से प्रतिज्ञा किया हुआ पवित्र आत्मा प्राप्त किया है और उसे उंडेल दिया है, जिसे अब आप देख और सुन रहे हैं।" जब परमेश्वर ने पवित्र शास्त्र के अनुसार यीशु मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, तो यीशु मसीह ने पिता से प्रतिज्ञा किया हुआ पवित्र आत्मा प्राप्त किया और उसे उंडेल दिया। ऐसी अधिकार-सत्ता और कहाँ मिल सकती है?

यह कहा गया है कि यह यीशु मसीह "वह है जो हमारे लिए मध्यस्थता करता है" (रोमियों 8:34)। "मसीह यीशु" वाक्यांश में—वह जो हमारी ओर से मध्यस्थता करता है—"मसीह" उपाधि का अर्थ है "अभिषिक्त जन।" पुराने नियम के युग में, तेल से अभिषेक केवल भविष्यवक्ताओं, याजकों और राजाओं के लिए ही आरक्षित था। दूसरे शब्दों में, यीशु मसीह ही वह भविष्यवक्ता, महायाजक और राजाओं का राजा है। यहाँ, यह घोषणा कि यीशु मसीह महायाजक है, दो महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों को उजागर करती है:

(1) पहली जिम्मेदारी है बलिदान चढ़ाना।

महायाजक के रूप में, यीशु मसीह ने अपने ही शरीर को बलिदान की भेंट बनाया और स्वयं को परमेश्वर के सामने एक बलिदान के रूप में प्रस्तुत किया—एक ही बार, हमेशा के लिए। कृपया इफिसियों 5:2 देखें: "और प्रेम में चलो, जैसा मसीह ने भी तुमसे प्रेम किया और हमारे लिए स्वयं को परमेश्वर को एक सुगंधित भेंट और बलिदान के रूप में दे दिया।" यहाँ, "एक सुगंधित भेंट" वाक्यांश एक आनंदित या इच्छुक आत्मा का भाव व्यक्त करता है; इसका अर्थ है कि यीशु मसीह ने एक आनंदित और इच्छुक हृदय के साथ स्वयं को परमेश्वर को एक बलिदान की भेंट के रूप में चढ़ाया। कृपया इब्रानियों 9:26 देखें: "अन्यथा, उसे जगत की सृष्टि के समय से ही बार-बार दुख उठाना पड़ता; परन्तु अब वह युगों के अंत में एक ही बार प्रकट हुआ है, ताकि अपने बलिदान के द्वारा पाप को मिटा दे।" यह अंश घोषणा करता है कि यीशु मसीह ने हमारे पापों को मिटाने के लिए स्वयं को परमेश्वर को एक बलिदान के रूप में चढ़ाया—एक ही बार, हमेशा के लिए।

(2) दूसरी जिम्मेदारी है प्रार्थनाएँ चढ़ाना।

महायाजक के रूप में, यीशु मसीह हमारी ओर से परमेश्वर से मध्यस्थता करता है। इब्रानियों 7:25 देखें: "इसलिए वह उन लोगों को भी पूरी तरह से बचाने में समर्थ है जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, क्योंकि वह हमेशा उनके लिए मध्यस्थता करने के लिए जीवित रहता है।" यह कितना शक्तिशाली और प्रभावी होगा कि यीशु मसीह—हमारा महायाजक जो हमारी ओर से मध्यस्थता करता है—अपनी मध्यस्थता परमेश्वर के दाहिने हाथ की ओर प्रस्तुत करता है (यह शक्ति और अधिकार को दर्शाने वाला एक लाक्षणिक प्रयोग है)! यीशु मसीह की यह मध्यस्थता इतनी शक्तिशाली है कि इसका उत्तर मिलता है, जिससे वह हमें पूरी तरह से बचाने में समर्थ होता है (पद 25)। दूसरे शब्दों में, यीशु मसीह की शक्तिशाली मध्यस्थता हमें हमारे उद्धार की पूर्णता तक ले जाएगी। मुक्ति का वह पूरा होना ठीक वही है जब परमेश्वर हमें महिमा देता है (रोमियों 8:30)। “परमेश्वर ने न केवल हमें मसीह के साथ जीवित किया, बल्कि हमें उसके साथ स्वर्गीय लोकों में भी बिठाया” (इफिसियों 2:6, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)। क्योंकि परमेश्वर इस तरह से हमारे पक्ष में है (रोमियों 8:31), इसलिए परमेश्वर हमें जो मुक्ति देता है, उसका पूरा होना निश्चित है। इसलिए, हमें अपनी मुक्ति के भरोसे को मज़बूती से थामे रखना चाहिए, दृढ़ और अडिग रहना चाहिए, और हमेशा प्रभु के काम में और भी अधिक लगन से प्रयास करना चाहिए (1 कुरिन्थियों 15:58)।

जब वह इस पृथ्वी पर था, तब यीशु मसीह ने अपना बहुत सारा समय प्रार्थना में बिताया। इसका एक बेहतरीन उदाहरण यूहन्ना अध्याय 17 में मिलता है—यीशु मसीह की महायाजकीय प्रार्थना। यूहन्ना 17:9 पर नज़र डालें: "मैं उनके लिए प्रार्थना करता हूँ। मैं संसार के लिए नहीं, बल्कि उनके लिए प्रार्थना करता हूँ जिन्हें तूने मुझे दिया है, क्योंकि वे तेरे हैं।" इब्रानियों 5:7 पर नज़र डालें: "अपने शारीरिक जीवन के दिनों में, उसने ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर और आँसू बहाकर उससे प्रार्थनाएँ और विनतियाँ कीं जो उसे मृत्यु से बचाने में समर्थ था, और उसकी ईश्वरीय श्रद्धा के कारण उसकी सुनी गई।" यीशु मसीह—जिसने शरीर में रहते हुए, ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर और आँसू बहाकर परमेश्वर पिता से प्रार्थनाएँ और विनतियाँ की थीं—अब परमेश्वर के दाहिने हाथ हमारे लिए मध्यस्थता करता है। जैसे वह मध्यस्थता करता है—वह जो पवित्रशास्त्र के अनुसार मरा और पवित्रशास्त्र के अनुसार फिर से जीवित हुआ—यीशु मसीह हममें से हर एक के लिए परमेश्वर से मध्यस्थता करता है। यीशु मसीह हममें से हर व्यक्ति की परिस्थितियों, स्थितियों और ज़रूरतों को जानता है, और अब भी, वह परमेश्वर के दाहिने हाथ हमारे लिए मध्यस्थता करता है। हमारे भीतर वास करने वाला पवित्र आत्मा, जो हमारी कमज़ोरी में हमारी सहायता करता है, परमेश्वर की इच्छा के अनुसार हमारे लिए मध्यस्थता करता है—हमारी ओर से व्यक्तिगत रूप से ऐसी गहरी आहों के साथ मध्यस्थता करता है जिन्हें शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता (रोमियों 8:26–27)। इसलिए, इस सच्चाई पर विश्वास करते हुए, हमें अपनी विनतियाँ परमेश्वर के सामने रखनी चाहिए—और हमें ऐसा पवित्रशास्त्र के अनुसार ही करना चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है कि, पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में, हमें परमेश्वर से उसके वचन और उसकी इच्छा के अनुसार प्रार्थना करनी चाहिए।

“यदि परमेश्वर हमारे पक्ष में है” (9)

[रोमियों 8:35-39]

रोमियों 8:35 पर ध्यान दें: “कौन हमें मसीह के प्रेम से अलग करेगा? क्या क्लेश, या संकट, या सताव, या अकाल, या नंगापन, या खतरा, या तलवार?” यहाँ, “हम” (us) से ठीक-ठीक किन लोगों का तात्पर्य है, जिन्हें मसीह के प्रेम से कोई भी अलग नहीं कर सकता? हम इस बात पर लगभग तीन दृष्टिकोणों से विचार कर सकते हैं:

(1) “हम” उन लोगों को संदर्भित करता है जिन्हें परमेश्वर ने चुना है (रोमियों 8:33)।

परमेश्वर ने हमें कब चुना? इफिसियों 1:4-5 पर ध्यान दें: “जैसा उसने जगत की उत्पत्ति से पहले ही मसीह में हमें चुन लिया, कि हम उसके सामने प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों। और उसने अपनी इच्छा के भले अभिप्राय के अनुसार हमें अपने लिये यीशु मसीह के द्वारा लेपालक पुत्र होने को पहले से ठहराया।” परमेश्वर ने हमें तब चुना, जब ब्रह्मांड में किसी भी चीज़ की सृष्टि भी नहीं हुई थी। परमेश्वर ने अपनी इच्छा के भले अभिप्राय के अनुसार हमें पहले से ही ठहरा दिया था। इसलिए, ऐसे लोगों को—यानी हमें—मसीह के प्रेम से कौन अलग कर सकता है? बिल्कुल कोई नहीं!

(2) “हम” उन लोगों को संदर्भित करता है जिन्हें परमेश्वर ने धर्मी ठहराया है (रोमियों 8:33)।

परमेश्वर ने उन लोगों को धर्मी ठहराया है जिन्हें उसने चुना था। परमेश्वर ने केवल शब्दों के द्वारा ही हमें धर्मी घोषित नहीं किया; बल्कि, वह हमें धर्मी लोगों के रूप में देखता है और हमारे साथ वैसा ही व्यवहार करता है। इफिसियों 1:5 पर ध्यान दें: “और उसने अपनी इच्छा के भले अभिप्राय के अनुसार हमें अपने लिये यीशु मसीह

के द्वारा लेपालक पुत्र होने को पहले से ठहराया।" चूँकि परमेश्वर ने हमें—जिन्हें उसने चुना और धर्मी ठहराया—अपने स्वयं के संतान बना लिया है, तो अब जब हम परमेश्वर के संतान बन चुके हैं, कौन हमें मसीह के प्रेम से अलग कर सकता है? बिल्कुल कोई नहीं! (3) "हम" उन लोगों को संदर्भित करता है जिनके लिये मसीह यीशु—जो परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान हैं—मध्यस्थता करते हैं (रोमियों 8:34)।

चूँकि यीशु, जो परमेश्वर के पुत्र हैं, परमेश्वर के दाहिने हाथ हमारे लिये मध्यस्थता कर रहे हैं, तो कौन हमें मसीह के प्रेम से अलग कर सकता है? बिल्कुल कोई नहीं!

बाइबल मसीह के प्रेम से भरी हुई है (रोमियों 8:35)। आदि से अंत तक, पवित्रशास्त्र मसीह के प्रेम की ही बात करता है। मत्ती 1:1 और 16 पर ध्यान दें: "यीशु मसीह की वंशावली, जो अब्राहम का पुत्र, दाऊद का पुत्र था... और याकूब यूसुफ का पिता था, जो मरियम का पति था, जिससे यीशु का जन्म हुआ, जिसे मसीह कहा जाता है।" हम यीशु मसीह की वंशावली में भी मसीह के प्रेम को देख सकते हैं। दूसरे शब्दों में, क्योंकि यीशु मसीह—परमेश्वर के पुत्र—को पवित्र आत्मा द्वारा गर्भ में धारण किया गया था, इससे पहले कि मरियम और यूसुफ की शादी हुई हो और वे एक साथ रह रहे हों (पद 18), और क्योंकि उन्होंने "इम्मानुएल" के रूप में हमारे बीच रहने के लिए देह धारण की, इसलिए हम मसीह के प्रेम का अनुभव किए बिना नहीं रह सकते। प्रकाशितवाक्य 22:20–21 पर ध्यान दें: "जो इन बातों की गवाही देता है, वह कहता है, 'हाँ, मैं शीघ्र आनेवाला हूँ।' आमीन। हे प्रभु यीशु, आ। प्रभु यीशु का अनुग्रह तुम सब के साथ रहे। आमीन।" हम यीशु की इस घोषणा में मसीह का प्रेम पा सकते हैं: "हाँ, मैं शीघ्र आनेवाला हूँ।" यीशु मसीह सचमुच शीघ्र क्यों आनेवाले हैं? यूहन्ना 14:3 पर ध्यान दें: "यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूँ, तो मैं फिर आकर तुम्हें अपने साथ ले जाऊँगा, ताकि जहाँ मैं हूँ, वहाँ तुम भी रहो।" इस संसार में यीशु मसीह के लौटने का उद्देश्य यह है कि वे वापस आएँ, हमें अपने पास ग्रहण करें, और हमें उसी स्थान पर ले जाएँ जहाँ वे निवास करते हैं। प्रभु, हमारे दूल्हा, हमें—अपनी कलीसिया, दुल्हन—को लेने के लिए आएँगे, और हमें नए स्वर्ग और नई पृथ्वी, नए यरूशलेम में ले जाएँगे जहाँ वे निवास

करते हैं (प्रकाशितवाक्य 21:1–2), जिससे हम मेम्ने के विवाह भोज में भाग ले सकेंगे (19:9)। इसलिए, हम मसीह के प्रेम के लिए अपना धन्यवाद, स्तुति और आराधना किए बिना नहीं रह सकते।

हालाँकि हम पूरे पवित्रशास्त्र में प्रकट मसीह के प्रेम की संपूर्णता पर पूरी तरह से मनन नहीं कर सकते, फिर भी आइए हम अपना ध्यान विशेष रूप से रोमियों 8:34 पर केंद्रित करें: "दोषी कौन ठहराएगा? मसीह यीशु ही वह है जो मर गया—बल्कि उससे भी बढ़कर, जो जिलाया गया—जो परमेश्वर के दाहिने हाथ है, और जो वास्तव में हमारे लिए मध्यस्थता कर रहा है।" इस अंश के माध्यम से, हम मसीह के प्रेम को पहचान पाते हैं: हमारे पापों की खातिर उनका लहू बहाना और क्रूस पर मृत्यु, कब्र से उनका पुनरुत्थान, और परमेश्वर के दाहिने हाथ पर हमारे अनंत जीवन के लिए उनकी निरंतर मध्यस्थता। हम मसीह के इस प्रेम की चौड़ाई, लंबाई, ऊँचाई और गहराई को पूरी तरह से नहीं समझ सकते (इफिसियों 3:19)। दूसरे शब्दों में, हम इस ईश्वरीय प्रेम की विशालता, विस्तार, गहराई और ऊँचाई को माप नहीं सकते। इस प्रकार, *न्यू हिमनल* (New Hymnal) के भजन 304 का तीसरा पद और कोरस यह स्तुति प्रस्तुत करता है: "यदि प्रकृति का संपूर्ण साम्राज्य मेरा होता, तो भी वह एक बहुत ही छोटा चढ़ावा होता; ऐसा अद्‌भुत, ऐसा ईश्वरीय प्रेम मेरी आत्मा, मेरे जीवन और मेरे सर्वस्व की माँग करता है। ओह, परमेश्वर के महान प्रेम की ऊँचाई और गहराई—इसे पूरी तरह से कैसे बताया जा सकता है? यद्यपि यह ऊपर स्वर्ग जितना ऊँचा क्यों न हो, फिर भी यह कभी पूरी तरह से भरा नहीं जा सकता। परमेश्वर का महान प्रेम सभी मापों से परे है; हे संतो, आइए हम इस प्रेम की स्तुति करें जो कभी नहीं बदलता!"

आज के पाठ—रोमियों 8:35—में, प्रेरित पौलुस अपने संदेश की शुरुआत यह पूछकर करते हैं, "कौन?" यहाँ, यह शब्द "कौन" सात खास बातों की ओर इशारा करता है: (1) "क्लेश" (रोमियों 8:35): यह *ट्रिबुलम*—अनाज निकालने का एक औजार—की ओर इशारा करता है, जिसका इस्तेमाल रोमन ज़माने में अनाज को डंठल से अलग करने के लिए किया जाता था। कोरिया में, खेती का एक पारंपरिक औजार *डोरिक्के* (फ्लेल) होता था, जिसका इस्तेमाल फलियों या जौ जैसी फसलों को पीटकर अनाज के दाने निकालने के लिए किया जाता था। जब हम यह सोचते हैं कि ये अनाज निकालने वाले औजार अनाज पर नहीं, बल्कि *हम पर*—उन लोगों पर जो यीशु में विश्वास करते हैं—गिराए जा रहे हैं, तो "क्लेश" शब्द का ठीक यही मतलब है। बाइबल हमें बताती है कि हमें ऐसे बहुत सारे क्लेश सहने होंगे। प्रेरितों के काम 14:22 देखें: "चेलों के मन को मज़बूत करते हुए, उन्हें

विश्वास में बने रहने के लिए हिम्मत देते हुए, और यह कहते हुए, 'बहुत सारे क्लेशों से गुज़रकर ही हमें परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा।'" ये शब्द प्रेरित पौलुस और बरनबास ने तब कहे थे जब वे अपनी पहली मिशनरी यात्रा से लौट रहे थे; अंताकिया के चर्च में रुककर, उन्होंने चेलों को यह उपदेश दिया। इस उपदेश में यह बात शामिल है: "बहुत सारे क्लेशों से गुज़रकर ही हमें परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा।" यीशु ने खुद ये शब्द कहे थे: "...दुनिया में तुम्हें क्लेश होगा; लेकिन हिम्मत रखो, मैंने दुनिया पर जीत पा ली है" (यूहन्ना 16:33b)। (2) "संकट" (रोमियों 8:35): यहाँ, "संकट" का मतलब मानसिक पीड़ा या दुख है। (3) "सताया जाना" (रोमियों 8:35): इस संदर्भ में, "सताया जाना" खास तौर पर अपने विश्वास के लिए ज़ुल्म या उत्पीड़न सहने के काम की ओर इशारा करता है। 2 तीमुथियुस 3:12 देखें: "हाँ, और जो कोई भी मसीह यीशु में ईश्वरीय जीवन जीना चाहता है, उसे सताया जाएगा।" (4) "अकाल" (रोमियों 8:35): यहाँ, "अकाल" का मतलब भुखमरी या शारीरिक भूख है। जब हम क्लेश, संकट या उत्पीड़न का सामना करते हैं, तो हमें भूख और अकाल का अनुभव भी हो सकता है। (4) "नग्नता" (रोमियों 8:35): यहाँ, "नग्नता" का अर्थ है कपड़ों से वंचित होना—यानी बिना कपड़ों के होना। चूँकि यीशु को स्वयं क्रूस पर नग्न अवस्था में चढ़ाया गया था, इसलिए हम, उनके शिष्यों के रूप में, नग्नता की स्थिति में भी उत्पीड़न का सामना कर सकते हैं। (5) "खतरा" (रोमियों 8:35): प्रेरित पौलुस ने अनेक खतरों का सामना किया। 2 कुरिन्थियों 11:26 पर विचार करें: "मैंने बार-बार यात्राएँ की हैं; नदियों के खतरों में, डाकुओं के खतरों में, अपने ही देशवासियों के खतरों में, अन्यजातियों के खतरों में, नगर के खतरों में, जंगल के खतरों में, समुद्र के खतरों में, और झूठे भाइयों के बीच खतरों में रहा हूँ।" जिस प्रकार प्रेरित पौलुस को मिशनरी कार्य में लगे रहते हुए विभिन्न प्रकार के खतरों का सामना करना पड़ा, उसी प्रकार आज भी अनेक मिशनरी—जो यीशु मसीह और उनके सुसमाचार के लिए मिशन क्षेत्रों में परिश्रम करते हैं—अनेक संकटों का सामना करते हैं। (6) "तलवार" (रोमियों 8:35): यहाँ, "तलवार" का अर्थ है एक लंबा धारदार हथियार। विशेष रूप से, यह उस तलवार को दर्शाता है जिसका उपयोग किसी व्यक्ति का सिर काटने के लिए किया जाता है। इसलिए, इस संदर्भ में, "तलवार" मृत्यु का प्रतीक है। पवित्रशास्त्र के अनुसार, तलवार द्वारा मृत्यु का सामना करने वाले—अर्थात् शहीद होने वाले—सबसे पहले प्रेरित, प्रेरित यूहन्ना के भाई प्रेरित याकूब थे। राजा हेरोदेस ने यूहन्ना के भाई याकूब को तलवार से मरवा डाला (प्रेरितों के काम 12:1–2)।

अंततः, रोमियों 8:35 में, प्रेरित पौलुस यह घोषणा करते हैं कि न तो क्लेश, न संकट, न उत्पीड़न, न अकाल, न नग्नता, न खतरा, और न ही तलवार हमें मसीह के प्रेम से अलग कर सकती है। इसका कारण यह है कि परमेश्वर ने हमें चुना है और हमें धर्मी ठहराया है, और स्वयं मसीह यीशु परमेश्वर के दाहिने हाथ पर हमारे लिए मध्यस्थता कर रहे हैं (पद 33–34)। इस प्रकार, यह पाठ इस बात की पुष्टि करता है कि ये सात तत्व—जिन्हें सामूहिक रूप से "कौन" (पद 35) कहा गया है—हमें मसीह के प्रेम से अलग करने में असमर्थ हैं। बाइबल की पुस्तक रोमियों प्रेरित पौलुस द्वारा रोम के कलीसिया के विश्वासियों को लिखी गई थी। दस वर्ष से भी कम समय बाद, इन विश्वासियों को रोमन सम्राट नीरो के हाथों उत्पीड़न के सात विशिष्ट रूपों का सामना करना पड़ा। नतीजतन, कई लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया—दरअसल, बड़ी संख्या में विश्वासियों ने शहादत पाई। जैसे-जैसे हम अपने मौजूदा दौर के संकेतों को देखते हैं, हम यह पहचान सकते हैं कि प्रभु के लौटने का दिन करीब आ रहा है। उस घटना से पहले, 'महा-संकट' (Great Tribulation) निश्चित रूप से आएगा। हालाँकि हमें इसका ठीक-ठीक समय नहीं पता, फिर भी हमें डर के आगे घुटने नहीं टेकने चाहिए; बल्कि, हमें इस विश्वास पर मज़बूती से कायम रहना चाहिए कि मसीह हमसे प्रेम करते हैं, और कोई भी चीज़ हमें उस प्रेम से अलग नहीं कर सकती। भले ही हमें संकटों का सामना करने के लिए बुलाया जाए, हमें साहसी बने रहना चाहिए। इसका कारण यह है कि यीशु मसीह ने पहले ही दुनिया पर विजय पा ली है (यूहन्ना 16:33b)। मैं प्रार्थना करता हूँ कि जब प्रभु इस दुनिया में लौटें, तो हम सभी एक विजेता के रूप में उनका स्वागत कर सकें।

“यदि परमेश्वर हमारे पक्ष में है” (10)

[रोमियों 8:35–39]

कृपया रोमियों 8:36–37 पर ध्यान दें: “जैसा कि लिखा है: ‘तेरे ही कारण हम दिन भर मारे जाते हैं; हम वध होने वाली भेड़ों के समान गिने जाते हैं।’ फिर भी इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हमसे प्रेम किया, विजेता से भी बढ़कर हैं।” यहाँ, वाक्यांश “जैसा कि लिखा है” का तात्पर्य प्रेरित पौलुस द्वारा पुराने नियम में दर्ज एक अंश के उद्धरण से है—विशेष रूप से, भजन संहिता 44:22: “तेरे ही कारण हम दिन भर मारे जाते हैं; हम वध होने वाली भेड़ों के समान गिने जाते हैं” [(समकालीन अंग्रेजी संस्करण) “तेरे ही कारण हम दिन भर मृत्यु का सामना करते हैं; हमें वध की जाने वाली भेड़ों के समान माना जाता है”]। इसके अलावा, वाक्यांश “हम हैं” (रोमियों 8:36) में, सर्वनाम “हम”—इस विशिष्ट संदर्भ में—तीन अलग-अलग समूहों को संदर्भित करता है: (1) वे जिन्हें परमेश्वर ने चुना है (पद 33); (2) वे जिन्हें परमेश्वर ने धर्मी ठहराया है (पद 33); और (3) वे जिनके लिए मसीह यीशु, जो परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान हैं, मध्यस्थता करते हैं (पद 34)। रोमन कलीसिया के विश्वासियों को लिखे अपने पत्र में, प्रेरित पौलुस ने लिखा कि यह “हम” “[प्रभु] के ही कारण दिन भर मारे जाते हैं”; यहाँ, वाक्यांश “दिन भर” का शाब्दिक अर्थ तो एक ही दिन की अवधि से है, फिर भी अंततः यह किसी व्यक्ति के पूरे जीवनकाल को दर्शाता है। जब वह अपनी कारावास की स्थिति से इस पत्र—रोमियों की पुस्तक—को लिख रहे थे, तब प्रेरित पौलुस ने घोषणा की, “तेरे ही कारण हम दिन भर मारे जाते हैं...”; ऐसा करते हुए, वह रोमन विश्वासियों को उस व्यक्ति के दृष्टिकोण से संबोधित कर रहे थे, जो स्वयं यीशु की शिक्षाओं के पूर्ण अनुरूप जीवन जी रहा था। यीशु की जिस विशिष्ट शिक्षा का उन्होंने संकेत दिया है, वह मरकुस 8:35 में मिलती है: “क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहेगा, वह उसे खो देगा; परन्तु जो कोई

मेरे और सुसमाचार के कारण अपना प्राण खोएगा, वह उसे बचा लेगा।" दूसरे शब्दों में, प्रेरित पौलुस—एक ऐसा जीवन जीते हुए जिसमें उन्होंने सबसे पहले खुद यीशु के वचनों का पालन किया, यहाँ तक कि यीशु मसीह और उनके सुसमाचार की खातिर अपनी जान भी दे दी (जिसके कारण उन्हें जेल में डाला गया था)—ने रोम की कलीसिया के विश्वासियों को अपना पत्र (रोमियों के नाम) लिखा; ऐसा करते हुए, उन्होंने भजन संहिता 44:22 का हवाला दिया, जिसमें कहा गया है, "जैसा कि लिखा है: 'तेरी खातिर हम दिन भर मौत का सामना करते हैं...'" इसलिए, वाक्यांश "प्रभु की खातिर" (रोमियों 8:36) वाक्यांश "मेरी खातिर और सुसमाचार की खातिर" (मरकुस 8:35) का ही पर्याय है—यानी, यीशु मसीह और उनके सुसमाचार की खातिर। रोमियों 14:8 पर विचार करें: "क्योंकि यदि हम जीवित रहते हैं, तो प्रभु के लिए जीवित रहते हैं; और यदि हम मरते हैं, तो प्रभु के लिए मरते हैं। इसलिए, चाहे हम जीवित रहें या मरें, हम प्रभु के हैं" [(मॉडर्न मैन्स बाइबल) "हम प्रभु के लिए जीवित रहते हैं, और हम प्रभु के लिए मरते हैं। इसलिए, चाहे हम जीवित रहें या मरें, हम प्रभु के हैं"]। लूका 9:23 पर विचार करें: "तब उन्होंने उन सबसे कहा, 'यदि कोई मेरे पीछे आना चाहता है, तो वह स्वयं का इन्कार करे, और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे चले'" [(मॉडर्न मैन्स बाइबल) "तब यीशु ने सबसे कहा: 'यदि कोई मेरे पीछे चलना चाहता है, तो वह स्वयं का इन्कार करे, प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे चले'"]। यीशु मसीह का एक शिष्य, यीशु मसीह और उनके सुसमाचार की खातिर जीवित रहता है, स्वयं का इन्कार (त्याग) करता है और यीशु मसीह का अनुसरण करने के लिए प्रतिदिन अपना क्रूस उठाता है।

जब प्रेरित पौलुस ने रोम के विश्वासियों को लिखे अपने पत्र में भजन संहिता 44:22 का हवाला दिया, जिसमें कहा गया था, "तेरी खातिर हम दिन भर मौत का सामना करते हैं" (रोमियों 8:36), तो *मॉडर्न मैन्स बाइबल* ने इस वाक्यांश का अनुवाद "मौत के खतरे का सामना करना" के रूप में किया। इस अंश का अर्थ उन क्लेशों, संकटों, सताहटों, अकाल, नग्नता, खतरों, या मौत के खतरे—जैसे कि तलवार (पद 35)—की ओर संकेत करता है, जिन्हें यीशु के शिष्यों ने, विशेष रूप से प्रेरित पौलुस और रोम की कलीसिया के विश्वासियों ने, सहा था। इसके अलावा, ये जानलेवा खतरे इतने गंभीर थे कि उन्होंने उन्हें लगभग वैसी ही स्थिति में पहुँचा दिया था जैसी कि असल मौत होती है। बाइबल में, अय्यूब (Job) नामक व्यक्ति ने इतनी भीषण पीड़ा सही

कि वह भी लगभग वैसी ही स्थिति में पहुँच गया था जैसी कि मौत होती है। आज भी, यीशु के शिष्यों में ऐसे भाई-बहन मौजूद हैं जो यीशु मसीह के सुसमाचार के लिए जीते हुए, ऐसी ही भीषण पीड़ा सह रहे हैं। इसके अतिरिक्त, प्रेरित पौलुस ने रोम की कलीसिया के विश्वासियों से कहा, "हमें ऐसा माना जाता है जैसे हम वध के लिए तैयार भेड़ें हों" (रोमियों 8:36); वास्तव में, भेड़ों को पालने का मुख्य उद्देश्य ही उन्हें वधशाला ले जाकर मार डालना होता है। मसीह (मसीहा) के विषय में भविष्यवक्ता यशायाह की भविष्यवाणी पर विचार करें: "उस पर अत्याचार हुआ और उसे सताया गया, फिर भी उसने अपना मुँह नहीं खोला; उसे वध के लिए ले जाए जा रहे मेमने की तरह ले जाया गया, और जिस तरह ऊन कतरने वालों के सामने भेड़ चुप रहती है, उसी तरह उसने भी अपना मुँह नहीं खोला" [(समकालीन कोरियाई बाइबल) "पीड़ा सहते हुए भी वह चुप रहा; वधशाला ले जाए जा रहे मेमने की तरह, और ऊन कतरने वालों के सामने चुप रहने वाली भेड़ की तरह, उसने अपना मुँह नहीं खोला"] (यशायाह 53:7)। रोमियों के नाम लिखे अपने पत्र में—जो उसने रोम में कैद रहते हुए वहाँ की कलीसिया के विश्वासियों को लिखा था—प्रेरित पौलुस ने कहा: "जैसा कि लिखा है: 'तुम्हारे ही कारण हमें दिन भर मौत का सामना करना पड़ता है; हमें ऐसा माना जाता है जैसे हम वध के लिए तैयार भेड़ें हों'" (रोमियों 8:36)। इससे यह पता चलता है कि पौलुस ने, यशायाह 53:7 की भविष्यवाणी का हवाला देते हुए, यीशु मसीह की पीड़ा और क्रूस पर चढ़ने की घटना का अनुकरण करने का प्रयास किया—उस मेमने का, जिसे ठीक वैसे ही वधशाला ले जाया गया था जैसा कि भविष्यवाणी में बताया गया था। परिणामस्वरूप, पौलुस ने स्वयं यीशु मसीह और सुसमाचार की खातिर दिन भर पीड़ा सही और मौत के खतरे का सामना किया; ठीक इसी कारण से उसने रोम के विश्वासियों को संबोधित करते हुए कहा, "हम..." (रोमियों 8:36)। बाइबल के इस अंश पर विचार करें—1 कुरिन्थियों 4:9, 11–13 (*The Modern Man's Bible* से): "क्योंकि मुझे ऐसा लगता है कि परमेश्वर ने हम प्रेरितों को सबसे निचले स्थान पर रखा है—जैसे कि मृत्युदंड पाए हुए कैदी जिन्हें वध-स्थल पर ले जाया जा रहा हो... इस घड़ी तक भी, हम भूखे-प्यासे रहते हैं, हमारे कपड़े फटे-पुराने हैं, हमारे साथ क्रूर व्यवहार किया जाता है, और हम बेघर हैं। हम अपनी आजीविका कमाने के लिए अपने हाथों से कड़ी मेहनत करते हैं। जब हमारा अपमान किया जाता है, तो हम आशीष देते हैं; जब हम पर ज़ुल्म होता है, तो हम उसे सहते हैं; जब हमारी निंदा की जाती है, तो हम विनम्र शब्दों में जवाब देते हैं। आज के दिन तक, हम पृथ्वी की मैल और सब चीज़ों की जूठन के समान बन गए

हैं।" इसके अलावा, 2 कुरिन्थियों 11:23–27 (समकालीन कोरियाई संस्करण) पर विचार करें: "...मैंने कहीं अधिक परिश्रम किया है; मुझे अक्सर जेल में डाला गया, अनगिनत बार पीटा गया, और कई अवसरों पर मृत्यु का सामना करना पड़ा। पाँच बार मुझे यहूदियों से चालीस कोड़ों में से एक कम कोड़ा मिला। तीन बार मुझे लाठियों से पीटा गया, एक बार मुझ पर पत्थर फेंके गए, तीन बार मेरा जहाज़ डूबा, और एक बार मैंने पूरी रात और दिन समुद्र में बहते हुए बिताया। अपनी बार-बार की यात्राओं में, मैंने नदियों से ख़तरा, डाकुओं से ख़तरा, अपने ही लोगों से ख़तरा, अन्यजातियों से ख़तरा, शहर में ख़तरा, जंगल में ख़तरा, समुद्र में ख़तरा, और झूठे विश्वासियों से ख़तरे का सामना किया है। मैंने परिश्रम और कठिनाई भी झेली है; मैं कई बार बिना सोए रहा हूँ; मैंने भूख और प्यास का अनुभव किया है, अक्सर बिना भोजन के रहा हूँ; और मैंने ठंड और खुले में रहने की तकलीफ़ सही है।"

इस प्रकार, यद्यपि प्रेरित पौलुस ने स्वयं प्रभु के निमित्त दिन भर मृत्यु के ख़तरे का सामना किया (रोमियों 8:36), फिर भी उसने रोम की कलीसिया के विश्वासियों से यह घोषणा की: "परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हमसे प्रेम किया, एक से बढ़कर जयवन्त ठहरते हैं" (रोमियों 8:37)। उन्होंने उनसे कहा कि भले ही "हमें" (पौलुस और रोमन कलीसिया के विश्वासियों को) "मौत के खतरों" का सामना करना पड़े—जैसे कि क्लेश, संकट, सताव, अकाल, नंगापन, खतरा, या तलवार (पद 35)—"फिर भी इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हमसे प्रेम किया, विजेताओं से भी बढ़कर हैं" (पद 37)। ऐसा नहीं है कि हम अपनी शक्ति से जीतते हैं, बल्कि हम उसके द्वारा जीतते हैं जो हमसे प्रेम करता है। और हम केवल किसी तरह जीत हासिल नहीं करते; बल्कि, हम "अत्यधिक रूप से"—या "विजयी रूप से" (जैसा कि *The Bible for Modern Man* में अनुवादित है) जीतते हैं। इसका कारण यह है कि प्रिय पुत्र, यीशु मसीह ने पहले ही संसार पर विजय प्राप्त कर ली है। यूहन्ना 16:33 पर देखिए: "मैंने तुमसे ये बातें इसलिए कही हैं, ताकि मुझमें तुम्हें शांति मिले। इस संसार में तुम्हें क्लेश होगा। परन्तु हिम्मत रखो! मैंने संसार पर विजय प्राप्त कर ली है।" इसलिए, कौन हम पर—परमेश्वर के चुने हुए लोगों पर—दोष लगाने का साहस करेगा? (रोमियों 8:33)। कौन हमें "दोषी ठहराएगा"? (पद 34)। कौन हमें मसीह के प्रेम से अलग कर सकता है? (पद 35)। क्या यह "क्लेश" है? क्या यह "संकट," "सताव," "अकाल," "नंगापन," "खतरा," या "तलवार" है? बिल्कुल कुछ भी नहीं! मसीह के द्वारा, जो हमसे प्रेम करता है, हम इन सब बातों पर विजयी रूप से काबू पाते हैं (पद 37, *The Bible

for Modern Man*)। इसलिए, हम धन्यवाद दिए बिना नहीं रह सकते। 1 कुरिन्थियों 15:55–57 (*The Bible for Modern Man*) पर देखिए: "'हे मृत्यु, तेरी जीत कहाँ रही? हे मृत्यु, तेरा डंक कहाँ रहा?' मृत्यु का डंक पाप है, और पाप की शक्ति व्यवस्था है। परन्तु हम परमेश्वर का धन्यवाद करें, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें विजय देता है।" आइए हम सब उद्धार के भरोसे और विजय के भरोसे के साथ, यीशु मसीह और मसीह के सुसमाचार के लिए जिएँ।

“यदि परमेश्वर हमारे पक्ष में है” (11)

[रोमियों 8:35–39]

कृपया रोमियों 8:38–39 देखें: “(क्योंकि) मुझे विश्वास है कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न दुष्टात्माएँ, न वर्तमान, न भविष्य, न कोई और शक्ति, न ऊँचाई, न गहराई, और न ही सारी सृष्टि में कोई और चीज़ हमें परमेश्वर के उस प्रेम से अलग कर सकेगी जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है।” हालाँकि कोरियाई बाइबल अनुवाद में पद 38 की शुरुआत में संयोजक शब्द “क्योंकि” (γὰρ) (अंग्रेजी: *For*) छोड़ दिया गया है, लेकिन मूल यूनानी पाठ में यह शामिल है। यह संयोजक शब्द उस कथन को जोड़ने का काम करता है जो पौलुस ने पद 37 में कहा था—"परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हमसे प्रेम किया, जय से भी बढ़कर हैं"—उन कथनों के साथ जो वह पद 38–39 में कहता है। दूसरे शब्दों में, क्योंकि हम उस एक के द्वारा जो हमसे प्रेम करता है, इन सब बातों में “जय से भी बढ़कर” हैं (पद 37), इसलिए पौलुस रोम की कलीसिया के विश्वासियों से घोषणा करता है, “मुझे विश्वास है” (पद 38)। और अधिक स्पष्ट रूप से कहें तो: भले ही हमें क्लेश, संकट, सताव, अकाल, नग्नता, खतरा, या मृत्यु के खतरे का सामना करना पड़े—जिसे तलवार द्वारा दर्शाया गया है (पद 35)—और भले ही हमें जानलेवा खतरे का सामना करना पड़े (पद 36), फिर भी हम उस एक के द्वारा जो हमसे प्रेम करता है, इन सब बातों में “जय से भी बढ़कर” हैं (पद 37)। यह विजय ऐसी चीज़ नहीं है जिसे हम अपनी शक्ति से प्राप्त करते हैं; बल्कि, यह एक विजय है—एक शानदार, सहज विजय—जो उस एक के *द्वारा* प्राप्त की गई है जो हमसे प्रेम करता है। इसका कारण यह है कि प्रिय पुत्र, यीशु मसीह ने संसार पर पहले ही जय पा ली है (यूहन्ना 16:33)।

पौलुस ने रोम की कलीसिया के विश्वासियों से कहा, “मुझे विश्वास है” (रोमियों 8:38)। यहाँ, जिस क्रिया का अनुवाद “मुझे विश्वास है” के रूप में किया गया है, वह कर्मवाच्य (passive voice) और पूर्ण भूतकाल (perfect tense) में है, जिसका अर्थ यह निकलता है: “मुझे पहले ही विश्वास हो चुका है” (या “मुझे विश्वास की स्थिति में लाया गया है”)। दूसरे शब्दों में, जब प्रेरित पौलुस ने यह स्वीकार किया, "मुझे पूरा विश्वास है," तो यह विश्वास ऐसा नहीं था जिसे उसने खुद पैदा किया हो; बल्कि, क्योंकि पवित्र आत्मा ने उसे यह भरोसा दिलाया था, इसलिए वह असल में यह कह रहा था, "मुझे विश्वास दिलाया गया है।" तो फिर, पवित्र आत्मा ने प्रेरित पौलुस के मन में यह विश्वास कैसे जगाया? पवित्र आत्मा ने पौलुस को यह भरोसा यह दिखाकर दिलाया कि मसीह यीशु में जीवन की आत्मा के नियम ने उसे पाप और मृत्यु के नियम से आज़ाद कर दिया है (पद 2), और यह साबित करके कि अब उन लोगों के लिए कोई दंड नहीं है जो मसीह यीशु में हैं—यानी, खुद पौलुस (पद 1)। इसके अलावा, पवित्र आत्मा ने उसे इसलिए भी भरोसा दिलाया क्योंकि वह पौलुस के भीतर वास करता था और उस पर अपना अधिकार चलाता था (पद 9, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)। पवित्र आत्मा ने उसे मार्गदर्शन देकर (पद 14), और साथ ही पौलुस की आत्मा के साथ मिलकर व्यक्तिगत रूप से यह गवाही देकर भरोसा दिलाया कि वह सचमुच परमेश्वर की संतान है (पद 16)। इसके अतिरिक्त, पवित्र आत्मा ने पौलुस को उसकी कमज़ोरी में मदद करके—उसके लिए ऐसी आहों के साथ मध्यस्थता करके जिन्हें शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता (पद 26)—और परमेश्वर की इच्छा के अनुसार उसके लिए मध्यस्थता करके भरोसा दिलाया (पद 27)। कम से कम पद 26 से 37 में पाए जाने वाले अंशों के आधार पर, प्रेरित पौलुस ने घोषणा की, "मुझे पूरा विश्वास है," और फिर पद 38 और 39 में अपनी अंतिम स्वीकारोक्ति प्रस्तुत की।

तो फिर, प्रेरित पौलुस को कितना विश्वास था? किस हद तक—या कितनी तीव्रता के साथ—उसके मन में यह विश्वास मौजूद था? एक उदाहरण के तौर पर, हम डीकन स्तेफानुस पर विचार कर सकते हैं, जिसकी कहानी 'प्रेरितों के काम' (Acts) पुस्तक के अध्याय 7 में मिलती है। कृपया 'प्रेरितों के काम' 7:59–60 देखें: "जब वे उस पर पत्थर बरसा रहे थे, तो स्तेफानुस ने प्रार्थना की, 'हे प्रभु यीशु, मेरी आत्मा को ग्रहण कर।' फिर वह अपने घुटनों के बल गिरा और ज़ोर से पुकारा, 'हे प्रभु, इस पाप का दोष उन पर मत लगा।' जब उसने यह कहा, तो वह सो गया।" यहाँ, "सो गया" वाक्यांश का अर्थ है कि स्तेफानुस मसीह में सो रहा था; हालाँकि उसका भौतिक शरीर "दफनाया गया" था (8:2), उसकी आत्मा स्वर्ग में चली गई थी। दूसरे शब्दों

में, अपनी मृत्यु से पहले, स्टीफन को 100% पक्का यकीन था कि उसकी आत्मा स्वर्ग में प्रभु के साथ हमेशा जीवित रहेगी। प्रेरित पौलुस को भी उद्धार का यही 100% पक्का यकीन था। कृपया 1 थिस्सलोनिकियों 4:14 और 17 देखें: "क्योंकि हम विश्वास करते हैं कि यीशु मरा और फिर जी उठा, और इसलिए हम विश्वास करते हैं कि परमेश्वर यीशु के साथ उन्हें भी ले आएगा जो उसमें सो गए हैं। क्योंकि प्रभु स्वयं स्वर्ग से नीचे आएगा, एक ज़ोरदार आज्ञा के साथ, महादूत की आवाज़ के साथ और परमेश्वर की तुरही की पुकार के साथ, और मसीह में मरे हुए लोग सबसे पहले जी उठेंगे। उसके बाद, हम जो अभी भी जीवित हैं और बचे हुए हैं, उन्हें उनके साथ बादलों में ऊपर उठा लिया जाएगा ताकि हवा में प्रभु से मिल सकें। और इस प्रकार हम हमेशा के लिए प्रभु के साथ रहेंगे।" प्रेरित पौलुस को पूरा भरोसा था कि जब प्रभु अपने दूसरे आगमन पर लौटेंगे, तो परमेश्वर अपने साथ उन्हें भी ले आएंगे जो यीशु में सो गए हैं (एक ऐसा समूह जिसमें, बेशक, डीकन स्टीफन भी शामिल हैं, जो पहले से ही प्रभु में सो रहे थे)। इसके अलावा, उसे यह भी पक्का यकीन था कि उस समय, जो लोग मसीह में मरे थे, वे सबसे पहले जी उठेंगे (जो उनके शरीरों के पुनरुत्थान का संकेत है)—और इसमें स्वयं प्रेरित पौलुस भी शामिल है, जो रोमियों को यह पत्र लिखने के बाद अंततः मर जाएगा; ठीक डीकन स्टीफन की तरह, पौलुस को भी पूरा यकीन था कि प्रभु के दूसरे आगमन पर परमेश्वर उसकी आत्मा को अपने साथ वापस ले आएगा। इसके अलावा, प्रेरित पौलुस को यह भी पक्का विश्वास था कि जो लोग प्रभु के दूसरे आगमन के समय जीवित रहेंगे, वे बदल जाएंगे, और पुनर्जीवित मसीह के महिमामय शरीर जैसे बन जाएंगे ["जब वह आएगा, तो उस शक्ति के द्वारा जो उसे हर चीज़ को अपने नियंत्रण में लाने में सक्षम बनाती है, वह हमारे तुच्छ शरीरों को बदल देगा ताकि वे उसके महिमामय शरीर जैसे बन जाएं" (फिलिप्पियों 3:21, *द कंटेम्पररी बाइबल*)] (तुलना करें: 1 कुरिन्थियों 15:51–53)। इसके अलावा, पॉल को पूरा विश्वास था कि जो लोग मसीह में मर चुके हैं, उनके पुनर्जीवित होने के बाद (1 थिस्स. 4:16)—और जो लोग उस समय तक जीवित बचे रहेंगे, उनके भी उसी तरह बदल जाने के बाद—तब, "उसके बाद," वे सभी एक साथ बादलों में ऊपर उठा लिए जाएँगे ताकि हवा में प्रभु से मिल सकें, और इस प्रकार स्वर्ग में हमेशा के लिए प्रभु के साथ रहें (पद 17)। दूसरे शब्दों में, पॉल को विश्वास था कि प्रभु के दूसरे आगमन पर, जो लोग पहले ही मसीह में मर चुके हैं, वे शारीरिक पुनरुत्थान का अनुभव करेंगे—उन आत्माओं के साथ फिर से मिलेंगे जिन्हें परमेश्वर अपने साथ लाएगा—और स्वर्ग में हमेशा के लिए प्रभु के साथ निवास करेंगे; इसी तरह, उन्हें विश्वास था कि

जो लोग उस समय तक जीवित बचे रहेंगे, वे अचानक बदल जाएँगे, प्रभु के महिमामय शरीर के समान हो जाएँगे, और वे भी स्वर्ग में हमेशा के लिए प्रभु के साथ निवास करेंगे।

कृपया रोमियों 8:39 के पिछले हिस्से पर ध्यान दें: "...और न ही सारी सृष्टि में कोई और चीज़ हमें परमेश्वर के उस प्रेम से अलग कर सकेगी जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है।" यहाँ, "हमें" शब्द उन संतों को संदर्भित करता है जो उस समय मसीह में जीवित थे—विशेष रूप से, प्रेरित पॉल और रोम की कलीसिया के विश्वासियों को (क्योंकि, जिस समय रोमियों के नाम पत्र लिखा गया था, उस समय पॉल और रोम के विश्वासी दोनों ही जीवित थे)। हालाँकि, व्यापक अर्थ में कहें तो, यहाँ "हमें" शब्द उन लोगों को संदर्भित करता है जिन्हें परमेश्वर ने पहले से जान लिया था (वे लोग जिनसे उसने जगत की नींव डालने से पहले ही प्रेम किया था) (पद 29); यह उन लोगों को संदर्भित करता है जिन्हें परमेश्वर ने पहले से ही चुन लिया था (उसके चुने हुए लोग), जिन्हें उसने बुलाया, जिन्हें उसने धर्मी ठहराया, और जिन्हें उसने महिमा दी (पद 30)। प्रेरित पॉल के पास उद्धार का एक अटूट भरोसा था क्योंकि कोई भी चीज़ हमें परमेश्वर के उस प्रेम से अलग नहीं कर सकती जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है (पद 39)। उद्धार का यह भरोसा हमें पवित्र आत्मा द्वारा परमेश्वर के वचन के माध्यम से प्रदान किया जाता है। इस भरोसे से सशक्त होकर—जो पवित्र आत्मा पवित्रशास्त्र के माध्यम से प्रदान करता है—हम क्लेश के समयों में भी आनंदित होते हैं (5:3)। इसके अलावा, परमेश्वर को धन्यवाद और स्तुति अर्पित करते हुए, हम दृढ़ और अडिग खड़े रहते हैं, और हमेशा पूरे मन से प्रभु के कार्य के लिए स्वयं को समर्पित करते हैं (1 कुरिन्थियों 15:58); विशेष रूप से, हम उन लोगों को सांत्वना देने, सुसमाचार प्रचार करने और मिशन कार्यों में भाग लेने का प्रयास करते हैं जो कष्ट में हैं। आइए, हम सभी रोमियों अध्याय 8 के वचनों को कंठस्थ कर लें, और यह प्रार्थना करें कि पवित्र आत्मा भी हममें से प्रत्येक को उद्धार का यही आश्वासन प्रदान करे।

निष्कर्ष

यीशु मसीह का सुसमाचार क्या है? पहले आदम की आज्ञा-उल्लंघन के कारण—जिसने वाचा-पालन करने वाले परमेश्वर की आज्ञाओं का उल्लंघन किया था—संसार में पाप का प्रवेश हुआ। परिणामस्वरूप, क्योंकि सभी लोगों ने पाप किया, हम दंड के भागी बन गए; हम आत्मिक रूप से मर गए, और शारीरिक रूप से भी मृत्यु को प्राप्त होकर, हम अनंत मृत्यु का सामना करने के लिए नियत हो गए—नरक में, जो आग की एक ऐसी झील है जो कभी बुझती नहीं, हमेशा रहने के लिए विवश हो गए, जहाँ वास्तव में कभी भी मृत्यु नहीं आती। फिर भी, जब हम अपने अपराधों और पापों में मृत थे, परमेश्वर ने पहले हमसे प्रेम किया और संसार की नींव डालने से पहले ही हमें चुन लिया। इसके अतिरिक्त, परमेश्वर पिता ने, हमें बचाने की इच्छा रखते हुए, अपने एकलौते पुत्र—यीशु—को प्रायश्चित के बलिदान और पाप-मोचन के बलिदान, दोनों के रूप में नियुक्त किया। उसने यीशु को इस संसार में पापमय शरीर की समानता में भेजा; उसने हमारे पापों को निष्पाप यीशु पर डाल दिया, जिससे उस निष्पाप जन को क्रूस पर हमारे सभी पापों का पूरा दंड चुकाना पड़ा। पुत्र यीशु—जो अंतिम आदम और फसह का मेम्ना था—ने हमारे सभी पापों का बोझ उठाया (जिसके द्वारा हमारे पाप उस पर डाल दिए गए), जब हम अभी भी निर्बल, पापी और परमेश्वर के शत्रु थे; उसने परमेश्वर पिता की आज्ञा का पालन यहाँ तक किया कि उसने अपना लहू बहाया और प्रायश्चित के बलिदान के रूप में क्रूस पर अपने प्राण दे दिए। परिणामस्वरूप, परमेश्वर की धार्मिकता हमें प्रदान की गई; हमें धर्मी ठहराया गया, उसकी दृष्टि में हम धर्मी बन गए, और हमने अनंत जीवन प्राप्त किया। इस प्रकार, अब हम इस पृथ्वी पर रहते हुए अनंत जीवन के आनंद का आंशिक रूप से अनुभव करते हैं, और स्वर्ग में प्रवेश करने पर, हम यीशु के साथ सदा-सर्वदा राज्य करेंगे, और अनंत जीवन के आनंद का पूर्ण और संपूर्ण रूप से अनुभव करेंगे। यहाँ, यह कथन कि परमेश्वर की धार्मिकता हमें प्रदान की गई—और कि हमें "धर्मी ठहराया गया"—का दूसरे शब्दों में यह अर्थ है कि हमें परमेश्वर से "धर्मीकरण" (Justification) प्राप्त हुआ। "धर्मीकरण" एक कानूनी शब्द है जिसका अर्थ यह है कि परमेश्वर, जो प्रधान न्यायाधीश है, न केवल "निर्दोष" होने का फैसला सुनाता

है—हमें, जो दोषी अपराधी हैं, पाप से पूरी तरह मुक्त घोषित करता है—बल्कि सकारात्मक रूप से यह भी घोषित करता है: "तुम धर्मी हो।" दूसरे शब्दों में, परमेश्वर की धार्मिकता हमें प्रदान की गई है। इस धर्मीकरण के द्वारा, हमें केवल परमेश्वर के अनुग्रह से और केवल उसके पुत्र, यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया जाता है। इस प्रकार, हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह से धर्मी ठहराए जाने के बाद, हमारा परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप हो गया है और अब हम उसके साथ शांति का आनंद लेते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो, परमेश्वर के साथ हमारा संबंध फिर से स्थापित हो गया है; अब हम उसके शत्रु नहीं, बल्कि उसकी संतान हैं, और यीशु मसीह के मार्गदर्शन में हम परमेश्वर के अनुग्रह के सिंहासन के पास निडर होकर जा सकते हैं। इसके अलावा, पवित्र आत्मा—जो यीशु की आत्मा है और हमारे हृदयों में भेजी गई है—के द्वारा हम परमेश्वर के साथ संगति कर पाते हैं, उसे "अब्बा, पिता" कहकर पुकारते हैं, और परमेश्वर की महिमा में सहभागी होने की आशा में आनंदित होते हैं। उद्धार के इस आश्वासन को धारण करते हुए, हम यीशु के दूसरे आगमन की दृढ़ आशा रखते हैं, जो महिमा के साथ लौटेगा; हमें पूरा विश्वास है कि जब यीशु प्रकट होगा, तो हम उसके समान हो जाएँगे, क्योंकि हम उसे वैसे ही देखेंगे जैसा वह वास्तव में है, और प्रभु हमारे इस दीन-हीन शरीर को बदलकर अपने महिमामय शरीर के समान बना देगा। इसलिए, क्लेशों के बीच भी, हम परमेश्वर की महिमा की आशा में आनंदित होते हैं। इसका कारण यह है कि हम जानते हैं कि क्लेश से धीरज उत्पन्न होता है, धीरज से चरित्र बनता है, और चरित्र से आशा उत्पन्न होती है। इस निश्चित आशा को दृढ़ता से थामे हुए, हमें इस पृथ्वी पर अपना जीवन उन लोगों के समान जीना चाहिए जिन्हें नया जीवन मिला है—अर्थात् अनंत जीवन का पूरा आनंद लेते हुए। हमें एक सच्चे परमेश्वर और यीशु मसीह के ज्ञान में निरंतर बढ़ते रहना चाहिए। पवित्र आत्मा के द्वारा, आइए हम परमेश्वर पिता के साथ—जिसने हम पर अपना असीम प्रेम बरसाया और हमें अपनी संतान के रूप में अपना लिया—और परमेश्वर पुत्र, यीशु के साथ—जो जीवन का वचन है, जो आदि से विद्यमान है, जो अनंत जीवन का मूल स्रोत है, और जो हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए स्वेच्छा से क्रूस पर अपने प्राणों की बलि देने वाला बलिदान है—संगति का आनंद लें। जब हम इस संगति में आनंदित होते हैं, तो आइए हम प्रभु की आज्ञाओं का पालन करें और पवित्र आत्मा का फल उत्पन्न करें। प्रभु की "दोहरी आज्ञा"—जो स्वर्ग के राज्य का मूल नियम है—के अनुसार, आइए हम अपने प्रभु परमेश्वर से अपने पूरे हृदय, अपनी पूरी आत्मा और अपने पूरे मन से प्रेम करें; और आइए हम अपने पड़ोसियों से अपने समान ही प्रेम करें। ऐसा करने से, हम—इस सांसारिक जीवन में भी—स्वर्गीय जीवन का एक पूर्वाभास अनुभव कर सकते

हैं, जो प्रेम और आनंद से परिपूर्ण हो, और साथ ही हम यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने के लिए पूरी लगन से प्रयास कर सकते हैं। भले ही हम विपरीत परिस्थितियों, कठिनाइयों और मुसीबतों के बीच घिरे हों—ठीक वैसे ही जैसे मृत्यु की छाया वाली घाटी से गुज़र रहे हों—फिर भी आइए, हम यीशु मसीह और उनके सुसमाचार के लिए अटूट विश्वास के साथ जिएँ: इस भरोसे के साथ कि हमारी वर्तमान पीड़ाएँ उस महिमा की तुलना में कुछ भी नहीं हैं जो हममें प्रकट होने वाली है; इस निश्चितता के साथ कि परमेश्वर हमारे पक्ष में है; और इस विजयी दृढ़ विश्वास के साथ कि न तो मृत्यु और न ही जीवन, न तो स्वर्गदूत और न ही प्रधानताएँ, न तो वर्तमान की बातें और न ही भविष्य की बातें, न तो कोई शक्ति, न ऊँचाई और न ही गहराई, और न ही कोई अन्य सृजित वस्तु—कोई भी हमें परमेश्वर के उस प्रेम से अलग नहीं कर सकेगी जो हमारे प्रभु यीशु मसीह में है।